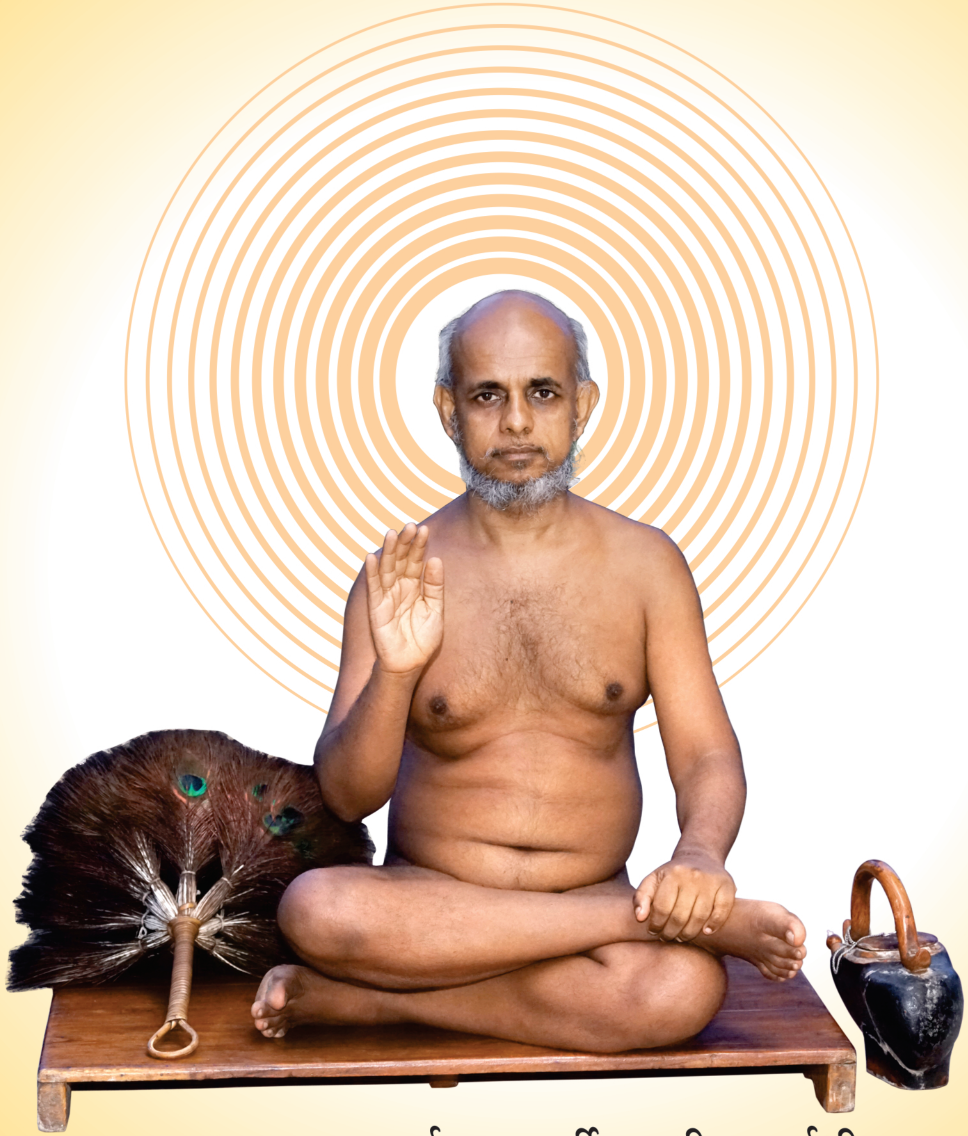

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

नित्य नियम पूजन, चतुर्विंशति जिन पूजा

(श्री वृन्दावन जीकृत)
तीर्थ क्षेत्र पूजन व स्तोत्र संग्रह

संग्रहकर्त्री
श्रीमती पद्मावती जैन

प्रकाशक
अहिंसा मन्दिर
1, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

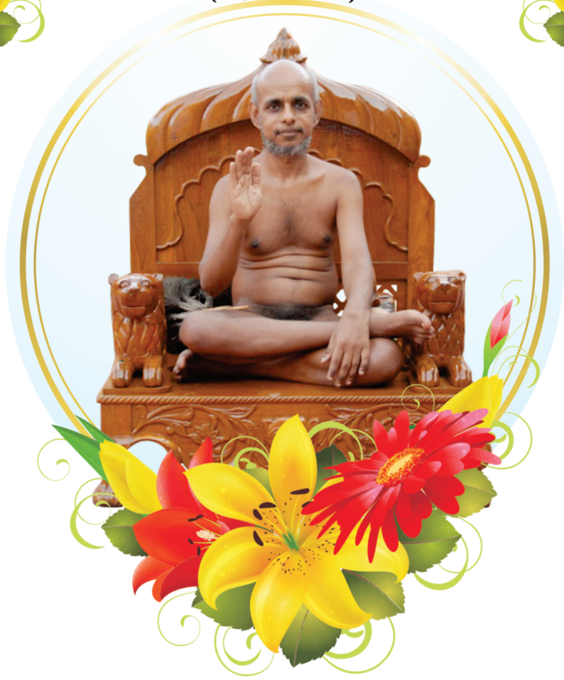

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

नित्य नियम पूजन, चतुर्विशति जिन पूजा

(श्री वृन्दावन जीकृत)

तीर्थ क्षेत्र पूजन व स्तोत्र संग्रह

संग्रहकर्त्री : श्रीमती पद्मावती जैन

अहिंसा मन्दिर
१, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
अन्य केन्द्र : (हरिद्वार, कुरुक्षेत्र व पिलानी)
संचालक : श्री राजकृष्ण जैन चैरीटेबल ट्रस्ट

प्रकाशक :
अहिंसा मन्दिर,
१, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
फोन : २६७२००
अन्य केन्द्र : हरिद्वार, कुरुक्षेत्र व पिलानी
संचालक : श्री राजकृष्ण जैन चैरीटेबल ट्रस्ट

मूल्य : ३० रुपये

श्रुतपंचमी (ज्येष्ठ शुक्ल ५)
वीर निर्वाण संवत् २५१०
सन् १९८४

मुद्रक : गीता प्रिंटिंग एजेंसी, द्वारा विन्ध्यवासिनी पैकेजिंग
न्यू सीलमपुर दिल्ली-५३

प्रस्तावना

प्रस्तुत पूजन पाठ स्तोत्र संग्रह को आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें स्तोत्रों, छः ढाला, नित्य नियम पूजा के साथ-साथ गौतम स्वामी पूजन, सलूनो पूजन के अतिरिक्त श्री वृन्दावन जी कृत चतुर्विंशति पाठ है व साथ में सिद्ध क्षेत्र पूजाएं। अभी तक जो चौबीसी पाठ प्रकाशित हुए हैं उनमें पंच कल्याणक तिथियों में विभिन्नता पाई जाती है। जितने भी प्रचलित पाठ हैं उनको एकत्र करके व वीर सेवा मंदिर से प्रकाशित श्री मिलाप चन्द्र रतन लाल जी कटारिया केकड़ी द्वारा संशोधित पचकल्याणक तिथियां निबंध रत्नावली से ली गई है। फिर भी पूजार्थियो से निवेदन है कि कहीं पर त्रुटी रह गई हो तो कृपया शुद्ध कर ले व हमें भी सूचित करने की कृपा करे। पंच कल्याणक तिथियां तथा उनसे हिन्दू त्योहारों का मिलान करके एक तालिका भी दी जा रही है।

इस पूजन पाठ का संग्रह अहिंसा मंदिर के संस्थापक श्री राजकृष्ण जैन के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन की धर्म पत्नी श्री पद्मावती जैन ने किया था, परन्तु दुर्भाग्य से गत अनन्त चतुर्दशी को उनका स्वर्गवास हो गया उनकी इच्छानुसार ये पूजन पाठ पुस्तिका उनके सास-ससुर, (श्री राजकृष्ण जी व माता कृष्णा देवी जी) को समर्पित की जा रही है।

हम श्रीयुत पं० बाबूलाल जी जमादार बड़ौत के आभारी हैं, जिन्होंने इसके प्रकाशन में सक्रिय सहयोग दिया व प्रूफ आदि शुद्ध किये।

विश्वास है कि लोग इसका सदुपयोग करेंगे।

श्रुत पंचमी वीर नि० संवत् २५१० पद्मचन्द्र जैन शास्त्री

श्री प्रेमचन्द्र जैन (अहिंसा मन्दिर दिल्ली) अपने पिता श्री राजकृष्ण जैन माता श्रीमती कृष्णादेवी जैन व पत्नी श्रीमती पद्मावती जैन के साथ

समर्पण

अपने धर्मपरायण धर्म पिता व माता
(ससुर व सास) श्री राजकृष्ण जैन
एवम् श्रीमती कृष्णा देवी जैन
को सादर—

पद्मावती जैन

अनन्त चतुर्दशी वीर निर्वाण संवत् २५०९
बुधवार २१ सितम्बर १९८३

श्रीमती पद्मावती जैन

आपका जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध घराने में बाबू सालिगरामजी (उर्फ गुल्लू बाबू) के यहां श्रावण कृष्ण १४ (जिस दिन भगवान शिव को गंगाजल हरिद्वार से कांवरों द्वारा ले जाकर वाराणसी-बैजनाथ धाम आदि तीर्थों पर अर्पण किया जाता है) ३० जौलाई १९२४ को हुआ था। आपके परदादा श्री छेदीलालजी ने भगवान सुपार्श्वनाथ के जन्म स्थान भदैनी घाट वाराणसी में एक जिन मन्दिर का निर्माण कराया था। आपके बाबा श्री गणेशदासजी व पिता श्री गुल्लू बाबू वहां प्रतिदिन पूजन करने जाते थे। आपकी बड़ी बहन श्रीमती राजुलमनी जैन लहरपुर (सीतापुर) के प्रसिद्ध जमीदार ला० दीपचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री शान्तिदासजी बी० ए० एल० एल० बी० से ब्याही थी। उन्होंने भी अपने गाव मे एक जिन मन्दिर का निर्माण कराया था। आपके छोटे भाई श्री सुपारसदास जैन भी धार्मिक वृत्ति के हैं। उनके बड़े पुत्र डा० अशोक कुमार जैन व इजीनियर श्री प्रदीपकुमार जैन हैं। आपका विवाह ६ फरवरी १९४२ को देहली के प्रसिद्ध श्री राजकृष्णजी जैन के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन से हुआ। आपकी ननद श्री कान्ता जैन का विवाह देहरादून के श्री नरेन्द्रकुमार जैन से हुआ। उनके दो पुत्र श्री दिनेशकुमार जैन व राजेशकुमार जैन है।

आप जन्म से ही भाग्यशाली रही। आपको पितृगृह व ससुराल मे पूरा स्नेह व सम्मान मिला। आप शान्त चित्त, अतिथि-सेवा परायण, सरल हृदया, वात्सल्यमयी थी। पति-पत्नी नित्य प्रति पूजन करते थे। आपकी चारो पुत्रियां क्रमश: श्रीमती उषा जैन बी०ए०—श्री महावीर प्रसाद जैन एम० फार्मा० आगरा से, श्रीमती विजय जैन—श्री चक्रेश कुमार जैन बिजली वाले देहली से, श्रीमती कुन्दप्रभा जैन—श्री विनोदकुमार जैन इजीनियर व श्रीमती स्वयंप्रभा जैन एम० ए०—श्री अतुलकुमार जैन इजीनियर रोहतक निवासी (हाल गाजियाबाद) मे ब्याही गई व तीनों पुत्र श्री भारत भूषण जैन, एडवोकेट—श्रीमती निरुपमा जैन एम० ए०, डा० देश भूषण जैन सर्जन—श्रीमती रेणु जैन बी० ए० व श्री धर्म भूषण जैन चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट—श्रीमती निशा जैन एम० ए० से विवाहित हुए। आप अपने पीछे १५ पौत्र-पौत्रियां, धेवते-धेवतियां छोड़ गई हैं।

आपने एक बार अपने पितृगृह की ओर से गुजरात दक्षिण के तीर्थों की यात्रा की। ससुराल की ओर से अपने सास-ससुर, पति व बच्चो के साथ अनेकों बार सम्मेदशिखरजी, महावीरजी, अहिक्षेत्र, खण्डगिरि-उदयगिरि, बड़ौत-हाँसी,

शौरीपुर बवट्टेश्वर, कमलदह (पटना), श्रावस्ती, कौशाम्बी, चन्द्रपुरी, श्रेयांसनाथ (सारनाथ) अयोध्या, रतनपुरी, मथुरा, चौरासी, केसरियानाथ(ऋषभदेव), पदमपुरी, तिजारा, चम्पापुर, पावापुर, राजगृही, गिरनारजी सोनगढ़, पालीताना तारंगा, मुक्तागिरि, पावागढ़, श्रवणबेलगोल; मूडबिद्री, कुम्भोज, बाहुबली, हूमचा—पद्मावती, हलेबिड, कारकल वेणुर, धर्मस्थल, गजपंथा, ऊन, बड़वानी, सिद्धवरकूट, सोनागिर, अहारजी, पपौरा, नैनागिर, द्रोणागिरि, खजुराहो, देवगढ़, चन्देरी, थौवनजी, एलौरा-अजन्ता आदि तीर्थों के कई बार दर्शन किये। हिन्दू तीर्थों में जगन्नाथपुरी, बैजनाथधाम, बद्रीनाथ, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग. जोशीमठ, गोवर्धन, बृन्दावन, नाथद्वारा आदि तीर्थों पर भी गई।

आपका पितृगृह व ससुराल दोनों मे ही अनेक आचार्यों, मुनिराजो, आर्यिकाओ जैसे—आचार्य नमिसागर जी, आचार्य सूर्यसागर जी, आचार्य देशभूषण जी, धर्मसागर जी, एलाचार्य विद्यानन्द जी, श्री कानजी स्वामी, ज्ञानमती माताजी, भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी हूमचा, चारुकीर्तिजी श्रवणबेलगोल, श्री लक्ष्मीसेनजी नरसिंहराजपुर आदि, क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी, श्री मनोहर वर्णी ब्रह्मचारियो व आचार्य श्री तुलसी, मृगावतीजी महाराज, सत बाल मुनिजी, राष्ट्र सत नागराजजी आदि का आशीर्वाद मिलता रहा है। व यही ठहरते रहे हैं। ससुराल तो विद्वानों का गढ़ ही रहा है जिसमें वेद विशारद पं० मंगलसैनजी अम्बाला छावनी, पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार, सर्वश्री बाबू रतनचन्दजी मुख्तार सहारनपुर, पं० तुलसीरामजी बडौत, पं० माणिकचन्द्रजी कौन्देय फिरोजाबाद, डा० हीरालाल जी, डा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय, पं० वर्धमान शास्त्री, ब्र० सुमतिबाई शाह, पं० मक्खनलालजी मोरेना, पं० राजेन्द्रकुमारजी, पं० फूलचन्द्रजी शास्त्री, पं० महेन्द्रकुमारजी न्यायतीर्थ, पं० कैलाशचन्द्रजी वाराणसी, पं० दरबारीलालजी कोठिया, पं० लालबहादुर शास्त्री, प० बाबूलालजी जमादार, पं० पद्मचन्द्रजी शास्त्री, प० शिखरचन्दजी प्रतिष्ठाचार्य श्री विनयकुमार पथिक, पं० परमेष्ठीदास, पं० पन्नालालजी साहित्याचार्य, प० बलभद्रजी श्री नरेन्द्र विद्यार्थी आदि को तो हमेशा ही स्नेहस्त सर पर रहा है। वे यहां ठहरते रहे हैं

राष्ट्रीय नेताओं में आपके पारिवारिक सम्बन्ध स्व० डा० राजेन्द्र प्रासजी। राजाजी, श्रीमौलाना अब्दुलकलाम आजाद, श्री सतनारायणसिंह, श्री के० सी०

रेड्डी, श्री जयसुखलाल जी हाथी, श्री तखतमल जैन, श्री मिश्रीलालजी गंगवाल, श्री मेनन, भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति डा० जाकीर हुसैन, श्री बी० डी० जत्ती, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री राजबहादुर, श्री जगदीशनारायण अग्रवाल, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री ए० एन० झा, श्रीकृष्णचन्द्र, डाक्टर शंकरदयाल शर्मा श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर, श्री गुलजारीलाल नन्दा, डा० कैलाशनाथ काटजू, डा० कालीदास नाग, श्री व श्रीमती अरुणा आसफअली आदि से रहे हैं।

पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी ने लाला राजकृष्णजी को अपने पत्र फाल्गुण वदी १० सवत् २००६ दिनांक १८-२-१९५० में इनके विषय में लिखा था कि 'चि० प्रेमचन्द्र योग्य बालक है, उसकी गृहणी सुशील व कोमल प्रवृति की है, इनको भी स्वाध्याय में साथ रखना।'

आपने हरिवंश कथा (बाल संस्करण) व प्रद्युमन कथा का भी सम्पादन किया जो प्रकाशित हो चुका है। आपके द्वारा पांडव कथा का भी रूपान्तर किया गया है जो प० लालबहादुरजी शास्त्री के अवलोकनार्थ गया हुआ है। प्रस्तुत पूजन पाठ का सकलन आप ही के द्वारा हुआ है।

आपका घराना बहुत धार्मिक व सामाजिक है। आपके ससुर श्री राजकृष्ण जी जैन ने श्री राजकृष्ण जैन चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की। उसके अन्तर्गत आपने दरियागंज देहली में एक भव्य अहिंसा मन्दिर जिसमे जिन मन्दिर, धर्मशाला, औषधालय, नर्सिंगहोम, सरस्वती भवन व वाचनालय बनवाया। इस ट्रस्ट द्वारा जिसकी आप उपध्यक्षा थीं–अनेकों धार्मिक व सामाजिक कार्य हुए मुख्यत:—

(१) मोदीनगर में प्रथम जैन मन्दिर के निर्माण के वास्ते भूमि प्राप्त की, जिस पर श्री रघुवीर सिंह जी जैनावाच कम्पनी व अन्य लोगो ने भव्य मन्दिर निर्माण कराया।

(२) मूडबिद्री स्थित सिद्धान्त वस्ती (मन्दिर) में सुरक्षित धवल-जयधवल, महाधवल ग्रन्थों के फोटो लेकर राष्ट्रीय सग्रहालय मे मूल ग्रथोंका जीर्णोद्वार कराया।

(३) उपरोक्त ग्रंथों को व रत्नमई जिनबिम्बों की सुरक्षा के वास्ते मूडबिद्री में श्रीमती कृष्णादेवी राजकृष्ण जैन देहली धवलोद्वार गृह का निर्माण कराया।

(४) श्रवणबेलगोल में भट्टारक गृह के नीचे पद्मावती प्रेमचन्द्र जैन सरस्वती भवन व वाचनालय का निर्माण कराया।

(५) हरिद्वार में अहिंसा मन्दिर (प्रथम दिगम्बर जैन मन्दिर) के वास्ते उत्तर प्रदेश शासन से भूमि लेकर जिन मन्दिर, धर्मशाला, वाचनालय, प्रवचन हाल व औषधालय का निर्माण कराया, जो अब तक चालू है।

(६) कुरुक्षेत्र में अहिंसा मन्दिर (प्रथम दि० जैन मन्दिर) के वास्ते कुरुक्षेत्र विकास मण्डल से अपने ट्रस्ट के नाम भूमि ली जिसके मानचित्र आदि पास हो हो गये हैं।

(७) पिलानी में अहिंसा मन्दिर (प्रथम दिगम्बर जैन मन्दिर) के वास्ते भूमि प्राप्त कर के मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जो चालू है।

(८) मायसौर विश्वविद्यालय में श्री राजकृष्ण जैन शिष्य वृत्ती फन्ड की स्थापना की।

(९) दिल्ली विश्वविद्यालय मे ११,००० रु० प्रदान कर जैन धर्म के विविध विषयों पर श्री राजकृष्ण जैन स्मृति वार्षिक व्याख्यान माला की स्थापना की, जिसके अन्तर्गत हुए न्यायमूर्ति श्री टी० के टुकोल, जवाहरलाल नेहरू विश्व-विद्यालय के कुलाधिपति डा० दौलतसिंह जी कोठारी, मायसौर विश्वविद्यालय के प्राकृत व जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो० टी० जी कलघटगी, स्याद्वाद विद्यालय के प्रसिद्ध विद्वान सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाश जी शास्त्री आदि के भाषण तो प्रकाशित भी हो चुके हैं।

(१०) विदेशों के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में जैन शास्त्र प्रदान किये।

(११) भारत की जेलों में जैन ग्रन्थ भेंट किये।

(१२) देहली दरियागंज, अहिंसा मन्दिर के नीचे व हिन्दी पार्क में विद्युत चालित शीतल जल प्याऊ का निर्माण कराय।।

(१३) सस्कृत जैन स्कूल कूचा सेठ व कन्या स्कूल धर्मपुरा में विद्युत चालित शीतल जल मशीन दी।

(१४) सराक क्षेत्र विहार मे जलकूप बनाकर भेंट किया।

(१५) हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में निर्मित सुमेरु मे एक चैत्यालय का निर्माण कराया।

(१६) हस्तिनापुर में ही वहां शवदाह स्थान पर श्रीमती कृष्णादेवी जैन की स्मृति में तीन चबूतरे शवों के दाह संस्कार निर्मित बनाकर अर्पण किये। उससे पहले वहां घास पर ही शवों का दाह संस्कार होता था।

(१७) विहार में प्राकृतिक प्रकोप के समय १०,००० रु० प्रधानमन्त्री राहतकोष मे दान दिया।

(१८) आन्ध्र प्रदेश में प्राकृतिक प्रकोप के समय १५,००० रु० प्रधानमंत्री कोष में दान दिया।

(१९) आदर्श महिला विद्यालय, श्री महावीरजी में स्वैटर बनाने की मशीन भेंट की।

(२०) श्री दिगम्बर जैन महावीर भवन (धर्मशाला) मसूरी में कमरे का निर्माण कराया।

(२१) अहिक्षेत्र के शास्त्र भण्डार मे तीन लोहे की अल्मारिया भेंट की।

(२२) पालम हवाई अड्डे के पास नव निर्मित मन्दिरजी में भगवान महावीर की प्रतिमा भेंट की।

(२३) चार वर्षों से गोरक्षा के लिए आन्दोलन मुनि श्री ज्ञानचन्दजी व श्री राधाकृष्णजी बजाज के नेतृत्व मे आपके ही यहां से श्रीमती कृष्णा देवी राजकृष्ण जैन स्मृति भवन से चल रहा है। आपने उनके ठहरने के लिए स्थान फ्री बिजली, पानी की व्यवस्था की हुई है।

(२४) इसके अतिरिक्त झज्जर के मन्दिर जी के जीर्णोद्धार मे, बागपत के स्कूल मे कई असमर्थ परिवारो की लड़कियो के विवाहो मे, अनेको की तीर्थ-यात्रा कराने आदि मे गरीबो को तो कम्बल आदि बांटने का तो कहना ही क्या है।

(२५) ट्रस्ट द्वारा समयसार, अध्यात्म तरगनी, भगवान महावीर पुराने घाट नई सीढ़िया तन से लिपटी बेल, युगवीर भारती, भक्तिगुच्छक आदि ग्रथो का प्रकाशन भी हुआ है।

प्रसिद्ध गाधी–इरविन समझोता ४-३-१९३१ को आपकी ही कोठी न० १ दरियागज देहली मे समपन्न हुआ था उस समय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष डा० मुख्तार अहमद असारी यही रहते थे व गाधी जी यहीं ठहरे हुए थे।

आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास सा हो गया था। आपने अपने ६०वे जन्म प्रवेश (३०-७-८३) पर लगभग ३००० रु० का रजतकलश मन्दिरजी को भेंट किया। ५-९-८३ को तिजारा दर्शनार्थ गईं, वहा से लौटकर अपनी वसीयत लिखवाई जिसमे एक न० दरियागज दिल्ली में एक मकान जो आपके नाम पर था और जिसका लगभग १७०० रु० माहवार किराया आता है, धार्मिक व सामाजिक कार्यों के लिए श्री राजकृष्ण जैन चैरिटेबल ट्रस्ट को दे दिया। १०-९-८३ को मालव गाव (हरियाणा) से लाई हुई लगभग ५०० वर्ष प्राचीन कुंथनाथ व नैमनाथ भगवान की प्रतिमायें भी राजकुमारजी सेठी डोमापुर (नागालैंड) द्वारा वायुयान से डीफू मे बन रहे दिगम्बर जैन मन्दिर के लिए भेंट मे भेजी। २१/२२-९-८३ को अनन्त चतुर्दशी भगवान बासुपूज्य के निर्वाण दिवस की रात्रि को महा प्रयाण किया। आपके शव पर गौ सेवा समाज वर्धा की ओर से वाराणसी व दिल्ली वालो की ओर से पुष्प मालायें, सूत की कालायें, शाल आदि चढ़ाये गये।

उनके दिवंगत होने के दुखद समाचार देहली के हिन्दुस्तान टाइम्स, नवभारत टाइम्स, जैन सन्देश, जैन गजट,करणाद्वीप, जैन मित्र, अखिल भारतवर्षीय दि०जैन शास्त्री परिषद का धर्मरक्षा बुलेटिन, जैन प्रचारक, बल्लभ सन्देश, वीतरागवाणी, सम्यग्ज्ञान, आदि पत्रों में प्रकाशित हुए। जगतगुरु भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्तिजी स्वामी हूमचा, भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी श्री जैन मठ श्रवणबेलगोल, मूडविद्री के भट्टारक श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्य स्वामीजी मुनि श्री ज्ञानचन्दजी आनन्द (गुजरात), श्री महावीर अकादमी जयपुर के डा० कस्तूर चन्दजी कासलीवाल, धाड़वाड विश्वविद्यालय के जैन दर्शन के निदेशक डा० खडबडी, त्रिग्नहर पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र महुआ के श्री गमनलाल शाह, भगवान महावीर बाल संस्था केन्द्र टीकमगढ के महामन्त्री श्री अशोक कुमार जैन, सागर विश्वविद्यालय के श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, डा० ज्योतिप्रसादजी जैन लखनऊ, मायसोर विश्वविद्यालय के जैन दर्शन व प्राकृत विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० टी० जी० कलघटगी, सोलापुर से ब्र० सुमतिबाई शाह, जागृत वीर समाज देहली, की ओर से प्रस्ताव बम्बई से डा० जगदीशचन्द जैन, कुम्भोज बाहुबली से श्री माणिक चन्दजी भिसीकर, वाराणसी से प० कैलाशचन्दजी जैन, रोटरी क्लब आफ दिल्ली, लायस क्लब दिल्ली, जैन को-आपरेटिव बैंक के चेयरमैन श्री मदनलाल जैन, श्री वंशीधर शास्त्री जयपुर, श्री हीरालाल टोपी वाला सूरत, रोटरी इन्टरनेशनल, श्री शीतलकुमार जैन राची, राय बहादुर हरखचन्दजी रांची, श्री प्रेमचन्दजी जैन ज्वालापुर, श्री शिखरचन्द जी जैन रानी मिल मेरठ, श्री महेशचन्दजी जैन हस्तिनापुर, श्री युधिष्ठिर एडवोकेट इलाहाबाद, मायसोर से श्री सी० बी० एम० चन्द्रइया, श्री राजेन्द्रकुमार जैन विदिशा, श्री ज्ञानचन्द जैन रेणु सागर, श्री प्रीतमसिंह जैन चंडीगढ़, श्री नाथूलालजी शास्त्री इन्दौर, श्री जैनीलालजी जगाधरी, श्रीमती फूलमती जैन अलीगढ़, श्री शिखर चन्दजी जैन खरखरी, श्री विनयकुमार जैन पथिक मथुरा, श्री अमरचन्दजी जैन सतना, श्री नीरज जैन सतना, श्री कपलेश भूतपूर्व नगर निर्माण भोपाल, श्री राजकुमारजी अतिरिक्त सचिव मध्य प्रदेश शासन भोपाल, श्री रतनलाल जी कटारिया केकड़ी, श्री शैलेश कापडिया सूरत, श्री कनछेदीलालजी जैन शहडौल, श्री कपिल भाई कोटडिया हिम्मतनगर, श्री शेखर जेन भावनगर, श्री बंशीधरजी

जैन व्याकरणाचार्य बीना, सवाई सिं० श्री धन्यकुमार कटनी, श्री सुबोधकुमार जैन आरा, डा० एस० के० जैन दिल्ली, श्री ए०, श्रीचन्द शास्त्री मद्रास, श्री ज्ञानचन्द जी जैन खिन्दूका जयपुर, श्री सुरेश जैन पानीपत, श्री दयाचन्द राजेन्द्रकुमार जैन जगराओ (पंजाब), श्री अनन्तप्रसादजी जैन गोरखपुर, श्री श्री सुनीलकुमार जैन ओबरा, श्री मुलायमचन्दजी जैन जबलपुर, श्री लालचन्द जी जैन टिकैतनगर, श्री भगवानदास शोभालाल सागर, अमरीका से श्री अनन्तकुमारजी जैन आदि लोबों की संवेदनायें प्राप्त हुईं।

भोपाल से श्री नन्दनकुमारजी के सुपुत्र श्री जयकुमारजी, कुरुक्षेत्र से डा० प्रेमचन्द्र जैन, श्री सागरचन्द जैन, पिलानी से डा० जिनेश्वरदास जैन, पं० दरबारी लालजी कोठिया, प० खुशालचन्दजी गोरावाला, श्री सुपारसदासजी, श्री विमलकुमार जी, वाराणसी से तथा मेरठ से श्री चतरसेन जैन, जयचन्द जैन, पटना से श्री बद्रीप्रसाद जी सरावगी की पुत्र वधू व पौत्र, फरीदाबाद से चौधरी दीपकिशोर जी, कानपुर से श्री सन्तकुमार जी, रोहतक से बाबू जिनेन्द्र प्रसाद जी, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) से श्री प्रेमचन्द जी, लखनऊ से श्री अजित प्रसादजी, गजवासौदा से श्री प० ज्ञानचन्द जी स्वतत्र एव दमोह से प० अमृतलाल जी, भागचन्दजी, आगरा से श्री दाऊदयालजी, प० हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, टीकमगढ से प० विमलकुमारजी सोरया, बडौत से पं० बाबूलालजी जमादार, गाजियाबाद से लाला शीतलप्रसाद जैन, फिरोजपुर झिरका से श्री ताराचन्द प्रेमी, देहरादून व अम्बाला छावनी व अन्य जगह से और देहली समाज के लोगों के अतिरिक्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, देहली के अन्य न्यायाधीश, आयकर व अन्य अधिकारी, वकील, डाक्टर, वैद्य, प्रोफेसर अन्य गण मान्य व्यक्ति आदि स्वयं सवेदना प्रगट करने आये। दि० जैन समाज हरिद्वार, दि० जैन समाज कुरुक्षेत्र, दि० जैन समाज फरीदाबाद, श्री पावा-नगर निर्वाण क्षेत्र समिति गोरखपुर व अन्य कई जगहो से तो अपने-अपने यहां शोक प्रस्ताव भी पास किये।

कौन जी पायेगा आपको भूलकर, जुर्म कर जायेगा आपको भूलकर।
जिस तरफ हम मुड़े आप आये नजर, किस तरह हम जियें आपको भूलकर॥
ढूंढने उसको चला हूं, जिसे पा भी न सकूं, दिल से भुला भी न सकू।
सुख गया दिन टूट रही है शाम, लेकिन फिर से हरा हो गया एक तुम्हारा नाम॥

लालबहादुर शास्त्री दिल्ली

विषय-सूची

भाग प्रथम

क्र०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	मंगलाष्टकम्	१
२.	महावीराष्टक	३
३.	भक्तामर स्तोत्र	५
४.	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१५
५.	विषापहार स्तोत्र	१६
६.	श्री गोम्मटेश स्तवन	२४
७.	श्री दौलतराम जी कृत स्तुति	२६
८.	दर्शन पाठ हिन्दी	२९
९.	दर्शन पाठ संस्कृत	३१
१०.	अभिषेक पाठ	३३
११.	विनय पाठ	३६
१२.	स्तुति श्री भूधर जी कृत	३९
१३.	नित्य नियम पूजा	४०
१४.	देवशास्त्र गुरु-पूजा	४५
१५.	देवशास्त्र गुरुपूजा (श्री जुगलकिशोर जी)	५२
१६.	बीस तीर्थंकर पूजा	६१
१७.	देवशास्त्र गुरु-विद्यमान बीस तीर्थंकर और सिद्ध पूजा (सम्मिलित)	६५
१८.	कृत्रिमाकृत्रिम—जिन चैत्य पूजा	६९
१९.	सिद्ध पूजा	७१
२०.	श्री गोम्मटेश्वर पूजा	७६
२१.	सरस्वती पूजा	८१

२२. श्री गौतम स्वामी पूजा पं० राजमल पवैया कृत ८४
२३. सलूना पर्व पूजन ९०
२४. श्री विष्णु कुमार पूजन ९४
२५. सोलह कारण पूजन ९७
२६. पंचमेरु पूजा १००
२७. नन्दीश्वर द्वीप पूजा १०३
२८. दसलक्षण धर्म-पूजा १०६
२९. रत्नत्रय पूजा ११२
३०. दर्शन पूजा ११३
३१. ज्ञान पूजा ११५
३२. चारित्र पूजा ११६
३३. समुच्चय जयमाला ११७
३४ क्षमावणी पूजा ११८
३५. स्वयम्भू-स्तोत्र १२२
३६. महार्घ] १२४
३७. शान्तिपाठ १२५
३८. विसर्जन १२६
३९. भाषा-स्तुति १२७
४०. पंचपरमेष्ठी की आरती १२९
४१. भागचन्द्र कृत भजन १२९
४२. छहढाला १३०
४३. तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्षशास्त्रम्) १४२

भाग द्वितीय

चतुर्विंशति जिन व तीर्थ क्षेत्र पूजा

१. नामावली स्तोत्र १
२. समुच्चय चतुर्विंशति जिन पूजा ३
३. श्रीऋषभनाथ पूजा ७

४. श्री अजितनाथ जिन पूजा १३
५. श्री संभवनाथ जिन पूजा २०
६. श्री अभिनन्दन नाथ जिन पूजा २७
७. श्री सुमति नाथ जिन पूजा ३४
८. श्री पद्म प्रभु जिन पूजा ४२
९. श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजा ४८
१०. श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजा ५५
११. श्री पुष्प दंत जिन पूजा ६२
१२. श्री शीतल नाथ जिन पूजा ६८
१३, श्री श्रेयांस नाथ जिन पूजा ७५
१४. श्री वासुपूज्य जिन पूजा ८१
१५. श्री विमलनाथ जिन पूजा ८७
१६. श्री अनन्त नाथ जिन पूजा ९२
१७. श्री धर्मनाथ जिन पूजा ९७
१८. श्री शान्ति नाथ जिन पूजा १०३
१९. श्री कुन्थ नाथ जिन पूजा १०९
२०. श्री अरहनाथ जिन पूजा ११६
२१. श्री मल्लिनाथ जिन पूजा १२३
२२. श्री मुनिसुव्रत नाथ जिन पूजा १३१
२३. श्री नमिनाथ जिन पूजा १३८
२४. श्री नेमिनाथ जिन पूजा १४४
२५. श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा १४९
२६. श्री महावीर जिन पूजा १५४
२६. निर्वाण क्षेत्र पूजा १६०
२७. श्री सम्मेदाचल पूजा १६४
२८. श्री गिरनार क्षेत्र पूजा १७९

२६.	श्री पावापुर सिद्ध-क्षेत्रपूजा	१८५
३०.	श्री चम्पापुर सिद्ध-क्षेत्र पूजा	१८६
३१.	कैलाशगिरी पूजा	१६३
३२.	तारंगा गिरि पूजा	१६५
३३.	श्री पावागढ़ पूजा	१६८
३४.	श्री कुण्डल गिरि क्षेत्र पूजा	२००
३५.	श्री मन्दारगिरिजी पूजा	२०५
३७.	श्री नयनागिरि पूजा	२०६
३८.	श्री गजपंथ पूजा	२११
३६.	श्री मुक्तागिरि पूजा	२१६
४०.	श्री तुंगी गिरि पूजा	२१६
४१.	श्री शत्रुंजय पूजा	२२३
४२.	श्री कुन्थल गिरि पूजा	२२८
४३.	श्री सोना गिरि पूजा	२२५
४४.	श्री खण्ड गिरि क्षेत्र पूजा	२३२
४५.	श्री सिद्धवरकूट पूजा	२३५
४६.	श्री राजगृही क्षेत्र पूजा	२३६
४७.	श्री गुणावाजी सिद्ध क्षत्र पूजा	२४४
४८.	श्री द्रोणगिरि पूजा	२४६
४६.	श्री पावागिरि सिद्ध क्षेत्र	२४८
५०.	श्री कमलदह जी सिद्ध क्षेत्र पूजा	२५२
५१.	श्री जम्बू स्वामी पूजा	२५५
५२.	श्री सप्तऋषि पूजा	२५६
५३.	निर्वाणकाण्ड (प्राकृत)	२६३

—: o :—

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरा—सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योतरत्न-प्रभा—
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दव. स्थायिनः
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥११॥
नाभेयादिजिनाः प्रशस्तवदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति ।
त्रैलोक्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥२॥
ये पञ्चौषधिऋद्धयः श्रुततपो-वृद्धिगताः पञ्च ये ।
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिणः ॥
पञ्चज्ञानधराश्चयेपि विपुला, ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामर-गृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥

कैलाशो वृषभस्य निर्वृत्ति-मही, वीरस्य पावापुरी ।
चम्पा वा वासुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलोऽर्हताम् ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरी नेमीश्वरस्यार्हतः ।
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीति विधत्ते रिपुः ॥
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किंवा बहु ब्रूमहे ।
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति तरां, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥६॥
यो गर्भावतरोत्सवे भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवे ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥७॥
आकाशं मूर्त्यभावा-दघकुलदहना-दग्निरुर्वी क्षमाप्त्या ।
नैःसंगादायुरापः-प्रगुणशमतया, स्वात्मनिष्ठैः सुयज्वा ॥
सोमः सौम्यत्वयोगा-द्रविरिति च विदु-स्तेजसः सन्निधानाद् ।
विश्वात्मा विश्वचक्षु-र्वितरतु भवतो, मंगलं श्रीजिनेशः ॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखाः ॥
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थकामान्विताः ।
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

॥ इति मंगलाष्टकम् ॥

महावीराष्टक स्तोत्र

(कविबर भागचन्द)

शिखरिणी

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः ।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयीं वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलं
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतिमपि
महावीर-स्वामीं नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥
यदर्चाभावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः ।

लभन्ते सदभक्ता शिव-सुख-समाज किमु तदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनय ।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोद्भुत-गति
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनता या स्नपयति ।
इदानीमप्यपा बुध-जन-मरालै परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥६॥
अनिर्वारोद्रे कस्त्रिभुवन - जयी काम - सुभट
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजित
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिन
महावीर-स्वामी नयन-पथ गामी भवतु मे ॥७॥
महामोहातङ्क - प्रशमन - पराकस्मिक - भिषक्
निरोपेक्षो बन्धुर्विदित,महिमा मङ्गलकर ।
शरण्य साधूना भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥
महावीराष्टक स्तोत्र भक्त्या 'भागेन्दु' ना कृतम् ।
य पठेच्छृणुयाच्चापि स यालि परमा गतिम् ॥९॥

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्रीमानतुंगाचार्य)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥१॥
यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त - हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥
बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्य. क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥
वक्तुं गुणान्गुण-समुद्र शशाङ्क-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - नक्र चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बु निधिं भुजाभ्याम् ॥४॥
सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः ।

प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं-निज:शिशो:परिपालनार्थम्।।५।।

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चारुचाम्र कलिका-निकरैक-हेतु ।।६।।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त - लोकमलि - नीलमशेषमाशु
सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ।।७।।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ।।८।।

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त दोषं
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरण कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ।।९।।

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण भूत-नाथ
भुतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोतिः ।।१०।।

दृष्ट्वाभवन्तमनिमेष - विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधेरसितु क इच्छेत् ॥११॥
यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललाम - भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥
वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥१३॥
संपूर्ण-मंडल-शशाङ्क - कला - कलाप -
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् ।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥
निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल-पूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।

गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाँ
दीपोऽपरस्त्वमपि नाथ जगत्प्रकाश: ॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्य:
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभा;
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥
नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकार
गम्य न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति-
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम् ॥१८॥
किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तम: सु नाथ ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ॥१९॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु ।
तेज:स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥
मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।

किं वीक्षतेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
त्वामामनन्ति मुनयः परम पुमांस-
मादित्य-वर्णममल तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु
नान्यः शिव, शिव-पदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥
त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं
ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।

तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रय-जात-गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥
उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं
बिम्ब रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥२८॥
सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपु. कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र-रश्मेः ॥२९॥
कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥
छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् ।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-सङ्गमभूति-दक्ष; ।
सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषक: सन् ।
खे दुन्दुभिर्नदति ते यशस: प्रवादी ॥३२॥

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा ।
गन्धोद-विन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रयाता
दिव्या दिव. पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-सख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्ट:
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटुस्त्रिलोक्या: ।
दिव्य-ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणै-प्रयोज्य: ॥३५॥

उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ती
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्त:
पद्मानि तत्र विबुधा: परिकल्पन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृत: प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ।।३७।।
श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ।।३८।।
भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ता-फल-प्रकर-भूषित-भूमि-भाग: ।
बद्ध-क्रम: क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ।।३९।।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वन्हि-कल्प
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्त
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ।।४०।।
रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नील
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम्
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क-
स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंस: ।।४१।।
वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।

उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥
कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा-
स्त्वत्पाद-पकज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥
अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवत: स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥
उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्ना;
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशा: ।
त्वत्पाद-पंकज-रजोमृत-दिग्ध-देहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपा: ॥४५॥
आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घा:
त्वन्नाम-मन्त्रमनिशं मनुजा: स्मरन्त:
सद्य: स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥४६॥
मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
सङ्ग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिम मतिमानधीते ॥४७॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं
तं 'मानतुङ्ग' मवशा समुपैति लक्ष्मी: ॥४८॥

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

भुजगप्रयात छन्द

नरेंद्र फणीन्द्रं सुरेंद्र अधीशं,
शतेंद्रं सु पूजें भजे नाय शीशं ।
मुनींद्रं गणेंद्र नमों जोड़ि हाथं,
नमों देवदेवं सदा पार्श्वनाथं ॥१॥
गजेद्र मृगेंद्रं गह्यो तू छुड़ावै,
महा आगतें नागतें तू बचावै ।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै,
महा रोग तै बंध तै तू छुड़ावै ॥२॥
दुखोदु:खहर्ता सुखीसुक्खकर्ता,
सदा सेवकों को महानंदभर्ता ।
हरे यक्ष राक्षस्य भूतं पिशांचं,
विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाच ॥३॥

दरिद्रीनको द्रव्य के दान दीने,
अपुत्रीनकौं तैं भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारे विधाता,
सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥
महाचोर को वज्र को भय निवारै,
महापौन के पुंजतें तू उबारै।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा,
महालोभ-शैलेश को वज्र भारा ॥५॥
महामोह अंधेर को ज्ञान भानं,
महाकर्मकांतार को दौ प्रधानं।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी,
हर्यो मान तू दैत्य को है अकामीं ॥६॥
तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं,
तुही दिव्य चिंतामणि नाम एनं।
पशू नर्क के दुःखतें तू छुड़ावै,
महास्वर्ग तै मुक्ति में तू बसावे ॥७॥
करै लोह को हेम पाषाण नामी,
रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करै सेवता की करैं देवसेवा,
सुनै बैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥

जपै जाप ताके नहीं पाप लागें,
धरै ध्यान ताके सबै दोष भागें ।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे,
तुम्हारी कृपा तैं सरें काज मेरे ॥९॥

दोहा

गणधर इंद्र न कर सकें, तुम विनती भगवान ।
'द्यानत' प्रीति निहारकें, कीजे आप समान ॥१०॥

विषापहार स्तोत्र

आतम लीन अनन्त गुण,
स्वामी ऋषभ जिनेन्द्र ।
नित प्रति वन्दित चरण युग,
सुर नागेन्द्र नरेन्द्र ॥१॥
विश्व सुनाथ विमल गुण ईश,
विहरमान बन्दों जिन बीस ।
गणधर गौतम शारदमाय,
वर दीजै मोहिबुद्धि सहाय ॥२॥
सिद्ध साधु सत गुरु आधार,
करूँ कवित्त आत्म उपकार ।
विषापहार स्तवन उद्धार,
सुकवि औषधी अमृत सार ॥३॥

मेरा मंत्र तुम्हारा नाम,
तुम ही गारुड गरुड समान ।
तुम सम वैद्य नहीं संसार,
तुम स्याने तिहुँ लोक मँझार ॥४॥

तुम विषहरण करन जग सन्त,
नमो नमो तुम देव अनन्त ।
तुम गुण महिमा अगम अपार,
सुरगुरु शेष लहै नहि पार ॥५॥

तुम परमातम परमानन्द,
कल्पवृक्ष यह सुख के कन्द ।
मुदित मेरु नय-मण्डित धीर,
विद्यासागर गुण गम्भीर ॥६॥

तुम दधिमथन महा वरवीर,
संकट विकट भयभंजन भीर ।
तुम जगतारण तुम जगदीश,
पतित उधारण विसवाबीस ॥७॥

तुम गुणमणि चिन्तामणि रास,
चित्रबेलि चितहरण चितास ।
विघ्नहरण तुम नाम अनूप,
मंत्र यत्र तुमही मणिरूप ॥८॥

जैसे वज्र पर्वत परिहार,
त्यों तुम नाम जु विष-अपहार।
नागदमन तुम नाम सहाय,
विषहर विषनाशक क्षणमाय ॥९॥

तुम सुमरण चिते मनमाहि,
विष पीवे अमृत हो जाहि ।
नाम सुधारस दर्षे जहाँ,
पाप पंकमल रहै न तहाँ ॥१०॥

ज्यों पारस के परसे लोह,
निज गुण तज कंचनसम होह ।
त्यो तुम सुमरण साधे सूंच,
नीच जो पावे पदवी ऊँच ॥११॥

तुमहिं नाम औषधि अनुकूल,
महामंत्र सर जीवन मूल ।
मूरख मर्म न जाने भेव,
कर्म कलंक दहन तुम देव ॥१२॥

तुम ही नाम गारुड़ गह गहे,
काल भुजंगम कैसे रहे ।
तुम्हीं धनन्तर हो जिनराय,
मरण न पावें को तुम ठाय ॥१३॥

तुम सूरज उदकाघट जास,
संशय शीत न व्यापे तास।
जीवे दादुर वर्षे तोय,
सुन वाणी सरजीवन होय ॥१४॥
तुम बिन कौन करै मुझ पार,
तुम कर्त्ता-हर्त्ता किरपाल ॥१५॥
शरण आयो तुम्हरी जिनराज,
अब मो काज सुधारो आज।
मेरे यह धन पूँजी पूत,
साह कहै घर राखो सूत ॥१६॥
करौं वीनती बारम्बार,
तुम बिन कर्म करै को क्षार ॥१७॥
विग्रह ग्रह दुख विपति वियोग,
और जु घोर जलंधर रोग।
चरण कमल रज टुक तन लाय,
कुष्ट व्याधि दीरघ मिट जाय ॥१८॥
मैं अनाथ तुम त्रिभुवननाथ,
मात-पिता तुम सज्जन साथ।
तुम-सा दाता कोई न आन,
और कहाँ जाऊँ भगवान ॥१९॥
प्रभुजीं पतित उधारन आह,

बांह गहेकी लाज निबाह ।
जहँ देखो तहँ तुमहो आय,
घट-घट ज्योति रही ठहराय ॥२०॥
बाट सुघाट विषम भय अहाँ,
तुम बिन कौन सहाई तहाँ ।
विकट व्याधि व्यंतर जल दाह,
नाम लेत क्षण माहि विलाह ॥२१॥
आचार्य मानतुग अवसान,
संकट सुमिरो नाम निधान ।
भक्ता-मरको भक्ति सहाय,
प्रण राखे प्रगटें तिस ठाय ॥२२॥
चुगल एक नृप विग्रह ठयो,
वादिराज नृप देखन गयो ।
एकी भाव कियो निसन्देह,
कुष्ट गयो कंचनसम देह ॥२३॥
कल्याण मंदिर कुमुद चंद्र ठयो,
राजा विक्रम विस्मय भयो ।
सेवक जान तुम करी सहाय,
पारसनाथ प्रगटै तिस ठाय ॥२४॥
गई व्याधि विमल मति लही,
तहाँ फुनि सनिधि तुमहीं कही ।

भव सुदत्त श्रीपाल नरेश,
सागर जल संकट सुविशेष ॥२५॥
तहाँ पुनि तुमही भये सहाय,
आनन्द से घर पहुँचे जाय।
सभा दुश्शासन पकड़ो चीर,
द्रुपदी प्रण राखो कर धीर ॥२६॥
सीता लक्ष्मण दीनों साज,
रावण जीत विभीषण राज।
सेठ सुदर्शन साहस दियो,
शूली मे सिंहासन कियो ॥२७॥
बारिषेन नृप धरियो ध्यान,
ततक्षण उपजो केवल ज्ञान।
सिंह सर्पादिक जीव अनेक,
जिन सुमिरे तिन राखी टेक ॥२८॥
ऐसी कीरति जिनकी कहूं,
साह कहै शरणगत रहूं।
इस अवसर जीवें यह बाल,
मुझ सन्देह मिटे तत्काल ॥२९॥
बन्दी छोड़ विरद महाराज,
अपना विरद निबाहो आज।
और आलंबन मेरे नाहिं,

मैं निश्चय कीनो मन मांहि ॥३०॥
चरण कमल छोड़ों ना सेव,
मेरे तो तुम सतगुरु देव ।
तुम ही सूरज तुम ही चन्द,
मिथ्या मोह निकन्दनकन्द ॥३१॥
धर्मचक्र तुम धारण धीर,
विषहर चक्रबिडारन वीर ।
चोर अग्नि जल भूत पिशाच,
जल जङ्घम अटवी उदबास ॥३२॥
दर दुशमन राजा वश होय,
तुम प्रसाद गर्जे नाहि कोय ।
हय गज युद्ध सबल सामंत,
सिह शार्दूल महा भयवत ॥३३॥
दृढ बंधन विग्रह विकराल,
तुम सुमरत छूटे तत्काल ।
पांयन पनहीं नमक न नाज,
ताको तुम दाता गजराज ॥३४॥
एक उपाय थप्यो पुन राज,
तुम प्रभु बड़े गरीब निवाज ।
पानी से पैदा सब करो,
भरी डाल तुम रीती करो ॥३५॥

हर्त्ता कर्त्ता तुम किरपाल,
कीड़ी कुञ्जर करत निहाल।
तुम अनन्त ज्ञान अल्प मो ज्ञान,
कहं लग प्रभुजी करों बखान ॥३६॥
आगम पन्थ न सूझे मोहि,
तुम्हरे चरन बिना किमि होहि।
भये प्रसन्न तुम साहस कियो,
दयावन्त तब दर्शन दियो ॥३७॥
साह पुत्र जब चेतन भयो,
हँसत हँसत वह घर तब गयो।
धन दर्शन पायो भगवन्त,
आज अंग मुख नयन लसन्त ॥३८॥
प्रभु के चरण कमल मे नयो,
जन्म कृतारथ मेरो भयो।
कर युग जोड़ नवाऊँ शीश,
मुझ अपराध क्षमो जगदीश ॥३९॥
सत्रह सौ पंद्रह शुभ यान,
नारनौल तिथि चौदस जान।
पढ़े सुने तहाँ परमानन्द,
कल्पवृक्ष महा सुखकन्द ॥४०॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि सो लहै,

अचलकीर्ति आचारज कहै ।
याको पढ़ो सुनो सब कोय,
मनवाँछित फल निश्चय होय ।।४१।।

दोहा

भय भञ्जन रञ्जन जगत, विषापहार अभिराम।
संशय तज सुमिरो सदा, श्री जिनवर को नाम ।।४२।।

श्री गोम्मटेश संस्तवन

शत-शत बार विनम प्रणाम !

विकसित नील कमल दल सम हैं जिनके सुन्दर नेत्र विशाल ।
शरतचन्द्र शरमाता जिनकी निरख शांत छवि, उनन्त भाल ।
चम्पक पुष्प लजाता लख कर ललित नासिका सुषमा धाम ।
विश्ववंद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।१।।
पय सम विमल कपोल, झूलते कर्ण कंध पर्यन्त नितान्त ।
सौम्य, सातिशय, सहज शांति प्रद वीतराग मुद्राति प्रशांत ।
हस्तिशुंड सम सबल भुजाएं बन कृतकृत्य करे विश्राम ।
विश्वप्रेम उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।२।।
दिव्य संख सौंदर्य विजयिनी ग्रीवा जिनकी भव्य विशाल ।
दृढ़ स्कंध लख हुआ पराजित हिमगिरि का भी उन्नत भाल ।
जग जन मन आकर्षित करती कटि सुपुष्ट जिनकी अभिराम ।
विश्ववंद्य उन गोम्टेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।३।।

विंध्याचल के उच्च शिखर पर हीरक ज्यों दमके जिन भाव।
तपः पूत सर्वांग सुखद है आत्मलीन जो देव विशाल।
वर विराग प्रसाद शिखामणि, भुवन शांतिप्रद चन्द्र ललाम।
विश्ववंद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ॥४॥

निर्भय बन बल्लरियां लिपटीं पाकर जिनकी शरण उदार।
भव्य जनो को सहज सुखद हैं कल्पवृक्ष सम सुख दातार।
देवेन्द्रों द्वारा अर्चित हैं जिन पादारविंद अभिराम।
विश्ववंद्य उन गोम्टश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ॥५॥

निष्कलंक निग्रंथ दिगम्बर भय भ्रमादि परिमुक्त नितांत।
अम्बरादि-आसक्ति विवर्जित निर्विकार योगीन्द्र प्रशांत।
सिंह-स्याल-शुडाल-व्यालकृत उपसर्गो मे अटल अकाम ॥६॥

विश्ववंद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम।
जिनकी सम्यग्दृष्टि विमल है आशा-अभिलाषा परिहीन।
संसृति-सुख बांछा से विरहित, दोष मूल अरि मोह विहीन।
बन संपुष्ट विरागभाव से लिया भरत प्रति पूर्ण विराम।
विश्ववंद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ॥७॥

अंतरंग-बहिरंग-संग धन धाम बिवर्जित विभु संभ्रांत।
समभावी, मदमोह-रागजित् कामक्रोध उन्मुक्त नितांत।
किया वर्ष उपवास मौन रह बाहुबली चरितार्थ सुनाम।
विश्ववंद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ॥८॥

श्री दौलतरामजी कृत स्तुति

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रस लीन ।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि-रज-रहस विहीन ॥१॥

पद्धरि छद

जय वीतराग विज्ञानपूर,
जय मोहतिमिरको हरन सूर ।
जय ज्ञानअनतानंत धार,
दृगसुख-वीरजमडित अपार ॥२॥
जय परमशांत मुद्रा समेत,
भविजनको निज अनुभूति हेत ।
भवि भागनवशजोगेवशाय,
तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ॥३॥
तुम गुण चितत निजपरविवेक,
प्रगटै विघटै आपद अनेक ।
तुम जगभूषण दूपणविमुक्त,
सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप,
परमात्म परम पावन अनूप ।
शभ-अशुभविभाव अभाव कीन,

स्वाभाविकपरिणति मयअछीन ॥५॥
अष्टादश-दोषविमुक्त धीर,
स्व-चतुष्टयमय राजत गंभीर ।
मुनिगणधरादि सेवत महंत,
नवकेवललब्धिरमा धरंत ॥६॥
तुम शासन सेय अमेय जीव,
शिव गये जाहि जैहै सदीव ।
भवसागर मे दुख छार वारि,
तारन को अवर न आप टारि ॥७॥
यह लखि निज दुखगद हरण काज,
तुम ही निमित्तकारण इलाज ।
जाने तातैं मै शरण आय,
उचरो निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप,
अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।
निजको परको करता पिछान,
पर मे अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि,
ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तनपरणति मे आपो चितार,
कबहू न अनुभयो स्वपदसार ॥१०॥

तुम को बिन जाने जो कलेश,
पावे सो तुम जानत जिनेश ।
पशु-नारक-नर-सुर-गति मंझार,
भव धर-धर मर्यो अनंत बार ॥११॥
अब काललब्धिबलतैं दयाल,
तुम दर्शन पाय भयो खुश्याल ।
मन शांत भयो मिटि सकल द्वंद्व,
चाख्यो स्वातम-रस दुखनिकन्द ॥१२।
तातै अब ऐसो करहु नाथ,
बिछुरै न कभी तुव चरण साथ ।
तुम गुणगण को नहि छेव देव,
जग तारन को तुव विरद एव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय,
इन मे मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूं आप मे आप लीन,
सो करो होउं ज्यो निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह कछु और ईश,
रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारज के कारन सु आप,
शिव करहु, हरहु मम मोहताप ॥
शशि शांतिकरन तप हरन हेत,

स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय,
त्यो तुम अनुभवते भव नसाय ॥१६॥
त्रिभुवनतिहुंकाल मँझार कोय,
नहि तुम बिन निज सुखदाय होय ।
मो उर यह निश्चय भयो आज,
दुखजलधिउतारन तुम जिहाज ॥१७॥

दोहा

तुम गुण-गण-मणि गणपति,
गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै,
नमूं त्रियोगसँभार ॥१८॥

दर्शन-पाठ

प्रभु पतितपावन मैं अपावन,
चरन आयो सरन जी ।
यों विरद आप निहार स्वामी,
मेट जामन मरनजी ।
तुम ना पिछान्या आन मान्या,
देव विविधप्रकार जी ।

या बुद्धिसेती निज न जान्यो,
भ्रम गिन्यो हितकारजी ॥१॥
भवविकटवन मे करम वैरी,
ज्ञानधन मेरो हर्यो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय,
अनिष्टगति धरतो फिर्यो ।
धन घड़ी यो धन दिवस यो ही,
धन जनम मेरो भयों ।
अब भाग मेरो उदय आयो,
दरश प्रभुको लखलयो ॥२॥
छवि वींतरागी नगन मुद्रा,
दृष्टि नासापै धरैं ।
वसु प्रातिहार्य अनंत गुण जुत,
कोटि रवि छविको हरैं ।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो,
उदयरवि आतम भयों ।
मो उर हरष ऐसो भयो,
मनु रंक चिंतामणि लयो ॥३॥
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक,
वीनऊं तुव चरन जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन,

सुनहु तारन तरन जी ।
जाचूं नहीं सुर वास पुनि,
नरराज परिजन साथजी ।
बुध जाचहूं तुव भक्ति भव भव,
दीजिये शिवनाथ जी ॥४॥

दर्शन-पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापं-नाशनं ।
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनं ॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभं ।
अनेकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं ।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनं ॥४॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणं ।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धनं सुखवारिधे; ॥५॥
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय,
सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।

प्रशांतरूपाय दिगम्बराय,
देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ! ॥८॥
न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥६॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥११॥
जन्म जन्म कृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितं ।
जन्ममृत्युजरारोगं हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥
अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणांबुजवीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोकतिलक ! प्रतिभासते मे,
संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम् ॥१३॥

अभिषेक पाठ

दोहा

जय जय भगवन्ते सदा, मंगल मूल महान ।
वीतराग सर्वज्ञप्रभु, नमो जोरि जुगपान ।।

(छन्द अडिल्ल और गीत)

श्री जिन जग में ऐसो, को बुधवन्त जू,
जो तुम गुण बरननि करि पावै अन्त जू ।
इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी,
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी ।।
अनुपम अमित तुम गुणनि बारिधि, ज्यों अलोकाकाश है ।
किमि धरै हम उर कोष में सो अथक गुणमणिराश है ।।
पै जिन प्रयोजन सिद्धि को तुम नाम में ही शक्ति है ।
यह चित्त में सरधान यातें नाम ही में भक्ति है ।।

ज्ञानावरणी दर्शन आवरणी भने ।
कर्म मोहिनी अन्तराय चारो भने ।।
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में ।
इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरथान में ।।
तब इन्द्र जान्यो अवधितैं उठि सुरन युत वंदत भयो ।
तुम पुन्य को प्रेर्यो हरि ह्वै मुदित धनपति सौं चयो ।।
अब वेगि आय रचौ समवसृति सफल सुरपद को करौ ।
साक्षात श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ ।।२।।

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती।
चल आयो ततकाल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ।
दै परदच्छिना बार-बार बदत भयौ॥
अति भक्ति भीना नम्र चित्त ह्वै समवरण रच्यो सही।
ताकी अनूपम शुभगती को, कहन समरथ कोऊ नहीं॥
प्राकार तोरण सभा मण्डप कनक मणिमय छाजही।
नग जडित गंधकुटा मनोहर मध्य भाग विराजही॥३॥
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्‌भुत दिपै।
तापर बारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥
तीनछत्र सिर शोभित चौसठ चमर जी।
महाभक्ति युत ढोरत हैं तहाँ अमरजी।
प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अंतरीक्ष विराजिता।
यह वीतराग दशा प्रत्यक्ष विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि जीव मस्तक नायकैं।
बहुभाँति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गायकै॥४॥
परमौदारिक दिव्य देव पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नही॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग द्वेष निद्रा मद मोह सबै खसे॥
श्रमबिन श्रमजल रहित पावन अमल ज्योतिस्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभु की शांति मुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्तितें हम भानु ढिग दीपक धरे॥५॥

तुमतौं सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रताहेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतें ह्वै रह्यो॥
महामलिन तनमें वसुविधिवश दुख सह्यो॥
बीत्यो अनन्तो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिताहर एक तुमहो हरहु बांछा चित ठई।
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोषरोगादिक हरो।
तनरूप कारागेहसैं उद्धार शिववासो करो॥६॥
मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त रागवर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही॥
नयप्रमानतैं जानि महा साता लही।
पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंन का मानो न्हवन परसन करूं॥
(यहां पर जलाभिषक करें)
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभ बंध तें।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतै ह्वै शर्म सब विधि तासतै॥७॥
पावन मेरे नयन भये तुम दरसतें।
पावन पानि भये तुम चरनन परसतें॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतें।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं॥
पावन भई परजाय मेरो, भयो मैं पूरणधनो।
मैं शक्ति पूर्वक भक्ति कीनो, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥

धन्य ते बड़भागि भवि तिन नीव शिवघर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुम्भभरि भक्ति करी ॥८॥

विघनसघनवनदाहन-दहन प्रचण्ड हो।
मोह महातमदलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा करो।
जगविजयी जमराज नाश ताको करो॥

आनन्दकारण दुखनिवारण, परम मंगलमय सही।
मो सो पतित नहि और तुमसो, पतिततार सुन्यौ नही॥
चिंतामणी पारस कलपतरु, एकभाव सुखकार हो।
तुम भक्तिनौका जे चढ़ै ते, भये भवदधि पार ही ॥८॥

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमें उतारो पार॥

पूरा पाठ पढ़कर निर्मल वस्त्र से प्रतिमाजी का मार्जन करें। और पीछे चरणोदक ग्रहण करें। पश्चात ९ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर नमस्कार करें।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशो कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंथ तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥

तिहुं जगकी पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥३॥

हरता अघअंधियार के, करता धर्म प्रकाश ।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण सरोज कों, नावत तिहुं जग भूप ॥५॥

मैं बदौं जिनदेव को कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय ॥६॥

भविजनकों भव कूपतें, तुमहो काढ़न हार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतम - गुण - भंडार ॥७॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल ।
सरल करी या जगत में भविजन को शिव-गैल ॥८॥

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥९॥

चक्री-खगधर-इन्द्रपद, मिलैं आप तैं आप ।
अनुक्रमकर शिवपद लहै, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥

पतित बहुत पावन किये, बिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे कुधी जय जय जय जिनदेव ॥१२॥

थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय जय जय जिनदेव ॥१३॥
रागसहित जगमें रुल्यो, मिले सरागीदेव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेट्यो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
तुम को पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डबत-भव सिंधु मे, खेउ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकै, कोजे आप समान ॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितै, जग उतरत है पार।
हाहा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहऊ औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसो बनी, तातै करो पुकार ॥२०॥
बंदो पांचो परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरण मंगल करन, पूरन परम प्रकाश ॥२१॥
चौबीसो जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥२२॥

स्तुति

(कविवर भूधर जी)

अहो जगतगुरु देव, सुनिए अरज हमारी।
तुम प्रभु दीनदयाल, मै दुखिया संसारी॥
इस भव-बनके माँहि, काल अनादि गमायो।
भ्रम्यों चहूं गति माँहि, सुख नहिं दुख बहु पायो॥
कर्म महारिपु जार, एक न कान कर जी।
मनमाने दुख देहि, काहूसो नाँहि डरै जी॥
कबहूं इतर निगोद, कबहूं नरक दिखावे।
सुर-नर-पशु गतिमाँहि, बहुविधि नाच नचावे॥
प्रभु इनको परसंग, भव-भव माँहि बुरो जी।
जे दुख देखे देव, तुमसो नाँहि दुरो जी॥
एक जनम की बात, कहि न सकौं सुनि स्वामी।
तुम अनंत परजाय, जानत अंतरजामी॥
मै तो एक अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे॥
ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करि डार्यो।
इनही तुम मुझ माँहि, हे जिन अतरपार्यो॥
पाप पुन्य मिलि दोय, पायनि बेड़ी डारी।
तन-कारागृहमाँहि, मोहि दियो दुखभारी॥
इनको नेक बिगार, मै कछु नाँहि कियो जी।

बिन कारन जगवंद्य, बहु बिध वैर लियो जी ।।
अब आयौ तुम पास, सुन जिन सुजस तिहारो ।
नीति-निपुन जगराय, कीजै न्याय हमारो ।।
दुष्टन देहु निकाल, साधुन को रखि लीजै ।
विनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ढील न कीजै ।।

नित्य नियम पूजा

ॐ जय जय जय । नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरहंताण णमो सिद्धाण णमो आइरियाण ।।
णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूणं ।।१।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि क्षिपामि
चत्तारिमगलं — अरहंता मगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि सरण पव्वज्जामि—अरहंते सरण पव्वज्जामि,
सिद्धे सरण पव्वज्जामि— साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्म सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि
अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कार सर्व-पापैः प्रमुच्यते ।।१।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥२॥
अपराजितमन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मतः ॥३॥
एसो पच-णमोयारो सव्व-पाव-प्पणासणो ।
मगलाणं च सव्वेसिं पढम होइ मंगलं ॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं सर्वत प्रणमाम्यहम् ॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥६॥
विघ्नौघा प्रलय यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

[पुष्पांजलि क्षिपामि]

[सहस्रनाम स्तोत्रं पठित्वा क्रमशोऽर्घ्यं दशकं दद्यात् । समया-भावादधोलिखितं श्लोकं पठित्वा एकोऽर्घ्यो देयः ।]

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्रयेशं
स्याद्वाद्व-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्

श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥८॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभाव महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित दृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय ॥९॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकविततैक-चिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥१०॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूप
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥११॥
अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिञ्ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥१२॥

[इति पुष्पांजलिं क्षिपामि]

स्वस्ति-मंगलम्

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः ॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्धमानः ॥

[पुष्पांजलिं क्षिपामि]

नित्याप्रकम्पाद्भुत - केवलौघाः,
स्फुरन्मनः पर्यय - शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान - बलप्रबोधाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१॥

कोष्ठस्थ - धान्योपममेकबीजं,
सभिन्न सश्रोतृ - पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥२॥

संस्पर्शनं सश्रवणं च दूरा—

दास्वादन - घ्राण-विलोकनानि।

दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः,

प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।

प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥४॥

जङ्घावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु,

प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।

नभोऽङ्गण - स्वैर - विहारिणश्च,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलामहिम्नि,

लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।

मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्य,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो न ॥६॥

सकामरूपित्व - वशित्वमैश्यं,

प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।

तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः,

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं,
घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः,
स्वस्तिः क्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥
आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी—
र्विषविषा दृष्टिविषविषाश्च।
सखिल्ल-विड्-जल्ल-मलौषधीशाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तः,
मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास - महानशाश्च,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥
[प्रतिश्लोकसमाप्तेरनन्तरं पुष्पांजलिं क्षिपेत्]
इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानम्।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

अडिल्ल छन्द

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू।
गुरु निरग्रन्थ महंत मुकतिपुरपंथ जू॥

तीन रतन जगमाहिं सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥१॥

दोहा

पूजों पद अरहंत के पूजों गुरुपदसार ।
पूजों देवी सरस्वती नितप्रति अष्टप्रकार ॥२॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकरि वन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्जल देख छवि मोहित सभा ।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब जल-स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ॥१॥

जे त्रिजग-उदर मझार प्रानी तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके परम शीतलता भरे ॥

तसु भ्रमरलोभित घ्राणपावन सरस चन्दन घसि सचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त-गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं॥

दोहा

चंदन शीतलता करै तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥२॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो ससारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपा०।

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही॥
उज्जल अखण्डित सालि तन्दुल पुज धरि त्रयगुण जचू।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचू॥

दोहा

तंदुल सालि सुगधि अति परम अखण्डित बीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥३॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपा०।

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अम्बुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजग माँहि प्रधान हैं॥
लहि कुन्दकमलादिक पहुप भव भव कुवेदनसों बचूं।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचू॥

दोहा

विविध भांति परिमल सुमन भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन ॥४॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पंनिर्व०॥

अति सबल मदकंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सुगरुड़समान है॥
उत्तम छहों रसयुक्त नित नैवेद्य करि घृत में पचूं॥
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं॥

दोहा

नानाविधि सयुक्तरस व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरू तीन॥५॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोगविध्वंसनाय नैवेद्यं निर्वपा०

जे त्रिजग-उद्यम नाश कीने मोह-तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश ज्योति प्रभावली॥
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन के सुभाजन में खचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु- निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा

स्व-पर प्रकाशक जोति अति दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपा० ।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसैं ।
वर धूप तासु सुगंधिताकरि सकल परिमलता हंसैं ॥
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव-ज्वलनमांहि नहीं पचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

अग्निमाँहि परिमल दहन चंदनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥७॥
ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वसनाय धूपं निर्वपा० ।
लोचन सुरसना घ्रान उर उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी सकल फलगुणसार हैं ॥
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन परम अमृतरस सचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

जे प्रधान फल फलविषैं पचकरण-रस-लीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥८॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपा० ।
जल परम उज्जवल गंध अक्षत पुष्प चरुदीपक धरुं ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहुजनम के पातक हरुं ॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करतशिव-पंकति मचूं ।
अरहंतश्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

वसुविधि अर्घ संजोय कै अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपा०।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ रतन तीन करतार।
भिन्न-भिन्न कहु आरती अल्प सुगुणविस्तार ॥१॥

पद्धरी छन्द

कर्मण की त्रेसठ प्रकृतिनाशि,
जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण है अनत धीर,
कहवत के छयालिस गुणगभीर ॥
शुभ समवसरणशोभा अपार,
शत इंद्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहंत देव,
बंदो मन वच तन करि सुसेव ॥
जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप,
निरअक्षरमय महिमा अनूप।

दश-अष्ट महाभाषा समेत,
लघुभाषा सातशतक सुचेत ॥
सो स्याद्वादमय सप्त भंग,
गणधर गूंथे बारह सुअंग ।
रवि शशि न हरै सो तम हराय,
सो शास्त्र नमो बहु प्रीति ल्याय ॥
गुरु आचारज उवझाय साध,
तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध ।
संसार-देह वैराग्य धार,
निरवाँछि तपैं शिवपद निहार ॥
गुण छत्तिस पच्चीस आठवीस,
भवतारन तरन जिहाज ईस ।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय,
गुरु नाम जपों मन वचन काय ॥

सोरठा

कीजे शक्ति प्रमान शक्ति बिना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान अजर अमर पद भोगवै ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्य निर्वपामोति स्वाहा ।

दोहा

श्री जिनके परसाद तें सुखी रहे सब जीव ।
यातें तन मन वचन तें सेवो भव्य सदीव ॥
इत्याशीर्वादः पुष्पांजली क्षिपेत् ।

देवशास्त्र-गुरु-भाषा-पूजा

[जुगल किशोर]

स्थापना

केवल-रवि-किरणों से जिसका,
सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर।
उस श्री जिनवाणी में होता,
तत्वों का सुन्दरतम दर्शन ॥
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर,
अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण।
उन देव परम आगम गुरु को,
शत-शत वंदन शत-शत वंदन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम,
लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है,
मैं अब तक जान नहीं पाया ॥
मैं भूल स्वयं के वैभव को,
पर ममता में अटकाया हूं।
अब सम्यक् निर्मल नीर लिए,
मिथ्या मल धोने आया हूं ॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपा० ।

जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु,
अपने अपने में होती है।
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें,
यह झूठी मन की वृत्ती है॥
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित,
होकर संसार बढ़ाया है।
संतप्त हृदय प्रभु! चन्दन सम,
शीतलता पाने आया है॥२॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं।

उज्ज्वल हूं कुन्द धवल हूं प्रभु,
पर से न लगा हूं किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगे उन पर,
करता अभिमान निरन्तर ही॥
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन,
की मार्दव की खंडित काया।
निज शास्वत अक्षय निधि-पाने,
अब दास चरण-रज में आया॥३॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं।

यह पुष्प सुकोमल कितना है,
तन में माया कुछ शेष नहीं।
उर अन्तर का प्रभु! भेद कहूं,
उसमें ऋजुता का लेश नहीं॥

चिंतन कुछ, फिर संभाषण कुछ,
किरिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊं जो,
अन्तर का कालुष धोती है ॥४॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं ।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से,
प्रभु भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी,
पर रिक्त रही वह रिक्त रही ॥
युग युग से इच्छा सागर में,
प्रभु ! गोते खाता आया हूं।
पंचेन्द्रिय मन के षट् रस तज,
अनुपम रस पीने आया हू ॥५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

जग के जड़ दीपक को अब तक,
समझा था मैंने उजियारा ।
झंझा के एक झकोरे में,
जो बनता घोर तिमिर कारा ॥
अतएव प्रभो ! यह नश्वर दीप,
समर्पण करने आया हूं ।

तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर,
दीप जलाने आया हूं ॥६॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।

जड़ कर्म घुमाता है मुझको,
यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी ।
मैं राग-द्वेष किया करता,
जब परिणति होती जड़ केरी ॥
यों भाव करम या भाव मरण,
सदियों से करता आया हूं ।
निज अनुपम गंध अनल से प्रभु,
पर गंध जलाने आया हूं ॥७॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं ।

जग में जिसको निज कहता मैं,
वह छोड़ मुझे चल देता है ।
मैं आकुल व्याकुल हो लेता,
व्याकुल का फल व्याकुलता है ॥
मैं शान्त निराकुल चेतन हूं,
है मुक्तिरमा सहचर मेरी ।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े,
प्रभु ! सार्थक फल पूजा तेरी ॥८॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामि० ।

क्षण भर निज रस को पी चेतन,
मिथ्या मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये,
निज आनन्द अमृत पीता है।
अनुपम सुख तब विलसित होता,
केवल रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता,
यह ही अर्हन्त अवस्था है ॥
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु !
निज गुण का अर्घ बनाऊंगा।
अरु निश्चित तेरे सदृश प्रभु !
अर्हन्त अवस्था पाऊंगा ॥६॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामि०।

स्तवन

भव वन में जी भर घूम चुका,
कण कण को जी भर भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे,
मुझको न मिली सुख की रेखा ॥१॥
झूठे जग के सपने सारे,
झूठी मन की सब आशायें।

तन-यौवन-जीवन अस्थिर है,
क्षण भंगुर पल में मुरझायें ॥२॥
सम्राट महा-बल सैनानी,
उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अशरण मृत काया में हर्षित,
निज जीवन डाल सकेगा क्या ॥३॥
संसार महा दुख सागर के,
प्रभु दुखमय सुख-आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी,
कंचन-कामिनि-प्रासादों में ॥४॥
मैं एकाकी एकत्व लिए,
एकत्व लिए सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था,
पर ये भी छोड़ चले जाते ॥५॥
मेरे न हुए ये मैं इन से,
अति भिन्न अखण्ड निराला हूं।
निज में पर से अन्यत्व लिए,
निज सम रस रस पोने वाला हूं ॥६॥
जिसके शृंगारों में मेरा,
यह मंहगा जोवन धुल जाता।
ात्यन्त अशुचि जड़ काया से,
इस चेतन का कैसा नाता ॥७॥

दिन रात शुभाशुभ भावों से,
मेरा व्यापार चला करता।
मानस वाणी अरु काया से,
आश्रव का द्वार खुला रहता ॥८॥
शुभ और अशुभ की ज्वाला से,
झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणें फूटें,
संवर से जागे अन्तर्बल ॥९॥
फिर तप की शोधक वन्हि जगे,
कर्मों की कड़िया टूट पड़ें।
सर्वाङ्ग निजात्म प्रदेशों से,
अमृत के निर्झर फूट पड़े ॥१०॥
हम छोड़ चले यह लोक तभी,
लोकान्त विराजे क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो,
शोकात बनें फिर हमको क्या ॥११॥
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो।
दुर्नयतम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊं,
मद-मत्सर मोह-विनश जावे ॥१२॥
चिर रक्षक धर्म हमारा हो,
हो धर्म हमारा चिर साथी।

जग में न हमारा कोई था,
हम भी न रहें जग के साथी ॥१३॥
चरणों में आया हूं प्रभुवर,
शीतलता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी,
निज अन्तरबल से खिल जावे ॥१४॥
सोचा करता हू भोगों से,
बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन,
मानों पावक में घी डाला ॥१५॥
तेरे चरणों की पूजा से,
इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु !
सच्चे सुख की भी परिभाषा ॥१६॥
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर !
जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में,
जग के माणिक मोती सारे ॥१७॥
स्याद्वाद मयी तेरी वाणी,
शुभनय के झरने झरते हैं।
इस पावन नौका पर लाखों,
प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं ॥१८॥

हे गुरुवर ! शाश्वत सुख-दर्शक,
यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा,
दिग्दर्श कराने वाला है ॥१९॥
जब जग विषयों में रच-पच कर,
गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक,
पथ में विष-कंटक बोता हो ॥२०॥
हो अर्द्ध निशा का सन्नाटा,
वन में वनचारी चरते हो।
तब शान्त निराकुल मानव तुम,
तत्वों का चिंतवन करते हो ॥२१॥
करते तप शैल नदी तट पर
तरु तल वर्षा की झड़ियों में
समता रस पान किया करते,
सुख-दुख दोनो को घड़ियो में ॥२२॥
अन्तर ज्वाला हरती वाणी,
मानों झड़ती हों फुलझड़ियां।
भव बन्धन तड़ तड़ टूट पड़े,
खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥२३॥
तुम सा दानी क्या कोई है,
जग को देदीं जग की निधियां।

दिन-रात लुटाया करते हो,
सम-शम की अविनश्वर मणियां ॥२४॥
हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम,
हे ज्ञान दीप आगम ! प्रणाम।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान,
शिव-पथ-पंथी गुरुवर ! प्रणाम ॥२५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपा० ।

बीस तीर्थंकर पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

दीप अढ़ाई मेरु पन सब तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूं मन वच तन धरि सीस ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इन्द्र-फणीन्द्र-नरेन्द्रवंद्य पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार सार गुण हैं अविकारी ॥
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो) पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मंझार ॥

श्रीजिनराज हो भव तारणतरण जहाज ।।१।।

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-संजात-स्वयंप्रभ-वृषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु भुजङ्गम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरषेण- महाभद्र - देवयशोऽजितवीर्याश्चेति-विंशतिविद्यमानतीर्थङ्करेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ।

तीन लोक के जीव पाप आताप सताये ।
तिनको साता दाता शीतल वचन सुहाये ।।
बावन चंदन सो जजू (हो) भ्रमन तपन निरवार ।।सीमं०।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं० ।

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी ।
तातै तारे बड़ी भक्ति-नौका जगनामी ।।
तन्दुल अमल सुगधसों (हो) पूजों तुम गुणसार ।।सीमं०।।

ॐ ह्री विद्यमान विंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपा० ।

भविक-सरोज-विकाश निंद्य-तमहर रवि से हो ।
जति-श्रावक आचार कथन को तुम्हीं बड़ हो ।।
फूल सुवास अनेकसों (हो) पूजो मदनप्रहार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपा० ।

काम-नाग विषधाम नाशको गरुड़ कहे हो ।
क्षुधा महादवज्वाल तासुको मेघ लहे हो ।।

नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो) पूजों भूख बिडार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपा० ।

उद्यम होन न देत सर्व जगमाहिं भर्यो है ।
मोह-महातम घोर नाश परकाश कर्यो है ।।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योति करतार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपा० ।

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा ।
ध्यान अगनिकर प्रगट सरब कीनो निरवारा ।।
धूप अनूपम खेवते (हो) दुःख जलैं निरधार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपा० ।

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकार भरे हैं ।
सबको छिन में जीत जैन के मेर खड़े हैं ।।
फल अति उत्तमसों जजों (हो) वांछित फलदातार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपा० ।

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है
गणधर इन्द्रनिहूतैं थुति पूरी न करी है ।।
'द्यानत' सेवक जान के (हो) जगतैं लेहु निकार ।।सीमं०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपा०

जयमाला

सोरठा

ज्ञान-सुधाकर चन्द भविक-खेत हित मेघ हो ।
भ्रम-तम भान अमन्द तीर्थङ्कर बीसों नमों ॥

चौपाई

सीमंधर सीमंधर स्वामी,
जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे,
करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥१॥
जात सुजातं केवलज्ञानं,
स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं,
अनन्तवीरज वीरजकोषं ॥२॥
सौरी प्रभ सौरीगुणमालं,
सुगुण विशाल विशाल दयाल ।
वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं,
चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं ॥३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता,
श्री भुजंग भुजंगम हरता ।
ईश्वर ,सबके ईश्वर छाजैं,
नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥४॥

वीरसेन वीरं जग जानै
महाभद्र महाभद्र बखानैं।
नमो जसोधर जसधरकारी,
नमो अजित वीरज बलधारी ॥५॥

धनुष पाँचसै काय विराजैं,
आव कोडिपूरव सब छाजैं।
समवसरण शोभित जिनराजा,
भव-जल तारनतरन जिहाजा ॥६॥
सम्यक रत्न-त्रयनिधि दानी,
लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी।
शत इन्द्रनिकरि वंदित सोहैं,
सुर नर पशु सबके मन मोहैं ॥७॥

दोहा

तुमको पूजैं वंदना करैं, धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै सो भी धरमी होय ॥८॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवशास्त्रगुरु-विद्यमान बीसतीर्थंकर और सिद्धपूजा

[सच्चिदानन्द कृत]

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह श्री विद्यमान विंशतितीर्थंकर

श्री सिद्ध समूह अत्रावतरअवतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अनादिकाल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना ।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय-निधि को नहिं पहिचाना ॥
अब निर्मल रत्नत्रय-जल लेकर, श्री देव शास्त्रगुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुसमूह श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह, श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जलम् नि० स्वाहा ।

भव आताप मिटावन की निज में ही क्षमता समता है ।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है ॥
चन्दन-सम शीतलता पाने, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ॥चन्दनम्॥

अक्षय पद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनि में ।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिग लाया मैं ॥
अक्षय-निधि निज की पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं ॥
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ॥अक्षतं॥

पुष्प सुगंधी से आतम ने शील स्वभाव नसाया है ।
मन्मथ-बाणों से बिंध करके चहुंगति दु:ख उपजाया है ॥
स्थिरता निज पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ॥पुष्पम्॥

षट् रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई ।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ॥

सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।नैवेद्यम्।।
जड़ दीप विनश्वर को अब तक समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दर्शायक दिव्य-ज्ञान से, मिटा मोह का अंधियारा ।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।दीपम्।।
ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलाएगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नसाएगी ।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।धूपम्।।
पिस्ता, बादाम, श्रीफल लवंग, तुव चरण निकट मैं ले आया।
आतमरस पीने निजगुणफल मम मन अब उनमें ललचाया ।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।फलम्।।
अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता में, निज मे निज गुण प्रगट भये ।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ।।अर्घम्।।

जयमाला

नसे घातिया कर्म अरहत देवा,
करें सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा।

दरस ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी,

छियालीस गुण युत महा ईस नामी ॥

तेरी दिव्य-वाणी सदा भव्य मानी,

महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी ॥

अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी,

नमो लोक माता श्री जैन-बानी ॥

बिरागी अचाराज उवज्झाय साधू,

दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू ॥

नगन वेशधारी सु एका विहारी,

निजानन्द मंडित मुकतपथ प्रचारी ।

विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजे,

बिहरमान बन्दूं सभी पाप भाजे ।

नमूं सिद्ध निरभय निरामय सुधामी,

अनाकुल समाधान सहजाभिरामी ॥

देव शास्त्र गुरु बीसतीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे ।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तरले रे ॥अर्घम्॥

भूत भविष्यत् वर्तमान की तीस चौबीसी मैं ध्याऊं ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में मन लाऊं ॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल संबंधी तीस चौबीसी, त्रिलोक संबंधी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यचैत्यालयेभ्यो अर्घ नि० स्वाहा ।

चैत्य भक्ति आलोचना चाहूं, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत ।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिनबिंब अनेक ॥

चतु निकाय के देव जजें, ले अष्ट द्रव्य निज कुटुम्ब समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूं मैं, कर समाधि पाऊं शिव खेत॥
(पुष्पांजलि क्षेपम्)
पूर्व मध्य अपरान्ह की बेला पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म की नासनहार॥
पंच महागुरु सुमिरन करके कायोत्सर्ग करूं सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, आऊंगा, मैं अब भवपार॥
(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)
षोडश-कारण भावना भाऊं, दशलक्षण हिरदय धारूं।
सम्यक् रत्नत्रय गहि करके, अष्ट करम का बन जारूं॥
ॐ ह्रीं षोडशकारण भावना दशलक्षण धर्म, सम्यकरत्नत्रयेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम-जिनचैत्य-पूजा

कृत्याकृत्रिम-चारु-चैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्॥
सद्गन्धाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकैः सद्दीप-धूपैः फलै-
र्द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शान्तये॥१॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्व०
वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु।
नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु।

यावन्ति चैत्यायतनानि लोके ।
सर्वाणि वन्दे जिनपुङ्गवानाम् ॥२॥
अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां ।
वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम् ।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां ।
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षत्र-त्रये ये भवा—
श्चन्द्राम्भोज- शिखण्डिकण्ठ-कनक प्रावृड्घनाभाजिनः ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षणधरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः ।
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥ ४॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे ।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचके कुण्डले मानुषाङ्के ।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके ।
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार धवलौ द्वाविन्द्रनील-प्रभौ ।
द्वौ बन्धूक-सम प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियङ्गुप्रभौ ।
शेषाः षोडशजन्म-मृत्यु-रहिताः सन्तप्त-हेमप्रभा-
स्ते सज्ज्ञान-दिवाकराः सुर-नुता. सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व०

इच्छामि भंते ! चेइभत्ते-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउ । अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइ-याणि ताणि सव्वाणितीसु वि लोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-

जोइसिय-कप्पवासिय त्ति चउव्विहा देवा सप्परिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ती होउ मज्झं।

अथ पौर्वाह्लिक-माध्याह्लिक-आपराह्निक देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तवसमेतं श्री पंच-महागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

ताव काय पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।
णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

सिद्धपूजा

द्रव्याष्टक

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं,
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्सन्धि-तत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्र-तटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार-संवेष्टितं,
देवं ध्यायति यः स मुक्ति-सुभगो वैरीभ-कण्ठीरवः॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

निरस्त-कर्म-संबन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥२॥

सिद्धयन्त्रस्थापनम्

सिद्धो निवासमनुगं परमात्म-गम्यं,
हान्यादि-भाव-रहितं भव-वीत-कायम् ।
रेवापगा-वर-सरो यमुनोद्भवानां,
नीरैर्यजे कलशगैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न—सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ।

आनन्द-कन्द-जनकं घन कर्म-मुक्तं,
सम्यक्त्वशर्म-गरिम जननार्ति-वीतम् ।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दनानां,
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं,
सिद्धंस्वरूप-निपुणं कमलं विशालम् ।
सौगन्ध्य-शालि-वनशालिवराक्षतानां,
पुञ्जैर्यजे शशि-निभैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादिसंज्ञं,
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दार-कुन्द-कमलादि वनस्पतीनां,
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥६॥ पुष्पं
ऊर्ध्वं स्वभाव-गमनं सुमनो-व्यपेतं,
ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्न-साज्य-वटकै रस-पूर्ण-गर्भै,
नित्यं यजे चरुवरैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥७॥ दीपं
आतङ्क-शोक-भय-रोग-मद - प्रशान्तं,
निर्द्वन्द्व-भाव-धरणं महिमा - निवेशम् ।
कर्पूर-वर्ति-बहुभिः कनकावदातैर्दीपै,
र्यजे रुचिवरैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥८॥ दीपं
पश्यन्समस्त-भुवनं युगपन्नितान्तं,
त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्य-गन्ध-घनसार-विमिश्रितानां,
धूपैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥९॥ धूपं
सिद्धासुराधिपति - यक्ष - नरेन्द्र - चक्रै,
र्ध्येयं शिवं सकल-भव्य-जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्ग-पूग- कदली - फल - नारिकेलैः,
सोऽहं यजे वरफलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥१०॥ फलं ।

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रतगणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमल सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठ फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तर वाञ्छितम् ॥११॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं० ।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं,
सूक्ष्म-स्वभाव-परमं यदनन्तवीर्यम् ।
कर्मौघ-कक्ष-दहन सुख-शस्य-बीज,
वन्दे सदा निरुपमं वर-सिद्ध-चक्रम् ॥१२॥ अर्घ्यं

कर्माष्टक-विनिर्मुक्त मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥१३॥महार्घं

त्रैलोकेयेश्वर-वंदनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वती,
यानाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनसः सन्तोऽपि तीर्थङ्कराः ।
सत्सम्यक्त्व - विबोध-वीर्य-विशदाव्याबाधताद्यैर्गुणै,
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥१३॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जयमाला

विराग सनातन शान्त निरंश,
निरामय निर्भय निर्मल हंस ।
सुधाम विबोध-निधान विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥

विदूरित - संसृति - भाव निरङ्ग,
समामृत - पूरित देव विसङ्ग ।
अबन्ध कषाय - विहीन विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
निवारित - दुष्कृत-कर्म - विपाश,
सदामल-केवल - केलि-निवास ।
भवोदधि-पारग शान्त विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
अनन्त - सुखामृत - सागर - धीर,
कलङ्क - रजो-मल-भूरि-समीर ।
विखण्डित-काम विराम विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
विकार - विवर्जित तर्जित - शोक,
विबोध-सुनेत्र-विलोकित लोक ।
विहार विराव विरङ्ग विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
रजोमल - खेद-विमुक्त विगात्र,
निरन्तर नित्य सुखामृत-पात्र ।
सुदर्शन - राजित नाथ विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
विदम्भ वितृष्ण विदोष विनिद्र,
परापर शङ्कर सार वितन्द्र ।
विकोप विरूप विशङ्क विमोह,

प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
जरा-मरणोज्झित वीत - विहार,
विचिन्तित निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्य - चरित्र विदर्प विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
विवर्ण विगन्ध विमान विलोभ,
विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥

घत्ता

असम - समयसारं चारु - चैतन्य - चिन्हं,
पर - परिणति - मुक्तं पद्मनंदीन्द्र - वन्द्यम्।
निखिल - गुण - निकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥
ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपा०।

श्री गोम्मटेश्वर पूजा

मत्तगयंद छंद

स्थापना

देखत ही द्युतिवन्त हरे, तनकी छवि, सुधाधर हारे।
ध्यान विवेक तपोबल से, जिने अरि-कर्म प्रचंड संहारे ॥

बाहु पसार अनुग्रह को, भवसागर से भवि जीव उबारे।
सो जिन बाहुबलीश, दयाकर तिष्ठहु मानस आय हमारे।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिभगवन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्॥
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिभगवन् मम सन्निहितो भव भव वषट्।

हरिगीतिका छन्द

शुचि सित सलिल की धार शशि रस तुल्य गुण की खान है।
सो चरण सन्मुख ईश के भवसिंधु-सेतु समान है॥
वसुकर्मजेता मोक्षनेता, मदनतन अभिराम है।
भगवान बाहुबलीश को, नित शीशनाय प्रणाम हैं॥
ॐ ह्रीं भगवते श्रीबाहुबलिजिनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्धयुत श्रीखण्ड संग घसाइये।
भवतापभंजन देव पद को भव्य पूज रचाइये॥वसुकर्म०॥चंदन
अक्षत अखंड सुधांशुकरसद धवल शुद्ध चुनायके।
अक्षय महापद हेतु चरचूं चरण नित गुण गायके॥वसुकर्म०॥ अक्षतान्
अम्भोज चंपक मालती बेला गुलाब प्रसून ले।
पदपद्म पूजू देवके, हैं मदन मद जिनने दले॥वसुकर्म०॥ पुष्पं
अतिमिष्ट मोहनभोग मोदक घेवरादिक घृतसने।
पकवान से भगवान को पूंजूं क्षुधादिक जिनहने॥वसुकर्म०॥नैवेद्यं
लेकर जजू कर्पूर घृत रत्नादि की दीपावली।
जिनकी प्रभा से हो प्रगट गुणराशि आतम की भली॥वसुकर्म०॥ दीपं

सुरदारु अगर कपूर तगर सुगन्ध चन्दन से बनी।
दशदिशारंजन धूप दशविधि अग्र खेऊं पावनी ॥वसुकर्म०॥धूपं
बादाम पिस्ता नारियल अंगूर कदली आम हैं।
शिव अमरफल हित चर्चते हम नाथ तव पदधाम हैं ॥वसुकर्म०॥
फलं

गन्धाम्बु तन्दुल सुमन व्यंजन दीप धूप सुहावनी।
फल मधुरामिश्रित अर्घ ले, पूजूं तुम्हें त्रिभुवन धनी ॥वसुकर्म०॥अर्घं

दोहा

पोदनपुर में स्वर्ण की, जजूं बिंब छविधाम।
पुष्प वृष्टि सुर जहं करे, केशर की अविराम॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुरस्थबाहुबलिस्वामिप्रतिमायै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भला विंध्यगिरि शिखर है, भले विराजे जेह।
चालिस हस्त सोभाभनी, खड्गासन है देह॥
अनुपम छवि जिनराज की, देख लजे शशि सूर्य,
तातै नहिं छाया पड़े, बन्दूं यह माधुर्य॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रवणबेलगोल—विंध्यगिरिस्थ बाहुबलिजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गोम्मटगिरि वेणूर में, जजूं नाय कर शीश।
पूजूं आरा कारकल, और जहां हों ईश॥

ॐ ह्रीं श्रीगोम्मटगिरि वेणुपुर, धनुपुरा (आरा) कारकल आदि-विविधस्थानस्थ श्रीबाहुबलिजिनप्रतिमायै अर्घं निर्वपामि।

नमूं शिखर कैलाश जिंहि, शेष कर्म करि शेष।
लोक शिखर चूड़ामणो, भए सिद्ध परमेश ॥

ॐ ह्रीं श्रीकैलाशशिखरात् सिद्धिगताय श्रीबाहुबलिसिद्धाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सवा पाँच सौ धनुष तन, लतायुक्त अभिराम।
खड्गासन मरकत वरण, सुन्दर रूप ललाम ॥

पद्धरी

जय बाहुबलीश्वर सगुण धाम, चरणों में हों कोटिक प्रणाम।
तुम आदि ब्रह्म के सुत सुजान, था अतरंग में स्वाभिमान ॥
प्रण था वृषभेश्वर के सिवाय, यह मस्तक परको ना झुकाय।
षट्-खण्ड भूमि भरतेश जीत, लौटे जब अवधपुरी पुरीत ॥
नहिं करैं चक्र तब पुर प्रवेश, भरतेश्वर की जय थी अशेष।
तुम पोदनेश बाहुबलीश, नहिं थे वश में नहिं नमो शीश ॥
इस पर ही युद्ध ठना महान, थीं खड़ी सैन्य चतुरंग आन।
हैं भरत बाहुद्वय चरम अग, इनका नहिं होगा अंग भंग ॥
बहु सेना का होगा संहार, कर उभयपक्ष मन्त्री विचार।
ठहराए निर्णय हित प्रबुद्ध, थिर-दृष्टि मल्ल जल तीन युद्ध ॥
तीनों जीते तुम हे बलीश, तब क्रोधित हो वह चक्र ईश।
निज चक्र दिया तुमपर चलाय, कुल रीति नीति सबको भुलाय ॥

पर चक्ररत्न तुम पास आय, फिर गया सप्रदिक्षण शीश नाय ।
यह ज्येष्ठभ्रात की क्रिया देख, इस जग की स्वार्थकता विलेख ।
तुम देव भये जग से उदास, सब शिथिल किया भवमोह पास ।
दे तनुज महाबल को स्वराज, सब सौंप उसे वैभव समाज ।।
कह भरतेश्वर से बनो ज्येष्ठ, इस नश्वर भू के भूप श्रेष्ठ ।
फिर यथाजात मुद्रा सुधार, कर किया कर्मरिपु का संहार ।।
इक वर्ष खड़े थे एक थान, धर प्रतिमायोग अखण्ड ध्यान ।
थे एक वर्ष तक निराहार, सर्वोत्कृष्ट तप महा धार ।।
बाईस परीषह सहे धीर, तपते थे तप जिन अति गहीर ।
थे उगे लता तरु आस-पास, चरनन में था अहि का निवास ।।
थे तजे उग्र तप के प्रभाव, बन के सब जीव विरोध भाव ।
अनुताप तुम्हें इक था महेश, पाए हैं मुझसे भरत क्लेश ।।
भरतेश्वर से सम्मान पाय, सन्ताप गया सत्वर नशाय ।
तब भए केवली हे जिनेश, पूजन की आकर नर सुरेश ।
उपदेश दिया करुणा-अधार, भवि जीवों को करके विहार ।
कैलाश शिखर से मुक्ति थान, पाया तुमने सब कर्महान ।।
जय गोमटेश बाहूबलीश, जय जय भुजबलि जय दोर्बलीश ।
जय त्रिभुवन मोहन छवि अनूप, जय धर्म प्रकाशक ज्योतिरूप ।।
जय मुनिजन भूषण धर्मसार, अकलंकरूप मोहि करहु पार ।
जय मात सुनन्दा के सुनन्द, शिव राज्य देहु मोहि जगतवंद ।।
हे स्वर्णमयी प्रतिमाभिराम, पोदनपुर में शतशः प्रणाम ।
धनु सवा पाँच सौ हो जिनेन्द्र, जजते कुसमांजलि ले सुरेन्द्र ।।

प्रतिमा विंध्येश्वर की प्रधान, नित नमूं कारकल की महान।
वेणूर पुरीको है ललाम, गोमट निरपति को हो प्रणाम ॥
आरा में रहे विराजनाथ, शतबार तुम्हें हम नमत माथ।
जितनी हों जहं जह बिम्बसार, सबको मेरा हो नमस्कार ॥

घत्ता

जय बाहुवलीश्वर महाऋषीश्वर, दयानिधीश्वर जगतारो।
जय जय मदनेश्वर जितचक्रेश्वर, विंध्येश्वर भवभयहारी।

महार्घं

बाहुबली के महापादपद्मों को, जो भवि नित्य जर्जे,
सर्वसंपदा पावे जग में, ताके सब संताप भजे।
होकर 'वीर' बाहुबलि जैसा, 'धर्म' चक्र का कंत सजै, ।
कर्मबेड़ियाँ काट स्वपर की, निश्चय शिवपुरराज रजै ॥

[इत्याशीर्वादः]

सरस्वती पूजा

जनम जरा मृत्यु छय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागर सों ले तिरै, पूजें जिन वच प्रीति ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्री श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

अथाष्टक सोरठा

क्षीरोदधिगंगा, विमल तरगा, सलिल अभंगा सुख संगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरबानी, शिव सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।
करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारदपद बंदों, मन अभिनंदों, पाप निकंदों, दाह हरी। तीर्थं०चंदनं
सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति-अनुमोदं, चन्दसमं।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं॥तीर्थं०अक्षतान्०
बहु फूल सुवासं, विमल प्रकासं, आनन्द रासं लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो, दोष हरे॥तीर्थं.पुष्पं
पकवान बनाया, बहु घृतलाया, सब विधि भाया मिष्ठ महा।
पूजू थुति गाऊं, प्रीति बढ़ाऊं, क्षुधा नशाऊ, हर्ष लहा॥तीर्थं०नैवेद्यं
करिदीपक- जोतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट-भासक, ज्ञान बढ़ै॥तीर्थं
दीपं
शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावें, पुण्य कमावें, दास कहावें, सेवत हैं॥तीर्थं० धूपं
बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत है॥तीर्थं०
फलं
नयनन सुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोलधरै।
शुभगंधसम्भारा, वसन निहारा, तुम तन धारा, ज्ञान करैं।तीर्थं.वस्त्रं

जलचंदन अच्छत, फूल चरू अरु, दीप धूप शुभ फल लावें।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत, सुख पावें ॥तीर्थं०
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला (सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै ॥

छन्द बेसरी

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाशं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ॥१॥
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इक धारं ॥२॥
पंचम व्याख्याप्रज्ञपतिदरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं ॥३॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यार लख भंगं।
अष्टम अंतकृतं दश ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं ॥४॥
नवम अनुत्तर दश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं ॥५॥
ग्यारम सूत्र विपाक सुभाखं, एक कोड चौरासी लाखं।
चार कोडि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु शाखं ॥६॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इक सौ आठ कोडि पन वेदं।
अडसठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ॥७॥
इक सौ बारह कोडि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्वपद माने ॥८॥

कोडि इकावन आठहि लाखं, सहस चुरासी आठहि भाखं।
साढ़े इकीस सिलोक बताए, एक एक पद के ये गाये ॥६॥

घत्ता

जा बानी के ज्ञान मे, सूझे लोक अलोक।
'द्यानत' जग जयवत हो, सदा देत हो धोक ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[इत्याशीर्वादः]

श्री गौतम स्वामी पूजा

(लेखक—राजमल पवैया, भोपाल)

जय जय इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीर्थंकर श्री महावीरके प्रथम मुख्य गणधर जय जय॥
द्वादशांग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभू की दिव्यध्वनि जिनवाणी को रच हुए अभय॥
ऋद्धि सिद्धि मंगल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मगलमय शिवपथ पर चलकर मैं भी सिद्ध बनू स्वयमेव॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूं।
सम्यक्दर्शन पाऊं जन्म मरण क्षयकर भवरोग हरूं॥
गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूं नमन॥
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

पंच पाप अविरत को त्यागूं शीतल चन्दन चरण धरूं।
भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूं॥गौतम०
चन्दनम्

पद प्रमाद नष्ट करने को उज्जवल अक्षत भेंट करूं।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूं॥गौतम०
अक्षतम्

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेंट करूं।
काम बाण विध्वंस करूं प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूं॥गौतम०
पुष्पम्।

मन वच काया योग सब हरने को प्रभु नैवेद्य धरूं।
क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊं मैं अनादि भवरोग हरूं॥गौतम०
नैवेद्यं।

सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने को अंतरदीप प्रकाश करूं।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूं मैं अनादि भवरोग हरूं॥गौतम०
दीपम्०

मैं सम्यक्चारित्र ग्रहण कर अंतर तपकी धूप वरूं।
अष्ट कर्म विध्वंस करूं प्रभु मैं अनादि भवरोग हरूं॥गौतम०
धूपम्०

रत्नत्रयमय परम मोक्षफल पाने को फल भेंट करूं।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्तकर मैं अनादि भव रोग हरूं ।।
गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूं नमन ।।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् मोक्षफल प्राप्तये फलम्।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ चरणो में सविनय भेंट करूं।
पद अनर्घ सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरू ।।गौतम०
अर्घम्० ।

शुभ आषाढ़ शुक्ल पूनम को समवशरण मे तुम आए।
मानस्तम्भ देखते ही दर्शन-ज्ञान-चरित्र पाए ।।
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर ।।
इसलिए अषाढ़ पूर्णिमा गुरू - पूर्णिमा प्रसिद्ध हुई।
हुए तपस्या लीन सहज ही बुद्धि ऋद्धि सब सिद्ध हुई ।।
ज्ञान मनःपर्यय होते ही पाया गणधर पद पावन।
मिली वीर की दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम के दिन ।।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् दिव्यध्वनिप्राप्तये अर्घं।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्मघातिया करके क्षय।
सायंकाल समय में पाई केवलज्ञान लक्ष्मी जय ।।
अन्तराय का सर्व नाश कर तुमने पाया पद भगवन्त।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनोयका करके अन्त ।।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् केवलज्ञानप्राप्तये अर्घं।

विचरण करके दुखी जगत के जीवों का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्लध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया॥
देव बानवे वर्ष अवस्थामें तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया॥
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् मोक्षपद प्राप्तये अर्घं।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुरवासी वसुभूति ब्राह्मण पुत्र।
पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र॥
अग्निभूति अरु वायुभूति लघुभ्राता द्वय उत्तम विद्वान।
शिष्य पाँचसौ साथ आपके चौदह विद्याज्ञान निधान॥
शुभ वैशाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान।
समवशरणकी रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान॥
बारह सभा बनी अति सुन्दर गंधकुटी थी बीच प्रधान।
अंतरीक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान॥
छ्यासठ दिन हो गए दिव्य ध्वनि प्रभुकी खिरी नहीं यह जान।
अवधिज्ञानसे लखा इन्द्रने गणधर की है कमी प्रधान॥
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया।
वृद्ध ब्राह्मण वेष बना गौतम के गृह प्रस्थान किया॥
पहुंच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनय मई।
मेरे गुरु श्लोक सुनाकर मौन हो गए ज्ञानमई॥

अर्थ भाव वे बता न पाए वही जानने आया हूं।
आप श्रेष्ठ विद्वान जगत में शरण आपकी आया हूं॥
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराए।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उरमें आए॥
मनमें सोचा तीनकाल छहद्रव्य जीव षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ पंचास्तिकाय गति समिति ज्ञान व्रत चारित क्या॥
बोले गुरु के पास चलो मैं वहीं अर्थ बतलाऊंगा।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊंगा॥
अति हर्षित हो इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें।
शंकाओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें॥
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनों भ्राता संग लिए अभी।
शिष्य पांचसौ संग ले गौतम साभिमान चल दिए तभी॥
समवशरणकी सीमा में जाते ही गलित हुआ अभिमान।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान॥
तत्क्षण सम्यक्चारित द्वारा मुनि बन गणधर पद पाया।
अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गइ ज्ञान मनःपर्यय छाया॥
खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया।
कर्मनाशकर मोक्ष-प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया॥
ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली।
द्वादशांग वाणी तुमने अन्तरमुहूर्त्त में रच डाली॥
दोनों भ्राता शिष्य पांचसौ ने मिथ्यात्व तभी हरकर।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनो भ्रात हुए गणधर॥

राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मंगलमय।
महावीर संदेश विश्व ने सुना शाश्वत शिवसुखमय ।।
इन्द्रभूति श्री अग्निभूति, श्री वायुभूति, शुचिदत्त महान।
श्री सुधर्म, मांडव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्पन अति विद्वान ।।
अचल ओर मेदार्य, प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान ।।
छह छह घड़ी दिव्य ध्वनि खिरती चार समय नित मंगलमय।
वस्तुतत्व उपदेश प्राप्तकर भव्य जीव होते निजमय ।।
तीस वर्ष रह समवशरणमें गूंथा श्री जिनवाणी को।
देश देशमें कर विहार फैलाया श्री जिनवाणीको ।।
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः महावीर निर्वाण हुआ।
संध्याकाल तुम्हें भी पावापुरमें केवल ज्ञान हुआ ।।
आयुपूर्ण जब हुई आपकी योग नाश निर्वाण लिया।
धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जय गान किया ।।
आज तुम्हारे चरणकमलके दर्शन पाकर हर्षाया।
रोम रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया ।।
मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज परमें भेद करूं।
भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हरूं ।।
पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊं।
तुम समान बन शिवपद पाकर सदा सदाको मुसकाऊं ।।
जय जय गौतम गणधरस्वामी अभिरामी अन्तर्यामी।
पाप पुण्य परभाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी ।।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधरस्वामिन् अनर्घपदप्राप्तये महार्घं।

गौतम स्वामीके वचन भाव सहित उर धार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भवपार ।।
इत्याशीर्वादः

सलूना पर्व पूजन

(नोट—यह श्रेयांसनाथ भगवान का निर्वाण दिन भी है अतः इस पूजन से पूर्व उनकी व सरस्वती पूजन कर लेनी चाहिए।)

श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनि पूजा

(चाल जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु-शिरोमणि सात-शतक मुनि ज्ञानी ।
आ हस्तिनापुर के कानन में हुए अचल दृढ़ ध्यानी ।।
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये ।
आत्म-साधना के साधक वे, तनिक नहीं अकुलाये ।।
योगिराज श्री विष्णु त्याग तप, वात्सल्य-वश आये ।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये ।।
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन शुभ दिन था सुखदाता ।
पर्व सलूना हुआ पुण्य-प्रद यह गौरवमय गाथा ।।
येही दिन था श्रेयांसनाथ प्रभु के निर्वाण महोत्सव का ।
छाया अति उल्लास सभीके मन में दोनों उत्सव का ।।
शान्ति दया समता का जिनसे नव आदर्श मिला है ।
जिनका नाम लिये से होती जागृत पुण्य-कला है ।।

करूं वन्दना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊं।
आह्वानन संस्थापन सन्निधि कर्ण करूं हर्षाऊं॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर२ संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिष्ठापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकम्

(गीता–छन्द)

मैं उर-सरोवर से विमल जल भाव का लेकर अहो।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ मृत्यु जनम जरा न हो॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दें॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो जन्म जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलम्।

सन्तोष मलयागिरीय चन्दन निराकुलता सरस ले।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, विश्वताप नहीं जले॥
श्रीगुरु अकम्पन०॥ चन्दनम्

तंदुल अखण्डित पूत आशा के नवीन सुहावने।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ दीनता क्षयता हने॥
श्रीगुरु अकम्पन०॥ अक्षतम्

ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ काम की बाधा हरे॥
श्रीगुरु अकम्पन०॥ पुष्पम्

शुभ भक्ति घृत में विनय के पकवान पावन मैं बना ।
नत पाद-पद्मों में चढ़ा मेटूं क्षुधा की यातना ।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें ।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ।।
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

उत्तम कपूर विवेक का ले आत्म-दीपक में जला ।
कर आरती गुरु की हटाऊँ मोह-तम की यह बला ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। दीपम्

ले त्याग-तप की यह सुगन्धित धूप मैं खेऊँ अहो ।
गुरुचरण-करुणा से करम का कष्ट यह मुझको न हो ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। धूपम्

शुचि-साधना के मधुरतम प्रिय सरस फल लेकर यहाँ ।
नत पाद-पद्मों में चढाऊँ मुक्ति मैं पाऊँ यहाँ ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। फलम्

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेह से पुलकित हृदय ।
नत पाद-पद्मों मे चढ़ाऊँ भव-पार मैं होऊँ ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। अर्घम्

जयमाला

(सोरठा)

पूज्य अकम्पन आदि सात शतक साधक सुधी ।
यह उनकी जयमाल वे मुझको निज भक्ति दे ।।

(पद्धड़ी छन्द)

वे जीव दया पालें महान, वे पूर्ण अहिंसक ज्ञानवान् ।
उनके न रोष उनके न राग, वे करें साधना मोह त्याग ।
अप्रिय असत्य बोलें न बैन, मन वचन काय में भद है न ।
वे महा सत्य धारक ललाम, है उनके चरणों में प्रणाम ।।

वे लें न कभी तृणजल अदत्त, उनके न धनादिक में ममत्त ।
वे व्रत अचौर्य दृढ़ धरें सार, है उनको सादर नमस्कार ।।
वे करें विषय की नहीं चाह, उनके न हृदय में काम-दाह ।
वे शील सदा पालें महान, कर मग्न रहें निज आत्मध्यान ।।

सब छोड़ बसन भूषण निवास, माया ममता सनेह आस ।
वे धरे दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रान्त ।।
नित रहें साधना में सुलीन, वे सहें परीषह नित नवीन ।
वे करे तत्व पर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ।।

पंचेन्द्रिय दमन करें महान, वे सतत बढ़ावे आत्म-ज्ञान ।
संसार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधे सतत जाग ।।
"कुमरेश" साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण ।
मैं करूँ वन्दना बार बार, वे करें भवार्णव मुझे पार ।।
मुनिवर गुण-धारक पर-उपकारक, भव-दुख-हारक सुखकारी ।
वे करम नशाये सुगुण दिलायें, मुक्ति मिलायें भय-हारी ।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो महार्घम् ।।

(सोरठा)

श्रद्धा भक्ति समेत जो जन यह पूजा करे ।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुख ।।

इत्याशीर्वादः ।

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

लावनी छन्द

श्री योगी विष्णुकुमार बाल बैरागी ।
पाई वह पावन ऋद्धि विक्रिया जागी ॥
सुन मुनियों पर उपसर्ग स्वयं अकुलाये ।
हस्तिनापुर वे वात्सल्य भरे हिय आये ॥
कर दिया दूर सब कष्ट साधना-बल से ।
पा गये शान्ति सब साधु अग्नि के झुलसे ॥
जन जन ने जय-जयकार किया मन भाया ।
मुनियों को दे आहार स्वयं भी पाया ॥
हैं वे मेरे आदर्श सर्वदा स्वामी ।
मैं उनकी पूजा करूँ बनूं अनुगामी ॥
वे दें मुझमें यह शक्ति भक्ति प्रभु पाऊँ ।
मैं कर आतम कल्यान मुक्त हो जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिवर अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिष्ठापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

चाल जोगीरासा

श्रद्धा की वापी से निर्मल, भावभक्ति जल लाऊँ ।
जनम मरण मिट जाये मेरे इससे बिनत चढाऊँ ॥
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दू यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयगिरि धीरज से सुरभित समता चन्दन लाऊँ।
भव-भव की आतप न हो यह इससे विनत चढ़ाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ चन्दनम्

चन्द्रकिरन सम आशाओं के अक्षत सरस नवीने।
अक्षय पद मिल जाये मुझको गुरु सन्मुख धर दीने॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ अक्षतम्

उर उपवन से चाह सुमन चुन विविध मनोहर लाऊँ।
व्यथित करे नहिं काम वासना इससे विनत चढ़ाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ पुष्पम्

नव नव नित मधुर रसीले मैं पकवान बनाऊँ।
क्षुधा न बाधा यह दे पाये इससे विनत चढ़ाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ नैवेद्यम्

मैं मन का मणिमय दीपक ले ज्ञान-वर्तिका जारूँ।
मोह-तिमिर मिट जाये मेरा गुरु सन्मुख उजियारूँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ दीपम्

ले विराग की धूप सुगन्धित त्याग धूपायन खेऊँ।
कर्म आठ का ठाठ जलाऊँ गुरु के पद नित सेऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ धूपम्

पूजा सेवा दान और स्वाध्याय विमल फल लाऊँ।
मोक्ष विमल फल मिले इसी से विनत गुरु पद ध्याऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ फलम्

यह उत्तम वसु द्रव्य संजोये हर्षित भक्ति बढ़ाऊँ।
मैं अनर्घपद को पाऊँ गुरुपद पर बलि जाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी०॥ अर्घम्

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

दोहा

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा यति-रक्षा दिन जान।
रक्षक विष्णु मुनीश की यह गुणमाल महान् ॥

जयमाला

पद्धड़ी छन्द

जय योगिराज श्रीविष्णु धीर, आकर वह हर दो साधु-पीर।
हस्तिनापुर वे आये तुरन्त, कर दिया विपत् का शीघ्र अन्त ॥
वे ऋद्धि-सिद्धि-साधक महान्, वे दयावान वे ज्ञानवान।
धर लिया स्वयं वामन सरूप, चल दिये विप्र बनकर अनूप ॥
पहुंचे बलि नृप के राजद्वार, वे तेज-पुञ्ज धर्मावतार।
आशीष दिया आनन्दरूप, हो गया मुदित सुन शब्द भूप ॥
बोला वर मांगो विप्रराज, दूँगा मनवांछित द्रव्य आज।
पग तीन भूमि याची दयाल, बस इतना ही तुम दो नृपाल ॥
नृप हँसा समझ उनको अज्ञान, बोला यह क्या लो और दान।
इससे कुछ इच्छा नहीं शेष, बोले वे ये ही दो नरेश ॥
संकल्प किया दे भूमि दान, ली वह मन में अति मोद मान।
प्रगटाई अपनी ऋद्धि सिद्धि, हो गई देह की विपुल वृद्धि ॥
दो पग में नापा जग समस्त, हो गया भूप बलि अस्त-व्यस्त।
पग एक और दो भूमि दान, बोले बलि से करुणानिधान ॥
नतमस्तक बलि ने कहा अन्य, है भूमि न मुझ पर है अनन्य।
रख लें पग मुझ पर एक नाथ, मेरी हो जाये पूर्ण बात ॥

कहकर तथास्तु पग दिया आप, सह सका न बलि वह भार-ताप।
बोला तुरन्त ही कर विलाप, करदें अब मुझको क्षमा आप ॥
मैं हूं दोषी मैं हूं अज्ञान, मैंने अपराध किया महान।
ये दुखित किये जो साधु सन्त, अब करो क्षमा हे दयावन्त ॥
तब की मुनिवर ने दया-दृष्टि, हो उठी गगन से मधुर वृष्टि।
पा गये दग्ध वे साधु-त्राण, जन-जनके पुलकित हुए प्राण ॥
घर घर में छाया मोद-हास, उत्सव ने पाया नव प्रकाश।
पीड़ित मुनियो का पूर्णमान, रख मधुर दिया आहार दान ॥
युग युग तक इसकी रहे याद, कर-सूत्र बंधाया साह्लाद।
बन गया पर्व पावन महान, रक्षाबन्धन सुन्दर निधान ॥
वे विष्णु मुनीश्वर परम सन्त, उनकी गुण-गरिमा का न अन्त।
वे करें शक्ति मुझको प्रदान, 'कुमरेश' प्राप्त हो आत्मज्ञान ॥

घत्ता

श्री मुनि विज्ञानी आतम-ध्यानी, मुक्ति-निशानी सुख-दानी।
भव-ताप विनाशे सुगुण प्रकाशे, उनकी करुणा कल्याणी ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये महार्घम्।

दोहा

विष्णुकुमार मुनीश को, जो पूजे धर प्रीत।
वह पावे कुमरेश शिव, और जगत में जीत ॥

—: ० :—

सोलहकारण पूजा

[कविवर द्यानत रायजी]

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ॥
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं।
हमहूं षोडश कारन भावैं भावसौं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं दर्शनशुिद्ध्यादि षोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट् ।

कंचन-झारी निरमल नीर पूजों जिनवर गुण गभीर।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचाराभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग संवेग-शक्तितस्त्याग-तपसी-साधुसमाधि-वैयावृत्यकरणार्हद्-भक्तिआचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति - आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना- प्रवचनवात्सल्येतितीर्थंकरत्वकारणेभ्योजन्मजरामृत्युवि-नाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय पूजों श्री जिनवर के पाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरुहो ॥दरश०॥ चन्दनं॥

तंदुल धवल सुगंध अनूप पूर्जों जिनवर तिहुं जग भूप।
परर गुरु हो जय यय नाथ परम गुरु हो ।।दरश०।। अक्षतान्
फूल सुगंध मधुप-गुंजार पूर्जौ जिनवर जग आधार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश० ।।पुष्पं ।।
सद नेवज बहुबिधि पकवान पूजौं श्रीजिनवर गुणखान।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश० । नंवेद्यं
दीपक-ज्योति तिमिर छयकार पूजूँ श्रीजिन केवलाधार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश०।। दीपं।
अगर कपूर गंध शुभ खेय श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश० ।। धूपं ।।
श्री फल आदि बहुत फलसार पूर्जौं जिन वाछित दातार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।फलं०।।
जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश०।।अर्घं०

जयमाला

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-बास ।
पाप पुण्य सब नाश के, ज्ञान भान परकाश ।।

चौपाई १६ मात्रा

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारे जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी ।।
शील सदा दिढ जो नर पालै, सो औरन को आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मन माहीं, ताके मोह-महातम नाहीं ।।

जो संवेग-भाव विसतार, सुरग-मुकति-पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस परभव सुख देखै ।।
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा ।
साधु-समाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै ।।
निशि-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव नीर तिरैया ।
जो अरहंत-भगत मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ।।
जो आचरज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहु श्रुतवंत-भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई ।।
प्रवचन भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता ।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्न-त्रय आराधै ।।
धरम प्रभाव करैं जे ज्ञानी, तिन-शिव मारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ।।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडषकारणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामी०

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव पद होय ।।

[इत्याशीर्वाद]

पंचमेरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

गीता छन्द

तीर्थंकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा ।

द्वो अवधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजहीं,
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुख भाजहीं ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्रा-वतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचत्यालयस्थजिनप्रति-मासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: । ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्या-लयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चौपाई आंचलीबद्ध

सीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रनाम ।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय ॥टेक॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय अचल-मन्दिर-विद्युन्मालिपंचमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥चन्दनं ।
अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छत सौं पूजौं जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥ अक्षतान् ।
वरन अनेक रहे महकाय, फूल सों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों० ॥ पुष्पं ।
मन-वांछित बहु तुरत बनाय, चरुसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों०॥ नैवेद्यं ।
तम-हर उज्वल ज्योति जगाय, दीपसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

पाँचो मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करो प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्व०
खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।धूपं।।
सुरस सुवर्ण सुगध सुभाय, फलसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे परम सुख हाय ।।पांचो०।।फलं।
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजो श्रीजिनराय:
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।पांचों०।। अर्घं।

जयमाला

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मदर कहा।
विद्युन्माली नाम, पच मेरु जग में प्रगट ।।१।।

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजे, भद्रशाल वन भूपर छाजे।
चैत्यालय चारों सुखकारो, मन वच तन बंदना हमारो ।।२।।
ऊपर पंच-शतकपर सोहै, नदन वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वचतन बंदना हमारी ।।३।।
साढ़े बासठ सहस ऊंचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी ।।४।।
ऊंचा जोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरि सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी ।।५।।

चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुं जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी ॥६॥
ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी ॥७॥
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बंदना हमारी ॥८॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बन्दना हमारी ॥९॥
सुर नर चारन बन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतन बन्दना हमारी ॥१०॥

दोहा

पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ॥११॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्व०

[इत्याशीर्वादः]

नन्दीश्वरद्वीप-पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

सरब पर्व में बड़ो अठाई परव है।
नंदीश्वर सुर जांहि लेय वसु दरब है॥
हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना।
पूजें जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वि पंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट्।

कंचन-मणि-मय-भृङ्गार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा॥
नंदीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चदन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीज सांच आयो तुम ठांही॥नंदी०॥चंदनं०
उत्तम अक्षत जिनराज, पुञ्ज धरे सोहै।
सब जीते अक्ष-समाज, तुम सम अरु को है॥नंदी०॥अक्षतान्
तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं।
लहुं शील-लक्ष्मी एव, छूटों सूलनसौं॥नंदी०॥पुष्पं०
नेवज इंद्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा॥नंदी०॥नैवेद्यं०
दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन मांहि लसै।
टूटै करमन की रास, ज्ञान-कणी दरसै॥नंदी०॥दीपं०
कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरै।
अति हरष-भाव परकाश, मानों नृत्य करै॥नंदी०॥धूपं०
बहुविधि फल ले तिहुंकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं॥नंदी०॥फलं०
यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समपतु हों॥नंदी०॥अर्घं०

जयमाला

दोहा

कार्तिक फागुन साढके, अंत आठ दिन मांहि ।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठांहि ॥१॥
एकसौ त्रेसठ कोडि, जोजन महा ।
लाख चौरासिया एक दिशा में लहा ॥
आठमों दीप नंदीश्वरं भास्वरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥टेक॥
चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं ।
सहस चौरासिया एक दिश छाजहीं ॥
ढोलसम गोल ऊपर तले सुंदरं ॥भौन०॥३॥
एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी ॥
चहुं दिशा चार बन लाख जोजन वरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥४॥
सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं ।
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं ॥
बावरी कौन दो माहि दो रति करं ॥भौन०॥५॥
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे ।
चार सोलै मिलैं सर्व बावन लहे ॥
एक इक सीस पर एक जिनमंदिरं ॥भौन० ॥६॥
बिंब अठ एक सौ रतनमयि सोहही ।
देव देवी सरव नयन मन मोहहीं ॥
पांचसै धनुष तन पद्म-आसन परं ॥भौन० ॥७॥
लाल नख मुख नयन श्याम अरु श्वेत हैं ।

स्याम-रंग भौंह सिर-केशछवि देत हैं ॥
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं ॥भौन० ॥८॥
कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है ।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है ।
वयन नहि कहैं लखि होत सम्यक्धरं ॥भौन० ॥९॥

सोरठा

नदीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा महिमा को कहै ।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै ॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

[इत्याशीर्वादः । पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि]

दशलक्षणधर्म-पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य सौच संयम तप त्याग उपाव हैं ।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुंगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार है ॥

ॐ ह्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अवतर् अवतर् संवौषट् । ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

हेमाचलकी धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि ।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।
भव-आताप निवार, दश लच्छन पूजौं सदा ॥ चंदनं०

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ ।
भव-आताप निवार, दश लच्छन पूजौं सदा ॥ अक्षतान्०

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥ पुष्प०

नेवज विविध निहार, उत्तम षट-रस-संजुगत ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥ नैवेद्य०

बाति कपूर सुधार, दीपक-जोति सुहावनी ।
भव-आताप निवार, दस-लच्चन पूजौं सदा ॥ दीपं०

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगंधता ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥ धूपं०

फलकी जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥ फलं०

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥ अर्घं०

अंग पूजा

सोरठा

पीडैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस पर-भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीनं, बांध मार बहुविधि करै।
घरतें निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरै ॥
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥
ॐ ह्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥
उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना।
वस्यो निगोद माहितें आया, दमरी रूकन भाग बिकाया ॥
रूकन बिकाया भाग-वशतें, देव इकइंद्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूआ, भूप कीड़ों में गया ॥
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जनकी, ज्ञान का पावै उदा ॥
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ॥
उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये ॥
करिये सरल तिहुं जोग अपने, देख निरमल आरसो।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अंगारसो ॥

नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बंध-विशषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निंदा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥

उत्तम सत्य वरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे झूठे मानुस देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा साँच गुण लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
बच झूठसेती नरक पहुंचा, सुरग मे नारद गया ॥
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै संतोप, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो ससार में ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै संतोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच गुन साधू लहै ॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेंद्री मन वश करो।
संजम-रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ॥

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भवके भाजें अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाहीं ॥

ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग कीच में।
इक घरी मत बिसरो नित, आव जम-मुख बीच में।।
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहै सुरराय, करम - सिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम।।

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
वस्यो अनादि-निगोद-मझारा, भू-विकलत्रय-पशु - तनधारा।।
धारा मनुष तन महा दुर्लभ, सुकुल आव निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा दुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरें।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरें।
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव-लाहो लीजिए।।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै।।
दोनो संभारे कूप - जलसम, दरब घर मे परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया।।
धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साध दोनो, लहैं नाहीं बोध को।।
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करैं मुनिराज जी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह - चिंता दुख ही मानो ।
फाँस तनक सो तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि - मुद्रा धरैं ।
धनि नगन पर तन-नगन ठाढ़े, सुर असुर पायनि परैं ।।
घर माँहि तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसारसौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं ।।
ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शील-बाड़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अंतर लखो ।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ।।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनो, माता बहिन सुता पहिचानो ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे ।।
कूरे तिया के अशुचि तनमे, काम - रोगी रति करैं ।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं ।।
संसार में विष - बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरम दश पैंडि चढिके, शिव-महल में पग धरा ।।
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय-जयमाला

दोहा

दश लच्छन बंदौं सदा, मन-वांछित फलदाय ।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय ।।

वेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन ,ईहो अंतर-बाहिर शत्रु न कोई ।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै ।।

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम सत्य-बचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, संतोषी गुण-रतन-भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता ॥
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ॥
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै ॥

दोहा

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाश।
अजर अमर पदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राश ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय-पूजा

दोहा

चहुंगति फनि विषहरन मणि, दुखपावक जलधार।
शिवसुख सुधा-सरोवरी, सम्यक्त्रयी निहार ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर ! संवौषट्। ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।
जन्मरोग निरबार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजूं ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्‌रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चंदन केशर गारि, परिमल महासुरंगमय ।। जन्म० ।। चंदनं०
तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदास के ।। जन्म० ।। अक्षतान्०
महके फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं ।।जन्म० ।। पुष्प०
लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।। जन्म० ।। नैवेद्यं०
दीप रतनमयसार, जोत प्रकाशै जगत में ।। जन्म० ।। दीप०
धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूर को ।। जन्म० ।। धूपं०
फल शोभा अधिकार, लोग छुहारे जायफल ।। जन्म० ।। फलं०
आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लिए ।। जन्म० ।। अर्घं०

सम्यक्‌दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजो व्रतसहित ।।१०।।

दर्शनपूजा

दोहा

सिद्ध अष्टगुणमय प्रगट, मुक्तजीव सोपान ।
जिहबिन ज्ञानचरित अफल, सम्यक्‌दर्श प्रधान ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अवतर अवतर ! संवौषट् । ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्‌दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अग पूजौ सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।। सम्य० ।। चंदनं०
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।। सम्य० ।। अक्षतान्०
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।। सम्य० ।। पुष्पं०
नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।। सम्य० ।। नैवे०
दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।। सम्य० ।। दीपं०
धूप घ्रान सुखकार, रोग बिघन जडता हरै ।। सम्य० ।।धूपं०
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिव फल करै ।। सम्य०।। फलं०
जल गधाक्षत चारु, दीप धूप फलफूल चरु ।। सम्य० ।। अर्घं०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्यौहार।
रहितदोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुन सार ।।१।।

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द

सम्यक्दरशन रतन गहीजै। जिनवच में सदेह न कीजै।
इह भव विभव महादुखदानी। परभवभोग चहै मत प्रानी।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरुप्रभु परखिये।
परदोष ढँकिए धरम डिगतेको, सुथिर कर हरषिये ।।
चहुसंघको वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना।

गुन आठसों गुन आठ लहिकें, इहां फेर न आवना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घं०

ज्ञान पूजा

दोहा

पचभेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यक्ज्ञान ॥१॥

ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

नीरसुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥१॥

ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ॥ सम्य० ॥ चन्दन०

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ॥ सम्य० ॥ अक्षतान्०

पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ॥ सम्य० ॥ पुष्पं०
नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै ॥ सम्य० ॥ नैवेद्यं०
दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ॥ सम्य० ॥ दीपं०
धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जडता हरै ॥ सम्य० ॥ धूपं०
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ॥ सम्य० ॥ फलं०
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ॥ सम्य० ॥ अर्घं०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप जानै नियत, ग्रंथपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्टभंग गुणकार ॥

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द

सम्यक्ज्ञान रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अच्छरशुद्ध अरथ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय सग जानो ॥
जानौं सुकालपठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइयै।
तपरीति गहि बहु मान देकै, विनयगुन चित लाइये ॥
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना।
इस ज्ञानही सों भरत सीझा, और सब पटपेखना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चारित्र पूजा

दोहा

विषयरोग औषध महा, दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाकौं धरैं, सम्यक्चारितसार ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारितसार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्य०॥ चंदनं०
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै॥ सम्य०॥ अक्षतान्०
पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै॥ सम्य०॥ पुष्पं०
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै॥ सम्य०॥ नैवेद्यं०
दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा॥ सम्य०॥ दीपं०

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।। सम्य० ।। धूपं०
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ।। सम्य० ।। फलं०
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।। सम्य० ।। अर्घं०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्यौहार ।
स्वपर दया दोनों लिए, तेरहविधि दुखहार ।।१।।

चौपाई-मिश्रित गीताछंद

सम्यकचारित रतन सभालौ, पांच पाप तजिकैं व्रत पालौ ।
पंचसमिति त्रयगुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै ।।
छीजै सदा तन को जतन यह, एक संजम पालिए ।
बहु रुल्या नरक निगोद माहीं, विषयकषायनि टालिए ।
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ।।२।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ समुच्चय जयमाला

दोहा

सम्यक्दर्शन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुकति न होय ।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ।।१।।

चौपाई

जापै ध्यान सुथिर बन आवै । ताके करमबंध कट जावै ।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै । जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।२।।

ताको चहुंगयिके दुख नाहीं । सो न परै भवसागर माहीं ।
जनमजरामृत दोष मिटावै । जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।३।।
सोई दशलच्छन को साधै । सो सोलह कारण आराधै ।
सो परमातम-पद उपजावै । जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।४।।
सोई शक्र चक्रि पद लेई । तीन लोक के सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै । जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।५।।
सोई लोकालोक निहारै । परमानद दशा विस्तारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै । जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।६।।

दोहा

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब, द्यानत को सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति०

क्षमावणी पूजा

अङ्ग क्षमा जिन धर्म तनो दृढ मूल लखानो ।
सम्यक रतन संभाल हृदय मे निश्चय जानो ।।
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो ।
जिन धर्मी सों प्रीति करो सब पागित भानो ।।
रत्नत्रय गहि भविक जन, जिन आज्ञा सम चालिये ।
निश्चय करि आराधना, करम राशि को जालिए ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय नमः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं ।। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं ।।

क्षमा गह्यो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय ।।टेक।।
नीर सुगंध सुहावनो पदम द्रह को लाय।
जन्म रोग निर्वारिये सम्यक्रतन लहाय ।।क्षमा०।।जिन०

ॐ ह्रीं निःशंकितांगाय ।।१।। निकांक्षितांगाय ।।२।। निर्विचिकित्सितांगाय ।।३।। निर्मूढ़तांगाय ।।४।। उपगूहनांगाय ।।५।। सुस्थितिकरणांगाय ।।६।। वात्सल्यांगाय ।।७।। प्रभावनांगाय ।।८।। जन्मजरामृत्युविनाशनाय सम्यग्दर्शनाय जलं ।। ॐ ह्रीं व्यंजन व्यंजिताय ।।१।। अर्थ समग्राय ।।२।। तदुभय समग्राय ।।३।। कालाध्ययनाय ।।४।। उपध्योपहिताय ।।५।। विनय लब्धिप्रभावनाय ।।६।। गुरवाद्यपन्हव ।।७।। बहुमानोन्मान ।।८।। अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय जलं ।। ॐ ह्री अहिंसा व्रताय ।।१।। सत्य व्रताय ।।२।। अचौर्यव्रताय ।।३।। ब्रह्मचर्यव्रताय ।।४।। अपरिग्रह महाव्रताय ।।५।। मनो गुप्तये ।।६।। वचन गुप्तये ।।७।। काय गुप्तये ।।८।। ईर्या समिति ।।९।। भाषा समिति ।।१०।। एषणा समिति ।।११।। आदान निक्षेपणसमिति ।।१२।। प्रतिष्ठापना समिति ।।१३।। त्रयोदशविध सम्यक् चारित्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय २९ अंगेभ्यो जलं ।।

केसर चंदन लीजिए, संग कपूर मिलाय ।
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगंध सुहाय ।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० ।। चंदनं० ।।२।।

शालि अखंडित लीजिए, कंचन थाल भराय ।
जिनपद पूजौं भावसौं, अक्षय पद को पाय ।। क्षमा० ।। अक्षतं०

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाब ।
श्रीजिन चरण सरोज कूं, पूजूं हरष चितचाव ।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० ।। पुष्पं० ।।४।।

शक्कर घृत सुरभी तनो, व्यंजन षट्रस स्वाद ।
जिनके निकट चढ़ायकर हिरदे धरि आह्लाद ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० ॥ नैवेद्यं० ॥५

हाटक मय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार ।
शोधक घृत कर पूजिए, मोह तिमिर निर्वार ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । दोपम्० ॥६

कृष्णागरु करपूर हो, अथवा दस विधि जान ।
जिन चरणा ढिग खेइये, अष्ट करम की हान ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । धूपम्० ॥७

केला अम्ब अनार हो, नारिकेल ले दाख ।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । फलम् ॥८

जलफल आदि मिलायके, अरघ करो हरषाय ।
दु:ख जलांजलि दीजिए, श्रीजिन होय सहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । अर्घं० ॥९

जयमाला

दोहा

उनतिसअङ्ग की आरती, पढ़ो भविकचितलाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय ॥१॥

चौपाई

जैनधर्म में शक न आनै, सो निशंकित गुण चित ठानै ।
जप तप कर फल बांछै नाहीं, नि:कांक्षित गुण हो जिसमाहीं ।
पर को देखि गिलानि न आवै, सो तीजा सम्यक् गुण ठावै ।
आन देव को रंच न मानों, सो निर्मूढत गुण पहिचानों ॥

पर को औगुण देख जु ढांकै, सो उपगूहन श्री जिनभाखै ।
जैनधर्म तें डिगता देखे, थापै बहुरि थिती कर लेखै ॥४॥
जिनधरमो सों प्रीत निवहिए, गऊ बच्छावत बच्छल कहिए ।
ज्यौं त्यौं जैन उद्योत बढ़ावै, सो प्रभावना अङ्ग कहावै ॥५॥
अष्ट अङ्ग यह पालैं जोई, सम्यक् दृष्टी कहिए सोई ।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिए, भाखे श्रीजिन मन में गहिए ॥
व्यञ्जन व्यंजित अङ्ग कहीजे, सम्यक्ज्ञान प्रथम लखलीजे ।
अर्थ सहित शुद्ध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धारे ॥७॥
तदुभय तीजा अङ्ग लखीजै, अक्षर अर्थ सहित जुपढीजे ।
चौथा कालाध्ययन विचारै, पाठ सहित तब बहु फल पावै ॥
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, बाणी बहुत विनय सु पढ़ीजै ॥
जापै पढ़ै न लोपै जाई, अङ्ग सप्तम गुरु बाद कहाई ।
गुरु की बहुत बिनय जु करीजे, सो अष्टम अङ्ग धर सुख लीजै ॥
यह आठों अङ्ग ज्ञान बढ़ावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै ।
अब आगे चारित्र सुनीजै, तेरह विधि धर शिव सुख लीज ॥
छहों काय की रक्षा करिहैं, सोई अहिंसा व्रत चित धर हैं ॥
हित मित सत्य वचन मुख कहिए, सो सतवादी केवल लहिए ।
मन वच काय न चोरी करिए, सोई अचौय व्रत चित धरिए ।
मनमथ भय मन रञ्च न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य तप ठानै ॥
परिग्रह देख न मूछित होई, पच महाव्रत धारक सोई ।
महाव्रत ये पाचो खरे हैं, सब तीर्थंकर इनका करे हैं ॥
मन में विकल्प रञ्च न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिए सोई ॥
बचन अलीक रंच नहि भाखें, बचन गुप्ति सो मुनिबर राखे ।
कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, सो मुनि कायगुप्ति जिन कहि हैं ।
पंच समिति अब सुनिए भाई, अर्थ सहित भाखीं जिनराई ॥
हाथ चारि जब भूमि निहारै, तब मुनि ईर्या मग पग धारैं ।

मिष्ट बचन मुख बोलें सोई, भाषा समिति तास मुनि होई ॥
भोजन छयालिस दूषण टारे, सो मुनि एषण शुद्धि विचारें ॥
देखकै पोथी लें अरु धर हैं, सो आदान निक्षेपन वर हैं ॥
मल औ मूत्र एकान्त जु डारें परतिष्ठापन समिति सभारें।
यह सब अङ्ग उनतीस कहे है, श्रीजिन भाखै गणधर ने गहे हैं ॥
आठ आठ तेरह विधि जानो, दर्शन ज्ञान चरित्र सुठानौ ॥
तातै शिवपुर पहुंचा जाई, रत्नत्रय की यह विधि भाई ॥
रतन त्रय पूरण जब होई, क्षिमा क्षिमा करियो सब कोई ॥
चैत माघ भादौं त्रय बारा, क्षिमा क्षिमा हम उर में धारा ॥

दोहा

यह क्षमा वाणी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
कहे मल्ल सरधा करो, मुक्ति श्राफल होय ॥२२॥ महार्घ

सोरठा

दोष न गहिए कोय, गुणगहि पढिए भाव सौ।
भूल चूक जो होय, अर्थ बिचारि जु सोधिए ॥२३॥

[इत्याशीर्वादः]

स्वयम्भू-स्तोत्र

[कविवर द्यानतराय जी]

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भुवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, बंदौ आदिनाथ गुणखान ॥
इन्द्र छीर-सागर-जल लाय, मेरु न्हाये गाय बजाय।
मदन-विनाशक सुख करतार, बंदौं अजित अजित-पदकार ॥

शुकल ध्यान करि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बंदौ सम्भव भव-दुख टार॥
माता पच्छिम रयन मँझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनन्दन मन लाय॥
सब कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवाद - धुनिधार।
जैन-धरम-परकाशक स्वाम, सुमतिदेव - पद करहुं प्रनाम॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पचदश मास, नमौ पदमप्रभु सुख की रास॥
इंद्र फनिंद नरिंद त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होंहि खुस्याल।
द्वादश सभा ज्ञान-दातार, नमो सुपारसनाथ निहार॥
सुगुन छियालिस हैं तुम माहि, दोष अठारह कोऊ नाहि।
मोह-महातम-नाशक दीप, नमों चन्द्रप्रभ राख समीप॥
द्वादशविध तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौ पहुपदंत मन आन॥
भवि-सुखदाय सुरगते आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, बंदौ शीतल धर्म-सनेह॥
समता - सुधा कोप-विष-नाश, द्वादशांग बानी परकाश।
चार संघ-आनंद-दातार, नमौ श्रियांस जिनेश्वर सार॥
रतनत्रय चिर मुकुट विशाल, सभे कंठ सुगुन मनि-माल।
मुक्ति-नार-भरता भगवान, वासुपूज्य बंदौ धर ध्यान॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानो ध्यानो हित-उपदेश।
कर्म नाशि शिव-सुख-विलसंत, बंदौ विमलनाथ भगवंत॥
अंतर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबर व्रत को धारि।
सर्व जीव-हित-राह दिखाय, नमों अनंत वचन मन काय॥
सात तत्त्व पंचासतिकाय, अरथ नवों छ दरब बहु भाय।
लोक अलोक सकल परकाश, बंदौं धमनाथ अविनाश॥

पंचम चक्रवरति निधि भोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरन सोलम जिनराय, शांतिनाथ बंदौं हरखाय ।।
बहु थुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहै नहि कोय ।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बंदौं कुन्थुनाथ शिव-भूप ।।
द्वादश गण पूजे सुखदाय, थुति वदना करें अधिकाय।
जाकी निज-थुति कबहुं न होय, बंदौ अर-जिनवर-पद दोय ।।
पर-भव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह्-समय वैराग।
बाल-ब्रह्म - पूरन - व्रत धार, बंदौं मल्लिनाथ जिनसार ।।
बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकांत करै पग लाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बंदौं मुनि सुव्रत व्रत देहिं ।।
श्रावक विद्यावत निहार, भगति-भाव सो दियो अहार।
बरसी रतन-राशि ततकाल, बंदौं नमि प्रभु दीन-दयाल ।।
सब जीवन की बंदी छोर, राग-दोष द्वै बंधन तोर।
रजमति तजि शिव-तियसो मिले, नेमिनाथ बंदौं सुख मिल ।।
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फणधार।
गयो कमठ शठ मुख करि श्याम, नमों मेरुसम पारस स्वाम ।।
भव सागर तें जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ दया विचार, वर्धमान बंदौं बहु बार ।।

दोहा

चौबीसों पद-कमलजुग, बंदौं मन-वच-काय ।
'द्यानत' पढ़ै सुने सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ।।

महार्घ

गीता छन्द

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों ।।

अर्हन्त-भाषित बैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूं सदा।
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु, जप होंय पति शिवगेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूं बहु विध भक्ति बढाय॥

ॐ ह्रीं निर्वाणक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति-पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करें।
हम सारिखे लघुपुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें॥
धनक्रिया ज्ञानरहित न जाने रीति पूजन नाथजी।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी॥१॥
दुखहरण मगलकरण आशा भरन जिन पूजन सही।
यह चित्त में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही॥
तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचू कहा।
मुझ आपसम कर लेहु स्वामी यही इक वाछा महा॥२॥

ससार भीषण विषम वन मे कर्म मिल आतापियो।
तिसदाहते आकुलित चिरतै शाति थल कहू ना लियो।।
तुम मिले शातस्वरूप शाति करण समरथ जगपती।
वसुकर्म मेरे शांत कर दो शांति में पचमगती।।३।।
जबलों नही शिव लहौ तबलो देहु यह धन पावना।
सत्सग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना।।
तुम बिन अनतानत काल गयो रुलत जगजाल मे।
अब शरण आयो नाथ कर जुग जोर नावत भाल मैं।।४।।

कर प्रमाण के मानते, गगन नपै किस भत।
त्यों तुम गुण वरनन करे, कहूं न पावे अत।।

विसर्जन

सपूर्णविधि करि वीनऊँ इस परम पूजन ठाठ मे।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधितै चूक कीनी पाठ मे।।
सो होउ पूर्ण समस्त विधिवत् तुम चरणकी शरणतै।
बदू तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरण तै।।१।।
आह्वानन स्थापन सन्निधीकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन हू यथा विधि जानो नही गुणखानजी।।
जो दोष लागे सो नशो सब तुम चरणकी शरण तै।
बंदूं तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरणतै।।२।।
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भावमें।
यथा विधि निज शक्ति सम पूजन कियो अति चाव तै।।
करहू विसर्जन भाव ही मैं तुम चरण की शरण तें।
बंदू तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरण तै।।३।।

तीन भुवन तिहुं कालमें, तुमसा देव न और।
सुख कारन सकट हरण, नमू जुगल कर जोर।।

आशिका

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटे, दुःख दूर हो जाय॥

भाषास्तुति पाठ

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनंदनो।
श्रीनाभिनंदन जगतवंदन, आदिनाथ निरजनो ॥१
तुम आदिनाथ अनादि सेऊं, सेय पद पूजा करूँ।
कैलाश गिरिपर रिषभजिनवर, पदकमल हिरदे धरूँ ॥२
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
इह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजै नाथजी। ३
तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलच्छन, चन्द्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननदन जगतबन्दन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो ॥४
तुम शाति पाचकल्याण पूजू, शुद्धमनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥५
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥६
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसैन्या वश करी।
चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिव रमणी वरी ॥७
कन्दर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननन्दन जगतबदन, सकलसंघ मंगल कियो ॥८
जिन धरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मानविदारके।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद, मैं नमों सिरधार के ॥९
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनंदन जगत वंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०

छत्र तीन सोहैं सुरनर मोहैं, वीनती अवधारिये ।
करजोड़ि सेवक वोनवै, प्रभु आवागमन निवारिये ।।११
तुम होउ भवभव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों ।
करजोड़ यों वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहों ।।१२
जो एक माही एक राजत, एकमांहि अनेकनों ।
इक अनेक की नांहि सख्या, नमूं सिद्ध निरजनो ।।१३

चौ०—मैं तुम चरणकमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करी मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊ तोहि, यह सेवाफल दोजे मोहि ।।१४
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करूँ, तुम सेयें भवसागर तरूँ ।।१५
नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुव दर्शन देख्या प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करू चरण तव सेव ।।१६
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ।।१७

दोहा

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान ।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान ।।१८
पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान ।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ।।१९
जैसी महिमा तुम विषै, और धरै नहिं कोय ।
जो सूरज में जोति है, तारन में नहिं सोय ।।२०
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय ।
ज्यों दिनकर परकाशतें, अधकार विनसाय ।।२१
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानू नही, सरन राखि भगवान ।।२२

पंचपरमेष्ठी की आरती

इहविधि मगल आरती कीजै ।
पंच परमपद भज सुख लीजै ।।टेक।।
पहली आरती श्रीजिनराजा ।
भव दधि पार उतार जिहाजा ।। इहविधि० ।।१।।
दूसरी आरती सिद्धनकेरी ।
सुमिरन करत मिटै भव फेरी ।। इहविधि० ।।२ ।
तीजी आरती सूर मुनिंदा ।
जनम मरण दुख दूर करिंदा ।। इहविधि० ।।३।।
चौथी आरती श्री उवझाया ।
दर्शन देखत पाप पलाया ।। इहविधि० ।।४।।
पाचमी आरती साधु तिहारो ।
कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी ।। इहविधि० ।।५ ।
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी ।
श्रावक बदौं आनन्दकारी ।। इहविधि० ।।६।।
सातमि आरती श्रीजिनवानी ।
'द्यानत' सुरग मुकति सुखदानी ।। इहविधि० ।।७ ।

भागचन्द्र कृत (भजन)

राग सोरठा

हे जिन तुम गुन अपरंपार, चन्द्रोज्ज्वल अविकार ।।टेक।।
जबै तुम गर्भमाहिं आये, तबै सब सुरगन मिलि आये ।
रतन नगरी में बरसाये, अमित अमोघ सुढार ।। हे जिन० ।।१
जन्म प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन सुरगिर परि हरि कीना ।

भक्ति करि सची सहित भीना, बोली जयजयकार ।।हे जिन० ।।२
जगत छनभंगुर जब जाना, भये तब नगनवृत्ती बाना ।
स्तवन लौकांतिकसुर ठाना, त्याग राजको भार ।। हे जिन० ।।३
घातिया प्रकृति जबै नासी, चराचर वस्तु सबै भाषी ।
धर्म की वृष्टि करी खासी, केवलज्ञान भंडार ।। हे जिन० ।।४
अघाती प्रकृति सुविघटाई, मुक्ति कान्ता तब ही पाई ।
निराकुल आनंद असहाई, तीनलोक सरदार ।। हे जिन० ।।५
पार गन्धर हूं नहिं पावैं, कहा लगि 'भागचन्द' गावै ।
तुम्हारे चरनाबुज ध्यावैं, भवसागर सों तार ।। हे जिन० ।।६

छहढाला

सोरठा

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुं त्रियोग सभारिकैं ।।१

पहिली ढाल । चौपाई (१५ मात्रा)

जे त्रिभुवन मे जीव अनत । सुख चाहैं दुखतै भयवत ।
तातै दुखहारी सुखकारि । करै सीख गुरु करुणा धारि ।।२
ताहि सुना भवि मन थिर आन । जो चाहो अपनो कल्यान ।
मोह महामद पियो अनादि । भूलि आपको भरमत वादि ।।३
तास भ्रमन की है बहु कथा । पै कुछ कहू कही मुनि जथा ।
काल अनंत निगोद मझार । बीत्यौ एकेंद्रिय-तन धार ।।४
एक श्वास में अठदश बार । जन्म्यो मरयो भरयो दुख भार ।
निकसि भूमि जल पावक भयो । पवन प्रत्येक वनस्पति थयो ।।५
दुर्लभ लहि ज्यों चिंतामणी । त्यो परजाय लही त्रस तणी ।

लटपिपीलि अलि आदि शरीर। धरधर मरयो सही बहु पीर॥६
कबहूँ पंचेन्द्रिय पशु भयो। मनबिन निपट अज्ञानी थयो।
सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर। निबल पशू हति खाये भूर॥७
कबहूं आप भयो बलहीन। सबलनिकरि खायो अति दीन।
छेदन भेदन भूखपियास। भार-बहन हिम आतप त्रास॥८
बध बंधन आदिक दुख घने। कोटि जीभतैं जात न भने।
अतिसंक्लेश भावतैं मरयो। घोर शुभ्रसागर में परयो॥६
तहाँ भूमि परसत दुख इस्यो। वीछू सहस डसैं तन तिस्यो।
तहाँ राधशोणितवाहिनी। कृमिकुलकलित देह-दाहिनी॥१०
सेमरतरुजुत दलअसिपत्र। असि ज्यों देह विदारैं तत्र।
मेरुसमान लोह गलि जाय। ऐसी शीत उष्णता थाय॥११
तिलतिल करहि देह के खंड। असुर भिड़ावैं दुष्टप्रचंड।
सिंधुनीरतैं प्यास न जाय। तौ पण एक न बूंद लहाय॥१२
तीन लोक को नाज जु खाय। मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहु सागरलौं सहे। कर्मजोगतैं नरतन लहे॥१३
जननी उदर बस्यो नवमास। अंग सकुचतैं पाई त्रास।
निकसत जे दुख पाये घोर। तिनको कहत न आवै ओर॥१४
बालपने में ज्ञान न लह्यो। तरुण समय तरुणीरत रह्यो।
अर्धमृतकसम बूढ़ापनो। कैसे रूप लखै आपनो॥१५
कभी अकामनिर्जरा करै। भवनत्रिक में सुरतन धरै।
विषय चाह दावानल दह्यो। मरत विलाप करत दुख सह्यो॥१६
जो विमानवासी हू थाय। सम्यक्दर्शन बिन दुख पाय।
तहँतैं चय थावरतन धरै। यों परिवर्तन पूरे करै॥१७

दूसरी ढाल। पद्धरी छन्द।

ऐसे मिथ्या दृग्ज्ञानचरन। वश भ्रमत भरत दुख जन्ममरण।

तावैं इनको तजिए सुजान । सुन तिन सक्षेप कहूँ बखान ॥१
जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व । सरधै तिनमाहिं विपर्ययत्व ।
चेतन को है उपयोगरूप । बिन मूरति चिन मूरति अनूप ।
पुद्गल नभ धर्म अधर्मकाल । इनतै न्यारी है जीव-चाल ।
ताकों न जान विपरीत मान । करि, करै देहमें निज पिछान ॥३
मैं सुखी दुखी मैं रक राव । मेरो धन गृह गोधन प्रभाव ।
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन । बेरूप सुभग मूरख प्रवीन ॥४
तन उपजत अपनी उपज जानि । तन नशत आपको नाशमानि ।
रागादि प्रगट जे दु खदैन । तिनही को सेवत गिनहि चैन ॥५
शुभ-अशुभ बध के फलमझार । रति अरति करै निजपद विसार ।
आतमहितहेतु विराग ज्ञान । ते लखें आपको कष्टदान ॥६
रोको न चाह निजशक्ति खोय । शिवरूप निराकुलता न जोय ।
याही प्रतीत जुत कछुक ज्ञान । सो दुखदायक अज्ञान जान ॥७
इनजुत विषयनि में जो प्रवृत्त । ताको जानौं मिथ्याचरित्त ।
यह यिथ्यात्वादि निसर्ग जेह । अब जे गृहीत सुनिये सु तेह ॥८
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव । पोषै चिर दर्शन मोह एव ।
अन्तररागादिक धरै जेह । बाहर धन अम्बरतै सनेह ॥९
धारै कुलिंग लहि महतभाव । ते कुगुरु जनमजल उपलनाव ।
जे रागदोषमलकरि मलीन । बनितागदादिजुत चिन्हचीन ॥१०
ते है कुदेव तिनकी जु सेव । शठ करत न तिन भवभ्रमनछेव ।
रागादिभाव हिंसा समेत । दर्वित त्रसथावर मरनखेत ॥११
जे क्रिया तिन्हें जानहु कुधम । तिन सरधै जीव लहै अशर्म ।
याको गृहतमिथ्यात जान । अब सुन गृहीत जो है कुज्ञान ॥१२
एकातवाद दूषित समस्त । विषयादिक पोषक अप्रशस्त ।
कपिलादिरचित श्रुतको अभ्यास । सोहै कुबोध बहु देन त्रास ॥१३
जो ख्यातिलाभ पूजादि चाह । धरि करत विविधविधि देहदाह ।

आतम अनातम के ज्ञानहीन । जे जे करनो तनकरनछीन ॥१४
ते सब मिथ्याचारित्र त्यागि । अब आतम के हितपंथ लागि ।
जगजालभ्रमनको देहु त्यागि । अब दौलत, निज आतम सुपागि ॥१५

तीसरी ढाल । नरेन्द्र छन्द (जोगीरासा)

आतम को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिए ।
आकुलता शिव माहिं न तातें, शिव मग लाग्यो चहिए ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरन शिव मग सो दुविध विचारो ।
जो सत्यारथ रूप सुनिश्चय, कारन सो व्यवहारो ॥१
परद्रव्यनितै भिन्न आपमे रुचि, सम्यक्त्व भला है ।
आप रूप को जानपनो, सो सम्यक्ज्ञानकला है ।
आपरूप में लीन रहै थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोखमग सुनिए, हेतु नियत को होई ॥२
जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंधरु संबर जानो ।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यो सरधानो ।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो ।
तिनको सुनि सामान्यविशेषैं, दृढ़ प्रतीत उर आनो ॥३
बहिरातम अंतरआतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीवको एक गिनै, बहिरातम तत्त्व मुधा है ।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविधिके, अन्तर आतम ज्ञानी ।
द्विविध संगबिन शुधउपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी ॥४
मध्यम अन्तर आतम हैं जे, देवव्रती आगारी ।
जघन कहे अविरतसमदृष्टि, तीनों शिवमगचारी ।
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमे घाति निवारी ।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी ॥५
ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महंता ।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगैं शर्म अनंता ।

बहिरातमता हेय जानि तजि, अंतर आतम हूजै ।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनद पूजै ।।६
चेतनता बिन सो अजीव हैं, पंच भेद ताके हैं ।
पुद्गल पच वरन, रसपन गध दु फरस वसु जाके हैं ।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्म द्रव्य अनरूपी ।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिनमूर्ति निरूपी ।।७
सकल द्रव्य को वास जासमें, सो आकाश पिछानो ।
नियत वरतना निशिदिन सो व्यवहारकाल परिमानो ।
यों अजीव अब आस्रव सुनिए, मन-वच-काय त्रियोगा ।
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ।।८
ये ही आतम के दुखकारन, तातै इनको तजिए ।
जीवप्रदेश बधे विधिसो, सो बधन कबहु न सजिए ।
शमदम सो जो कर्म न आवै, सो सवर आदरिये ।
तपबलतै विधिझरन निरजरा, ताहि सदा आचरिये ।।६
सकल करमतै रहित अवस्था, सो शिव थिरसुखकारी ।
इहविधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यौहारी ।
देव जिनेन्द्र गुरु परिग्रह विन, धर्म दयाजुत सारो ।
यहू मान समकित को कारन, अष्ट अंगजुत धारो ।।१०
वसुमद टारि निवारि त्रिषठता, षट् अनायतन त्यागो ।
शकादिक वसुदोष बिना, सवेगादिक चित पागो ।
अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, अब संक्षेपहु कहिए ।
बिन जानेतै दोष गुननको, कैसे तजिए गहिए ।।११
जिनवच में शका न धारि वृष, भव सुख वांछा भानै ।
मुनितन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व कुतत्त्व पिछानै ।
निजगुन अर पर अवगुन ढाकै, वा जिनधर्म बढ़ावै ।
कामादिक कर वृषतै चिगते, निजपरको सुदृढ़ावै ।।१२

धर्मीसों गऊवच्छ-प्रीतिसम, कर जिनधर्म दिपावै ।
इन गुनतें विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै ।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय तो न मद ठानै ।
मद न रूप को मद न ज्ञान को, धन बलको मद भानै ॥१३
तपको मद न मद जु प्रभुताको, करै न सो निज जानै ।
मद धारै तो येहि दोष वसु, समकित को मल ठानै ।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष-सेवक की, नहिं प्रशंस उचरै है ।
जिनमुनि जिनश्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हें न नमन करै है ॥१४
दोषरहित गुनसहित सुधी जे, सम्यक्दरश सजे हैं ।
चरित मोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजे हैं ।
गेहीपं गृह मे न रचे ज्यों, जल मे भिन्न कमल है ।
नगरनारिको प्यार यथा, कादे मे हेम अमल है ॥१५
प्रथम नरक विन षटभू ज्योतिष, वान भवन षंड नारी ।
थावर विकलत्रय पशुमे नहिं, उपजत समकितधारी ।
तीनलोक तिहुं कालमाहिं नहिं, दर्शन-सम सुखकारी ।
सकल धरमका मूल यही, इस विन करनी दुखकारी ॥१६
मोक्ष महल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा ।
सम्यकता न लहै सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा ।
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहिं होवै ॥१७

चौथी ढाल

दोहा

सम्यक श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यक्ज्ञान ।
स्वपर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान ॥१

रोला छन्द

सम्यक साथैं ज्ञान होय, पै भिन्न अराधो ।

लक्षण श्रद्धा जान, दुहूमें भेद अबाधो।
सम्यक्कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।
युगपद होते हू, प्रकाश दीपकतै होई ॥२
तास भेद दो हैं परोक्ष, परतछ तिनमाही।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मनतैं उपजाही।
अवधिज्ञान मनपर्जय, दो है देशप्रतच्छा।
द्रव्यक्षेत्रपरिमान लिए जानै जिय स्वच्छा ॥३
सकल द्रव्य के गुन अनत, परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल, प्रगट केवलि भगवता।
ज्ञान समान न आन, जगत मे सुख का कारन।
इह परमामृत जन्म, जरामृत-रोग निवारन ॥४
कोटि जनम तप तपे, ज्ञान बिय कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिनमाहि त्रिगुप्तितैं सहज टरैं ते।
मुनिव्रत धार अनत बार, ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो ॥५
तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
सशय विभ्रम मोह, त्याग आपौ लखि लीजै।
यह मानुषपरजाय, सुकुल सुनिबौ जिनवानी।
इहविधि गये न मिलै, सु मणि ज्यों उदधिसमानी ॥६
धन समाज गज बाज राज, तो काज न आव।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञान को कारन, स्वपरविवेक बखान्यो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आन्यो ॥७
जे पूरब शिव गये, जाय अब आगे जै हैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।
विषयचाह-दव-दाह, जगतजन अरनि दझावै।
तासु उपाय न आन ज्ञान घनघान बुझावै ॥८

पुण्य पाप-फल मांहि, हरख बिलखों मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि बिनसै थिर थाई।
लाख बात को बात यहै, निश्चय उर लावो।
तोरि सकल जगदंदफद, निज आतम ध्यावो ॥६

सम्यक्ज्ञानी होइ, बहुरि दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीज।
त्रसहिंसा को त्याग वृथा थावर न सघारै।
परवधकार कठोर निद्य नहि वयन उचारै ॥१०

जल मृतिका बिन और नाहि कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल नारिसौ रहै विरत्ता।
अपनो शक्ति विचार परिग्रह थोरो राखें।
दश दिशि गमन-प्रमान, ठान तसु सीम न नाखै ॥११

ताहू मे फिर ग्राम गली, गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान ठान अन सकल निवारा।
काहूकी धनहानि, किसी जयहार न चितै।
देय न सो उपदेश, होय अघ बनिज कृषोतै ॥१२

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धन हल हिंसोपकरन, नहि दे जस लाधै।
रागदोष-करतार कथा, कबहू न सुनीजै।
और हु अनरथदंड, हेतु अघ तिन्है न कीजै ॥१३

धर उर समताभाव सदा, सामायिक करिये।
पर्व चतुष्टय माहि पाप तजि प्रोषध धरिये।
भोग और उपभोग नियमकरि ममतु निवारै।
मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥१४

बारह व्रत के अतीचार, पन पन न लगावै।
मरन समय संन्यास धारि, तसु दोष नशावै।

यों श्रावक व्रत पाल स्वर्ग, सोलम उपजावै।
तहँतैं चय नरजन्म पाय मुनि ह्वै शिव जावै ॥१५

पांचवीं ढाल। सखी छन्द (१४ मात्रा)

मुनि सकल व्रती बड़भागी, भवभोगनतैं वैरागी।
वैराग्य उपावन माई, चितो अनुप्रेक्षा भाई ॥१
इन चिंतन समरस जागै, जिमि ज्वलन पवनके लागै।
जबही जिय आतम जानै, तबही जिय शिवसुख ठानै ॥२
जोवन गृह गोधन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई ॥३
सुर असुर खगाधिप जेते, मृग ज्यों हरि काल दले ते।
मणि मन्त्र तन्त्र बहु होई, मरते न बचावै कोई ॥४
चहुंगतिदुख जीव भरे है, परिवर्तन पञ्च करे हैं।
सबविधि संसार असारा, यामें सुख नाहि लगारा ॥५
शुभ अशुभ करम फल जेते, भोगै जिय एकहि तेते।
सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथ के हैं भीरी ॥६
जलपय ज्यों जियतन मेला, पै भिन्न भिन्न नहि भेला।
तो प्रकट जुदे धन धामा, क्यों ह्वै इक मिलि सुत रामा ॥७
पल-रुधिर राध-मल-थैली, कीकस वसादितैं मैली।
नव द्वार बहैं घिनकारी, अस देह करे किम यारी ॥८
जो जोगन की चपलाई, तातैं ह्वै आस्रव भाई।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिन्हैं निरवेरे ॥९
जिन पुण्यपाप नहि कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, संवरलहि सुख अवलोके ॥१०
निज काल पाय विधि झरना, तासौं निज काज न सरना।
तप करि जो कर्म खपावै, सोई शिवसुख दरसावै ॥११
किनहू न करयो न धरै को, षट्द्रव्यमयो न हरै को।
सो लोकमाहिं बिन समता, दुख सहै जीव नित भ्रमता ॥१२

अंतिम ग्रीवकलौं की हद, पायो अनतबिरियां पद।
पर सम्यक्ज्ञान न लाध्यो, दुर्लभ निजमें मुनि साध्यो ॥१३
जे भाव मोहतैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
सो धर्म जबै जिय धारे, तबही सुख सकल निहारै ॥१४
सो धर्म मुनिनकरि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये।
ताको सुनिये भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी ॥१५

छट्ठी ढाल (हरिगीता छन्द)

षट्काय जीव न हननतें, सब विधि दरवहिंसा-टरी।
रागादि भाव निवारतै, हिंसा न भावित अवतरी।
जिनके न लेश मृषा न जल तृन हू बिना दीयो गहैं।
अठदशसहस विधि शील धर चिद्ब्रह्म में नित रम रहैं ॥१
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर संग दशधा तें टलें।
परमाद तजि चउकर मही लखि समिति ईर्यातैं चलैं।
जग सुहितकर सब अहितहर श्रुतिसुखद सब संशय हरैं।
भ्रमरोग-हर जिनके वचन मुखचद्रतैं अमृत झरैं ॥२
छ्यालीस दोष बिना सुकुल श्रावकतणे घर अशनको।
लें तप बढ़ावन हेत नहिं तन पोषते तजि रसन को।
शुचि ज्ञान संजम उपकरन लखिके गहैं लखिके धरैं।
निर्जंतु थान विलोकि तन-मलमूत्र-श्लेषम परिहरैं ॥३
सम्यक् प्रकार निरोधि मन-वच-काय आतम ध्यावते।
तिन सुथिर मुद्रा देखि मृगगन उपल खाज खुजावते।
रसरूप गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने।
तिनमें न राग विरोध पंचेन्द्रियजयन पद पावने ॥४
समता सम्हारैं थुति उचारैं बंदना जिन देव को।
नित करैं श्रुत रति धरैं प्रतिक्रम तजैं तन अहमेव को।
जिनके न न्हौन न दंतधोवन लेश अम्बर आवरन।
भूमाहिं पिछली रयनि में कछु शयन एकाशन करन ॥५

इक बार दिन में लें अहार खड़े अलप निज पान में।
कचलोच करत न डरत परिषहसों लगे निज ध्यानमें।
अरिमित्र महल मसान कंचन काच निंदन थुति करन।
अर्घावतारन असिप्रहारन में सदा समता धरन ॥६
तप तपैं द्वादश धरें वृष दश रतनत्रय सेवें सदा।
मुनि साथमें वा एक विचरें चहैं नहिं भवसुख कदा।
यों है सकल संजम चरित सुनिये स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि मिटै परकी प्रवृत्ति सब ॥७
जिन परम पैनी सुबुधि छैनी डारि अंतर भेदिया।
वरनादि अरु रागादितैं निज भाव को न्यारा किया।
निजमाहिं निजके हेतु निजकर आपको आपै गह्यो।
गुनगुनी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मझार कछु भेद न रह्यो ॥८
जहँ ध्यान ध्याता ध्येयको न विकल्प वचभेद न जहाँ।
चिद्भाव कर्म चिदेश करता चेतना क्रिया तहाँ।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध उपयोग की निश्चल दशा।
प्रकटी जहाँ दृग ज्ञान व्रत ये तीनधा एकै लशा ॥९
परमान नय निक्षेप को न उदोत अनुभव में दिखै।
दृग ज्ञान सुख-बलमय सदा नहिं आन भावजु मो विखै।
मैं साध्य साधक मैं अबाधक कर्म अरु तसु फलनितैं।
चितपिंड चंड अखंड सुगुन, करंडच्युत पुनि कलनितैं ॥१०
यों चित निज में थिर भये तिन अकथ जो आनंद लह्यो।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा अहिमिंद्रकै नाहीं कह्यो।
तब ही शुकलध्यानाग्निकर चउघाति विधिकानन दह्यो।
सब लख्यो केवलज्ञानकरि भविलोकको शिवमग कह्यो ॥११
पुनि घाति शेष अघाति विधि छिनमाहिं अष्टम भू बसैं।
वसुकर्म विनशैं सुगुन वसु सम्यक्त्व आदिक सब लसैं।

संसार खार अपार पारावार तिर तीरहिं गये।
अविकार अकल अरूप शुध चिद्रूप अविनाशी भये ॥१२

निजमाहिं लोक अलोक गुन परजाय प्रतिबिंबित थये।
रहिहैं अनंतानंतकाल यथा तथा शिव परि नये।
धनि धन्य हैं जे जीव नरभव पाय यह कारज किया।
तिनही अनादी भ्रमन पचप्रकार तजि वर सुख लिया ॥१३

मुख्योपचार दुभेद यों बड़भागि रत्नत्रय धरै।
अरु धरेंगे ते शिव लहैं तिन सुजस जल जगमल हरै।
इमि जान आलस हानि साहस ठानि यह सिख आदरो।
जबलों न रोग जरा गहै तबलों जगत निज हित करो ॥१४

यह राग आग दहै सदा तातै समामृत सेइये।
चिर भजे विषय कषाय अब तौ त्याग निजपद बेइये।
कहा रच्यो परपद मे न तेरो पद यहै क्यों दुख सहै।
अब दौल, होउ सुखी स्वपद रचि दाव मत चूको यहै ॥१५

दोहा

इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुकल बैशाख।
करचो तत्त्व उपदेश यह, लखि बुधजन की भाख ॥१६

लघुधी तथा प्रमादतैं, शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढ़ो सदा, जो पावो भवकूल ॥१७

इति श्री पं० दौलतरामजीकृत छहढाला समाप्त।

श्री तत्त्वार्थाधिगममोक्षशास्त्रम्

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तार कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।१। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।२। तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।३। जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।४। नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास ।५। प्रमाणनयैरधिगमः ।६। निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ।७। सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८। मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।९। तत्प्रमाणे ।१०। आद्ये परोक्षम् ।११। प्रत्यक्षमन्यत् ।१२। मतिःस्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।१३। तदिंद्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ।१४। अवग्रहेहाऽवायधारणाः ।१५। बहुबहुविधक्षिप्राऽनिःसृताऽनुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ।१६। अर्थस्य ।१७। व्यञ्जनस्यावग्रहः ।१८। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।१९। श्रुतं मतिपूर्व द्व्यनेकद्वादशभेदम् ।२०। भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ।२१। क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ।२२। ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ।२३। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।२४। विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्ययोः ।२५। मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ।२६। रूपिष्ववधेः ।२७। तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ।२८। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।२९। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।३०। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।३१। सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।३२। नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ।।३३।।

ज्ञानदर्शनयोस्तत्त्वं नयानां चैव लक्षणम् ।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्वमध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ।

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ।५। गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाऽज्ञानासंयताऽसिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदा ।६। जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ।७। उपयोगो लक्षणम् ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।९। संसारिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्काऽमनस्काः ।११। संसारिणस्त्रसस्थावराः ।१२। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ।१३। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ।१४। पञ्चेन्द्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।१८। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ।१९। स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ।२०। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।२१। वनस्पत्यन्तानामेकम् ।२२। कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२३। सञ्ज्ञिनः समनस्काः ।२४। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।२५। अनुश्रेणि गतिः ।२६। अविग्रहा जीवस्य ।२७ विग्रहावती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।२८। एकसमयाऽविग्रहा ।२९। एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ।३०। सम्मूर्छनगर्भोपपादाज्जन्म ।३१। सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।३२। जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ।३३। देवनारकाणामुपपादः ।३४। शेषाणां सम्मूर्छनम् ।३५। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।३६। परं परं सूक्ष्मं ।३७। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ।३८। अनंतगुणे परे ।३९। अप्रतीघाते ।४०। अनादिसंबधे च ।४१। सर्वस्य ।४२। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।४३। निरुपभोगमन्त्यं ।४४। गर्भसामूर्छनजमाद्य ।४५। औपपादिकं वैक्रियिकं ।४६। लब्धिप्रत्ययं च ।४७। तैजसमपि ।४८। शुभं विशुद्धमव्याघाति

चाहारकं प्रमत्तसयतस्यैव ।४९। नारकसंमूर्च्छिनो नपुसकानि ।५० न देवा ।५१। शेषास्त्रिवेदा. ।५२। औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।५३।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्नशर्कराबालुकापकधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽध ।१। तासु त्रिशत्पचविंशतिपचदशदशत्रिपचोनैकनरकशतसहस्राणि पच चैव यथाक्रम ।२। नारका नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।३। परस्परोदीरितदुःखाः ।४। सक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।५। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिशत्सागरोपमा सत्वाना परा स्थिति ।६। जबूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।७। द्विर्द्विविष्कभाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवलयाकृतयः ।८। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कभो जबूद्वीपः ।९। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाक्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिन पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।११। हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ।१२। मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ।१३। पद्ममहापद्मतिगिंछकेशरिमहापुडरीकपुडरीकाह्लदास्तेषामुपरि ।१४। प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कभो ह्लदः ।१५। दशयोजनावगाहः ।१६। तन्मध्ये योजन पुष्करम् ।१७। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्लदाः पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्य श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितय ससामानिकपरिषत्का ।१९। गगासिधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकातासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगा ।२०। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगा ।२१। शेषास्त्वपरगाः ।२२। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गगासिध्वादयो नद्य ।२३। भरतः षड्विंशतिपचयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ।२४। तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहांताः ।२५। उत्तरा

दक्षिणतुल्याः ।२६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्य-वसर्पिणीभ्यां ।२७। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।२८। एकद्वित्रिपल्यो-मस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ।२९। तथोत्तरा ।३०। विदेहेषु सङ्ख्येयकालाः ।३१। भरतस्य विष्कम्भो जंबूद्वीपस्य नवतिशत-भागः ।३२। द्विर्धातकीखण्डे ।३३। पुष्करार्द्धे च ।३४। प्राङ्मानुषोत्तरा-न्मनुष्याः ।३५। आर्या म्लेच्छाश्च ।३६ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयो-ऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।३७। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमांतर्मुहूर्ते ।३८। तिर्यग्योनिजानां च ।३९।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

देवाश्चतुर्णिकायाः ।१। आदितस्त्रिषु पीतांतलेश्याः ।२। दशाष्ट-पचद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।३। इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपा-रिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चकशः ।४। त्रायस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः ।५। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।६। कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।७। शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ।८। परेऽप्रवीचाराः ।९। भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्त-नितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ।१०। व्यंतराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्व-यक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।११। ज्योतिष्काः सूर्याचंद्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्र-कीर्णकतारकाश्च ।१२। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।१३। तत्कृतः कालविभागः ।१४। बहिरवस्थिताः ।१५। वैमानिकाः ।१६। कल्पोप-पन्नाः कल्पातीताश्च ।१७। उपर्युपरि ।१८। सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयो-रारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंतापराजितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च ।१९। स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतो-

ऽधिकाः ।२०। गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।२१। पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।२२। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।२३। ब्रह्मलोकालया लौकांतिकाः ।२४। सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्यावाधारिष्टाश्च ।२५। विजयादिषु द्विचरमाः ।२६। औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।२७। स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्धहीनमिताः ।२८। सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ।२९। सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।३०। त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ।३१। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।३२। अपरा पल्योपममधिकम् ।३३। परतः परतः पूर्वा पूर्वानंतराः ।३४। नारकाणा च द्वितीयादिषु ।३५। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायां ।३६। भवनेषु च ।३७। व्यंतराणां च ।३८। परा पल्योपममधिकं ।३९। ज्योतिष्काणां च ।४०। तदष्टभागोऽपरा ।४१। लौकांतिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।१। द्रव्याणि ।२। जीवाश्च ।३। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।४। रूपिणः पुद्गलाः ।५। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।६। निष्क्रियाणिच ।७। असख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानां ।८। आकाशस्यानंताः ।९। संख्येयासंख्ययाश्च पुद्गलानां ।१०। नाणोः ।११। लोकाकाशेऽवगाहः ।१२। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।१३। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानां ।१४। असंख्येयभागादिषु जीवानां ।१५। प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।१६। गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ।१७। आकाशस्यावगाहः ।१८। शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गला-

नाम् ।१६। सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।२०। परस्परोपग्रहो जीवानां ।२१। वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्शरसगंधवर्णवंतः पुद्गलाः ।२३। शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवंतश्च ।२४। अणवः स्कन्धाश्च ।२५। भेदसंघातेभ्य उत्पद्यते ।२६। भेदादणुः ।२७। भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ।२८। सद्द्रव्यलक्षणं ।२६। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।३०। तद्भावाव्ययं नित्यं ।३१। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।३२। स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः ।३३। न जघन्यगुणानां ।३४। गुणसाम्ये सदृशानां ।३५। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।३६। बंधेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।३७। गुणपर्ययवद्द्रव्यं ।३८। कालश्च ।३६। सोऽनंतसमयः ।४०। द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ।४१। तद्भावः परिणामः ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ।।५।।

कायवाङ्मनःकर्मयोगः ।१। स आस्रवः ।२। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।३। सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ।४। इंद्रियकषायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ।५। तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।६। अधिकरणं जीवाजीवाः ।७। आद्यं संरंभसमारंभारंभयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ।८। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परं ।६। तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर्णयोः ।१०। दुःखशोकतापाक्रंदनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ।११। भूतव्रत्यनुकंपादानसरागसंयमादियोगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।१२। केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१३। कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।१४। बह्वारंभपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः

।१५। माया तैर्यग्योनस्य ।१६। अल्पारंभपरिग्रहत्वंमानुषस्य ।१७। स्वभावमार्दवं च ।१८। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषां ।१९। सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांःस देवस्य ।२०। सम्यक्त्वं च ।२१। योगवक्रताविसंवादन चाशुभस्य नाम्नः ।२२। तद्विपरीत शुभस्य ।२३। दर्शनविशुद्धिविनयसपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।२४। परात्मनिंदाप्रशसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।२५। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२६। विघ्नकरणमंतरायस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रत ।१। देशसर्वतोऽणुमहती तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंच पच ।३। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पच ।४। क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषण च पच ।५। शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभक्ष्यशुद्धि सद्धर्माविसंवादाः पंच ।६। स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरागनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसस्कारत्यागाः पंच ।७। मनोज्ञामनोज्ञेंद्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पंच ।८। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।९। दुःखमेव वा ।१०। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु ।११। जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थं ।१२। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपण हिंसा ।१३। असदभिधानमनृतं ।१४। अदत्तादानं स्तेयं ।१५। मैथुनमब्रह्म ।१६। मूर्छा परिग्रहः ।१७। निःशल्यो व्रती ।१८। अगार्यनगारश्च ।१९। अणु-

व्रतोऽगारी ।२०। दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोग-परिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च ।२१। मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता ।२२। शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।२३। व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रम ।२४। बंधवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।२५। मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ।२६। स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।२७। परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीता गमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशः ।२८। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।२९। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यंतराधानानि ।३०। आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।३१। कंदर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।३२। योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३३। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३४। सचित्तसंबंधसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ।३५। सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।३६। जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ।३७। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ।३८। विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।।३९।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ।१। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ।२। प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ।३। आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नाम-

गोत्रांतरायाः ।४। पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभदा यथाक्रमं ।५। मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानां ।६। चक्षुरचक्षुरवधि-केवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यान गृद्धयश्च ।७। सद-सद्वेद्ये ।८। दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनव-षोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरति-शोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ।९। नारकतैर्यग्योन-मानुषदैवानि ।१०। गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबंधनसंघातसंस्थान-संहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासवि-हायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्व च ।११। उच्चैर्नीचैश्च ।१२। दानलाभभोगो-पभोगवीर्याणां ।१३। आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ।१४। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१५। विंशतिर्नाम-गोत्रयो. ।१६। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष ।१७। अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ।१८। नामगोत्रयोरष्टौ ।१९। शेषाणामंतर्मुहूर्त्ता ।२०। विपाकोऽनुभवः ।२१। स यथानाम ।२२। ततश्च निर्जरा ।२३। नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशष्व-नतानंतप्रदेशाः ।२४। सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्य ।२५। अतोऽन्य-त्पापम् ।।२६।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ।।८।।

आस्रवनिरोधः संवरः ।१। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ।२। तपसा निर्जरा च ।३। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।४।

ईर्याभाषेषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।५। उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।६। अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यातत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः । । मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः ।८। क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ।९। सूक्ष्मसांपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।१०। एकादश जिने ।११। बादरसांपराये सर्वे ।१२। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।१३। दर्शनमोहांतराययोरदर्शनालाभौ ।१४। चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयांचासत्कारपुरस्काराः ।१५। वेदनीये शेषाः ।१६। एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशति ।१७। सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातमिति चारित्रम् ।१८। अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ।१९। प्रायश्चित्तविनयवैय्यावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यान्यानुत्तरं ।२०। नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।२१। आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ।२२। ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ।२३। आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ।२४। वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ।२५। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।२६। उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात् ।२७। आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ।२८। परे मोक्षहेतू ।२९। आर्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।३०। विपरीतं मनोज्ञस्य ।३१। वेदनायाश्च ।३२। निदानं च ।३३। तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ।३४। हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः

।३५। आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यं ।३६। शुक्ले चाद्ये पूर्व. विदः ।३७। परे केवलिनः ।३८। पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरतक्रियानिवर्तीनि ।३९। त्र्येकयोगकाययोगायोगानां ।४०। एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।४१। अवीचारं द्वितीयं ।४२। वितर्कः श्रुत ।४३। वीचारोऽर्थव्यजनयोगसंक्रातिः ।४४। सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ।४५। पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथा ।४६। संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ।।४७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ।।९।।

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्च केवल ।१। बंधहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ।२। औपशमिकादिभव्यत्वानां च ।३। अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।४। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकांतात् ।५। पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ।६। आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालांबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ।७। धर्मास्तिकायाभावात् ।८। क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ।।९।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ।।१०।

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।१
दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ।।२
तत्त्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वन्दे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ।।३

इति तत्त्वार्थाधिगमं मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।।

श्री परमात्मने नम.

स्वर्गीय कविवर वृन्दावनजी रचित

वर्तमान चतुर्विंशतिजिनपूजा

दोहा

वदो पाँचों परम गुरु, सुर गुरु वंदत जास ।
विघनहरन, मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥१॥
चौबीसों जिनपति नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचों पाठ सुखदाय ॥२॥

नामावली-स्तोत्र

जय जिनंद सुखकंद नमस्ते, जय जिनंद जितफंद नमस्ते ।
जय जिनंद वरबोध नमस्ते, जय जिनंद जितक्रोध नमस्ते ॥१॥
पाप-तापहर इंदु नमस्ते, अरह-वरन जुत बिंदु नमस्ते ।
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते, इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥२॥
पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते, मर्म-भर्म घन धर्म नमस्ते ।
दृग-विशाल वरभाल नमस्ते, हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ॥३॥

शुद्ध-बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते, रिद्धि-सिद्धि-वरवृद्ध नमस्ते ।
वीतराग-विज्ञान नमस्ते, चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥४॥
स्वच्छ गुणांबुधिरत्न नमस्ते, सत्त्वहितंकर-यत्न नमस्ते ।
कुनय-करी मृगराज नमस्ते, मिथ्याखगवरबाज नमस्ते ॥५॥
भव्य भवोदधितार नमस्ते, शर्मामृत-सितसार नमस्ते ।
दरशज्ञानसुखवीर्य नमस्ते, चतुराननधर धीर्य नमस्ते ॥६॥
हरि-हर-ब्रह्मा-विष्णु नमस्ते, मोहमर्द्द मनु जिष्णु नमस्ते ।
महादान महाभोग नमस्ते, महाज्ञान महाजोग नमस्ते ॥७॥
महा उग्र तपसूर नमस्ते, महा मौनगुण-भूरि नमस्ते ।
धरमचक्रि, वृषकेतु नमस्ते, भवसमुद्र शतसेतु नमस्ते ॥८॥
विद्याईश मुनीश नमस्ते, इंद्रादिक नुतशीश नमस्ते ।
जय रत्नत्रयराय नमस्ते, सकल जीवसुखदाय नमस्ते ॥९॥
अशरनशरनसहाय नमस्ते, भव्य सुपंथ लगाय नमस्ते ।
निराकार साकार नमस्ते, एकानेक आधार नमस्ते ॥१०॥
लोकालोक विलोक नमस्ते, त्रिधा सर्वगुणथोक नमस्ते ।
सल्ल दल्ल दल मल्ल नमस्ते, कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते।११
भुक्तिमुक्ति दातार नमस्ते, उक्तिसुक्ति शृंगार नमस्ते ।
गुण अनंत भगवंत नमस्ते, जै जै जै जयवन्त नमस्ते ॥१२॥

इति पठित्वा जिनचरणाग्रे परिपुष्पांजलिम् क्षिपेत्

समुच्चय चतुर्विंशतिजिनपूजा

छन्द कवित्त

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पदम सुपार्स जिनराय।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि,
वासुपूज्य पूजित सुरराय॥
विमँल अनंत धरम जस उज्ज्वल,
शांति कुन्थ अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु,
वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥१॥

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा।
भरि कनक कटोरी क्षीर, दीनी धार धरा॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ॥१॥
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।
गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिनचरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी ॥ चौ० २॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे ।
मुकताफल की उनमान, पुंज धरों प्यारे ॥चौ० ३॥
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतम् ।
वर कज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरो गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० ४॥
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्राशुक स्वाद, जजत छुधादि हने ॥ चौ० ५॥
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
तम खंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञान कला जागै ॥चौ० ६॥
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दशगंध हुताशनमाहिं, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों ॥चौ० ७॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो ।
देखत दृगमन को प्यार, पूजत सुख पायो ।।चौ०८।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमकों अरपो भवतार, भवतरि मोक्ष वरो ।।चौ०९।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ।।१।।

छंद घत्तानन्द

जय भवतमभंजन जनमनकंजन,
रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक,
चौबीसों जिनराज वरा ।।२।।

छंद पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत,
जय अजित जीत वसु अरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर,
जय अभिनन्दन आनन्दपूर ।।३।।

जय सुमति सुमतिदायक दयाल,
जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल ।
जय जय सुपास भवपास नाश,
जय चन्द चन्द तन दुतिप्रकाश ॥४॥
जय पुष्पदन्त दुति दन्त सेत,
जय शीतल शीतल गुननिकेत ।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज,
जय वासवपूजित वासपुज्ज ॥५॥
जय विमल विमलपद देनहार,
जय जय अनन्त गुणगन अपार ।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत,
जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥६॥
जय कुंथु कुंथ वादिक रखेय,
जय अर जिन वसुअरि छय करेय ।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल,
जय मुनिसुव्रत व्रत सल्लदल्ल ॥७॥
जय नमि नुत वासवनुत सपेम,
जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम ।
जय पारसनाथ अनाथनाथ,
जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ॥८॥

घत्तानन्द छंद

चौबीस जिनन्दा आनन्दकंदा, पापनिकंदा सुखकारी ।
तिन पद जुगचंदा उदय अमन्दा, वासववन्दा हितधारी ।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो महार्घम् ।

सोरठा

भुक्ति-मुक्ति-दातार चौबीसौं जिनराज वर ।
तिन पद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ।।
इत्याशीर्वादम् (पुष्पांजलिम् क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ (ऋषभ) नाथ पूजा

अडिल्ल ।

परमपूज वृषभेश स्वयंभू देवजू ।
पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू ।।
कनकवरण तन-तुङ्ग धनुष पणशत तनो ।
कृपासिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।।१।।
ॐ ह्री श्री ऋषभनाथ जिन । अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी

हिमवनोद्भव वारि सुधारिकैं,
जजत हों गुनबोध उचारकैं ।

परमभाव सुखोदधि दीजिये,

जनममृत्युजरा छय कीजिये ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलय चन्दन दाहनिकंदनं,

घसि उभै करमे करि वंदनं ।

जजत हो प्रशमाश्रय दीजिये,

तपत ताप तृषा छै कीजिये ॥२॥

ॐ ह्री श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

अमल तंदुल खड विवर्जितं,

सित निशेष महिमामय तर्जितं ।

जजत हो तसु पुंज धरायजी,

अखय संपति द्यो जिनरायजी ॥३॥

ॐ ह्री श्री षदेवजिनेन्द्राऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल चंपक केतकि लीजिये,

मदनभंजन भेट धरीजिये ।

परमशील महा सुखदाय हैं,

समरसूल निमूल नशाय है ॥४॥

ॐ ह्री श्री षभभदेवजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

सरस मोदन मोंदक लीजिये,

हरनभूख जिनेश जजीजिये ।

सकल आकुल अंतकहेतु हैं,

अतुल शांत सुधारस देतु हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

निबिड़ मोह महातम छाईयो,
स्वपर भेद न मोहि लखाइयो ।
हरनकारन दीपक तासके,
जजत हों पद केवल भासके ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर चन्दन आदिक लेयकें,
परम पावन गन्ध सुखेयकें ।
अगनि संग जरै मिस धूमके,
सकल कर्म उड़ें यह घूमके ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

सुरस पक्व मनोहर पावने,
विविध ले फल पूज रचावने ।
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये ।
हमहि मोक्ष महाफल दीजिये ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल फलादि समस्त मिलायकें,
जजत हों पद मंगल गायकें ।
भगतवत्सल दीनदयालजी,
करहु मोहि सुखी लखि हालजी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घम् ।

पचकल्याणक

असित दोज अषाढ़ सुहावनी, गरमंगल को दिन पावनी ।
हरि सची पितुमार्ताह सेवही, जजत है हम श्रीजिनदेव ही ।।१।।
ॐ ह्री आषाढकृष्णद्वितीयाया गभमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित चैत सुनौमि सुहाइयो, जनममंगल तादिन पाइयो ।
हरि महागिरिपै जजियो तबै हम जजै पदपंकजको अबै ।।२।।
ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्या जन्ममगलप्राप्ताय श्री ऋषभनाथाय अर्घम्

असित नौमि सुचैत धरे सही, तप विशुद्ध सबै समता गही ।
निजसुधारससो झर लाइयो, हम जजै पद अर्घ चढाइयो ।।३।।
ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्याम् तपमंगलप्राप्तायश्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित फागुन ग्यारसि सोहनों, परम केवलज्ञान जग्यो भनो ।
हरिसमूह जजै तहँ आइकै, हम जजै इत मगल गाइकै ।।४।।
ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णैकादश्या, ज्ञानमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित चौदसि माघ विराजई, परम मोक्ष सुमगल साजई ।
हरिसमूह जजै कैलाशजी, हम जजै अति धार हुलासजी ।।५।।
ॐ ह्री माघकृष्णचतुर्दश्या मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनचंदा आदि जिनंदा, हनि भवफंदा कंदा जू ।
वासवशतवंदा धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू ।।१।।

छन्द मोतियादाम

त्रिलोक हितंकर पूरन पर्म,
प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म।
जतीसुर ब्रह्म विदांबर बुद्ध,
वृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध ॥२॥
जबै गर्भागम मङ्गल जान,
तबै हरि हर्ष हिये अति आन।
पिता जननी पद सेव करेय,
अनेक प्रकार उमंग भरेय ॥३॥
जये जबही तब्रही हरि आय,
गिरेन्द्रविषै किय न्हौन सुजाय।
नियोग समस्त किये तित सार,
सुलाय प्रभू पुनि राज अगार ॥४॥
पिताकर सौंपि कियो तित नाट,
अमंद अनंद समेत विराट।
सुथान पयान कियौ फिर इन्द,
इहां सुर सेव करै जिनचन्द ॥५॥
कियो चिरकाल सुखाश्रिराज,
प्रजा सब आनंद को तित साज।

सुलिप्त सुभोगनि में लखि जोग,
कियों हरि ने यह उत्तम योग ॥६॥
निलंजन नाच रच्यो तुम पास,
नवों रस पूरित भाव विलास।
बजै मिरदंग दृमंदृम जोर,
चलै पग झारि झनांझन झोर ॥७॥
घनाघन घंट करै धुनि मिष्ठ,
बजै मुहचंग सुरान्वित पुष्ट।
खड़ी छिन पास छिनहि आकाश,
लघू छिन दीरघ आदि विलास ॥८॥
ततच्छन ताहि विलै अविलोय,
भये भवतै भयभीत बहोय।
सुभावत भावन बारह भाय,
तहां दिवब्रह्म रिषीश्वर आय ॥९॥
प्रबोधप्रभू सुगये निज धाम,
तबै हरि आय रची शिवकाम।
कियों कचलौंच प्रयाग अरण्य,
चतुर्थज्ञान लह्यों जग धन्य ॥१०॥
धरयो तब योग छःमास प्रमान,
दियो श्रेयांश तिन्हैं इखु-दान।

भयों जब केवलज्ञान जिनेन्द्र,
समोसृत ठाठ रच्यो सु धनेन्द ॥११॥
तहां वृषतत्त्व प्रकाशि अशेस,
कियो फिर निर्भय नाथ प्रवेस।
अनन्त गुनातम श्रीसुखराश,
तुम्हैं नित भव्य नमैं शिवआश ॥१२॥

छन्द-घत्तानन्द

यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी, जन्म जरामृति दूर करो।
शिवसंपति दीजे ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय महार्घम्।

छन्द आर्या

जों ऋषभेश्वर पूजै, मनवचतन भाव शुद्ध कर प्रानी।
सों पावै निश्चैसौं, भुक्ति औ मुक्ति सार सुख थानी॥

पुष्पांञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः।

—o—

श्री अजितजिनेन्द्रपूजा

छंद-अशोकपुष्पमंजरी, दंडक तथा अर्द्धमंजरी तथा अर्द्धनाराच

त्याग वैजयंत सार सार-धर्म के अधार,
जन्मधार धीर नम्र सुष्टु कौशलापुरी।
अष्ट दुष्ट नष्टकार मातु वैजयाकुमार,

आयु पूर्व लक्ष दक्ष है बहत्तरैंपुरी ॥
ते जिनेश श्रीमहेश शत्रु के निकन्दनेश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्त पै कृपा पुरी ।
आय तिष्ट इष्टदेव म करो पदाब्जसेव,
पर्म शर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी ॥१॥

ॐ ह्री श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः । अत्र तम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अष्टक

गङ्गाहृद पानी निर्मल आनी, शौरभसानी सीतानी ।
तसु धारत धारा तृष, निवारा शांतागारा सुखदानी ॥
श्री अजितजिनेशं नुतनकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं ।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥१॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

शुचि चंदन बावन तापमिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो ।
तुम भवतपभजन हो शिवरंजन पूजा रंजन मैं आयो ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

सितखंड विवर्जित निशिपतितर्जित, पुंज विधर्जित तंदुल को ॥
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित,आनंदभर्जित दंदलको ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

मनमथमदमंथन धीरजग्रंथन, ग्रंथनिग्रंथन ग्रंथपती ।

तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम ।
आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो ।
षटरसकर भीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुख पायो ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय क्षुध.रोगविनाशनाय चरम ।
दीपक मनिमाला जोत उजाला, भरि कनथाला हाथ लिया ।
तुम भ्रमतहारी सिवसुखकारी, केवलधारी पूज किया ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम ।
अगरादिकचूरन परिमलपूरन, खेवत कूरन कर्म जरैं ।
दशहूंदिशि धावत हर्ष बढावत,अलिगुणगावत नृत्य करैं ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धपम ।
बादाम नरंगी श्रीफल पुगी, आदि अभंगीसौ अरचौ ।
सबविघनविनाशै सुखपरकाशै,आतम भासै भौ विरचौं ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम ।
जलफल सब सज्जै बाजत बज्जै, गुनगनरजै मनमज्जै ।
तुअ पदजुगमज्जै सज्जन जज्जै,ते भव भज्जै निजकज्जै ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम ।

पंचकल्याणक

जेठ असेत अमावशि सोहै, गर्भदिना नंद सो मन मोहै ।
इंद फनिंद जजे मन लाई, हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई ॥१॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलाप्राप्ताय श्री अजित-नाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघ सुदी दशमी दिन जाये, त्रिभुवनमें अति हर्ष बढ़ाये।
इंद फनिंद जजै तित आई, हम नित सेवत है हुलसाई ॥२॥

ॐ ह्री माघशुक्लदशमीदिने जन्ममंगलमंडिताय श्री अजित-नाथजिनेन्द्राय अर्घम।

माघसुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य विचारा।
इंद फनिद ज़जें तित आई, हम इत सेवत हैं सिर नाई ॥३॥

ॐ ह्री माघशुक्लादशमीदिने तपमडिताय श्री अजितजिनेन्द्राय अर्घम्।

पौषसुदी तिथि ग्यारस सुहायो, त्रिभुवनभानु सुकेवल जायो।
इंद फनिद जजै तित आई, हम पद पूजत प्रीत लगाई ॥४॥

ॐ ह्री पौषशुक्लएकादश्यादिने ज्ञानमंडलमडिताय श्री अजित-जिनेन्द्राय अर्घम्।

पंचमि चैतसुदी निरवाना, निज गुनराज लियो भगवाना।
इंद फनिद ज़जैं तित आई, हम पद पूजत हैं गुन गाई ॥५॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्लपंचमीदिने निर्वाणमगलमडिताय श्री अजित-जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

दोहा

अष्ट दुष्ट को नष्ट करि, इष्ट मिष्ट निज पाय।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय ॥१॥

छन्द पद्धड़ी

जय अजितदेव तुअ गुन अपार,
पै कहूँ कछुक लघुबुद्धि धार ।
दश जनमत अतिशय बल अनंत,
शुभ लच्छन मधुर वचन भनंत ॥२॥
संहनन प्रथम, मलरहित देह,
तन सौरभ, शोणितस्वेत जेह ।
वपु स्वेद-बिना महरूप धार,
समचतुर धरें संठान चार ॥३॥
दश केवल, गमन अकाश देव,
सुरभिच्छ रहे योजन सतेव ।
उपसर्गरहित जिन तन सु होय,
सब जीव रहित बाधा सु जोय ॥४॥
मुख चारि सरब विद्या अधीश,
कवलाहार सुवर्जित गरीश ।
छायाबिनु नख कच बढ़ैं नाहिं,
उन्मेष टमक नहिं भ्रकुटि माहिं ॥५॥
सुरकृत दश चार करों बखान,
सब जीव मित्रताभाव जान ।
कंटकबिन दर्पणवत सुभूम,
सब धान वृच्छ फल रहे झूम ॥६॥

षट रितु के फूल फले निहार,
दिशि निर्मल जिय आनन्द धार।
जहं शीतल मन्द सुगन्ध वाय,
पदपंकजतल पंकज रचाय ॥७॥
मलरहित गगन सुर जय उचार,
वरषा गन्धोदक होत सार।
वर धर्मचक्र आगें चलाय,
वसु मंगलजुत बहु सुर रचाय ॥८॥
सिंहासन छत्र चमर सुहात,
भामंडल छवि बरनी न जात।
तरु उच्च अशोक रु सुमन वृष्टि,
धुनि दिव्य और दुन्दुभि सुमिष्ट ॥९॥
दृग ज्ञान शर्म वीरज अनंत,
गुण छियालीस इम तुम लहंत।
इन आदि अनंतै सुगुन धार,
वरनत गनपति नहिं लहत पार ॥१०॥
तब समवशरणमहं इन्द्र आय,
पद पूजत वसुविधि दरब लाय।
अति भगति सहित नाटक रचाय,
ताथेई थेई थेई धुनि रही छाय ॥११॥

पग नूपुर झननन झनननाय,
तननतनन तननन तान गाय।
घननन नन घंटा घनाय,
छम छम छम छम घुंघरू बजाय ॥१२॥
दृम दृम दृम दृम दृम मुरजध्वान,
संसाग्रदि सरंगी सुर भरत तान।
झट झट झट अटपट नटत नाट,
इत्यादि रच्यो अद्भुत सुठाट ॥१३॥
पुनि वंदि इन्द्र थुति नुति करंत,
तुम हो जग में जयवंत संत।
फिर तुम बिहार करि धर्मवृष्टि,
सब जोग निरोध्यो परम इष्ट ॥१४॥
सम्मेदथकी लिय मुकतिथान,
जय सिद्धशिरोमन गुणनिधान।
वृन्दावन वन्दत बारबार,
भवसागरतें मों तार तार ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

जय अजित कृपाला गुनणिमाला,
संजमशाला बोधपती।
वर सुजस उजाला हीरहिमाला,
ते अधिकाला स्वच्छ अती ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं।

छन्द मदावलिप्तकपोल

जो जन अजित जिनेश जजैं हैं मनवचकाई,
ताकों होय अनन्द ज्ञान सम्पति सुखदाई ।
पुत्र मित्र धनधान्य सुजय त्रिभुवनमहं छावै,
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसों शिव पावै ।।१७।

पुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः ।

—०—

श्री संभवनाथ जिनपूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

जय संभव जिनचन्द सदा हरिगनचकोरनुत,
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत ।
तजि ग्रीवक लिये जन्म नगर सावत्री आई,
सो भवभंजनहेत भगतपर होहु सहाई ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छंद चौबोला

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरी में धारा ।
जनमजरामृतु नाशकरनकों, तुम पदतर ढारों धारा ।।

संभवजिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निराबाध भविजन पावै ।।
ॐ ह्री श्री संभवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

तपतदाहको कंदन चंदन, मलयागिरिको घसि लायो ।
जगवंदन भौफंदनखंदन, समरथ लखि शरनै आयो ।।सं०।।
ॐ ह्री श्री सभववजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

देवजीर सुखदास कमलवासित, सित सुन्दर अनियारे ।
पुंज धरों इन चरनन आगे, लहों अखयपदकों प्यारे ।।सं०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल केतकी बेल चमेली, चंपा जूही सुमन वरा ।
तासों पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा ।।सं०।।
ॐ ह्री श्री शंभवदेवजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासों पद श्रीपतको पूजत, छुधारोग ततकाल हना ।।सं०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

घटपटपरकाशक भ्रमतनाशक तुम ढिग ऐसो दीप धरों ।
केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों ।।सं०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृसनागर, श्रीखंडादिक चूर हुतासन में ।
खेवत हों तुम चरनजलज ढिग, कर्म छार जरि ह्वै छनमें ।।सं०।।
ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं ।
लैं फलप्राशुक पूजों तुमपद, देहु अखयपद नाथ हमैं ॥सं०॥
ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल चन्दन तन्दुल पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपों भावभगतिधर, जैजैजै शिवरमनिपिया ॥सं०॥
ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छंद हंसी मात्रा १५

माता गर्भविषैं जिन आय, फागुनसित आठें सुखदाय ।
सेयो सुरतिय छप्पन वृंद नानाविधि मैं जजौ जिनंद ॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक सित पूनम तिथी जान, तीन ज्ञानजुत जनम प्रमान ।
धरि गिरिराज जजे सुरराज,तिन्हें जजौं मैं निजहित काज ।२।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्री संभवजिनेन्द्राय अर्घम् ।

मंगसिरसित पून्यों तपधार, सकलसंग तजि जिन अनगार ।
ध्यानादिक बल जीते कर्म, चर्चों चरन देहु शिवशर्म ॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्री संभवजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिककलि तिथिचौथ महान, घातिघात लिय केवलज्ञान ।
समवशरनमहं तिष्ठे देव, तुरिय चिह्न चर्चों वसुभेव ।।४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंडलमंडिताय श्री संभव-जिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

चैतशुक्ल तिथिषष्ठी घोख, गिरसम्मेदतौं लीनों मोख ।
चार शतक धनु अवगाहना, जजों तासपद थुतिकर घना ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री संभवजिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा

श्रीसंभव के गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निज हितकाज ।।१।।

छंद मोतियादाम

जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट,
सुरासुर सेवित इष्ट वरिष्ट ।
धरे वृषचक्र करे अघ चूर,
अतत्त्वछपातममर्द्दन सूर ।।२।।
सुतत्त्व प्रशाशन शासन शुद्ध,
विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ।

दयातरु-तर्पन मेघ महान,
कुनयगिरिगंजन वज्रसमान ॥३॥
सुगर्भरु जन्ममहोत्सव माहि,
जगज्जन आनंदकंद लहाहि ।
सुपूरब साठहि लच्छ जु आय,
कुमार चतुर्थम अंश रमाय ॥४॥
चवानिस लाख सुपूरब एव,
निकटक राज कियो जिनदेव ।
तजे कछु कारन पाय सुराज,
धरे व्रत संजम आतमकाज ॥५॥
सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान,
धर्यो वन मे निज आतमध्यान ।
कियो चव घातिय कर्म विनाश,
लियो तव केवलज्ञान प्रकाश ॥६॥
भई समवस्रत ठाट अपार,
खिरै धुनि झेलहि श्री गनधार ।
भने षट द्रव्य तने विसतार,
चहूं अनुयोग अनेक प्रकार ॥७॥
कहे पुनि त्रेपन भाव विशेष,
उभै विधि है उपशम्य जु भेष ।

सुसम्यक चारित्र भेद स्वरूप,
अबै इमि छायक नौ सुअनूप ॥८॥
दृगौ बुधि सम्यकचारित दान,
सुलाभरु भोगुपभोग प्रमान ।
सुवीरज मंजुत ए नव जान,
अठार छयोपशम इम प्रमान ॥९॥
मति श्रुति औधि उभैविधि जान,
मन परजै चखु और प्रमान ।
अचक्खु तथा विधि दान रु लाभ,
सुभोगुपभोगरु वीरज साभ ॥१०॥
व्रताव्रत सजम और सु धार,
धरे गुन सम्यक चारित भार ।
भये वसु एक समापत येह,
इकीश उदीक सुनो अब जेह ॥ ॥११॥
चहूं गति चारि कषाय त्रिवेद,
छलेश्यय और अज्ञान विभेद ।
असंजम भाव लखो इस माहि,
असिद्धित और अतत्त कहाहि ॥१२॥
भये इकबीस सुनो अब और,
विभेद त्रिय पारिनामिक ठौर ।
सुजीविन भव्यत और अभव्व,

तरेपन एम भने जिन सब्ब ॥१३॥
तिन्हों मंह् केतक त्यागन जोग,
कितेक गहेतैं मिटै भवरोग ।
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख,
अनंत गुनातम मंडित चोख ॥१४॥
जजो तुम पाय जपौ गुन सार,
प्रभू हमको भवसागर तार ।
गही शरनागत दीन दयाल,
बिलंब करो मति हे गुनमाल ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

जै जै भवभंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा ।
वृन्दावनवंदत मन आनंदित, दीजे आतमज्ञानवरा ॥१६॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यम् ।

छन्द अडिल्ल

जो वांचै यह पाठ सरस संभवतनों ।
सो पावै धनधान्य सरिस संपति घनो ॥
सकल पाप छै जाय सुजस जग बढ़ै ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़ै ॥१७॥
पुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद. ।

—०—

श्री अभिनन्दन जिनपूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

अभिनंदन आनंदकंद, सिद्धारथ नन्दन,
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहि आवत वंदन।
नगर अजोध्या जनम इंद, नागिद जु ध्यावें,
तिन्है जजत के हेत थापि, हम मंगल गावें ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छन्द गीता, हरिगीता तथा रूपमाला

पदमद्रहगत गंगचंग, अभंग, धार सुधार है,
कनकमणिगनजड़ित झारी, द्वारधार निकार है।
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है,
पदवंद वृंद जंजे प्रभु भवदंद फंद निकन्द है ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनदनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

शीतचंदन कदलिनंदन, सुजलसंग घसायकें।
ह्वै सुगंध दशोंदिशामें, भमे मधुकर आयकें ॥कं० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनदनजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्।

हीर हिमशशिफेन मुक्ता, सरिस तन्दुल सेत है।
तासको ढिग पुज धारौ, अखयपदके हेत हैं ॥कं० ३॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनदनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।

समरभटनिघटन सुकारन, सुमन सुमन समान है ।
सुरभितें जापें करै झंकार, मधुकर आन है ।।क० ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी ।
छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरचेयजी ।।क० ५।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
अततततममर्दनकिरनवर, बोधभानुविकाश हैं ।
तुम चरनढिग दीपक धरो, मोहि होहु स्वपरकाश है ।।क०।६।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगिनी जराय है ।
सब करमकाष्ठ सुकाष्ठमे मिस, धूमधूम उडाय है।।क० ।।७।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
आम निंबु सदा फलादिक, पक्क पावन आनजी ।
मोक्षफलके हेत पूजौ जोरिकै जुगपानजी ।।क०।।८।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजय गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ।।क० ।।९।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द हरिपद

शुकलछट्ट वैशाख विषै तजि, आये श्रीजिनदेव ।
सिद्धारथमाता के उर में, करै शची शुचि सेव ।।

रतनवृष्टि आदिक वर मंगल होत अनेक प्रकार।
ऐसे गुननिधिको मैं पूजौं ध्यावो बारंबार ॥१॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघशुक्ल तिथिद्वादशिके दिन, तीनलोक हितकार।
अभिनंदन आनंदकंद तुम, लीन्हों जग अवतार॥
एक महूरत नरकमाहि हूं, पायो सब जिन चैन।
कनकवरन कपि चिन्हधरनपद, जजों तुमैं दिन रैन॥२॥

ॐ ह्री माघशुक्लद्वादशम्या जन्ममंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

साढे छत्तिसलाख सुपूरब राजभोग वर भोग।
कछु कारन लखि माघशुक्ल, द्वादशिकों धार्यो जोग॥
षष्टम नेम समापत करि लिय, इंद्रदत्तधर छीर।
जय धुनि पुष्प रत्न गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर॥३॥

ॐ ह्री माघशुक्लद्वादशम्या तपोमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषशुक्ल चौदशिको घाते, घातिकरम दुखदाय।
उपजायो वरबोध जास को, केवल नाम कहाय॥
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकन्द।
मोको भवसागरतें तारो जय जय जय अभिनंद॥४॥

ॐ ह्री पौषशुक्लचतुर्दशम्यां ज्ञानमंगलमडिताय श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जोगनिरोध अघाति घाति लहि, गिरसम्मेदतें मोख।
माससकल सुखरास कहे, वैसाखशुकल छठ चोख ।।
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगत भाव उमगाय।
हम पूजें इत अरघ लेय जिमि विघन सघन मिट जाय ।।५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठम्या मोक्षमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

दोहा

तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम।
कनकवरन अवलोकिकें पुनि पुनि करूं प्रणाम ।।१।।

छंद लक्ष्मीधरा

सच्चिदानन्द सद्ज्ञान सद्दर्शनी,
सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी।
सर्वआनन्दकंदा महादेवता,
जास पादाब्ज सेवैं सबै देवता ।।२।।
गर्भ औ जन्म निःकर्मकल्यान में,
सत्त्व कों शर्म पूरै सबै थानमें।
वंशइक्ष्वाकुमें आपु ऐसे भये,
ज्यों निशाशर्दमें इंदु स्वेच्छै गये ।।३।।

छंद लक्ष्मीवती

होत वैराग लौकांतसुर बोधियो,
फेरि शिविकासु चढि गहन निज सोधियो ।
घाति चौघातिया ज्ञानकेवल भयो,
समवसरनादि धनदेव तब निरमयो ॥४॥
एक है इन्द्रनीली शिला रत्न की,
गोल साढ़े दशे जोजने जत्न की ।
चारदिश पैड़िका बीस हज्जार है,
रत्नके चूरका कोट निरधार है ॥५॥
कोट चहुँओर चहुँद्वार तोरन खँचे,
तास आगे चहूँ मानथंभा रचे ।
मान मानी तजै जास ढिग जायकै,
नम्रता धार सेवैं तुम्हें आयकें ॥६॥

छंद लक्ष्मीधरा

बिब सिंघासनो पै जहां सोहही,
इन्द्र नागेन्द्र केते मनै मोहही ।
वापिका वारिसों जत्र सोहै भरी,
जासमें न्हात ही पाप जावै टरी ॥७॥
तासु आगे भरी खातिका वारिसों,
हंस सुआदि पंखी रमैं प्यारसों ।
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छै जहां,

फूल औ श्रीफलें सर्वही हैं तहां ॥८॥
कोट सौवर्ण का तास आगे खड़ा,
चार दर्वाज चौ ओर रत्नों जड़ा।
चार उद्यान चारों दिशामें गना,
है धुजा पंक्ति औ नाटशाला बना ॥९॥
तासु आगं त्रितो कोट रूपामयी,
तूप नौ जास चारों दिशामें ठयी।
धाम सिद्धांतधारीन के हैं जहां,
औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहां ॥१०॥
तास आगे रची गंधकूटी महा,
तीन हैं कट्टिनी सारशोभा लहा।
एकै तौ निधें ही धरी ख्यात हैं,
भव्य प्रानी तहां लौं सबै जात हैं ॥११॥
दूसरी पीठपै चक्रधारी गमैं,
तीसरे प्रातिहार्य लसैं भागमें।
तासपै वेदिका चार थंभानकी,
है बनी सर्व कल्याण के खानकी ॥१२॥
तासपै है सुसिंघासनं भासनं,
जासपै है पद्म प्राफुल्ल है आसनं।
तासुपै अंतरीक्षं विराजै सही,
तीन छत्रे फिरे शीस रत्नै मही ॥१३॥

वृक्ष शोकापहारी अशोकं लसै,
दुंदुभी नाद औ पुष्प खंते खसै।
देह की ज्योति सो मडलाकार है,
सात भौ भव्य तामें लखै सार है ॥१४॥

दिव्यवानी खिरै सर्वशंका हरै,
श्री गनाधीश झेलैं सुशक्ती धरै।
धर्मचक्री तुही कर्मवक्री हने,
सर्वशक्री नमै मोद धारै घने ॥१५॥

भव्य को बोधि सम्मेदतै श्यौ गये,
तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तीमये।
हे कृपासिधु मोपै कृपा धारिये,
घोर संसारसों शीघ्र मो तारिये ॥१६॥

छन्द घत्तानन्द

जै जै अभिनदा आनदकंदा, भवसमुद्र बर पोत इवा।
भ्रमतमशतखडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जग रैनदिवा ॥१७॥

ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय पूर्णार्घम।

छन्द कवित्त

श्री अभिनंदन पापनिकंदन तिन पद जो भवि जजै सुधार,
ताके पुन्नभानु पर उग्गै दुरित तिमिर फाटै दुखकार।
पुत्र मित्र धन धान्य कमल यह विकसै सुखद जगतहित प्यार,
कछुककालमेसो शिवपावै पढ़ै सुने जिन जजै निहार ॥१८॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद।

—०—

श्री सुमतिनाथ जिनपूजा

कवित्त रूपक मात्रा ३१

संजमरतन विभूषन भूषित, दूषन दूषन श्री जिनचंद ।
सुमतिरमारजन भवभजन, संजयंत तजि मेरुनरिंद ॥
मातु मंगला सकल मगला, नगर विनीता जयै अमंद ।
सो प्रभु दयासुधारस गर्भित, आय तिष्ठ इत हरि दुखदंद ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छन्द कवित्त तथा कुसुमलता

पचमउदधि तनो सम उज्वल,
जल लीनो वरगंध मिलाय ।
कनकटोरी माहि धारि करि,
धारि देहु सुचि मन वच काय ॥
हरिहर वंदित पापनिकंदित,
सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
तुम पदपद्म सद्मशिवदायक,
जजत मुदितमन उदित सुभाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर घनसार घसौं वर,
केशर अर करपूर मिलाय ।
भवतप हरन चरन पर धारो,
जनम जरा मृत ताप पलाय ॥हरि०२॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

शशि सम उज्ज्वल सहित गंध तल,
दोनो अनी शुद्ध सुखदास ।
सो ले अखय संपदाकारन,
पुज धरो तुम चरनन पास ॥हरि०३॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल केतकी बेल चमेली,
करना अरु गुलाब महकाय ।
सो ले समरशूल छयकारन,
जजों चरन अति प्रीत लगाय ॥हरि०४॥

ॐ ह्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नव्य गव्य पकवान वनाऊं,
सुरस देखि दृगमन ललचाय ।
सो लै क्षुधारोग छयकारन,
धरो चरण ढिग मन हरषाय ॥हरि०५॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

रतनजड़ित अथवा घृतपूरित,
वा कपूरमय जोति जगाय ।
दीप धरों तुम चरनन आगे,
जातैं केवलज्ञान लहाय ।।हरि०६।।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृष्णागर चन्दन,
चूरि अगनि मे देत जराय ।
अष्ट करम यै दुष्ट जरतु है,
धूम घूम यह तासु उड़ाय ।।हरि०७।।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल मातुलिग वर दाडिम,
आम निबु फल प्रासुक लाय ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन,
पूजत हो तुमरे जुग पाय ।।हरि०८।।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल चदन तंदुल प्रसून चरु,
दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि राचि शिरनाय समरचों,
जय जय जय जय जय जिनराय ।।हरि०९।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पंचकल्याणक

रूप चौपाई

संजयत तजि गरभ पधारे,
सावनसेत दुतिय सुखकारे।
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया,
जजो चरन जय जय जिनराया ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयां गर्भमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

चैतसुकुल ग्यारस कहं जानो,
जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानो।
मानो धर्‌यो धरम अवतारा,
जजो चरन जुग अष्टप्रकारा ।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

वैसाखसुकल नौमि तिथि भाखा,
तादिन तप धरि निजरस चाखा।
पारन पद्मसद्म पय कीनों,
जजत चरन हम समता भीनो ।।३।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

सुकलवैसाख एकादशि हाने,
घाति सकल जे जुगपति जाने।

समवसरनमहं कहि वृषसार,
जजहुँ अनन्तचतुष्टयधारं ।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतसुकल ग्यारस निरवान,
गिरि समेदतैं त्रिभुवन मानं ।
गुनअनन्त निज निरमल धारी,
जजों देव सुधि लेहु हमारी ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

सुमनि तीनसौ छत्तिसौ, सुमतिभेद दरसाय ।
सुमति देहु विनती करों सुमति विलंब कराय ।।१।।
दयाबेलि तहं सुगुननिधि, भवि-कमोद-गण-चन्द ।
सुमतिसती सुमतिको, ध्यावों धरि आनन्द ।।२।।
पंच परावरतन हरन, पंचसुमति सित दैन ।
पंचलब्धिदातार के, गुन गाऊं दिनरैन ।।३।।

छंद भुजंगप्रयात

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा,
जपें नाम जाको सबै दुःख भाजा ।
महासूर इक्ष्वाकवंशी विराजै,
गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै ।।४।।

तिन्हों के महापुण्यसों आप जाये,
तिहूलोक में जीव आनन्द पाये ।
सुनासीर ताही धरी मेरु धायो,
क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथा यो ।।५।।
बहुरि ताको सौंपि संगीत कीनों,
नमे हाथ जोरे भली भक्ति भीनों ।
बिताई दशै लाख ही पूर्व बालै,
प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै ।।६।।
कछू हेतु तै भावना बार भाये,
तहा ब्रह्मलौकांतकेदेव आये ।
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो,
धरे पालकी मे सु उद्यान ल्यायो ।।७।।
नमे सिद्ध को केशलोचे सबै ही,
धर्‌यो ध्यान शुद्धं जु घाती हने ही ।
लह्यो केवलं औ समोसर्न साज,
गणाधीश जु एकसौसोल राज ।।८।।
खिरै शब्द तामै छहो द्रव्य धारे,
गुनौपर्जउत्पादव्यय ध्रौव्य सारै ।
तथा कर्म आठों तनी थित्ति गाजं,
मिलै जासुके नाशते मोच्छराजं ।।९।।

धरै मोहिनी सत्तरं कोड़कोडी ।
　　सरित्पत्प्रमाणं तिथि दीर्घ जोड़ी ।
अवर्ज्ञानदृग्वेदनी अन्तराय,
　　धरे तीस कोडाकुडी सिधुकायं ॥१०॥
तथा नामगोतं कुड़ाकोड़ि बीस,
　　समुद्रप्रमाणं धरे सत्तईसं ।
सु तैंतीस अब्धि धरे आयु अब्धि,
　　कहे सर्व कर्मो तनी वृद्धलब्धि ॥११॥
जघन्य प्रकारै धरे भेद ये ही,
　　मुहूर्त वसू नामगोतं गने ही ।
तथा ज्ञानदृग्मोह प्रत्यूह आयं,
　　सुअन्तर्मुहूर्तं धरै थित्ति गायं ॥१२॥
तथा वेदनी बारहे ही मुहूर्तं,
　　धरै थित्त ऐसे भन्यो न्यायजुत्तं ।
इन्है आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेसा,
　　लह्यो फेरि निर्वानमाहीं प्रवेसा ॥१३॥
अनंतं महंतं सुसंतं सुतंतं,
　　अमंदं अफंदं अनंदं अभंतं ।
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं,
　　अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं ॥१४॥

अवर्ण अघर्ण अमर्ण अकर्ण,
अभर्ण अतर्ण अशर्ण सुशर्ण ।
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं,
अखंडं सुमडं प्रचड तदेक ॥१५॥
सुपर्म सुधर्म सुशर्म अकर्म,
अनंत गुनाराम जैवंत वर्म ।
नमैं दास वृन्दावनं शर्नं आई,
सबै दुखतें मोहि लीजै छुड़ाई ॥१६॥

छन्द घत्तानन्द

तुव सुगुन अनंता ध्यावत संता,
भ्रमतम-भंजनमार्तंडा ।
सतमतकरचंडा भवि-कज मंडा,
कुमति कुबल इन गन हंडा ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रोडक

सुमति-चरन जो जजै, भविकजन मनवचकाई,
तासु सकल दुखदंदफंद, ततछिन छय जाई ।
पुत्र मित्र धन धान्य, शर्म अद्‌भुत सो पावैं,
वृन्दावन निर्वान लहै, जो निहचै ध्यावै ॥१८॥

पुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद. ।

— o —

श्री पद्मप्रभ जिनपूजा

छन्द रोडक (मदावलिप्त कपोल)

पदमरागनिवरन-धरन, तनतुग अढ़ाई,
शतक दण्ड अघ खंड, सकल सुर सेवत आई ।
धरनि तात विख्यात, सुसीमा जू के नन्दन,
पदमचरन धरि राग, सु थापो इति करि वन्दन ।।१।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

चाल होली की ताल जत्त

पूजो भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसो ।।टेक।।
गंगाजल अति प्रासुक लीनो, सौरभ सकल मिलाय ।
मन वच तन त्रय धार देत हो, जनम जरा मृत जाय ।।
पूजो भावसो, श्री पदमनाथपद सार, पूजो भावसो ।।१।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर चंदन कपूर घसि, केशर रंग मिलाय ।
भवतपहरन चरनपर वारो, मिथ्याताप मिटाय ।।पूजो०२।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय भव.तापविनाशनाय चदनम ।

तंदुल उज्ज्वल गध अनी जुत कनकधार भर लाय ।
पुज धरो तुव चरनन आगे, मोहि अखयपद दाय ।।पू० ३।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पारिजात मंदार कलपतरु जनित, सुमन शुचि लाय ।।
समरशूल निरमूलकरन को, तुम पद पद्म चढाय ।।पू०४।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि भाय ।
छुधा रोग विर्नाशन कारन, जजों हरष उर लाय ।।पू०५।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
दीपक जोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम ।
तिमिरमोह नाशन के कारन जजो चरन गुनधाम ।।पू०६।।
ॐ ह्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
कृष्णागर मलयागर चदन, चूर सुगंध बनाय ।
अगिनि माहिं जारों तुम आगे, अष्टकरम जरि जाय ।।पू०७।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
सुरस वरन रसना मन भावन, पावन फल अधिकार ।
तासो पूजों जुगम चरन यह, विघन करम निरवार ।।पू०८।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगत भाव उमगाय । ।
जजों तुमहि शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ।।पू०९।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलम्बित

असित माघसु छट्ठ बखानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये ।
उरध ग्रीवकसों चय राजजी, जजत इन्द्र जजै हम आजजी ।
ॐ ह्री माघकृष्णषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक वदि तेरस को जये, त्रिजगजीव सुआनंद कों लये ।
नगर स्वर्ग समान कुसविका, जजतु है हरि संजुत अम्बिका ।।

ॐ ह्रीं कातिक कृष्णत्रयोदश्या जन्ममगलमडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वदि तेरस कातिक भावनी, तप धर्यो वन पष्टम पावनी ।
करत आतम ध्यान धुरधरो, जजत है हम पाप सबै हरो ।।

ॐ ह्री कातिककृष्णत्रयोदश्या तपोमगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुकल पूनम चैत सुहावनी, परम केवल ता दिन पावनी ।
सुर सुरेश नरेश जजें तहां, हम जजै पदपंकज को इहां ।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लपूर्णिमाया ज्ञानमगलमडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकल कर्ममहारिपु हानियो ।
गिरिसमेद थकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविषै लये ।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्या मोक्षमगलमडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

जय पद्मजिनेशा शिवसद्वेशा, पाद पद्म जजि पद्मेशा ।
जय भवतमभंजन मुनिमनकंजन-रंजनको दिवसाधेशा ।।१।।

छंद रूपचौपाई

जय जय जिन भविजनहितकारी,
जय जय जिन भवसागरतारी ।
जय जय समवसरन धनधारी,
जय जय वीतराग हितकारी ॥२॥
जय तुम सात तत्त्व विधि भाख्यो,
जय जय नवपदार्थ लखि आख्यो ।
जय षटद्रव्य पंच जुतकाया,
जय सबभेदसहित दरशाया ॥३॥
जय गुनथान जीव परमानो,
जय पहिले अनंत जिय जानो ।
जय दूजे सासादन माही,
तेरहकोड़ि जीवथित आही ॥४॥
जय तीजे मिश्रित गुणथाने,
जीव सु बावनकोडि प्रमाने ।
जय चौथे अविरतिगुन जीवा,
चारअधिक शतकोडि सदीवा ।
जय जिय देशवरतमे शेषा,
कोड़ि सातसौ है थिति वेशा ।
जय प्रमत्त षटशून्य दोयदसु,
पांच तीन नव पांच जीव लसु ॥६॥

जय जय अपरमत्तगुन कोरं,
लच्छ छानवै सहस बहोर ।
निन्यानवे एकशत तीना,
एते मुनि नित रहहि प्रवीना ॥७॥
जय जय अष्टममे दुई धारा,
आठशतक सत्तानो सारा ।
उपशम मे दुइसो निन्यानो,
छपक माहि तसु दूने जानों ॥८॥
जय इतने इतने हितकारी,
नवे दशे जुगश्रेणी धारी ।
जय ग्यारे उपशममगगामी,
दुइसै निन्यानों है अधमामी ॥९॥
जय जय छीनमोह गुनधानों,
मुनिशतपांच अधिक अट्ठानों ।
जय जय तेरहमें अरहंता,
२ ० ५ ८ ९ ८
जुग नभ पन वसु नव वसु तंता ॥१०॥
एते राजतु हैं चतुरानन,
हम वंदै पद थुतिकरि आनन ।
है अजोगगुन मे जे देवा,
पनसौ ठानों करों सुसेवा ॥११॥

तित तिथि अइउऋलृ भाषत,
करि थिति फिरि शिव-आनन्दचाखत।
ए उतकृष्ट सकलगुन थानी,
तथा जघन मध्यम जे प्रानी ।।१२।।
तीनों लोकसदन के वासी,
निज गुनपरजभेदमय राशी ।
तथा और द्रव्यन के जेते,
गुन परजाय भेद हैं तेते ।।१३।।
तीनों कालतने जु अनन्ता,
सो तुम जानत जुगपत संता ।
सोई दिव्य वचनके द्वारे,
दै उपदेश भविक उद्धारे ।।१४।।
फेरि अचलथलबासा कीनों,
गुन अनंत निजआनन्द भीनों ।
चरमदेहते किंचित ऊनो,
नर-आकृति तितहै नित गूनो ।।१५।
जय जय सिद्धिदेव हितकारी,
बार बार यह अरज हमारी ।
मोकों दुखसागरतै काढ़ो,
वृंदावन जाचतु है ठाढ़ौ ।।१६।।

छंद घत्तानन्द

जय जय जिनचंदा पद्मानन्दा,
परम सुमति पद्माधारी ।
जय जनहितकारी दयाविचारी,
जय जय जिनवर अधिकारी ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छंद रोडक

जजत पद्मपद पद्मसद्म ताके सुपद्म अत,
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनन्दकन्द शत ।
लहत स्वर्गपदराज तहां तैं चय इत आई,
चक्रीको सुखभोगि, अन्त शिवराज कराई ॥

परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद·

श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा

छंद हरिगीता तथा गीता

जय जय जिनिंद गनिंद इन्द, नरिंद गुन चिंतन करैं,
तन हरीहरमनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरैं ।
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया,
तिन नन्दके पद वंद वृन्द, अमंद थापत जुतक्रिया ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ ठ ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

तुम पद पूजो मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।
उज्जल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भर कर लाय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० १।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।
मलयागरचंदन घसि कर सार, लीनो भवतपभंजनहार ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०।।२।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।
देवजीर सुखदास अखड, उज्जल जलछालित सित मंड ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।३।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
प्रासुक सुमन सुगंधितसार, गुजत अलि मकरध्वजहार ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।४।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
छुधाहरन नेवज वर लाय, हरो वेदनी तुम्हें चढ़ाय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ५।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
ज्वलित दीप भरकरि नवनीत, तुम ढिग धारतु हो जगमीत ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो । तुम० ।।६।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविाशनाय दीपम् ।

दशविधि गंध हुताशनमाहिं, खेवत कूर करम जरि जाहिं ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०।।७।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल केला आदि अनूप, लै तुम अग्र धरों शिवभूप ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।९।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित

सुकल भादव छट्ट सुजानिये,
गरभमङ्गल तादिन मानिये ।
करत सेव सची रचि मात की,
अरघ लेय जजौं वसुभांति की ।।१।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुकल जेठ दुवादशि जन्मये,
सकल जीव सु आनन्द तन्मये ।
त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी,
हम जजैं पद मंगल साज जी ।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनमके तिथि श्रीधर ने धरी,

तप समस्त प्रमादनको हरी।

नृप महेन्द्र दियो पय भावसों,

हम जजें इत श्रीपद चावसों ॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंडलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

भ्रमर फागुन छट्ट सुहावनो,

परम केवलज्ञान लहावनो।

समवसर्न विषै वृष भाखियों,

हम जजै पद आनन्द चाखियो ॥४॥

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमडलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

असितफागुण सातयै पावनो,

सकल कर्म कियो छय भावनो।

गिरिसमेदथकी शिव जातु हैं,

जजत ही सब विघ्न विलातु हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्व-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

दोहा

तुङ्ग अंग धनु दोयसौ, शोभा सागरचन्द ।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपास सुखकन्द ।।१।।

छन्द कामनीमोहनी

जैति जिनराज शिवराज हितहेत हो,
परम वैराग आनंद भरि देत हों ।
गर्भ के पूर्व षटमास धनदेव ने,
नगर निरमापि वाराणसी सेवने ।।२।।
गगनसों रतन की धार बहु वरषहीं,
कोड़ि त्रैअर्द्ध त्रैवार सब हरषहीं ।
तातके सदन गुन वदन रचना रची,
मातु की सर्वविधि करत सेवा रची ।।३।।
भयो जब जनम तब इन्द्र आसन चल्यो,
भयो चक्रित तुरित अवधितैं लखि भल्यो ।
सप्त पग जाय शिर नाय वन्दन करी,
चलन उमग्यो तबैं मानि धनि धनि घरी ।।४।।
सातविधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै,
गंधरव नृत्यकारी सबै साज लै ।
गलितमदगंड ऐरावती साजियो,
लच्छजोजन सुतन वदन सत राजियो ।।५।।

वदन वसुदंत प्रतिदंत सरवर भरे,
तासुमधि शतकपनवीस कमलिनि खरे ।
कमलनी मध्य पनवीस फूले कमल,
कमलप्रति कमलमहं एकसौ आठदल ॥६॥
सर्वदल कोड़शतवीस परमान जू,
तासुपर अपछरा नचहि जुतमान जू ।
तततता तततता विततता ताथई,
धृगतता धृगतता धृगतता मे लई ॥७॥
धरत पग सनन नन सनन नन गगन मे,
नूपूर झनन नन झनन नन पगन मे ।
नचत इत्यादि कई भांतिसो मगन मे,
केइ तित बजत बाजे मधुर पगन मे ॥८॥
केइ दृम दृम सुदृम दृम मृदंगनि धुनै,
केइ झल्लारि झझन झंझनन झंझनै ।
केइ संसागृदि संसागृदि सारंगि सुर,
केइ बीनापटह बसि बाजें मधुर ॥९॥
केइ तननन तननन तानै पुरें,
शुद्ध उच्चारी सुर केइ पाठें फुरें ।
केइ झुकि झुकि फिरें चक्रसी भामनी,
धृगततां ध्रुगतगत परम शोभा बनी ॥१०॥

केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु,
धरत वैक्रियकपरभावसो तन सुभगु ।
केइ करताल करतालतलमें धुनें,
तत वितत घन सुखारि जात बाजै मुनै ॥११॥

इन्है आदिक सकल साज संग धारिकैं,
आय पुर तीन फेरी करी प्यारकें ।
सचिय तब जाय परसूतथल मोद में,
मातु करि नीद लीनों तुम्हे गोद मे ॥१२॥

आन गिरवाननार्थहि दियो हाथ मे,
छत्र अर चमर वर हरि करत माथ में ।
चढ़ै गजराज जिनराज गुन जापियो,
जाय गिरिराज पांडुकशिला थापियो ॥१३॥

लेय पंचमउदधिउदक कर कर सुरनि,
सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि ।
सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबै,
अघघ घघ घघघघ भभभ भभ भौ तबै ॥१४॥

धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है,
भव्यजन हंस के हरष उद्योत है ।
भये इमि न्हौन तब सकल गुन रगमें,
पोछि श्रृंगार कीनों सची अंग में ॥१५॥

आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो,
बालवय तरुन कहि राजसुख भोगयो ।
भोग तज जोग गहि चार अरिको हने,
धारि केवल परम धरम दुइविधि भने ।।१६।।
नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये,
ज्ञान-दृग-शर्म-वीरज अनन्ते लये ।
सो जगतराज यह अरज उर धारियो,
धरम के नन्द को भवउदधि तारियो ।।१७।।

छंद घत्तानन्द

जय करुनाधारी शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो ।
सेवक नित वंदै मन आनन्दै, भव भय मेटनकाजा हो ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

दोहा

श्री सुपार्श्वपदजुगल जो, जजैं पढैं यह पाठ ।
अनुमोदैं सो चतुर नर, पावैं आनन्द ठाठ ।।

पुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद. ।

—o—

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा

चारुचरन आचरन, चितहरनचिह्नचर,
चन्दचन्दतनचरित, चदंथल चहत चतुर नर ।
चतुक चन्ड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर,
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ।।

चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिननंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रचि रुचि ।।

दोहा

धनुष डेढ़सौ तुग तन, महासेन नृपनन्द ।
मातु लछमना उर जये, थापो चन्दजिनंद ।।२।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

गंगाहृद निरमलनीर, हाटक भृंग भरा,
तुम चरन जजो वर वीर, मेटो जनमजरा ।
श्रीचंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै,
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै ।।१।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

श्रीखड कपूर सुचग, केशर रंगभरी ।
घसि प्रासुक जल के संग, भव-आतापहरी ।।श्री० २।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

तंदुल सित सोमसमान, सम ले अनियारे ।
दिय पुज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे ।।श्री० ३।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रभप्रजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम ।

सुरद्रुम के सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै ।
तासों पद पूजत चंग, कामबिथा जावै ।।श्री०।।४।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी।
सो लै पद पूजों सार, आकुलताहारी ।।श्री०।।५।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
तम भंजन दीप संवार, तुम ढिग धारतु हो ।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हों ।।श्री०।।६।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दशगंध हुतासन माहि, हे प्रभु खेवतु हौ ।
मम करम दुष्ट जरि जाहि, यातैं सेवतु हौ ।।श्री० ।।७।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिदनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
अति उत्तम फल सु मंगाय, तुम गुन गावतु हौ ।
पूजो तनमन हरषायो, विघन नशावतु हों ।।श्री० ।।८।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
सजि आठो दरब पुनीत, आठों अग नमों ।
पूजो अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनी गमों ।।श्री० ।।९।।
ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

कलि पंचमचैत सुहात अली,
गरभागम मंगल मोद भली ।

हरि हर्षित पूजत मातु पिता,
हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपचम्या गर्भमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कलि पौष इकादशि जन्म लयो,
तब लोकविषै सुख थोक भयो ।
सुरईश जजे गिरशीश तबै,
हम पूजत है नुतशीस अबै ॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्या जन्ममगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा,
कलि पौष अग्यारसि पर्व वरा ।
निज ध्यानविषै लवलीन भये,
धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ।३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्या तपोमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वर केवलभानु उद्योत कियो,
तिहुँ लोक तणो भ्रम मेट दियो ।
कलि फाल्गुनसप्तमी इन्द्र जजे,
हम पूजहिं सर्व कलङ्क भजे ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्या ज्ञानमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित फाल्गुण सप्तमि मुक्त गये,
गुणवन्त अनन्त अबाध भये ।
हरि आय जजे तित मोद धरे,
हम पूजत ही सब पाप हरे ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

हे मृगांकअङ्कित चरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥१॥
पै तुम भगति हियै मम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातें गाऊं सुगुण तुम, तुम हौ होउ सहाय ॥२॥

छन्द पद्धडी

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान,
भवकानन हानन दवप्रमान ।
जय गरभ जनम मंगल दिनन्द,
भवि जीवविकाशन शर्मकन्द ॥३॥
दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय,
मनवांछित सुख भोगे जिनाय ।
लखि कारण ह्वै जगतें उदास,
चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग,
हरि शिविका सजि धरियो अभोग।
तापै तुम चढि जिन चन्दराय,
ता छिनकी शोभा को कहाय ॥५॥
जिन अंग सेत सित चमर ढार,
सित छत्र शीस गलगुलकहार।
सित रतन जडित भूषण विचित्र,
सित चन्द्रचरण चरचै पवित्र ॥६॥
सित तन द्युति नाकाधीश आप,
सित शिवका कांधे धरि सुचाप।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व,
सित चितमे चिन्तत जात पर्व ॥७॥
सित चन्दनगरतै निकसि नाथ,
सित वन में पहुँचे सकल साथ।
सित सिला शिरोमणि स्वच्छ छांह,
सित तप तित धार्यो तुम जिनांह ॥८॥
सित पय को पारण परम सार,
सित चन्द्रदत्त दीनो उदार।
सित कर में सो पयधार देत,
मानो बांधत भवसिधु सेत ॥९॥

मानो सुपुण्यधारा प्रतच्छ,
तित अचरज्ज पन सुर किय ततच्छ ।
फिर जाय गहन सित तप करंत,
सित केवलज्योति जग्यो अनन्त ॥१०॥
लहि समवसरण रचना महान,
जाके देखत सब पापहान ।
जहं तरु अशोक शोभै उतंग,
सब शोकतनो चूरै प्रसंग ॥११ ॥
सुर सुमनवृष्टि नभतें सुहात,
मनु मन्मथ तज हथियाय जात ।
बानी जिन मुखसौ खिरत सार,
मनु तत्त्वप्रकाशन मुकुरधार ॥१२॥
जहं चौसठ चमर अमर ढुरंत,
मनु सुजसमेघ झरि लगिय तंत ।
सिंहासन है जहं कमलजुक्त,
मनु शिवसरवर को कमलशुक्त ॥१३॥
दुंदभि जित बाजत मधुर सार,
मनु करमजीत को है नगार ।
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण,
मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥१४॥
तन प्रभातनों मण्डल सुहात,
भवि देखत निज भव सात सात ।

मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय,
भविजन भव सुख देखत सुआय ।।१५।।
इत्यादि विभूति अनेक जान,
वाहिज दीसत महिमा महान ।
ताको वरणत नहि लहत पार,
तौ अन्तरंग को कहै सार ।।१६।।
अनअन्त गुणनिजुत करि विहार,
धरमोपदेश दे भव्य तार ।
फिर जोगनिरोधि अघाति हान,
सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ।।१७।।
वृन्दावन वन्दत शीश नाय,
तुम जानत हो मम उर जु भाय ।
तातैं का कहौं सु वार वार,
मनवांछित कारज सार सार ।।१८।।

छन्द घत्तानन्द

जय चंद जिनंदा आनंदकंदा, भवभय भंजन राजै हैं ।
रागादिकद्वंदा हरिसब फंदा, मुकतिमांहि थितिसाजैं है ।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द चौबोला

आठों दरव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजैं ।
ताके भवभव के अघ भाजैं, मुक्त सारसुख ताहि सजैं ।।२०।।

जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं ।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ॥२१॥

पुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—o—

श्री पुष्पदन्त जिनपूजा

छंद मदावलिप्तकपोल (रोडक)

पुष्पदन्त भगवंत सन्त सुजपंत तन्त गुन,
महिमावन्त महंत कन्त शिवतियरमंत मुन,
काकन्दीपुर जन्म पिता सुग्रीव रमासुत,
स्वेतवरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

चाल होली की ताल जत्त

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी० ॥टेक॥
हिमवनगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय ।
करम कलंक निवारनकारन जजों तुम्हारे पाय ॥मेरी०॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

बावन चन्दन कदलीनंदन, कुंकुम संग घसाय ।
चरचों चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय ॥मेरी०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय ।
ताको पुंज धरों चरननढिग, देहु अखयपद राय ।।मेरी०।।३।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुंजत अलिगन आय ।
ब्रह्मपुत्रमदभजन कारन, जजों तुम्हारे पाय ।। मेरी०।।४।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

घेबर बाबर फेनी गोझा, मोदन मोदक लाय ।
छुधावेदनी रोगहरनको, भेंट धरो गुण गाय ।। मेरी०।।५।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

वाति कपूर दीप कंचनमय उज्ज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, धरो निकट उमगाय ।।मेरी०।।६।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्दाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हौ गुन गाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरै सो, धूम धूम सु उड़ाय ।।मेरी०।।७।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्दाय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट, दाड़िम आम मंगाय ।
तासों तुम पदपद्म जजत हों,विघनसघन मिट जाय ।।मेरी०।।८।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल फल सकल मिलाय मनोहर मनवचतन हुलसाय ।
तुम पद पूजों प्रीति लायकै जय जय त्रिभुवनराय ।।मेरी०।।९।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पजिनेन्दाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छंद स्वयम्भू

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभ मांहि थितिदेवा जी,
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवा जी।
रतनन की धारा परमउदारा, परी व्योमतैं सारा जी,
मैं पूजों ध्यावौं भगत बढ़ावौं, करो मोहि भवपारा जी ॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं।

मगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं जनमे तीरथनाथा जी,
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निज माथा जी।
सुरगिर नहवाये, मङ्गल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी,
मैं पूजों ध्यावौं भगत बढ़ावौं, निजनिधिहेत सहाई जी ॥२॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि जन्ममंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घं।

सित मगसिरमासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धाराजी,
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी।
सुरमित्र सुदानी के घर आनी, गो-पय-पारन कीना है,
तिनको मैं बन्दौ पापनिकन्दौ, जो समतारस भीना है ॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि तपोमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घम्।

सितकातिक गाये दोइज घाये, घातिकरम परचंडा जी,
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकलसार सुखमण्डा जी।
गनराज अठासी आनन्द भासी, समवसरण वृषदाता जी,
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजें जगत्राता जी ॥४॥

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घम् ।

भादव सित सारा आठैं धारा, गिरिसम्मेद निरवाना जी,
गुन अष्ट प्रकारा अनुपमधारा, जै जै कृपानिधाना जी।
तित इन्द्र सु आयौ पूज रचायौ, चिन्ह तहां करि दीना है,
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसौं, तुमरे रसमें भीना है ॥५॥

ॐ ह्री भादवशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलमडिताय श्री पुपदन्त जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

लच्छन मगर सुश्वेत तन तुंग धनुष शतएक ।
सुर नर वंदित मुकतपति नमों तुम्हें शिर टेक ॥१॥
पुहुपरदन गुन वदन है, सागर तोय समान ।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ।२॥

छन्द तामरस

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते, पुण्य तीर्थंकर संत नमस्ते ।
ज्ञान ध्यान अमलान नमस्ते, चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ॥३॥

भवभयभंजन देव नमस्ते, मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ।
मिथ्यानिशिदिनइन्द्र नमस्ते, ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते ।।४।।
भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते, रागदोष-मदहंद नमस्ते ।
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्मसुधारसपूर नमस्ते ।।५।।
केवल ब्रह्मप्रकाश नमस्ते, सकल चराचरभास नमस्ते ।
विघ्नमहीधरविज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ।।६।।
जय मकराकृतपाद नमस्ते, मकरध्वजमदवाद नमस्ते ।
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते, जय जय अधमउधार नमस्ते ।।७।।
दयाधुरंधर धीर नमस्ते, जय जय गुनगम्भीर नमस्ते ।
मुक्तिरमनिपति वीर नमस्ते, हरता भवभयपीर नमस्ते ।।८।।
व्ययउतपतिथितिधार नमस्ते, निज अधार अविकार नमस्ते ।
भव्यभवोदधितार नमस्ते, वृन्दावन निसतार नमस्ते ।।९।।

छन्द घत्ता

जय जय जिनदेवं हरिकृतसेवं, परमधरमधनधारी जी ।
मैं पूजौं ध्यावौं गुनगन गावौ मेटो विथा हमारी जी ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय महार्घम् ।

मदावलिप्तकपोल

पुहुपदंतपद संत, जजैं जो मनवचकाई,
नाचै गावै भगति करै, शुभ परनति लाई ।
सो पावै सुख सर्व इन्द अहिमिद तनो वर,
अनुक्रमतै निरवान, लहै निहचैं प्रमोद धर ।।११।।

परिपुपांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः ।

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तामातग

शीतलनाथ नमो धरि हाथ,
सुमाथ जिन्हो भवगाथ मिटायें ।
अच्युततैं च्युत मात सुनन्द के,
नन्द भये पुरभद्दल भाये ।।
वंश इख्वाक कियो जिन भूषित,
भव्यनको भव पार लगाये ।
ऐसे कृपानिधि के पदपंकज,
थापतु हों हिय हर्ष बढ़ाये ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद वसंततिलका

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायो,
भृंगार हेम भरि भक्ति हिये बढ़ायो ।
रागादिदोषमलमर्द्दनहेतु येवा,
चर्चो पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

श्रीखंडसार वर कुंकुम गारि लीनो ।
कसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ।।रा० ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
मुक्तासमान सित तंदुल सार राजें ।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजै ।। रा० ।।३।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
श्रीकेतकी प्रमुख पुष्प अदोष लायां ।
नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायो ।।रा० ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री शीयलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
नैवेद्य सार चरु चारु संवारि लायो ।
जांबूनप्रभृति भाजन शीस नायो ।।रा० ।।५।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोति राजै ।
स्नेह प्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ।।रा० ।।६।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
कृष्णागुरु प्रमुखगंध हुताश माहीं ।
खेवों तवाग्र वसुकर्म जरंत जाही ।।रा० ।।७।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा ।
सौवर्ण गंध फल सार सुपक्व प्यारा ।।रा० ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

कंश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ।।रा० ।।६।।

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छद इंदवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा

आठै वदी चैत सुगर्भ माही,
आये प्रभू मंगलरूप थाही ।
सेवै सची मात अनेक भेवा,
चर्चो सदा शीतलनाथ देवा ।।१।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णाष्टम्या गर्भमङ्गलमडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जायो,
भूलोक मे मंगल सार आयो ।
शैलेन्द्र पै इन्द्र फनिन्द्र जज्जै,
मै ध्यान धारों भवदुःख भज्जै ।।२।।

ॐ ह्री माघकृष्णद्वादश्या जन्ममङ्गलमडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जानों,
वैराग्य पायो भवभाव हानो ।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा,
चर्चों सदा चर्न निवारि कोहा ।।३।।

ॐ ह्री माघकृष्णद्वादश्यां तपोमगलमडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो,
ताही दिना केवललब्धि पायो ।
शोभै समोसत्य बखानि धर्मं,
चर्चो सदा शीतल पर्म शर्म ॥४॥

ॐ ह्री पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमगलताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्मम् ।

कुवार की आठयं शुद्ध बुद्धा,
भये महामोक्षसरूप शुद्धा ।
सम्मेदतै शीतलनाथ स्वामी,
गुनाकरं तासु पदं नमामी ॥५॥

ॐ ह्री आश्विनशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलमंडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्मम् ।

जयमाला

छद लोलतरग

आप अनंत गुनाकर राजै, वस्तुविकाशन भानु समाजै ॥
मैं यह जानि गही शरना है, मोहमहारिपुको हरना है ॥१॥

दोहा

हेम वरन तन तुग धनु, नव्वै अति अतिराम ।
सुर तरु अंक निहारी पद, पुन पुन करो प्रणाम ॥२॥

छंद तोटक

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं,
भवदाघदवानल मेघझरं ।

दुखभूभृतभंजन वज्रसमं,
भवसागर नागरपोतपमं ।।३।।
कुहमानमयागदलोभ हरं,
अरि विघ्न गयंद मृगिद वरं ।
वृष-वारिदवृष्टन सृष्टिहितू,
परदृष्टि-विनाशन सुष्टु पितू ।।४।।
समवस्रतसजुत राजतु हो,
उपमा अभिराम विराजतु हो ।
वर बारहभेद सभाथितको,
तित धर्मबखानि कियौ हितको ।।५।।
पहले महि श्रीगनराजरजैं,
दुतिये महि कल्पसुरी जु सजैं ।
त्रितिये गणनी गुन भूरि धरैं,
चवथे तिय जोतिष जोति भरैं ।।६।।
तिय-वितरनी पनमें गनिये,
छहमें भुवनेसुर ती भनिये ।
भुवनेश दशो थित सत्तम है,
वसुमे वसु-वितर उत्तम है ।।७।।
नव में नभजोतिष पंच भरे,
दशमे दिविदेव समस्त खरे ।

नरवृन्द इकादशमें निवसैं,
अरु बारहमें पशु सर्व लसैं ॥८॥
तजिवैर, प्रमोद धरै सब ही,
समतारस मग्न लसै तब ही ।
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं,
गनराज असी धरि ज्ञानबलं ॥९॥
सबके हित तत्त्व वखान करै,
करुनामनरंजित शर्म भरैं ।
वरने षटदर्व तनें जितने,
वर भेद विराजतु है तितने ॥१०॥
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना,
इक धर्म दुती सुकलं अधुना ।
तित धर्म सुध्यान तणो गनियो,
दशभेद लखे भ्रमको हनियो ॥११॥
पहलो अरि नाश अपाय सही,
दुतियो जिनबैन उपाय गहो ।
त्रिति जीवविचै निजध्यावन है,
चवथो सु अजीव रमावन है ॥१२॥
पनमों सु उदै बलटारन है,
छहमों अरिरागनिवारन है ।
भवत्यागन चिंतन सप्तम है,

वसुमों जितलोभ न आतम है ।।१३।।
नवमों जिनकी थुति सीस धरै
दशमो जिनभाषित हेत करै ।
इमि धर्म तणो दश भेद भन्यो ।।१४।।
पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो ।।१४।।
सुपृथक्तवितर्कविचार सही,
सुइकत्ववितर्कविचार गही ।
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही,
विपरीतक्रियानिरवृत्त लही ।।१५।।
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो,
भवि जीवनको शिव स्वर्ग दियो ।
पुनि मोच्छविहार कियो जिनजी,
सुखसागर मग्न चिरं गुनजी ।।१६।।
अब मैं शरना पकरी तुमरी,
सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ।
भव व्याधि निवार करो अब ही,
मति ढील करो सुख द्यो सब ही ।।१७।।

छन्द घत्तानन्द

शीतल जिन ध्याऊं भगति बढ़ाऊं, ज्यो रतनत्रयनिधि पाऊं ।
भवदंद नशाऊं शिवथल जाऊं, फेर न भौवनमें आऊं ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द मालिनी

दिढ़रथ सुत श्रीमान्, पंचकल्याणक धारो,
तिनपद जुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी ।
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै,
अनुक्रम अरिदाहै, मोक्षको सो सिधावै ॥१६॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—o—

श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

छन्द रूपमाला

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयासनाथ जिनन्द,
सिघपुर जनमे सकल हरि, पूजि धरी आनन्द ।
भयबंधध्वंसनहेत लखि मैं, शरन आयो येव,
थापौं चरन जुग उरकमल में, जजनकारन देव ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठ. । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द गीता तथा हरिगीता

कल धौतवरन उतंगहिमगिरि पदमद्रहतैं आवई ।
सुरसरितप्रासुक उदकसों भरी भृङ्ग धार चढ़ावई ॥

श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्दकन्द हैं।
दुखदन्दफंदनिकन्द पूरन चन्द जोति अमन्द हैं ।।१।।
ॐ ह्री श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्
गोशीर वर करपूर कुंकुम नीर संग घसों सही ।
भवतापभंजन हेत भवदधिसेत चरन जजों सही ।।श्रे०।।२।
ॐ ह्री श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
सितशालि शशिदुत शुक्तिसुन्दर मुक्तिकी उनहार है ।
भरि थार पुज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ।।श्रे०।।३
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
सद सुमन सुमनसमान पावन, मलयतै अलि झंकरै ।
पदकमलतर धरतैं तुरित सो मदनको मद खंकरै ।।श्रे० ।।
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
यह परममोदक आदि युत रस सवारि सुन्दर चरु लियौ ।
तुम वेदनीमदहरन लखि, चरचोंचरन शुचिकर हियौ ।श्रे०।।
ॐ ह्री श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
संशयविमोहविभरतम भंजन दिनंद समान हो ।
तातै चरनढिग दीप जोऊं देहु अविचल ज्ञान हो ।श्रे० ।।६
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया ।
दहि अमर जिह्वविषैं चरनढिग करमभरम जराइया ।।श्रे०।।
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथ जिदनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्क मधुर सुहावनें।
लै भगतिसहित जजो चरन शिव परमपावन पावनें।श्रे०॥८॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
जलमलपतंदुलसुमनचरु अरु दीपधूपफलावली।
करि अरघ चरचों चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली।श्रे०।९॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पंचकल्याणक

छन्द-आर्या

पुष्पोत्तर तजि आये, विमला उर जेठकृष्ण छट्टकों।
सुरनर मङ्गल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकाठेको ॥१॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठी दिने गर्भमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

जनमे फागुनकारी, एकादशि तीनग्यानदृगधारी।
इख्वाकवंशतारी, मैं पूजों घोर विघ्न दुखटारी ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजों पाद अष्ट परकारा ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

केवलज्ञान सुजानन माघवदी पूर्णतित्थको देवा ।
चतुरानन भवभानन, वंदौ ध्यावौं करौं सुपद सेवा ।।४।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

गिरिसमेदतें पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको ।
कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजों आपनिकट आवनको ।।५।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्ल पूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द लोलतरंग

शोभित तुंग शरीर सुजानो,
चाप असी शुभलच्छन मानो ।
कंचन वर्ण अनूपम सोहै,
देखत रूप सुरासुरा मोहै ।।१।।

छन्द पद्धडी

जै जै श्रेयांस जिन गुनगरिष्ठ,
तुम पदजुग दायक-इष्टमिष्ट ।
जै शिष्ट शिरोमनी जगतपाल,
जै भवसरोजगन प्रातकाल ।।२।।
जै पंचमहाव्रत गज सवार,
लै त्यागभाव दलबल सु लार ।

जै धीरजकों दलपति बनाय,
सत्ता छितिमहं रनको मचाय ॥३॥
जै रतन तीन तिहुँ शक्ति हाथ,
दश धरम कवच तप टोप माथ।
जै शुकलध्यान कर खड़ग धार,
ललकारे आठों अरि प्रचार ॥४॥
तामें सबको पति मोह चंड,
ताकों ततछिन करि सहस खण्ड।
फिर ज्ञानदरश प्रत्यूह हान,
निजगुनगढ लीनों अचल थान ॥५॥
शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार,
हुव समवसरणरचना अपार।
तित भाषै तत्त्व अनेक धार,
जाको सुनि भव्य हिये विचार ॥६॥
निज रूप लह्यौ आनन्दकार,
भ्रम दूर करनको अति उदार।
पुनि नय-प्रमान-निच्छेप सार,
दरसायो करि संशय प्रहार ॥७॥
तामैं प्रमान जुगभेद एव,
परतच्छ परोछ रजै सुमेव।
तामैं प्रतच्छके भेद दोय,
पहिलो है संविवहार सोय ॥८॥

ताके जुग भेद विराजमान,
मति श्रुति सोहै सुन्दर महान ।
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ,
हैं भेद जुगम तामहि दच्छ ॥६॥
इक एकदेश इक सर्वदेश,
इकदेश उभैविधिसहित वेश ।
वर अवधि सु मनपरजै विचार,
है सकलदेश केवल अपार ॥१०॥
चरअचर लखत जुगपत प्रतच्छ,
निरद्वंद रहित परपंच पच्छ ।
पुनि है परोच्छमहं पंच भेद,
समिरति अरु प्रत्यभिज्ञान वेद ॥११॥
पुनि तरक और अनुमान मान,
आगमजुत पन, अब नय बखान ।
नैगम, संग्रह, व्यौहार गूढ़,
रिजुसूत्र, शब्द अरु समभिरूढ़ ॥१२॥
पुनि एवंभूत सु सप्त एम,
नय कहे जिनेसुर गुन जु तेम ।
पुनि दरव क्षेत्र अर काल भाव,
निच्छेप चार विधि इमि जनाव ॥१३॥
इनको समस्त भाष्यौ विशेष,

जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश ।
निज ज्ञानहेत ये मूलमन्त्र,
तुम भाषे श्रीजिनवर सु तन्त्र ॥१४॥
इत्यादि तत्त्व उपदेश देय,
हनि शेष करम निरवान लेय ।
गिरवान जजत वसु दरब ईश,
वृन्दावन नित प्रति नमत शीश ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

श्रेयांस महेशा सुगुन जिनेशा, वज्र धरेशा ध्यावतु हैं ।
हम निशदिन वंदें पापनिकंदे, ज्यौं सहजानंद पावतु है ॥१६॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

सोरठा

जो पूजै मन लाय, श्रेयनाथ पदपद्मको ।
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौ शिवतिय वरै ॥१॥
परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत् इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री वासुपूज्य जिनपूजा

छन्द रूपकवित्त

श्री मत वासुपूज्य जिनवर पद, पूजन हेत हिये उमगाय,
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ।

महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय,
सोकरुनानिधि कृपादिष्टकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहं आय ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छंद जोगीरासा । आंचलीबध "जिनपद पूजों लव लाई ।"

गंगाजल भरि कनककुंभ मे, प्रासुक गंध मिलाई,
करम कलंक विनाशकारन, धार देत हरषाई ।
वासपूज वसुपूजत तुजपद, वासव सेवत आई,
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।जिन०१।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

कृष्णागरु मलयागिरचंदन, केशरसंग घसाई ।
भवआताप विनाशनकारन, पूजो पद चित लाई ॥वासु०॥२॥

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम ।

देवजीर सुखदास शुद्ध वर, सुवरन थार भराई ।
पुज धरत तुम चरनन, आगे, तुरित अखय पद पाई ।वासु०।३।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पारिजात संतानकल्पतरु-जनित सुमन बहु लाई ।
मीनकेतु मदभंजनकारन, तुम पदपद्म चढ़ाई ॥वासु०॥४॥

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नव्यगव्यआदिक रसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
क्षुधारोग निवारनकारन, तुम्हें जजों शिर नाई ॥वासु०॥५॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

दीपकजोत उदोत होत वर, दशदिश मे छबि छाई ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई॥वासु०॥६॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशविध गंध मनोहर लेकर, वातहोत्रमे डाई ।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु है, धूम सुधूम उड़ाई ॥वासु०॥७॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

सुरस सुपक्क सुपावन फल लै, कंचनथार भराई ।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेट धरो गुनगाई॥वासु०८॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफल दरब मिलाय गाय गुन आठों अग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ।वासु०९॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द पाईता (मात्रा १४)

कलि छट्ठ असाढ़ सुहायो, गरभागम मंगल पायो ।
दशमें दिवितें इत आये, शतइन्द्र जजे सिर नाये ॥१॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णषष्ठम्या गर्भमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कलि चौदश फागुन जानो, जनमे जगदीश महानों ।
हरि मेर जजे तब जाई, हम पूजत है चित लाई ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तिथि चौदस फागुन श्यामा, धरियो तप श्रीअभिरामा ।
नृप सुन्दर के पय पायो हम पूजत अतिसुख थायो ॥३॥

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्दा तपोमडलमडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुदि माघ दोइज सोहै, लहि केवल आतम जो है ।
अनअन्त गुनाकर स्वामी, नित वंदो त्रिभुवन नामी ॥४॥

ॐ ह्री माघशुक्लद्वितीयाया ज्ञानमडलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सितभादव चौदशि लीनों, निरवान सुथान प्रवीनों ।
पुर चंपाथानक सेती, हम पूजत निजहित हेती ॥५॥

ॐ ह्री भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्या मोक्षमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

चंपापुर मे पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो, जय जय जय जिनराय ॥१॥

छन्दमोतियादाम

महासुखसागर आगर ज्ञान,
अनन्त सुखामृतामुक्त महान ।
महाबलमंडित खंडित काम,
रमाशिवसंग सदा विसराम ॥२॥
सुरिंद फनिद खगिद नरिंद,
मुनिद जजै नित पादरविंद ।
प्रभू तुव अन्तर भाव विराग,
सुबालहि ते व्रतशीलसो राग ॥३॥
कियो नहिं राज उदाससरूप,
सुभावन भावत आतमरूप ।
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त,
चिदातम नित्यसुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नही कोउ शर्नसहाय,
जहा जिय भोगत कर्म विषाय ।
निजातम कै परमेसुर शर्न,
नही इनके बिन आपद हर्न ॥५॥
जगत्त जथा जलबुद्बुद येव,
सदा जिय एक लहै फलभेव ।
अनेकप्रकार धरी यह देह,
भमे भव कानन आन न नेह ॥६॥

अपावन सात कुधात भरीय ।
चिदातम शुद्धसुभाव धरीय ।
धरै इनसों जब नेह तबेव,
सुआवत कर्म तबै वसुभेव ॥७॥
जबै तनभोगजगत्त उदास,
धरै तब संवर निर्जर आस ।
करै जब कर्मकलंक विनाश,
लहै तब मोक्ष महासुखराश ॥८॥
तथा यह लोक नराकृत नित,
विलोकियते षटद्रव्यविचित्त ।
सु आतमजानन बोधविहीन,
धरै किन तत्त्व प्रतीत प्रवीन ॥९॥
जिनागमज्ञानरु संजमभाव,
सबै निज ज्ञान बिना विरसाव ।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल,
सुभाव सबै जिहतें शिव हाल ॥१०॥
लयो सब जोग सुपुन्य बशाय,
कहो किमि दीजिय ताहिगंवाय ।
विचारत यों लवकान्तिक आय,
नमें पदपकज पुष्प चढ़ाय ॥११॥
कह्यो प्रभु धन्य किया सुविचार,

प्रबोधि सु येम कियो जु विहार ।
तबै सौधर्म तनों हरि आय,
रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय ॥१२॥
धरे तप, पाय सुकेवलबोध,
दियो उपदेश सुभव्य संबोध ।
लियो फिर मोच्छ महासुख राश,
नमै नित भक्त सोई सुखआश ॥१३॥

छंद घत्तानन्द

नित वासवन्दत, पापनिकंदत, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मपती ।
भवसंकलखडित आनन्दमण्डित, जै जै जै जैवन्ती जती ॥१४।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय महार्घंम् ।

सोरठा

वासपूज पद सार जजों दरबविधि भावसो ।
सो पावै सुखसार भुक्ति मुक्ति को जो परम ॥१५॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री विमलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तावलिप्तकपोल

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय,
कृतधर्मानृपनंद, मातु जयसेन धर्मप्रिय ।

तीन लोक वरनंद, विमल जिन विमल विमलकर,
थापो चरनसरोज, जजनके हेत भाव धर ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

सोरठा छन्द

कचन झारी धारि, पदमद्रह को नीर ले ।
तृषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये ।।१।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर करपूर, देववल्लभा सग घँसि ।
हरि मिथ्यातमभूर, विमल विमलगुन जजतु हो ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

बासमतो सुखदास, श्वेत निशपतिको हंसै ।
पूरै वांछित आस, विमल विमलगुन जजत ही ।।३।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

परिजात मदार, संनानक सुरतरुजनित ।
जजो सुमन भरि थार, विमल विमल सुन मदनहर ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

नव्य गव्य रसपूर, सुवरन थार भरायकै ।
छुदावेनती चूर, जजो विमलपद विमलगुन ।।५।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

मानिक दीप अखंड, गो छाई वर गो दशों।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमति के धनी ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।
अगर तगर घनसार देवदार कर चूर वर।
खेवों वसु अरि जार, विमल विमल पदपद्मढिग ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिदनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।
श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने।
जजो विमलपद सार, विघ्न हरै शिवफल करैं ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
आठों दरब संवार, मनसुखदायक पावने।
जजो अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन ॥९॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी

गरभ जेठ वदी दशमी भनो, परम पावन सो दिन शोभनो।
करत सेव सची जननीतणी, हम जजैं पदपद्म शिरोमणी ॥१॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्या गर्भमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

शकलमाघ चतुर्थी तिथि जानिये, जनममङ्गल तादिन मानिये।
हरि तबै गिरिराज विषै जजे, हम समर्चत आनंदको सजे ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्या जन्ममगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

तप धरे सितमाघ चतुर्थी भली, निज सुधातम ध्यावत है रली।
हरि फनेश नरेश जजे तहां, हम जजें नित आनंदसो इहां ॥३॥

ॐ ह्री माघशुक्लचतुर्थया तपोमगलमडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

विमल माघरसी हनि घातिया, विमलबोध लयो सब भासिया
विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै, विमलआनंद देहु हमैं सबै ॥४॥

ॐ ह्री माघशुक्लषष्ठया ज्ञानमगलमडिताय श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

भ्रमरसाढरसी अति पावनो, विमल सिद्ध भये मनभावनों।
गिरसमेद हरी तित पूजिया, हम जजै इत हर्ष धरै हिया ॥५॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णअष्टया मोक्षमगलमडिताय श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

छद दोहा

गगन चहत उड़गन गगन छिति थितिके छहं जेम।
तिमि गुन बरनन बरनन,-माहि होय तब केम ॥१॥
साठ धनुष तन तुङ्ग है, हेमवरन अभिराम।
वर बराह पद अक लखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥२॥

छद तोटक

जय केवल ब्रह्म अनतगुनी, तुव ध्यावत शेष महेश मुनी।
परमातम पूरन पाप हनी, चितचिततदातक इष्ट धनी ॥३॥
भवआतपध्वंसन इन्दुकरं, वर साररसायन शर्मभरं।

सब जन्मजरामृतदाघहरं, शरनागत पालन नाथ वरं ॥४॥
नित संत तुमें इन नामनितैं, चितचितत हैं गुनमाननितैं ।
अमलं अचलं अटलं अतुलं, अरसं अछलं अथलं अकुलं ॥५॥
अजरं अमरं अहरं अडरं, अपरं अभरं अशरं अनरं ।
अमलीन अछीन अरीन हने, अमतं अगतं अरतं अघने ॥६॥
अछुदा अतृषा अभयातम हो, अमदा अगदा अवदातम हो ।
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमान धुना, अतलं अशलं अनअन्त गुना ॥७॥
अरसं सरसं अकलं सकलं, अवचं सवचं अमनं सबलं ।
इन आदि अनेक प्रकार सही, तुमको जिन संत जपैं नित ही ॥८॥
अब मैं तुमरी शरना पकरी, दुख दूर करो प्रभुजी हमरी ।
हम कष्ट सहे भवकानन में, कुनिगोद तथा थल आननमें॥९।
तित जामनमर्न सहे जितने, कहि केम सकै तुमसो तितने ।
समुहूरत अन्तरमांहि धरे, छह त्रै छः छह काय खरे ॥१०॥
छिति वन्हि वयारिक साधरनं, लघु थूल विभेदनिसों भरनं ।
परतेक वनस्पति ग्यार भये, छ हजार दुवादश भेद लये ॥११॥
सब द्वै त्रय भू षट छ.सुभया, इक इन्द्रियकी परजाय लया ।
जुगइन्द्रियकायअसीगहियो, तियइंद्रिय साठनिमे रहियो ॥१२॥
चतुरिदिय चालिस देह धरा, पनइंदियके चवबीस बरा ।
सब ये तनधार तहां सहियो, दुखघोरचितारित जात हियो।१३।
अब मो अरदास हिये धरिये, सुखदंद सबै अब ही हरियें ।
मनवांछितकारज सिद्ध करो, सुखसार सबै घर रिद्ध भरो।१४।

छन्द घत्तानन्द

जय विमल जिनेशा, नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा ।
भवताप अशेषा हरन निशेशा, दाता चिंतित शर्म सदा ।।१५।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द दोहा

श्रीमत विमल जिनेश पद, जो पूजौ मन लाय ।
पूजे वांछित आश तसु, मैं पूजौ गुनगाय ।।१६।।

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री अनन्तनाथ जिनपूजा

छन्द कवित्त

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या जनम लियो सूर्याउर आय,
सिघसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय ।
गुन अनत भगवत धरे, भवदद हरे तुम हे जिनराय,
थापतु हो त्रय बार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठ इत आय ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छन्द गीता तथा हरिगीता

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया,
मल करम धोवन हेत मन, वचकाय धार ढराइया ।

जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो ।
शिवकंतवंत महंत ध्यावो, भ्रंततत नशावनो ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

हरिचन्द कदलीनंद कुंकुम, दंदताप निकंद है ।
सब पापरुजसंतापभंजन, आपको लखि चंद है ॥ ज० ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

कनशाल दुति उजियाल हीर, हिमालगुलनितें घनी ।
तसु पुज तुम पदतर धरत पद लहत स्वच्छ सुहावनी ॥ ज०॥३
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पुष्कर अमरतर जनित वर, अथवा अवर कर लाइया ।
तुम चरनपुष्करतर धरत, सरशूल सकल नशाइया ॥ज०॥४॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

पकवान नैना घ्रानरसना-को प्रमोद सुदाय हैं ।
सो ल्याय चरन चढ़ाय रोग, छुधाय नाश कराय है ॥ज० ॥५॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तममोह भानन जानि आनन्द आनि सरन गही अबै ।
वर दीप धारों वारि तुमढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै ।ज०॥६॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

यह गंध चूरि दशांग सुन्दर धूम्रध्वजमें खेय हों ।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निज सुधातम वेय हों ॥ज० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रसथक्व पक्व सुभक्व चक्व, सुहावने मृदु पावनें ।
फलसार वृन्द अमंद ऐसो, ल्याय पूज रचावने ।।ज०८।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।
अरु धूप जुत मैं अरघ करि, करजोरजुग विनति करों ।।ज०६।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छंद सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित

असित कातिक एकम भावनों गरभको दिन सो गिन पावनों ।
किय सची तित चर्चन चावसों, हम जजें इत आनंद भावसों ।।१।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदि गर्भमङ्गलमंडिताय श्री अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकल मङ्गल लोकविषै लशी ।
हरि जजे गिरिराजसमाजतें, हम जजै इत आतम काजतें ।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्री अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

भवशरीर विनस्वर भाइयो, असित जेठदुवादशि गाइयो ।
सकल इंद्र जजे तित आइकै, हम जजै इत मंगल गाइकैं ।।३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपमंगलमंडिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

असित चैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही ।
लही समोसृत धर्म धुरंधरो, हम समर्चत विघ्न सबै हरो॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री अनन्त-जिनेन्द्राय अर्घं ।

असित चैत अमावस गाइयौ, अघतघाति हने शिव पाइयौ ।
गिरि समेद जजे हरि आयकै, हम जजै पद प्रीति लगाइकै ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

जयमाला

छंद दोहा

तुम गुण बरनन येम जिम, खंविहाय करमान ।
तथा मेदिनी पदनिकरि, कीनो चहत प्रमान ॥१॥
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलज वृन्द विहसाय ।
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥२॥

छन्द नयमालनी, चंडी तथा तामरस

जै अनन्त गुनवत नमस्ते, शुद्ध ध्येय नित सन्त नमस्ते ।
लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते ॥३॥
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरि कीर नमस्ते ।
चार अनंत महन्त नमस्ते, जय जय शिवतियकंत नमस्ते ॥४॥
पंचाचार विचार नमस्ते, पंच कर्ण मदहार नमस्ते ।

पंच परावृत-चूर नमस्ते, पंचमगति सुखपूर नमस्ते ॥५॥
पंचलब्धि-धरनेश नमस्ते, पंच-भाव सिद्धेश नमस्ते ।
छहों दरब गुनज्ञान नमस्ते, छहो कालपहिचान नमस्ते ॥६॥
छहों काय रच्छेश नमस्ते, छह सम्यक उपदेश नमस्ते ।
सप्तविशनवनवन्हि नमस्ते, जय केवलअपरन्हि नमस्ते ॥७॥
सप्ततत्त्व गुनभनन नमस्ते, सप्त शुभ्रगतहनन नमस्ते ।
सप्तभंगके ईश नमस्ते, सातों नय कथनीश नमस्ते ॥८॥
अष्टकरममदल्ल नमस्ते, अष्टजोगनिरशल्ल नमस्ते ।
अष्टधराधिराज नमस्ते, अष्टगुननिसिरताज नमस्ते ॥९॥
जय नवकेवल प्राप्त-नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते ।
दशो धरमधरतार नमस्ते, दशों बंधपरिहार नमस्ते ॥१०॥
विघ्न महीधर बिज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ।
तन कनकंदुति पूर नमस्ते, इख्वाकज गनसूर नमस्ते ॥११॥
धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिधु गुन शुच्च नमस्ते ।
सेही अङ्क निशंक नमस्ते, चितचकोरमृगअङ्क नमस्ते ॥१२॥
राग दोषमदटार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते ।
सुर-सुरेश-गन-वृन्द नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते। ।१३॥

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनदेवं सुरकृतसेवं, नितकृतचित्तहुल्लासधरं ।
आपदउद्धारं समतागारं, वीतराग विज्ञानभरं ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क

जो मनवचकाय लाय, जिन जजै नेह धर,
वा अनुमोदन करै करावै पढ़ै पाठ वर।
ताके नित नव होय, सुमंगल आनन्ददाई,
अनुक्रमतें निवारन, लहै सामग्री पाई ॥१५॥

परिपुष्पाजंलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः।

—०—

श्री धर्मनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा क्रिरीट

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान,
सुभानके आनि अनन्द बढ़ाय।
जगमातसुव्रत्ति के नन्दन होय,
भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाव ॥
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश है,
दासिनको शिवस्वर्ग मंढ़ाय।
तिनके पद पूजन हेत त्रिवार,
सुथापतु हों यह फूल चढ़ाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छंद जोगीरासा

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरिझारी,
जनमजरामृत तापहरनको, चरचों चरन तुम्हारी ।
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन अशरन शरन निहारी,
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ।।१।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युनिनाशनाय जलम् ।
केशर चन्दन कदली नन्दन, दाह निकन्दन लीनों ।
जलसमघस लसि शसिसमशमकर, भवआतापहरीनों ।पर०।।२।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुज धरत आनन्द भरत भव-दद हरत हरषायो ।।पर०।।३।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
सुमन सुमनसम सुमनथाल रम, सुमनवृन्द विहसाई ।
सुमन-मथ-मदमथन के कारन, चरचों चरन चढाई ।।पर०।।४।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर अर्द्ध चन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै ।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै ।।पर०।।५।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
सुन्दर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै ।
नेह सुहित गाऊं गुण श्रीधर, ज्यो सुबोध उर जागै ।।पर०।।६।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृष्णागर तरदिव, हरि चंदन करपूरं ।
चूर खेय जलजवनमांहि जिमि, करम जरे वसु कूरं ॥पर०॥७॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्

आम्र काम्रक अनार सार फल, भार मिष्ट सुखदाई ।
सो लै तुमढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोच्छ ठकुराई ॥पर०।८।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।
बाजत दृमदृम दृम मृदंगगत, नाचत ता थेई थाई ॥पर०९॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्

पंचकल्याणक

राग टप्पा की चाल 'खोयो रे गवार तैं सारो दिन योही खोयो'

पूजों हो अबार, धरम जिनेसुर पूजों । पूजों हो ॥टेक॥
आठैं सित वैसाख की हो, गरभ दिवस अविकार ।
जगजन वछित पूजो पूजोहो अबार, धरम जिनेसुर पूजों ॥१॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

शुकल माघ तेरस लयो हो, धरम धरम अवतार ।
सुरपति सुरगिर पूज्यो, पूजो हो अबार ॥धरम० ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघ सुकल तेरस लयो हो, दुद्धर तप अविकार ।
सुररिषि सुमनन पूज्यो, पूजों हो अबार ।।धरम० ।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां तपोमगलमडिताय श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौष शुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भवतार ।
गनसुर नरदति पूज्यो, पूजों हो अबार ।।धरम० ।।४।।

ॐ ह्री पौषशुक्लपूर्णिमाया ज्ञानमगलमडिताय श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जेठशुकल तिथि चौथ की हो, शिव समेदतै पाय ।
जगतपूजपद पूजों, पूजों हो अबार धरम० ।।५।।

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्ल चतुर्थया मोक्षमगलमडिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अघम् ।

जयमाला

छन्द दोहा (विशेषोक्ति अलकार)

घना कार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तत ।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तव गुन अन्त ।।१।।

छंद पद्धरी

जय धरमनाथ जिन गुन महान,
तुम पदको मै नित धरों ध्यान ।
जय गरभ जनम तप ज्ञान जुक्त,
वर मोच्छ सुमंगल शर्म-भुक्त ।।२।।

जय चिदानन्द आनन्दकन्द,
गुनवृंद सुध्यावत मुनि अमन्द ।
तुम जीवनिके बिनु हेत मित्त,
तुम ही हो जगमें जिन पवित्त ॥३॥

तुम समवरण में तत्त्वसार,
उपदेश दियो है अति उदार ।
ताकों जे भवि निजहेत चित्त,
धारैं ते पावै मोच्छवित्त ॥४॥

मै तुम मुख देखत आज पर्म,
पायो निज आतमरूप धर्म ।
मोको अब भौभयतैं निकार,
निरभयपद दीजे परम सार ॥५॥

तुम सम मेरो जग मे न कोय,
तुमही तैं सब विधि काज होय ।
तुम दयाधुरंधर धीर वीर,
मेटो जगजनकी सकल पीर ॥६॥

तुम नीतिनिपुन बिन रागदोष,
शिवमग दरसावतु हो अदोष ।
तुमरे ही नामतने प्रभाव,
जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव ॥७॥

तातैं मैं तुमरी शरण आय,
यह अरज करतु हों शीश नाय।
भवबाधा मेरी मेट मेट,
शिवराधासो करि भेट भेट ॥८॥
जंजाल जगतको चूर चूर,
आनंद अनूपम पूर पूर।
मति देर करो मुनि अरज एव,
हे दीनदयाल जिनेशदेव ॥९॥
मोको शरना नहि और ठौर,
यह निहचै जानो सुगुन-मौर।
वृन्दावन वदत प्रीति लाय,
सब विघन मेट हे धरम राय ॥१०॥

छन्द घत्तानन्द

जय श्री जिन धर्म, शिवहितपर्म, श्रीजिनधर्म उपदेशा।
तुम दयाधुरधर विनतपुरंदर, कर उरमदर परवेशा ॥११॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छद मदावलिप्तकपोल

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव,
ताके दुख सब मिटहि, लहै आनंद समाज सब।
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रमतै शिव जावै,
वृन्दावन यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै ॥१॥
परिपुष्पांञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद.।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तागयंद

या भवकानन में चतुरानन, पापपनानन घेरी हमेरी,
आतमजानन मान ठान न, बान न होई दई सठ मेरी ।
ता मद भानन आपहि हो यह छान न आन म आनन टेरी,
आन गही शरनागत को अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द त्रिभंगी

हिमगिरिगतगंगा, धार अभङ्गा प्रासुक संगा भरि भृंगा,
जरमरनमृतुगा, नाशि अघगा, पूजि पदंगा मृदुहिंगा ।
श्री शान्तिजिनेश, नुतशक्रेश, वृषचक्रेशं, चक्रेश,
हनि अरिचक्रेश हे गुनधेशं दया तेश, मक्रेश ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

वर बावन चदन, कदली नदन,
घन आनंदन सहित घसों ।
भवतापनिकंदन, ऐरानंदन,
वंदि अमंदन, चरन वसों ।।श्री० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्ज,
अच्छत जज्जत, भरि थारी ।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत
भवभयभज्जत, अतिभारी ॥श्री० ३॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

मन्दार सरोजं, कदली जोजं,
पुञ्ज भरोजं, मलयभरं ।
भरि कंचनथारी, तुम ढिग धारी,
मदनविदारी, धीर धरं ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

पकवान नवीने पावन कीने,
षटरस भीने, सुखदाई ।
मनमोदन हारे, छुधा विदारे,
आगै धारे गुन गाई ॥श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे,
ज्ञेयविकाशे सुखरासे ।
दीपक उजियारा यातैं धारा,
मोह निवारा, निज भासे ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

चन्दन करपूरं, करि वर चूरं,
पावक भूरं, माहि जुरं ।
तसु धूम उड़ावै, नाचत जावै,
अलि गुंजावै, मधुर सुरं ।।श्री०।।७।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं,
निबुक भूरं लै आयो ।
तासो पद जज्जों शिवफल सज्जों,
निजरसरज्जों, उमगायो ।।श्री०।।८।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिग धारी,
आनन्दकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी,
यातैं थारी, शरनारी ।।श्री० ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छंद सुन्दरी तथा द्रुतविलवित

असित सातय भादव जानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये ।।
सचि किया जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं ।।१।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जन्म जेठ चतुर्दशी श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हो अबै ।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्या जन्ममंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

भव शरीर सुभोग असार है, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चौदस जेठ सुहावनो, धरमहेत जजो गुन पावनी ।।३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्या तपोमंडलमंडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

शुकल पौष दशैं सुखरास है, परम केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्रउधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी ।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमंडलमंडिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

असित चौदसि जेठ हने अरी, गिरिसमेदथकी शिवतिय वरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आइकैं, हम जजैं इत मस्तक नाइकैं ।।५।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द रथोद्धता, चन्द्रवत्स तथा चन्द्रवर्त्म

शान्ति शान्तिगुनमंडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ।
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा, पूजिहों कलुषहंडिते सदा ।।१।।

मोच्छहेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरो, ध्यावतें तुरित मुक्ति-ती वरों ॥२॥

छन्द पद्धड़ी

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज,
भवसागर में अद्भुत जहाज।
तुम तजि सरवारथसिद्ध थान,
सरवारजुत गजपुर महान ॥१॥
तित जन्म लियौ आनंद धार,
हरि ततछिन आयो राजद्वार।
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान,
तुमको कर मे ले हरप मान ॥
हरि गोद देय सो मोदधार,
सिर चमर अमर ढारत अपार।
गिरिराज जाय तित शिला पांडु,
तापै थाप्यो अभिषेक माडु ॥३॥
तित पंचम उदधितनो सुवार,
सुर कर कर करि ल्याये उदार।
तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द,
तुम सिर धारा ढार्यौ सुमन्द ॥४॥
अघघघ घघघघ धुनि होत घोर,
भभभभ भभ धध धध कलश शोर।

दृमदृम दृमदृम बाजत मृदंग,
झन नन नन नन नन नू पुरंग ॥५॥
तन नन नन नन नन तनन तान,
घन नन नन घंटा करत ध्वान ।
ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल,
जुत नाचत नावत तुमहि भाल ॥६॥
चट चट चट अटपट नटत नाट,
झट झट झट हट नट शट विराट ।
इमि नाचत राचत भगत रंग,
सुर लेत जहां आनंद संग ॥७॥
इत्यादि अतुल मगल सुठाट,
तित बन्यो जहां सुरगिरि विराट ।
पुनि करि नियोग पितुसदन आय,
हरि सौप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥८॥
पुनि राजमाहि लहि चक्ररत्न,
भोग्यौ छखंड करि धरम जत्न ।
पुनि तप धरि केवलरिद्धि पाय,
भविजीवनको शिवमग बताय ॥९॥
शिवपुर पहुँचे तुम हे दिनेश,
गुनमण्डित अतुल अनंत भेष ।
मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय,

हमरी भवबाधा हरि जिनाय ॥१०॥
सेवक अपनो निज जान जान,
करुना करि भौभय भान भान ।
यह विघन मूल तरु खण्ड खण्ड,
चितचिन्तित आनन्द मंड मंड ॥११॥

छन्द घत्तानन्द

श्री शान्ति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनन्ता, भगवन्ता ।
भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनन्ता, दातारं तारनवन्ता ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रूपक सवैया

शांतिनाथ जिन के पद पंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय,
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय ।
मनवांछित सुख पावौ सौ नर, बांचै भगतिभाव अतिलाय,
तातैं 'वृन्दावन' नित बंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ॥१॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद: ।

—०—

श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा किरीट

अजअङ्क अजैपद राजै निशंक
हरै भवशंक निशंकित दाता ।
मतमत्त मतङ्गके माथें गंथे,
मतवाले तिन्हैं हनें ज्यों हरिहाता ॥

गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौ,
रविके प्रभुनन्दन श्रीमति माता।
सह कुन्थु सुकुन्थुनिके प्रतिपालक,
थापो तिन्हे जुतभक्ति विख्याता ॥१॥

ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ.। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

चाल लावनी मरहठी की, लाला मनसुखराय जी कृत

कुथु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
भवसिन्धु पर्‌यो हो नाथ, निकारो, बांह् पकर मेरी॥
प्रभू सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
जगजाल पर्‌यो हो बेग निकारो, बांह् पक रमेरी ॥टेक॥
सुरतरनीको उज्जल जल भरि, कनकभृंग भरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरो धार नेरी ॥कुथु० ॥१॥

ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

बावन चंदन कदलीनन्दन, घसिकर गुन टेरी।
तपत मोहनाशनके कारन, धरों चरन नेरी ॥कुथु० ॥२॥

ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम्।

मुक्ताफलसम उज्वल अक्षत, सहित मलय लेरी।
पुज धरों तुम चरनन आगै, अखय सुपद देरी ॥कुंथु०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तय अक्षतम्।

कमल केतकी बेला दौना, सुमन सुमनसेरी ।
समरशूलनिरमूल हेत प्रभु, भेंट करों तेरी ।।कुंथु ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी ।
तासो चरन जजो करुणानिधि, हरो क्षुधा मेरी ।।कुंथु।।५।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।
सौ लै चरन जजों भ्रमतम रवि, निज सुबोध देरी ।।कुंथु।।६।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।
अष्टकरम ततकाल जरे ज्यो धूम धनंजेरी ।।कुंथु०।।७।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

लोग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी ।।कुंथु।।८।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी ।।कुंथु०।९।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ।

पंचकल्याणक

छन्द मोतियादाम

सुसावनकी दशमी कलि जान, तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ।

भयौं गरभागम मंगल सार, जजैं हम श्रीपद अष्टकार ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमगलमडिताय श्री कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

महा बयशाख सु एकम शुद्ध,
भयो तव जन्म तिज्ञानसमुद्ध ।
कियो हरि मंगल मन्दिर शीस,
जजे हम अत्र तुम्हे नुत शीस ॥२॥

ॐ ह्री वैशाखशुक्लप्रतिपदि जन्ममङ्गलमडिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तज्यो खटखंड विभौ जिनचन्द,
विमोहित चित चितारि सुछंद ।
धरे तप एकम शुद्ध विशास,
सुमग्न भये निज आनन्द चाख ॥३॥

ॐ ह्री वैशाखकृष्णप्रतिपदि तपोमगलमडिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त
चहूं अरि छै करि तादिन व्यक्त ।
भई समवस्रत भाखि सुधर्म,
जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म ॥४॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्लतृतीयाया ज्ञानमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथ निजन्द्राय अर्घम् ।

सुदी बयसाख सु एकम नाम,
लियौ तिहिं द्यौस अभै शिवधाम ।
जजे हरि हर्षित मंगल गाय,
समर्चतु हौ सु हिया वच काय ।।५।।

ॐ ह्रीं वैसाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षमङ्गलमंडिताय श्री कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

अडिल्ल छंद

खट खंडन के शत्रु राजपद मे हने,
धरि दीक्षा खटखडन पाप तिन्हें दने ।
त्यागि सुदरशनचक धरमचक्री भये,
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ़ गढ़ लये ।।१।।
ऐसे कुन्थु जिनेश तनें पदपद्मको,
गुन अनंत भंडार महासुखसद्मको ।
पूजों अरघ भडार पूरणानन्द हो,
चिदानन्द अभिनन्द इन्दगन वन्द हो ।।२।।

छन्द पद्धरि

जय जय जय जय श्री कुन्थ देव,
तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिबुकेव ।
जय बुद्धि विदांवर विष्णु ईस,
जय रमाकंत शिवलोक शीस ।।३।।

जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल,
जय जय जगबंधू सुगुणमाल ।
सरवारथसिद्ध विमान छार,
उपजे गजपुर में गुन अपार ॥४॥
सुरराज कियो गिर न्हौन जाय,
आनंद सहत जुत भगत भाय ।
पुनि पिता सौंपि कर मुदित अंग,
हरि तांडव निरत कियो अभंग ॥५॥
पुनि स्वर्ग गयो, तुम इत दयाल,
वय पाय मनोहर प्रजापाल ।
खठखंडविभौ भोग्यौ समस्ते,
फिर त्याग जोग धारयो निरस्त ॥६॥
तब घाति घात केवल उपाय,
उपदेश दियो सब हित जिनाय ।
जाके जानत भ्रम-तम विलाय,
सम्यक् दरशन निरमल लहाय ॥७॥
तुम धन्य देव किरपा-निधान,
अज्ञान-क्षमा-तमहरन भान ।
जय स्वच्छगुनाकर शुक्लशुक्ल,
जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त ॥८॥
जय भौभयभंजन कृत्यकृत्य,

मैं तुमरो हों निज भृत्यभृत्य ।
प्रभु अशरन शरन अधार धार,
मम विघ्न तूलगिरि जार जार ।।९।।
जय कुनय-यामिनी सूर सूर,
जय मनवांछित सुख पूर पूर ।
मम करमबन्ध दिढ़ चूर चूर,
निज सम आनन्द है भूर भूर ।।१०।।
अथवा जबलों शिव लहौं नाहिं,
तबलौं ये तो नित ही लहाहि ।
भव भव श्रावक-कुल जनम सार,
भव भव सतमत सतसग धार ।।११।।
भव भव निज आतम-तत्त्व ज्ञान,
भव भव तप संजम शील दान ।
भव भव अनुभव नित चिदानंद,
भव भव तुम आगम हे जिनंद ।।१२।।
भव भव समाधिजुत मरन सार,
भव भव व्रत चाहों अनागार ।
यह मोको हे करुणानिधान,
सब जोग मिलो आगम प्रमान ।।१३।।
जबलौं शिव सम्पति लहों नाहि,
तबलों मै इनको नित लहांहि ।

यह अरज हिये अवधारि नाथ,
भवसंकट हरि कीजै सनाथ ॥१४॥

छंद घत्तानन्द

जय दीनदयाला वरगुणमाला, विरद विशाला, सुख आला ।
मैं पूजों ध्यावों, शीश नवावो, देहु अचल पद की चाला ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रोडक

कुन्थुजिनेवर पादपदम, जो प्रानी ध्यावै,
अलि समकर अनुराग, सहज सो निजविधि पावैं ।
जो बांचे सरदहै, करै अनुमोदन पूजा ।
वृन्दावन तिह पुरुष सदृश सुखिया नहिं दूजा ॥१६॥

परिपुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः ।

—०—

श्री अरहनाथ जिनपूजा

छन्द छप्पय

तप तुरग असवार धार, तारन विवेक कर ।
ध्यान शुकल असि धार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ॥
भावन सेना धरम, दशों सेनापति थापे ।
रतन तीन धर सकति, मंत्रि अनुभो निरमापे ॥

सत्तातल सोहं सुभट धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि ।
इहविध समाज सज राजकों, अरजिन जीते करम अरि ।।१।।
ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द त्रिभङ्गी

कनमणिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीर भरी ।
मुनिमनसम उज्वल, जनमजरादल, सो लै पदतल धार करी ।।
भु दीनदयालं अरिकुलकालं विरदविशालं सुकुमालम् ।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं वरभालम् ।।१।।
ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

भवताप नशावन, विरद सुपावन,
सुनि मनभावन मोद भयो ।
तातें घसि बावन, चंदन पावन,
तरहि चढावन उमगि अयो ।।प्रभु०।।२।।
ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

तंदुल अनियारे, श्वेत संवारे,
शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता, जगविख्याता,
लखि भवताता, पुज धरे ।।प्रभु०।।३।।
ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित,
सुमन अछोभित, ले आयौ ।
मनमथ के छेदन, आप अबेदन,
लखि निरवेदन गुन गायौ ।।प्रभु०।।४।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक,
पक्षक रक्षक, स्वक्ष धरो ।
तुम करम निकक्षक, भस्म कलक्षक
दक्षक पक्षक रक्षकरी ।।प्रभु० ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तुम भ्रमतमभजन मुनिमनकंजन
रजन गंजन मोहनिशा ।
रवि केवलस्वामी दीप जगामी
तुम ढिग आमी पुन्यदृशा ।।प्रभु० ६।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशधूप सुरंगी गध अभगी, बह्निबरगीमाहि हवै ।
वसुकर्म जरावै धूम उड़ावै तांडव भावै नृत्य पवै ।।प्रभु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रितुफल अतिपावन नयनसुहावन,
रसनाभावन, कर लीनें ।

तुम विघनविदारक शिवफलकारक,

भवदधि-तारक चरचीनें ।।प्रभु०।।८।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

सुचि स्वच्छ पटीरं गधगहीरं, तदुलशोरं पुष्पचरु ।

वर दीपं धूपं आनंदरूपं, लै फल भूपं अर्घकरं ।।प्रभु० ।।६।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छन्द चौपाई

फागुन सुदी तीज सुखदाई, गरभ सुमंगल ता दिन पाई ।
मित्रादेवी उदर सु आये, जजे इन्द्र हम पूजन आये ।।१।।

ॐ ह्री फाल्गुणकृष्णतृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै, गजपुर जनम भयो जग मोहै ।
सुर गुरु जजे मेरु पर जाई, हम इत पूजे मनवचकाई ।।२।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मगसिर सित चौदस दिन राजै, तादिन संजम धरे विराजै ।।
अपराजित घर भोजन पाई, हम पूजैं इत चित हरषाई ।।३।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां तपोमगलमंडिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक सित द्वादसि अरि चूरे, केवलज्ञान भयो गुन पूरे।
समवरसनथित धरम बखाने, जजत चरन हम पातक भाने ॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

चैतकृष्ण अमाशय दिन सब कर्म, नाशि वास किय शिव-थल पर्म।
निहचल गुन अनंत भंडारी, जजो देव सुधि लेहु हमारी ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामाश्या मोक्षमगलमंडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

जयमाला

दोहा छद

बाहर भीतर जिते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अर जिन भये, साहर शिवपुर राय ॥१॥
राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमवरन तन बरप वर, नब्बै सहस सुआय ॥२॥

छंद तोटक

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी,
जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी,
भव भीम भवोदधि तारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥३॥
गरभादिक मंगल सार धरे,
जग जीवनके दुखदंद हरे।

कुरुवंश शिखामनि तारन हैं,
अरनाथ नमो सुखकारन हैं ॥४॥
करि राज अखंड बिभूति मई,
तप धारत केवलबोध ठई ।
गण तीस जहा भ्रमवारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन हैं ॥५॥
भविजीवनको उपदेश दियौ,
शिवहेत सबै जन धारि लियौ ।
जगके सब संकट तारन है,
अरनाथ नमों सुखकारन है ॥६॥
कहि बीस प्ररूपन सार तहां,
निजशर्म सुधारस धार जहां ।
गति चार हृषी पन धारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन हैं ॥७॥
खट काय तिजोग तिवेद मथा,
पनवीस कषा वसु ज्ञान तथा ।
सुर संजम भेद पसारन हैं,
अरनाथ नमों सुखकारन है ॥८॥
रस दर्शन लेश्यय भव्य जुगं,
खट सम्यक सौनिय भेद युगं ।
जुग हार तथा सु अहारन हैं,

अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥९॥
गुन थान चतुर्दश मारगना,
उपयोग दुवादश भेद भना ।
इमि वीस विभेद उचारन है,
अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१०॥
इन आदि समस्त बखान कियौ,
भवि जीवनने उर धार लियौ ।
कितने शिववादिन धारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥११॥
फिर आप अघाति विनाश सबै, शिवधामविषै थित कीन तबै ।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन है, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१२॥
अब दीनदयाल दया धरिये, मम कर्मकलंक सबै हरिये ।
तुमरे गुनको कछु पार न है, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१३॥

छन्द घत्तानन्द

जय श्री अरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं ।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारन, जयजिनवर जगत्रातारं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यम् ।

छन्द आर्या

अरजिनके पदसारं, जो पूजें द्रव्यभावसो प्रानी ।
सो पावै भवपार, अजरामर मोच्छथान सुखखानी ॥

परिपुष्पांञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः ।

श्री मल्लिनाथ जिनपूजा

छन्द रोड़क

अपराजिततैं आय नाथ मिथिलापुर जाये,
कुभराय के नन्द, प्रजापति मात बताये ।
कनक वरन तन तुङ्ग, धनुष पच्चीस विराजै,
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रम भाजें ॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छद जोगीरासा

सुर-सरिता-जल उज्जल लै कर, मनिभृङ्गार भराई,
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहुं चरन जिनराई ।
राग-दोष-मद-मोहहरनको, तुम ही हौ वरवीरा ।
याते शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा ॥१॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

बावनचंदन कदली नन्दन, कुकुमसंग घसायो ।
लेकर पूजौ चरनकमल प्रभु, भवआताप नशायौ ॥रा० २॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

तंदुलशशिसम उज्जुल लोने, दोने पुंज सुहाई ।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई ॥रा०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पारिजातमंदार सुमन, संतानजनित महकाई ।
मार सुभट मदभंजनकारन, जजहुं तुम्हे शिरनाई ।।रा०।।४।।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
फेवी गोझा मोदन मोदक, आदिक सद्य उपाई ।
सो लै क्षुधा निवारन कारन, जजहुँ चरन लवलाई ।।रा०।।५।।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
तिमिरमोह उरमन्दिर मेरे छाय रह्यो दुखदाई ।
तासु नाशकारनको दीपक, अद्‌भुत ज्योति जगाई ।।रा०।।६।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
अगर तगर कृष्णागर चंदन चूरि सुगध बनाई ।
अष्टकर्म जारनको तुमढिग खेवतु हौ जिनराई ।।रा०।।७।।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई ।
मोखमहाफलदाय जानिकै, पूजो मन हरखाई ।।रा०।।८।।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजो भगति बढ़ाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई ।।रा०।।९।।
ॐ ह्वीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द लक्ष्मीधरा

चैत की शुद्ध एकैं भली राजई,
गर्भकल्यान को साजई ।

कुम्भराजा प्रजाप्रति माता तने,
देवदेवो जजे शीस नाये घने ॥१॥

ॐ ह्री चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिने गर्भमगलमंडिताय श्री मल्लि-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई,
जन्मकल्यान को द्यौस सो छाजई ।
इन्द्र नागेन्द्र पूजे गिरेन्द्र जिन्हे,
मै जजौ ध्यायके शीस नावो उन्हें ॥२॥

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां जन्ममगलमंडिताय श्री मल्लि-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसीके दिना,
राज को त्याज दीच्छा धरी है जिना ।
दान गोछीर को नंदसेनें दयौ,
मैं जजों जासुके पंचचर्ज भयौ ॥३॥

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपोमडलमंडिताय श्री मल्लि-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषकी श्यामदूजी हने घातिया,
केवलज्ञानसाम्राज्यलक्ष्मी लिवा ।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करें,
मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री टरें ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाति हते ।
सिद्ध आलै बसे जाय सम्मेदतें ।
इन्द्र नागेन्द्र कीन्ही क्रिया आयके,
मैं जजौ सो मही ध्यायके गायके ।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

तुअ नमित सुरेशा, नरनागेशा, रजत नगेशा भगति भरा ।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जे शिवरमनिबरा ।।१।।

छन्द पद्धरी

जय शुद्ध चिदातम देव एव,
निरदोष सुगुन यह सहज टेव ।
जय भ्रमतम भंजन मारतंड,
भविदधिधातारनों तरंड ।।२।।
जय गरभजनमंडित जिनेश,
जय छायक समकित बुद्ध भेस ।
चौथे किय सातों प्रकृति छीन,
चौ अनंतानु मिथ्यात तीन।।३।।

सातंय किय तीनो आयु नाश,
फिर नवै अंश नवमें विलास ।
तिन माहि प्रकृति छत्तीस चूर,
या भांति कियौ तुम ज्ञान पूर ।।४।।
पहिले महं सोलह कहं प्रजाल,
निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ।
हनि थानगृद्धिकों सकल कुब्ब,
नर तिर्यगति गत्यानुपुब्व ।।५।।
इक वे ते चौ इन्द्रिय जात,
थावर आतप उद्योत घात ।
सूच्छम साधारन एम चूर,
पुनि दुतिय अंश बसु कर्‌यो दूर ।।६।।
चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार,
तीजे सु नपुसकवेद टार ।
चौथे तियवेद विनाश कीन,
पांचे हास्यादिक छहों छीन ।।७।।
नरवेद छठे छय नियत धीर,
सातय संज्वलन क्रोध चीर ।
आठवें संज्वलन मान भान,
नवमे माया संज्वलन हान ।।८।।
इमि घात नवें दशमें पधार,

संज्वलनलोभ तित हु विदार ।
पुनि द्वादशके द्वय अशमाहि,
सोरह चकचूर कियो जिनाहि ॥९॥
निद्रा प्रचला इक भागमाहि,
दुति अश चतुर्दश नाश जाहि ।
ज्ञानावरनी पन दरश चार,
अरि अन्तराय पांचो प्रहार ॥१०॥
इमि छय त्रेशठ केवल उपाय,
धरमोपदेश दीन्हो जिनाय ।
नव केवललब्धि विराजमान,
जय तेरमगुन थिति गुन अमान ॥११॥
गत चौदह मे द्वै भाग तत्र,
छय कीन बहत्तर तेरहत्र ।
वेदनी आसातको विनाश,
औदारि विक्रियाहार नाश ॥१२॥
तैजस्यकार मानों मिलाय,
तन पंचपच बंधन विलाय ।
सघात पंच घाते महंत ।
त्रय अङ्गोपांग सहित भनंत ॥१३॥
संठान संहनन छह छहेव,
रसवरन पंच वसु फरस भेव ।

जुग गंध देवगति सहित पुव्व,
पुनि अगुरुलघु उस्वास दुव्व ॥१४॥
परउपघातक सुविहाय नाम,
जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम ।
अपरज थिर अथिर अशुभ सुमेव,
दुरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव ॥१५॥
अन आदर और अजस्य कित्त,
निरमान नीच गोतौ विवित्त ।
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय,
तब दूजे में तेरह नशाय ॥१६॥
पहले सातावेदनी जाय,
नर आयु मनुषगति को नशाय ।
मानुषगत्यानु सुपूरवीय,
पंचेन्द्रिय जात प्रकृती विधीय ॥१७॥
त्रसवादर परजापति सुभाग,
आदरजुत उत्तम गोतपाग,
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त,
ए तेरह छय करि भये मुक्त ॥१८॥
जय गुन अनंत अविकार धार,
वरनत गनधर नहिं लहत पार ।

ताकों मैं बन्दौं वारबार,
मेरो आपद उद्धार धार ॥१९॥
सम्मेदशैल सुरपति नमंत,
तब मुकतथान अनुपम लसंत।
वृन्दावत वंदत प्रीत लाय,
मम उर मे तिष्ठहु हे जिनाय ॥२०॥

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी,
मल्ल विमलकल्यान करा।
भवदंदविदारन आनन्दकारन,
भविकुमोद निशिईश वरा। २१॥।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छन्द शिखरणी

जजै हैं जो प्रानी दरव अरु भावादि विधिसों।
करें नानाभाँती भगति थुति औ नौति सुधिसों।
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको।
तथा मोक्ष जावै जजत जन जो मल्लिजिनको ।२२॥

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः।

—०—

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तगयन्द

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सु राजगृहीमहं आई,
श्री सुहमित्त पिता जिनके गुनवान महापवमा जसु माई ।
बीस धनू तनु श्याम छबी, कछु अङ्क हरी वर वंश बताई,
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कहं, थापतु हौं इत प्रीति लगाई ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ: ठ. । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छंद गीतिका

अव श्री मुनिसुव्रत मैं पांयनि परों, सुखदाय लखि पायनि परों।।टेक।।
उज्जल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारी मे भरों ।।
जरमरनजामन हरन कारन, धार तुम पदतर करों ।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल है ।
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल हैं ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों ।
गुन गाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबै हरो।। शि० ।।२।।

ॐह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दमम् ।

तंदुल अखंडित दमक शशि सम, गमक जुत थारी भरों ।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानि पद पूजा करों ।।शि० ३।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
वेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरो ।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु तुम निकट ढेरी करों ।।शि०४।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदु गुन विस्तरों ।
सो लेय तुम पदतर धरत ही, छुधा डाइनको हरो ।शि०।।५।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावन घृत भरों ।
सो तिमिर मोह विनाश आतम, भासकारन ज्वै धरों।।शि०६।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
करपूर चन्दन चूर भूर, सुगन्ध पावक मे धरों ।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निजसुखकों भरों ।।शि०७।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल अनार सु आम आदिक, पक्क फल अति विस्तरों ।।
सो मोक्षफलके हेतु लेकर, तुम चरन आगे धरो शि० ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल गध आद मिलाय आठों, दरब, अरघ सजों वरों ।
पूजौं चरनरज भगत जुत, जातें जगत सागर तरों ।।शि० ।।९।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम ।

पंचकल्याणक

छंद तोटक

तिथि दोयज सावन श्याम भयो,
गरभागम मंगल मोद थयो ।
हरिवृन्द सची पितु मातु जजे,
हम पूजत ज्यौं अघ ओघ भजे ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रत-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वयसाख वदी दशमी वरनी,
जनमे तिहिं द्यौस त्रिलोकधनी ।
सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दर ने,
मुनिसुव्रतनाय हमें सरने ।। २ ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्री मुनिसुव्रत-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर ने गहियो,
वयसाख वदी दशमी कहियो ।
निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं,
हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं ।।३।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्या तपोमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वर केवलज्ञान उद्योत किया,
नवमी वयसाख वदी सुखिया ।
घनि मोहनिशाभनि मोखमगा,
हम पूजि चहै भवसिन्धु थगा ।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वदि वारस फागुन मोच्छ गये,
तिहुँ लोक शिरोमनि सिद्ध भये ।
सु अनन्त गुनाकर विघ्न हरी,
हम पूजत हैं मनमोद भरी ।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

मुनिगननायक मुक्तिपति, सूक्त व्रताकरयुक्त ।
भुक्तमुक्त दातार लखि, बन्दों तन मन उक्त ।।१।।

छन्द तोटक

जय केवलभान अमान धरं,
मुनि स्वच्छसरोज विकासकरं ।

भव संकट भंजन लायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥२॥
घनघातव नन्दवदोप्त भनं,
भविबोधत्रपातुरमेघघनं ।
नित मङ्गलवृन्द बधायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥३॥
रभादिक मंगलसार धरे,
जगजीवन के दुखदंद हरे ।
सब तत्त्वप्रकाशन वायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥४॥
शिवमारगमंडन तत्त्व कह्यो,
गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो ।
रुज रागरु दोष मिटायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥५॥
समवस्रतमे सुरनार सही,
गुन गावत नावत भालमही ।
अरु नाचत भक्ति बढायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥६॥
पगनूपुरकी धुनि होत भनं,
झननं झननं झननं झमनं ।
सुरलेत अनेक रमायक हैं,

मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥७॥
घननं घननं घन घंट बजें,
तननं तननं तनतान सजें ।
द्रिमद्री मिरदंग बजायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥८॥
छिन में लघु औ छिन थूल बने,
जुत हावविभाव विलासपने ।
मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥९॥
धृगता धृगता पग पावत हैं,
सननं सननं सुनचावत हैं ।
अति आनन्द को पुनि पायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१०॥
अपने भवको फल लेत सही,
शुभ भावनितें सब पाप दही ।
तित ते सुखको सब पायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥११॥
इन आदि समाज अनेक तहां,
कहि कौन सकै जु विभेद यहा ।
धन श्री जिनचन्द सुधायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१२॥

पुनि देश विहार कियौ जिनने,
वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने ।
हमको तुमरी शरनायक हैं,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१३॥

हमपै करुना करि देव अबैं,
शिवराज समाज सु देहु सबैं ।
जिमि होहुं सुखाश्रमदायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१४॥

भवि वृन्दलनी विनती जु यही,
मुझ देहु अभैपद राज सही ।
हम आनि गही शरनायक हैं
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

जयगुनधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती ।
परमानन्ददायक दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवन्त जती ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घम् ।

दोहा छन्द

श्री मुनिसुव्रत के चरन, जो पूजै अभिनन्द ।
सो सुरनर सुख भोगकें, पावै सहजानन्द ॥१७॥

परिपुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री नमिनाथ जिनपूजा

रोडक

श्री नमिनाथजिनेन्द्र नमों विजयारथनन्दन,
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन ।
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन,
तिन्हे सु थापो यहा त्रिधाकरिके पदवन्दन ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द द्रुतविलवित

सुरनदी जल उज्जल पावनं, कनकभृग भरो मनभावन ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायके ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

हरि मलै मिलि केशरसो घसो, जगतनाथ भवातापको नसों ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायके ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

गुलकके सम सुन्दर तन्दुल, धरत पुञ्ज सुभुञ्जत संकुलं ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥३॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल केतुकि बेलि सुहावनी, समरसूल समस्त नसावनी ।

जजतु हौं नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।४।।
ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

शशि सुधासम मोदक मोदनं, प्रबल दुष्ट छुदामद खोदनं ।
जजतु हौं नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।५।।
ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

शुधि घृताश्रित दीपक जोइया, असममोह महत्तम खोइया ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायके ।।६।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अमर जिह्वविषे दशगंधको, दहत दाहत कर्म कबंधको ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।७।।
ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

फल सुपक्व मनोहर पावने, सकल विघ्नसमूह नशावने ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।८।।
ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफलादि मिलाय मनोहरं अरघ धारत ही भय भौ हरं ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।९।।
ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द पाईता

गरभागम मंगलाचारा, जुग आश्विन श्याम उदारा ।
हरि हर्षि जजे पितुमाता, हम पूजे त्रिभुवन ताता ।।१।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनमोत्सव श्याम असाढ़ा, दशमी दिन आनन्द बाढ़ा ।
हरि मन्दर पूजे जाई, हम पूजें मनवचकाई ॥२॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णदशम्या जन्ममगलमंडिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर धारो, दशमीकलि षाढ़ उदारा ।
निज आतम-रस झर लायौ, हम पूजत आनंद पायौं ॥३॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णदशम्यां तपोमगलमंडिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित मंगसिरग्यारम चूरे, चवघाति भये गुनपूरे ।
समवस्रत केवलधारी, तुमको नित नौति हमारी ॥४॥

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या ज्ञानमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

वयसाख चतुर्दशि श्यामा, हनि शेष वरी शिववामा ।
सम्मेद थकी भगवंता, हम पूजें सुगुन अनंता ॥५॥

ॐ ह्री वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

आयु सहसदश वर्ष की, हेमवरन तन सार ।
धनुष पंचदश तुग तन, महिमा अपरंपार ॥१॥

छन्द चौपाई

जै जै जै नमिनाथ कृपाला,
अरिकुलगहन दहन दवज्वाला।
जै जै धरमपयोधर धीरा,
जय भवभंजन गुनगंभीरा ॥२॥
जै परमानन्द गुन धारी,
विश्वविलोकन जनहितकारी।
अशरन शरन उदार जिनेशा,
जै जै समवशरन आवेशा ॥३॥
जै जै केवलज्ञानप्रकाशी,
जै चतुरानन हनि भव-फांसी।
जै त्रिभुवनहित उद्यमवंता,
जै जै जै जै नमि भगवंता ॥४॥
जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो,
तास सुनत भवि निजरस पायो ॥
एक शुद्ध अनुभव निज भाखे,
दो विधि राग दोष छै आखे ॥५॥
द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्म,
दो प्रमाण आगमगुन शर्म।
तीनलोक त्रयजोग तिकालं,
सल्ल पल्ल त्रय वात बलालं ॥६॥

चार बन्ध संज्ञागति ध्यानं,
आराधन निछेप चउ दानं ।
पंचलब्धि आचार प्रमादं,
बन्धहेतु पैताले सादं ॥७॥
गोलक पंचभाव शिव भौने,
छहो दरब सम्यक अनुकौनें ।
हानि वृद्धि तप समय समेता,
सप्तभंग वानी के नेता ।८॥
संजम समुदघात भय सारा,
आठ करम मद सिध गुनधारा ।
नवो लवधि नव तत्व प्रकाशे,
नोकषाय हरि तूप हुलाशें ॥९॥
दशों बन्धके मूल नशाये,
यो इन आदि सकल दरशाये ।
फेर विहिर जगजन उद्धारे,
जै जै ज्ञान दरश अविकारे ॥१०॥
जै वीरज जै सूच्छमवन्ता,
जै अवगाहन गुन वरनन्ता ।
जै जै अगुरुलघू निरबाधा,
इन गुनजुत तुम शिव सुखसाधा ॥११॥
ताकों कहत थके गन धारी,

तौ को समरथ कहै प्रचारी ।
तातै मै अब शरनै आया,
भवदुख मेटु देहु शिवराया ॥१२॥
बारबार येह अरज हमारी,
हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ।
परपरनति को वेगि मिटावो,
सहजानन्द सरूप मितावो ॥१३॥
वृन्दावन जांचत शिरनाई,
तुम मम उर निवसौ जिनराई ।
जबलो शिव नहि पावों सारा,
तबलो यही मनोरथ म्हारा ॥१४॥

घत्तानन्द

जय जय नमिनाथ, हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं ।
तातै शिरनायो, भगति बढाऔ, चिहन चिह्न शतपत्र पदं ॥१५॥
ॐ ह्रो नमिनाथजिनेन्द्राय महार्घम ।

दोहा

श्री नमिनाथतनं जुगल, चरन जजै जो जीव ।
सो सुरनर सुख भोगवर, हौवै शिवतिय पीव ॥१६॥
परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद. ।

—०—

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी,
धर्म औतार दातार श्यौचैन की।
श्री शिवानन्द भौफन्द निकन्द ध्यावैं,
जिन्हे इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ॥

पर्मकल्याणके देनहारे तुम्ही,
देव हो एव तातें करौ ऐनकी।
थापि हौ वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै,
शुद्धता धार भौ पारकूं लेनकी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

चाल होली, ताल जत्त

दाता मोक्ष के श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥टेक॥
निगमनदी कुश प्राशुक लीनौ, कचनभृग भराय।
मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशात ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन कुंकुमसंग घसाय ।
विघनतापनाशन के कारन, जजौ तिहारे पाय ॥दा०॥२॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
पुण्यराशि तुम जससम उज्ज्वल, तन्दुल शुद्ध मंगाय ।
अखय सौख्य भोगनके कारन, पुज धरों गुन गाय ॥दा०॥३॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
पुण्डरीकतृणद्रुम के आदिक, सुमन सुगंधित लाय ।
दर्प्पकमनमथ भंजनकारन, जजहुं चरन लव लाय ॥दा॥४॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुं चरन उमगाय ॥दा०॥५॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
कनकदीप नवनीत पूरकर उज्ज्वल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमकौ लखि, जजहुँ चरन हुलसाय ॥दा०॥६.
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दशविध गन्ध मगाय मनोहर गुजत अलिगन आय ।
दशोंबन्ध जारनके कारन, खेवो तुम ढिग लाय ॥दा० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
सुरसवरन रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय ।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुम पाय ॥दा०॥८॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।

अष्टमछितिके राजकरनको जजों अंग वसु नाय ॥दा०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द पाइता

सित कातिक छट्ट अमन्दा, गरभागम आनदकन्दा ।
शचि सेय सिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई ॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित सावन छट्ट अमंदा, जनमे त्रिभुवनके चन्दा ।
पितु समुद महासुख पायो, हम पूजत विघन नशायो ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तजि राजमती व्रत लीनौ, सितसावन छट्ट प्रवीनों ।
शिवनारी तबै हरषाई, में पूजें पद शिरनाई ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित आशिन एकम चूरे, चारो घाती अति कूरे ।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्ट प्रकारा ॥४॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदि ज्ञानमंगलमंडिताय श्री नेमि-नाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सितषाढ सप्तमी चूरे, चारों अघातिया कूरे ।
शिव उर्ज्जयततैं पाई, हम पूजें ध्यान लगाई ॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लसप्तयां मोक्षमंगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम ।
शंख चिन्ह पदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥१॥

पद्धरी छन्द

जै जै जै नेमि जिनिंद चंद, पितु समुद देन आनंदकन्द ।
शिवमात कुमुदमनमोददाय, भविवृन्दचकोर सुखी कराय ॥२
जय देव अपूरब मारतंड, तम कोन ब्रह्मसुत सहस खंड ।
शिवतिय मुखजलजविकाशनेश, नहीं रही सृष्टि में तम अशेष ।३
भविभीत कोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्मथोक ।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगम निपुन पुनीत धीर ॥४
तुम केवलजोति विराजमान, जै जै जै जै करुनानिधान ।
तुम समवसरन मे तत्वभेद, दरशायो जातें नशत खेद ॥५
तित तुमकों हरि आनंद धार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय ॥६
जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र, जय मदनध्वातकों रवि जिनेन्द्र॥७
जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय रिद्ध सिद्ध दाता प्रबुद्ध ।
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागरमह सुष्टु यान ॥८
तव भगति करै ते धन्य जीव, ते पावै दिव शिवपद सदीव ।

तुमरो गुन देव विविधप्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार ।।९
वर भगति माहि लवलीन होय, नाचै ताथेइ थेइ बहोय ।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोको वेगि करो निहाल ।।१०
मैं दुख अनन्त वसु करम जोग, भोगे सदीव नहि और रोग ।
तुमको जगमें जान्यौ दयाल, हो वीतराग गुन रतनमाल ।।११
तातैं शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।
यह विघन करम मम खंडखंड, मनवांछितकारज मंडमंड ।।१२
संसार कष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर ।
निज पर प्रकाशबुधि देह देह, तजिके बिलंब सुधि लेह लेह ।।१३
हम जाँचत है यह बार बार, भवसागरतें मो तार तार ।
नहि सह्यो जात यह जगतदुःख, ताते विनवो हे सुगुनमुक्ख ।।१४

छन्द घत्तानन्द

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं सुखकारं ।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

मालिनी

सुख धन जस सिद्धि पुत्र पौत्रादि वृद्धि ।
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि रिद्धि ।।
जजत हरषधारी नेमि को जो अगारी ।
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्षनारी ।।१६।।

परिपुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः ।

—०—

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

छन्द कवित्त

प्रानत देवलोकतै आये, वामादे उर जगदाधार,
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरिततन सुखदातार।
जरत नागजुग बोधि दियो जिहु, भुवनेसुरपद परमउदार,
ऐसे पारसको तजि आरस, थापि सुधारस हेत विचार ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द प्रमिताक्षर

सुर दीरधि कानन कुंभ भरो,
तव पादपद्मतर धार करों ।
सुखदाय पाय यह सेवत हौं ।
प्रभु पार्श्व सार्श्व गुन बेवत हौं ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

हरि गंध कुंकुम कर्पूर घसों ।
हरि चिन्ह हेरि अरचो मुरसौ ।।सु०।।२।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

हिम हीर निरज समान शुच ।
वर पुंज तंदुल तवाग्र मुचं ।।सु० ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमलादि पुष्प धनु पुष्प धरी ।
मदभंजहेत पुज करी ।।सु० ।।४।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
चरु नव्य गव्य रस सार करों ।
धरि पादपद्मतर मोद भरों ।।सु० ।।५।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधा रोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
मनि दीप जोत जगमग्ग मई ।
ढिग धारते स्वपर बोध ठई ।।सु० ।।६।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दश गंध खेय मन माचत है ।
वह धूम धूम मिसि नाचत है ।।सु० ।।७।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
फल पक्व शुद्ध रस जुक्त लिया ।
पद पंज पूजत हौ खोलि हिया ।।सु० ।।८।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल आदि साजि सब द्रव्य लिया ।
कनथार धार नुत नृत्य किया ।।सु० ।।९।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

लक्ष्मीधरा

पक्ष वैसाखकी श्याम दूजी भनो,
गर्भकल्यानको द्यौस सोही गनों ।

देव देवेन्द्र श्री मातु सेवै सदा,
मै जजो नित्य ज्यो विघ्न होवे विदा ॥१॥

ॐ ह्री वैशाखकृष्णद्वितीयाया गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषकी श्याम एकादशीको स्वजी,
जन्म लीनों जगन्नाथ धर्मध्वजी ।
नाक नागेन्द्र नागेन्द्र पै पूजिया,
मै जजो ध्यायके भक्त धारों हिया ॥२॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्या जन्ममङ्गलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कृष्णा एकादशी पोषकी पावनी,
राजकों त्याग बैराग धार्‌यो बनी ।
ध्यान चिद्रूप को ध्याय साता मई,
आपको मै जजों भक्ति भावे लई ॥३॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्यां तपोमगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतकी चौथि श्यामा महाभावनी,
तादिना घातिया घाति शोभा बनी ।
बाह्य आभ्यन्तरं छन्द लक्ष्मीधरा,
जैति सर्वज्ञ मै पादसेवा करा ॥४॥

ॐ ह्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सप्तमी शुद्ध शोभै महासावनी,
तादिना मोक्ष पायो महापावनी ॥
शैलसम्मेदतें सिद्ध राजा भये,
आपकों पूजते सिद्ध काजा ठये ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्या मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द दोहा (जमकालंकार)

पाश पर्म गुनराश है, पाशकर्म हरतार ।
पाश धर्म निजवाम द्यो, पाश धर्म धरनार ॥१॥
नगर बनारसि जन्म लिया, वंश इख्वाक महान ।
आयु वरष शत तुंग तन, हस्त मुनौ परमान ॥२॥

छन्द पद्धडी

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश, तुव गुन गन फणि गावत अशेश ।
जय जय जय आनंद कन्दचंद, जय जय भवि पंकजको दिनन्द ।३
जय जय शिवतिय वल्लभ महेश, जय ब्रह्मा शिवशंकर गनेश ।
जय स्वच्छचिदंग अनंगजीत, तुव ध्यावत मुनिगन सुहृद मीत ।४
जय गरभागममंडित महंत, जग जनमनमोदन परम संत ।
जय जनम महोक्षव मुखद धार, भवि सारंगको जलधर उदार।५
हरिगिरिवरपर अभिषेक कीन, झट तांडव निरत अरंभ दीन ।
बाजन बाजत अनहद अपार, को पार लहत बरनत अपार ॥६॥

दृमदृम दृमदृम दृमदृम मृदंग, घननन नननन घंटा अभंग ।
छमछम छमछम छम छुद्र, घंट, टमटम टमटम टंकोर तंट ॥७॥
झननन झननन नूपुर झंकोर, तननन तननन तन तान शोर ।
सनननननननननगगनमाहिं,फिरिफिरिफिरिफिरफिरिकी ऋहांहि
ताथेइ थेइ थेई थेई धरत पाव, चटपट अटपट झट त्रिदशराव ।
करिकें सहस्र करको पसार, बहुभांति दिखावत भाव प्यार ॥९॥
निज भगति प्रगट जित करतइंद्र, ताको क्या कहि सकि हैं कविद्र
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म, अरु सभाईश तुम देव शर्म ॥१०॥
अरु नाचत मघवा भगति रूप, बाजे किन्नर बज्जत अनूप ।
सो देखत ही छवि बनत वृन्द, मुखसों कैसे वरनै अमंद ॥११॥
धन घड़ी सोय धनदेव आप, धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप ।
हम तुमको देखत नयन द्वार, मनु आज भये भवसिंधुपार ॥१२॥
पुनि पिता सौंपि हरि स्वर्ग जाय, तुम सुखसमाज भोग्यौ जिनाय ।
फिर तपधरि केवलज्ञान पाय, धरमोपदेश दै शिव सिधाय ॥१३॥
हम सरनागत आये अबार, हे कृपासिंधु गुन अमल धार ।
सो मनमे तिष्ठहु सदाकाल, जबलौ न लहों शिवपुर रसाल ।१४।
निरवान थान सम्मेद जाय, 'वृन्दावन' वंदत शीश नाय ।
तुम ही हौ सब दुख दंद हर्न, ताते पकरी यह चर्न शर्न ॥१५॥

घत्तानन्द

जय जय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर पार्श्वपती ।
वृन्दावन ध्यावत, पूज रचावत, शिवथल पावत, शर्म अंती ।१६।

ॐ श्री ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द कवित्त (मात्रा ३१)

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्र समान,
सुखसागरवर्द्धन को शशिसम, दवकषायको मेघ महान ।
तिनकों पूजै जो भवि प्रानी, पाठ पढ़ै अति आनंद आन,
सो पावै मनवांछित सुख सब, ओर लहै अनुक्रम निरवान।।१७।।

परिपुष्पाजंलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री वर्द्धमान जिनपूजा

छन्द मत्तगयद

श्रीमत वीर हरै भव पीर, भरै सुख सीर अनाकुलताई,
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरिपंकति मौलि सुआई ।
मैं तुमको इत थापतु हों प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई,
हे करुणाधनधारक देव, इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहिं आई ।।

ॐ ह्री श्री वर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ. । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द अष्टपदी

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करो ।।

श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥१॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागिर चंदन सार, केसर संग घसा ।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसा ॥श्री० ॥२॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीनो थार भरी ।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावो शिवनरी ॥श्री० ॥३॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ-भंजन हेत, पूजो पद थारे ॥श्री॥४॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

रस रञ्जत सञ्जत सद्य, मञ्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥श्री०॥५॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तम खंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हो ॥श्री ॥६॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगंध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥श्री० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थाल भरा।
शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरा ॥श्री० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
जलफल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥श्री०॥९॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पञ्चकल्याणक

राग टप्पाचाल में

गरभ साढसित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना
सुर सुरपति तित सेवकर्‌यो नित, मैं पूजों भव तरना ॥१॥
मोहि राखो, हो, सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि रखो०
ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम्।
जनम चैतसित तेरस के दिन, कुंडलपुर कन वरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना ॥मो०॥२॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वर्धमान-जिनेन्द्राय अर्घम्।
मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृपकुमारघर पारन कीनो, मैं पूजों तुम चरना ॥मो० ॥३॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम्।
शुकलदशैं वैसाख दिवस अरि, घात चतुक छय करना।

केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना।।मो०।।४

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्धमान-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें परना ।
गनफनिवृन्द जजै तित बहुविधि, मैं पूजों भव हरना ।।मो०।।५

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्या मोक्षमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द हरिगीता (२८ मात्रा)

गनधर असनिधर, चक्रधर हरधर गदाधर वरवदा,
अरु चापधर विद्यासुधर तिरसूलधर सेवहिं सदा ।
दुखहरन आनन्द भरन तारन, तरन चरन रसाल हैं,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल हैं ।।१।।

छन्द घत्तानन्द

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चन्दवरं ।
भवतापनिकदन्न, तनकनमंदन, रहितसपंदन नयन धरं ।।२।।

छन्द तोटक

जय केवलभानुकलासदनं, भविकोकविकाशन कंदवनं ।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगांवर चूर करं ।।१।।
गर्भादिकमंगलमंडित हो, दुख दारिद को नित खंडित हो ।
जगमाहिं तुमी सत्पंडित हो तुम ही भवभाव विहंडित हो ।।२।।

हरिवंश सरोजनको रवि हो, वलवन्त महंत तुमी कवि हो ।
लहि केवल धर्मप्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजतियो ॥३
पुनि आप तने गुन माहि सही, सुर मग्न रहै जितने सब ही ।
तिनकी वनिता गुन गावत है, लय माननिसो मन भावत है ॥४
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषै पग येम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं ॥५
घननं घननं घनघंट बजै दृमदृम दृमदृम मिरदंग सजै ।
गगनांगनभंगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारी भमे ॥७
कइ नारी सुवीन बजावति हैं, तुमरों जस उज्जल गावति है ।
करताल विषै करताल धरें, सुरताल विशाल जु नाद करें ॥८
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभुजी तुमरी।
तुमही जग जीवनि के पितु हो, तुम ही बिन कारनते हितु हो ॥९
तुमही सब विघ्नविनाशन हो. तुम ही निज आनंद भासन हो ।
तुमही चितचिंतितदायक हो, जगमांहि तुमी सब लायक हो॥१०
तुमरे पन मंगल माहि सही, जिय उत्तम पुन्न लियो सब ही ।
हमको तुमरी सरनागत है, तुमरे गुन मे मन पागत है ॥११
प्रभु मो-हिय आप सदा बसिये, जबलौ वसुकर्म नही नसिये ।
तबलो तुम ध्यान हिये वरतो, तबलों श्रुतचिंतन चित्तरतो ॥१२
तबलो व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हो ।

तबलों सद्संगति नित्य रहो, तबलो मम संजम चित्त गहो ।।१३।।
जबलों नहि नाश करों अरिको शिवनारि वरों समता धरिको ।
यह द्यो तबलो हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ।१४।

छन्द घत्तानन्द

वीरजिनेशा नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा ।
वृन्दावन ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द दोहा

श्री सनमति के जुगलपद, जो पूजैं धर प्रीत ।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ।।१६।।

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद. ।

श्री समुच्चय अर्घ

छन्द तोटक

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी, तुममे जितने गुण हैं तितनी ।
कहि कौन सकै मुखसों सबही, तिहि पूजत हौं गहि अर्घ यही ।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विशतिजिनेभ्य पूर्णार्घम् ।

रिखबदव को आदि अत, श्री वरधमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरनकमल को पूजै, जो प्रानी गुणमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जोवन, सुखसमाज गुन मिलै अपार ।
सुरपद भोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रम लहैं मोक्षपद सार ।।

परिपुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद

कवि-नामग्रामादि परिचय

छन्द मनहरन

काशीजी में काशीनाथ नन्हूजी, अनंतराम,
मूलचंद, आढतसुराम आदि जानियौ ।
सज्जन अनेक तहाँ धर्मचंदजी को नंद,
वृन्दावन अग्रवाल गोयल गोती बानियौ ।।
तानें रचे पाठ पाय मन्नालालको सहाय,
बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियो ।
यामे भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो,
मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उर आनियौ ।।१।।

इति याह श्री कविवर वृन्दावनकृत लिखित निजपरोपकारार्थम्
श्रीवर्तमान चतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्त ।
संवत् अट्ठारहसौ पचहत्तर १८७५ कार्तिककृष्ण अमावस्या गुरवार
पाठ पूर्ण भया ।
श्रेयमस्तु । मंगलरतु । शुभम् भूयात् ।

—०—

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा

परम पूज्य चौबीस, जिह जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निसदीस, मनवचतन पूजा करौ ॥१॥

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्रअवतरत भवतरत संवौषट् । ओं ह्री चतुर्विशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ । ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थङ्करनिर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् ।

गीता छन्द

शुचि छीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारी मे भरौं ।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौ ॥
संमेदगढ़ गिरनार चम्पा पावापुर कैलासको ।
पूजो सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमिनिवासकों ॥१॥

ओं ह्री श्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जल नि० स्वाहा

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन सलिल शीतल विस्तरौ ।
भव ताप कौ सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौं ।संमेद०।२।

ओं ह्री श्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चन्दन नि० स्वाहा।

मोतीसमान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं ।
औगुन हरौ गुन करौ हमको जोरकर विनती करौ ।संमेद।३।

ओं ह्री चतुर्विशतिनीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योअक्षतान् । नि० स्वाहा

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं ।
दुखधाम काम विनाश मेरो जोरकर विनती करौं ।संमेद।४।

ओं ह्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं नि० स्वाहा ।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौ ।
यह भूखदूषन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं ।।संमेद।।५।।

ओं ह्रीं श्री चतुर्विशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नेवेद्य नि० स्वाहा

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहि डरौं ।
संशयविमोह विभरम तमहर जोरकर विनती करौं ।।संमेद६।।

ओं ह्रीं श्री चतुर्विशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपम् नि० स्वाहा

शुभधूप परमअनूप पावन, भानपावन आचरौं ।
सब करमपुज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौ ।संमेद०।७

ओं ह्रीं चतुर्विशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूप नि० स्वाहा । ।

[illegible] चढ़ाय उत्तम, चारगतिसो निरवरौ ।
मिहनै मुकति फल देहु मोको जोर कर विनती करौं ।।
सम्मेद० ।।८।।

ओं ह्री चतुर्विशतितीर्थंकरनिर्वाक्षेत्रेभ्यो फलम् नि० स्वाहा ।

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसो जोरकर विनती करौं ।।
सम्मेद० ।।९।।

ओं ह्रीं चतुर्विशतितीर्थंकरनिर्वाक्षेत्रेभ्यो अर्घ्य नि० स्वाहा ।

अथ जयमाला

सोरठा

श्री चौबीस जिनेश: गिरिकैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महा-पुरुष निरवाणतें ॥

चौपाई १६ मात्रा

नमों ऋषभ कैलासपहारं । नेमिनाथ गिरनार निहारं ॥
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं । सनमति पावापुर अभिनंदौं ॥२।
बन्दौ अजित अजितपद दाता । बन्दौं संभव भवदुखघाता ॥
बंदौं अभिनन्दन गुणनायक । बन्दों सुमति सुमति के दायक ॥।
बंदौ पदममुकति पदमाकर । बंदूसुपास आशपासाहर ॥
बंदौ चन्द्रप्रभ प्रभुचंदा । बंदोंसुविधि सुविधिनिधि कंदा ॥४।
बंदौं शीतल अघतपशीतल । बंदू श्रियास श्रियांस महीतल ॥
बदौ विमल विमल उपयोगी । बंदू अनन्त अनन्त सुख भोगी ।५।
बदौ धर्म-धर्म विस्तारा । बंदौ शांति शांति मन धारा ॥
बंदौ कुन्थु कुन्थु रखवालं । बन्दों अर अरिहर गुणमालं ॥६॥
बदौ मल्लि काम मल चूरन । बंदौ मुनिमुव्रत व्रतपूरन ।
बंदौ नमि जिन नमित सुरासुर । बंदौ पास पास भ्रम जगहर।७।
वीसो सिद्धभूमि जा ऊपर । शिखर सम्मेद महागिर भूपर ॥
एकवार बन्दे जो कोई । ताहिनरकपशुगति नहि होई ॥८॥
नरपति नृप सुर शक्र कहावैं । तिहुजग भोग भोगि शिव पावैं ॥
विघनविनाशन मंगलकारी । गुणविलास बन्दो भवतारी ॥९॥

घत्ता--जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करैं।
ताको जस कहिये संपति लहिये गिरिके गुण को बुध उचरै।१०।
ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

— —

श्री सम्मेदाचल पूजा

दोहा--सिद्धक्षेत्र तीरथ परम है उत्कृष्टसुथान ।
शिखरसमेद सदा नमों, होय पाप की हान ।।१।।
अगणित मुनि जहंतैं गये, लोक शिखर के तीर ।
तिनके पदपंकज नमूं, नाशैं भव की पीर ।।२।।
अडिल्ल--है उज्वल वह क्षेत्र सुअति निरमल सही ।
परम पुनीत सुठौर महा गुण की मही ।
सकल सिद्धिदातार महा रमणीक है ।
बंदों निज सुखहेत अचल पद देत है ।।३।।
सोरठा--सिखरसम्मेद महान, जगमें तीर्थप्रधान है।
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किमि कहों ।।
सुन्दरी छन्द--सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है ।
अति सु उज्वल तीर्थ महान है ।।

करहिं भक्ति सु जे गुण गायकें ।
वरहि सुर शिव के सुख जायके ॥६॥
अडिल्ल--सुर हरि नर इन आदि और बंदन करे ।
भवसागरतै तिरै, नहीं भव मे परै ॥
सफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करें ।
जनम जनम के पाप सकल छिनमे टरें ॥६॥
पद्धरी छन्द--श्री तीर्थंकर जिनवर जु बीश ।
अरु मुनि असख्य सब गुणन ईश ॥
पहुंचे जहंतै कैवल्य धाम ।
निनकों अब मेरी है प्रणाम ॥७॥

गीतिका छन्द

सम्मेदगढ है तीर्थ भारी सबहिको उज्वल करै ।
चिरकाल के जे कर्म लागे दर्शतै छिन मे टरैं ॥
है परमपावन पुण्यदायक अतुल महिमा जानिये ।
अरु है अनूप सरूप गिरिवर तास पूजन ठानिये ॥८॥
दोहा--श्रीसम्मेदशिखर सदा, पूजो मन वचकाय ।
हरत चतुर्गतिदु:खको, मनवाछित फलदाय ॥

ओं ह्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्री मम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ ।
ओं ह्री सम्येदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

अडिल्ल–क्षीरोदधिसम नीर सुनिरमल लीजिये ।
कनक कलश में भरकै धारा दीजिये ।।
पूजौं शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ।।
नरकादिक दुख टरैं अचलपद पाय जी ।।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकराद्यसंख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामी० ।

पयसों घसि मलियागिरचंदन लाइये ।
केसरि आदि कपूर सुगंध मिलाइये ।।पूजों ।। चंदनं ।।२।।
तंदुल धवलसुवासित उज्वल धोयकै ।
हेमरतन के थार भरो शुचि होयकै ।।पूजो ।। अक्षतान् ।।३।।
सुरतरु के सम पुष्प अनूपम लीजिये ।
कामदाहदुखहरणचरण प्रभु दीजिये ।।पूजो ।। पुष्पं ।।४।।
कनकथार नैवेद्य सु षटरसतैं भरे ।
देखत क्षुधा पलाय सुजिन आगे धरे ।।पूजो ।। नैवेद्य०।।५।।
लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है ।
पूजत होत सुज्ञान मोहतम नाश है ।।पूजो ।। दीपं० ।।६।।
दशविधधूप अनूप अबनिमैं खेबहूँ ।
अष्टकर्म को नाश होत सुख लेवहूं ।। पूजों।।धूपं ।।७।।
एला लौंग सुपारी श्रीफल ल्याइये ।
फल चढ़ाय सुख वांछ मोक्षफल पाइये ।।पूजौ।। फलं०।।८।।

जल गंधाक्षतपुष्पसुनेवज लीजिये ।
दीप धूप फल लेकर सु दीजिये ।।पूजों ।।अर्घ०।।६।।

पद्धरि छन्द

श्रीविंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र ।
अरु असंख्यात जहँते मुनेन्द्र ।।
तिनकों करजोरि करौं प्रणाम ।
जिनकों पूजों तजि सकल काम ।।महार्घ०।।
अडिल्ल--जे नर परम सुभावनतै पूजा करै ।
हरि हलि चक्री होय राज छह खंड करै ।
फेरि होंय धरणेद्र इन्दपदवी धरै ।
नानाविधि सुख भोगि वहुरि शिवतिय वरै ।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पाजलिक्षिपेत्) छन्द जोगीरासा ।

श्रीसम्मेदशिखरगिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो ।
विंशति तिहिपर कूट मनोहर अद्भुत रचना जानौ ।।
श्रीतीर्थकर बीस तहां तैं, शिवपुर पहुंचे जाई ।
तिनके पदपंकज जुग पूजौ, अर्घ प्रत्येक चढाई ।।

पुष्पाजलि क्षिपेत् ।

श्री अजितनाथ सिद्धवरकूट ।।न० २४।।

प्रथम सिद्धवरकूट सुजानों, आनन्द मंगलदाई ।
अजितनाथ जहँते शिव पहुचे पूजोमनवच काई ।।
कोडि जु अस्सी एक अरब मुनि चौवन लाख जु गाई ।
कर्म काटि निर्वाण पधारे, तिनको अर्घ चढाई ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसिद्धवरकूटतें, अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक अर्घ अस्सी कोटि चौवनलाख सिद्धपद प्राप्तभ्य. सिद्धक्षेत्रभ्यो अर्घ निवपामति स्वाहा।

श्री सभवनाथ धवलकूट ।।न०

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जिय को सुखकारी ।
श्रीसंभवप्रभु मुक्ति पधारे पापतिमिरकों टारी ।।
धवलदत्त दे आदि मुनी, नवकोडा कोडी जानो ।
लाख वहत्तरि सहस वियालिस पंचशतक ऋषि मानो ।।
कर्म नाशकरि शिवपुर पहुचे, बन्दौ शीश नवाई ।
तिनके पदजुग जजहुं भावसो हरषि हरषि चितलाई ।।

श्री ह्री श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षत्रधवलकूटते सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौकोडाकोडी वहत्तरलाखब्यालीसहजार पाँचसौ सिद्धपद-प्राप्तभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री अभिनन्दननाथ आनन्दकूट ।।न० १६।।

चौपाई-आनन्दकूट महासुखदाय ।
अभिनन्दन प्रभु शिवपुर जाय ।।
कोडाकोडि बहत्तरजान ।
सत्तर कोडि लखछत्तिस मान ।
सहस वियालिस शतक जु सात ।
कहे जिनागम मे इह भात ।।
ये ऋषि कर्म काटि शिव गये ।
तिनके पदजुग पूजत भये ।।

ओं ह्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेआनन्दकूटतं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्रादि मुनि वहत्तरकोडाकोडीसत्तरकोडिछत्तीसलाख व्यालीसहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सुमतिनाथ अविचलकूट ।।नं० १६।।

अविचल चौथो कूट महासुख धामजी ।
सुमतिजिनेश गये निर्वाणजी ।।
कोडाकोडीएक मुनीश्वर जानिये ।
कोटि चुरासी लाख बहत्तरि मानिये ।।
सहस इक्यासी और सातसों गाइये ।
कर्म काटि शिवगये तिन्हें शिरनाइये ।।
सो थानक में पूजूं मनवचकायजी ।
पाप दूर हो जांय अचलपदपायजी ।।

ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेअविचलकूटतं सुमतिनाथजिनेंद्रादि मुनि एक कोडाकोडी चौरासीकोडि बहत्तरलाख इक्यासीहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा ।

श्री पद्मप्रभ मोहनकूट ।।नं० ८।।

मोहन कूट महान परम सुन्दर कह्यो ।
पद्मप्रभ जिनराज जहां शिवपुर लह्यो ।।
कोटि निन्यावन लाख सतासी जानिये ।
सहस तियालिस और मुनीश्वर मानिये ।।

सप्त सैकरा सत्तर ऊपर बीस जू ।
मोक्ष गए मुनि तिन्हे नमू नित शीस जू ।
कहै जवाहरलाल दोय कर जोरि कै ।
अनिवाशी पद दे प्रभु कर्मन तोरिकै ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेमोहनकूटतै पद्मप्रभजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोडि सताखीलाख तेतालीसहजार सातसौ नव्वे सिद्धपद प्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यौ अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री सुपार्श्वनाथ प्रभासकूट ।।न० २२ सोरठा।।

कूट प्रभास महान, सुन्दर जनमन-मोहनो ।
श्रीसुपार्श्व भगवान, मुक्ति गये अघ नाशिकं ।।
कोडाकोडि उनचास, कोडि चुरासी जानिये ।
लाख बहत्तर खास, सात सहस है सात सौ ।।
और कहे ब्यालीस, जहंतै मुनि मुक्ती गए ।
तिनहिं नमे नित शीश, दास जवाहर जोरकर ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धप्रभासकूटतै श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोडा कोडि चौरासी कोडि बहत्तरलाख सात हजार सातसौ बियालीस सिद्धपदप्ताप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री चन्द्रप्रभ ललितकूट ।।न० ६।।

दोहा-पावन परम उतङ्ग है, ललितकूट है नास ।
चन्द्रप्रभ शिवको गये, वन्दौ आठो जाम ।।
कोडा कोडी जानिये, चौरासी ऋषिमान ।
कोडि बहत्तर अरु कहे, अस्सीलाख प्रमान ।।

सहस चुरासी पंचशत, पचपन कहे मुनिंद्र ।
वसुकरमनको नाशकर, पायो सुखको कंद ।।
ललितकूटतें शिवगये, बंदौ शीश नवाय ।
जिनपद पूजौं भावसों निजहित अर्घ चढाय ।

ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रे ललितकूटतें चन्द्रप्रभजिनेन्द्रादि मुनि चौरासीकोडाकोडीवहत्तरकोडिअसीलाख चौरासी हजार पांचसौ पचपन सिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति०

पुष्पदंत सुप्रभकूट । नं० ७।।पद्धरी छन्द ।।

श्री सुप्रभकूट सु नाम जान । जहँ पुष्पदंतको मुकति थान ।।
मुनि कोडाकोडी कहे जु भाख । नव ऊपर नवधर कहे लाख ।।
शतचारि कहे अरु सहससात । ऋषिअस्सी ओर कहे विख्यात ।।
मुनि मोक्षगए हनि कर्मजाल । बंदो कर जोरि नमाय भाल ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेसुप्रभकूटतें पुष्पदन्तजिनेन्द्रादि मुनि एककोडाकोडीनिन्यानवेलाख सातहजार चारसौ अस्सी सिद्धपदप्राप्ते-भ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री शीतलनाथ विद्युतकूट ।।नं० १२ ।।सुन्दरी छंद

सुभग विद्युत कूट सुजानिये । परम अद्भुत तापर मानिये ।।
गये शिवपुर शीतलनाथजी ।नमहुं तिन इह करधर माथजी ।।
मुनि जु कोडाकोडि अठारहू । मुनि जु कोडि वियालिस जानहू ।।
कहे और जु लाख बत्तीस जू । सहसब्यालिस कहे यतीस जू ।।

अबर नौसौ पांच जुजानिये । गए मुनि शिवपुर को मानिये ॥
करहिंजे पूजा मन लायकै । धरहिं जन्म न भव में आयकै ॥
ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रविद्युतकूटतें श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि अठारहकोडाकोडी व्यालीसकौडि बत्तीसलाखव्यालीसहजार नौसौ पाँच सिद्ध पदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं० ।

श्री श्रेयामनाथ संकुलकूट । न० ६ जोगीरासा—

कूट जु संकुल परममनोहर, श्री श्रेयान् जिनराई ।
कर्मनाशकर शिवपुर पहुचे, वंदौमनबच काई ॥
छियानव कोडाकोडी जानों, छियानव कोडि प्रमानो ।
लाख छियानवे सहस मुनीश्वर साढे नव अब जानों ॥
ताऊपर व्यालीस कहे है श्रीमुनिके गुण गावै ।
त्रिविधयोग करि जो कोइ पूजै, सहजानंद तहं पावै ॥
सिद्ध नमोमुखदायक जगमैं, आनन्दमँगलदाई ।
जजौ भावसौ चरण जिनेश्वर, हाथ जोड़ शिरनाई ।
परममनोहर थान सु पावन देखत विघन पलाई ।
तीन काल नित नमत जवाहर मेटो भवभटकाई ।
जहंते जे मुनिसिद्ध भये है तिनको शरण गहाई ।
जापदको तुम प्राप्त भए हो सो पददेहु मिलाई ।११।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसकुलकूटतें श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्रादि मुनिछ्यानवेकोडा कोडी छयानवेकोडि छयानवेलाखदोहजरा पांचसौवियालिभ सिद्धपदप्रातेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं० ।

विमलनाथ सुवीरकुलकूट। न० २३ कुसुमलता छन्द।

श्रीसुबीरकुलकूट परम सुन्दर सुखदाई।
विमलनाथ भगवान् जहां पंचमगति पाई॥
कोडिसु सत्तर सातलाख षठसहस जु गाई।
सात सतक मुनि और व्यालिस जानों भाई॥

दोहा-अष्टकर्मको नष्टकर, मुनि अष्टमछित पाय।
तिनप्रति अर्घ चढाबहू, जनम मरण दुख जाय॥
विमलदेव निरमल करण, सब जीवन सुखदाय।
मोतीसुत वंदत चरण, हाथ जोर शिरनाय॥

ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवीरकुलकूटतें श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्रादि मुनि सत्तरकोडि सातलाख छहहजार सातसौब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा।

श्री अनतनाथ स्वयंभूकूट। न० १३ अडिल्ल—

कूट स्वयभू नाम परम सुन्दर कह्यो।
प्रभु अजित जिननाथ जहां शिवपद लह्यो।
मुनि जु कोडाकोडि जानिये।
सत्तार कोडि जु सत्तरलाख प्रमानिये।
सत्तार सहस जु और मुनीश्वर गाइये।
सात सतक ता ऊपर तिनको गाइये॥
कहै जवाहरलाल सुनो मनलायकें।
गिरवरकौं नित पूजो अति सुखपायकै॥

सो०-पूजत विघन पलाय, ऋद्धि सिद्धि आनंद ।
करै सुरशिवको सुखदाय, जो मनवचपूजा करै ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेस्वयंभूकूटतें अनंतनाथजिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोडाकोडी सत्तरकोडि सत्तरहजार सात सौ सिद्धपद प्राप्तेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति० ।

धर्मनाथ सुदत्तकूट । न० १८ चौपाई—

कूट सुदत्त महाशुभजान । श्रीजिनधर्मनाथ को थान ।।
मुनि कोडाकोडी उनईस । और कहे ऋषि कोडि उनीश ।।
लाखजु नव नवसहस सु जान । सात शतक पंचावन मान ।।
मोक्ष गये वे कर्मनचूर । दिवसरु रयन नमो भरपूर ।।
महिमा जाकी अतुल अनूप । ध्यावत बर इन्द्रादिक भूप ।।
शोभत महा अचलपद पाय । पूजौं आनंद मंगल गाय ।।

दोहा-परम पुनीति पवित्र अति, पूजत शत सुरराय ।।
तिह थानकको देख कर मोतीसुत गुण गाय ।
पावन परम सुहावनी, सब जीवन सुखदाय ।
सेवत सुरहरि नर सकल मनवांछित पदपाय ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेसुदत्तकूटतें धर्मनाथजिनेन्द्रादिमुनि उन्नीस कोडाकोडी उन्नीसकोडि नौलाख नौहजारसातसौ पचानवे सिद्धपदप्राप्तेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शांतिनाथ—शांतिप्रभ कूट ।।नं० २६।। सुगीतिका छन्द ।

श्री शान्तिप्रभ है कूट सुन्दर अति पवित्र सुजानिये ।
श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र जहंतें परमधाम प्रमानिये ।
नवजु कोडाकोडि मुनि वर लाख नव अब जानिये ।
नौ सहस नवसै मुनिनिन्यानवः हृदय मे धर मानिये ।।
दोहा-कर्मनाश शिवको गए, तिन प्रति अर्घ चढ़ाय ।
त्रिविधयोग करि पूज हैं मनवाँछित फल पाय ।

ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रशान्तिप्रभकूटतें शान्तिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ कोडाकोडि नौलाख नौ हजार नौसै निन्यानवे सिद्ध पदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामी।तस्वाहा ।

श्री कुन्तुनाथ ज्ञानधरकूट न० २ गीतिका छन्द ।

ज्ञानधर शुभकूट सुन्दर, परम मनमोहन सही ।
जहंतें प्रभु श्रीकुन्थु स्वामी, गये शिवपुर की मही ।।
कोडा सु कोडि छयानवैः मुनिकोडि छयानव जानिये ।
अर लाख बत्तिस सहस छयानव, शतक प्रमानिये ।।
दोहा-ओर कहै ब्यालीस मुनि, सुमिरो हिये मझार ।
तिनपद पूजो भावसौ, करै जु भवदधिपार ।।

ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ज्ञानधरकूटतें श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादिमुनि छयानवे कोडा कोडि छयानवे कोडि बत्तीसलाख छयानवे हजार सातसौ वियालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति ।।स्वाहा।

श्री अरहनाथ नाटककूट ।।नं० ४।। दोहा—

कूट जु नाटक परमशुभ, शोभा अपरंपार ।
जहंतै अरजिनराजजी, पहुंचे मुक्ति-मझार ।।
कोडिनिन्यानव जानि मुनिलाख निन्यानव और ।
कहे सहस निन्यानवे बन्दौ कर जुगजोर ।।
अष्टकर्म को नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
गुरु मो हिरदै बसो, भवदधि पार लगाय ।।

सोरठा-तारणतारण जिहाज, भव समुद्र के बीच में ।
पकरौ मेरी बाह, डूबत से राखो मुझे ।
अष्टकरम दुखदाय, ते तुमने चूरे सबै ।
केवल ज्ञान उपाय, अविनाशी पद पाइयो ।।
मोती सुत गुणगाय, चरणन शीश नवायके ।।
मेटो भव भटकाय, मागत अब वरदान यो ।।

ओं ह्री श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रनाटककूटतें अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवैकोडि निन्यानवेलाख निन्यानवैहजार सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री मल्लिनाथ सम्वलकूट । न० ५ सुन्दरी छन्द ।

कूट सम्बल परमपवित्र जू । गये शिवपुर मल्लिजिनेश जू ।।
मुनि जु छयानवकोड़ि प्रमानिये । पदजजतहिरदय सुख आनि ।।

मोतीदाम छन्द-भजो प्रभुनाम सदा सुखरूप ।
जजों मन मे धर भाव अनूप ।।
टरै अघपातिक जाहिसुदूर ।
सदा जिनको सुख आनन्दपूर ।।

डरै ज्यों नाग गरुड़ को देखि। भजे गजजुत्थ जु सिंहहि पेखि ।।
तुम नाम प्रभु दुखहरण सदा । सुखपू॰ अनूप होय मुदा ।।
तुम देव सदा अशरणशरणं । भट मोहवली प्रभुजी हरणं ।।
तुम शरण गही हम आय अवै । मुझ कर्मवली दिढ़ चूर सबैं ।।
ओं ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र सम्बलकूटतें मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छ्य।नवेकोडि मुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्य· सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ निर्जररकूट । नं० ६ । मदअवलिप्तकपोल छन्द—

मुनिव्रत जिननाथ सदा आनन्द के दाई ।
सुन्दर निर्जरकूट जहांतें शिवपुर जाई ।।
निन्यानव कोडाकोडि कहे मुनिकोडि सत्याना ।।
नवलख जोंड़ि मुनिद कहे नौसौ निन्याना ।।
सोरठा—कर्मनाशि ऋषिराज, पंचमगति के सुखल है ।
तारणतरण जिहाज, मो दुख दूर करो सकल ।

भुजग प्रयात

वली मोह की फौज प्रभुजी भगाई ।
जग्यो ज्ञानपंचम महा सुक्खदाई ।।
समोशरण धरणेद्र ने तब बनायो ।
तबै देव सुरपति शीस नायो ।।
जयो जय जिनेन्द्र सुशब्दं उचारी ।
भए आज दरशन सबै सुखकारी ।।
गए सर्व पातिक प्रभू दूर ही तैं ।
जबै दर्श कीने प्रभू दूर ही तैं ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रनिर्जरकूटतें मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवेकोडाकोडीसत्तानवेकोडिनौलाखनौसोनिन्यावे सिद्ध-पदप्रातेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

श्री नमिनाथ मित्रधरकूट । न० ३ । जोगीरासा ।

कूट मित्रधर परम मनोहर सुन्दर अति छवि दाई ।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर जहंतें अविनाशी पद पाई ।।
नौसौ कोडा कोडी मुनिवर एक अरव ऋषि जानो ।
लाख पैतालिस सात सहस अरुः नौसै व्यालिस मानो ।।
दोहा-वसू करमन को नाश कर, अविनाशी पदपाय ।
पूजों चरण सरोज रज कों, मन वांछित फलदाय ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रमित्रधरकूटतें नमिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ कोडाकोडी एक अरव पैतालीस लाखसातहजार नौसो व्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्य. सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री पार्श्वनाथ स्वर्णभद्रकूट । नं० २६ ।

दोहा-सुवरणभद्र जु कूट पै, श्री प्रभु पारसनाथ ।
जहंतें शिवपुर को गये, नमों जोरि जुग हाथ ।।

त्रिभंगी छन्द

मुनि कोडि वियासी लाख चुरासी, शिवपुर वासी सुखदाई ।
सहसहि पैतालिस सातसौ व्यालिस, तजि के आलस गुण गाई ।।
भव दर्दधि तै तारण पतित उधारण, सब दुखहारण सुख कीजै ।
यह अचरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपद भारी मो दीजै ।।
यह दर्शन कूट अनन्त लह्यो । फल षोडशकोटि उपास कह्यों ।।
जग मे यह तीर्थ कह्यो भारी । दर्शन करि पाप कटैं सारी ।।

मोतीदाम छन्द

टरैं गति वन्दत नर्क तिर्यंच । कबहुं दुख को नहि पावै रंच ।।
यही शिव कों जग में है द्वार । अरे नर बन्दो कहत 'जवार' ।
दोहा-पारश प्रभु के नामतैं; विघन दूरि जाय ।
ऋद्धि सिद्धि निधि तास को, मिलि है निस दिन आय ।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवर्णकूटतैं श्रीपार्श्वनाथदिमुनि बियासी करोड चुरासीलासपैतालिसहजारसातसौ छियालीस सिद्धपदप्रातेभ्य. सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अल्डिल-जे नर परम सुभावतैं पूजा करै ।
हरि हलि चक्री होंय राज्य षटखंड करै ।।
फेरि होय धरणेंद्र इन्द्रपदवी धरै ।
नानाविधि सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरै ।।

अथाशीर्वाद (पुष्पाजलि क्षिपेत्)

—.—

श्री गिरनारक्षेत्र पूजा

वंदो नेमि जिनेश पद, नेमि-धर्म-दातार ।।
नेमि धुरंधर परम गुरु, भविजन सुखकर्तार ।।
जिनवाणी को प्रणमिकर गुरुगणधर उरधार ।
सिद्धक्षेत्र पूजा रचौ सब जीवन हितकार ।।
उर्जयंत गिरनाम तस, कह्यो जगत विख्यात ।
गिरनारी तासों कहत, देखत मन हर्षात ।।

दुतविलंवित तथा सुन्दरी छन्द

गिरिसुउन्नत सुभगाकार है । पंचकूट उतंग सुधार है ॥
वन मनोहर शिला सुहावनी । लखत सुन्दर मन को भावनी ॥
अवर कूट अनेक वने तहां । सिद्ध थान सु अति सुन्दर जहां ॥
देखि भविजन मन हर्षावते । सकल जन वन्दन को आवते ॥

त्रिभंगी छन्द

तहँ नेमकुमारा व्रत धारा, कर्म विदारा शिव पाई ।
मुनि कोडि बहत्तर, सात शतक धर तागिरि ऊपर सुखदाई ॥
ह्वै शिवपुरवासी गुण के राशी विधितिथि नाशी ऋद्धिधरा ॥
तिनके गुण गाऊं पूजा रचाऊं मन हर्षाऊ सिद्धकरा ॥

दोहा-ऐसे क्षेत्र महान तिहि, पूजों मनवचकाय ॥
थापना त्रयवार कर, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥

ओं ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ।
ओं ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक कवित्त

लेकर नीर सुक्षीर समान महासुख दान सुप्रासुक लाई ।
दे त्रय धार जजों चरणा हरना मम जन्म जरा दुखदाई ॥
नेमिपती तज राजमती भये बालयती तहंतै शिवपाई ॥
कोडि बहत्तरि सातसौ सिद्ध मुनीश भये सु जजो हरपाई ॥

ओं ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चंदनगारि मिलाय सुगंध सु, ल्याय कटोरी मे धरना ।
मोहमहातममेटनकाज सु चर्चतु हों तुम्हरे चरना ॥
नेमि०॥ ।चंदनं

अक्षत उज्वल ल्याय धरों, तह पुञ्ज करो मम को हर्षाई ।
देहु अखयपद प्रभु करुणाकर, फेर न या भववासक राई ।।
नेमि०।।अक्षदान्।।

फूल गुलाब चमेली वेल कदंव सु चंपक बीन सु ल्याई ।
प्राशुकपुष्पवंग चढाय सु गाय प्रभू गुण काम नशाई ।।
नेमि०।।पुष्प।।

नेवज नव्य करो भरथाल सुकंचन भा जनमे धर भाई ।।
मिष्ट मनोहर क्षेपत हों यह रोग क्षुधा हरियो जिनराई ।।
।।नेमि०।। नैवेद्यं।।

धूप दशांग सुगंध कर खेवहु अग्निमझार सुहाई ।
शीघ्रहि अर्ज सुनों जिनकी मम कर्म महावन देउ जराई ।।
।।नेमि०।। धूपं।।

ले फल सार सुगंधमई रसनाहृद नेत्रन को सुखदाई ।
क्षेपत हो तुम्हरे चरणा प्रभु देहु हमैं शिव की ठकुराई ।।
।।नेमि०।। फलं०

लेवसु द्रव्यसु अर्घ करों धर थाल सुमध्य महा हरषाई ।
पूजत हों तुमरे चरणा हरिये वसुकर्मबलि दुखदाई ।।
।।नेमि०।।अर्घ।।

दोहा-पूजत हों वसु द्रव्य ले, सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।
निज हित हेतु सुहाबनो, पूरण अर्घ चढ़ाय ।। पूर्णार्घ।।

पंचकल्याणक अर्घ । छन्द पाइता ।

कार्तिक सुदी की छठि जानो । गर्भागम तादिन मानो ॥
उत इंद्र जजैं उस थानी । इत पूजत हम हरषानी ॥१॥
ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लाषटयांगर्भमगलप्राप्ताय नेमिनाथ जिनेन्द्रायअर्घ
श्रावण सुदि छठि सुखकारी । तव जन्म महोत्सव धारी ।
सुरराज सुमेर न्हवाई । हम पूजत इत सुखपाई ॥२॥
ओं ह्री श्रावणशुक्लापटयाजन्ममगलप्राप्ताय नेमिनाथ जिनेन्द्रायअर्घ
सित सावन की छठि प्यारी । तादिन दीक्षा धारी ॥
तपघोर वीर तहँ करना । हम पूजत तिनके चरणा ॥३॥
ओं ह्री श्रावणशुक्लापष्ट्यांतपमंगलमडितायनेमिनाथ जिने०
एकम सुदि आश्विन भाषा । तब केवल ज्ञान प्रकाशा ॥
हरि समवसरण तव कीना । हम पूजत इत सुख लीना ॥४॥
ओ ह्री आश्विन शुक्ल प्रतिपदा केवलज्ञानमगलप्राप्तायनेमिनाथ जिने०
सित अष्टमि मास अषाढ़ा । तब योग प्रभु ने छाडा ॥
जिन लई मोक्ष ठकुराई । इत पूजत चरणा भाई ।५॥
ओं ह्री आश्विन आषाढशुक्लाअष्टमीमोक्षपदप्राप्तायनेमिनाथ जिने०

अडिल्ल-कोडि वहत्तरि सप्त सैंकडा जानिये ।
मुनिवर मुक्ति गये तहँतें सु प्रमाणिये ॥
पूजौं तिनके चरण सु मन बच कायकें ।
वसुविध द्रव्य मिलाय सुगाय बजायकें ॥पूर्णार्घ॥

जयमाला । दोहा ।

सिद्धक्षेत्र गिरनार शुभ, सब जीवन सुखदाय ।
कहों तासु जय मालिका, सुनतहिपाप नशाय ॥

पद्धरी छन्द

जय सिद्धक्षेत्र तीरथ महान । गिरिनार सुगिरि उन्नत बखान ॥
तहं झूनागढ़ है नगर सार । सौराष्ट्र देश के मधिविथार ॥२॥
तिस झूनागढ़ से चले सोइ । समभूमि कोसवर तीन होइ ॥
दरवाजे से चल कोस आध । इक नदी बहत है जल अगाध ।३॥
पर्वत उत्तर दक्षिण सु दोय । मधि बहत नदी उज्वल सु तोय ॥
ता नदी मध्य कइ कुंड जान । दोनों तट मंदिर बने मान ॥४॥
तहं वैरागी वैष्णव रहाय । भिक्षा कारण तीरथ कराय ॥
इक कोस तहां यह मच्यो ख्याल । आगें इक वरनदि बहत नाल
तहं श्रावकजन करते सनान । धो द्रव्य चलत आगें सुजान ॥
फिर मृगीकुड इक नाम जान । तहँ वैरागिनके बने थान ॥६॥
वैष्णव तीरथ जहंर च्यो सोइ । वैष्णव पूजत आनन्द होइ ॥
आगें चल डेंढ़ सु कोस जाव । फिर छोटे पर्बत को ढाव ॥७॥
तहं तीन कुंड सौ हैं महाम । श्रीजिन के युग मंदिर बखान ॥
मंदिर दिगम्बरी दो जान । श्वेताम्बर के बहुते प्रमान ॥८॥
जहँ बनी धर्मशाला सु जोय । जलकुंड तहां निर्मल सु तोय ॥
तहँ श्वेताम्बरगण दिशां जाय । ताकुं डमाहिं नित ही नहाय ।९
फिर आगे पर्वत पर चढ़ाउ । चढ़ि प्रथम कूट को चले जाउ ॥
तहं दर्शन कर आगें सु जाय । तहं दुतिय टोंकके दर्शन पाय ।१०
तहं नेमनाथ के चरण जान । फिर है उतार भारी महान ॥
तहं चढ़कर पंचम टोक जात । अति कठिन चढ़ाव तहां लखाय ॥
श्री नेमिनाथ का मुक्ति थान । देखत नयनों अति हर्षमान ॥

इद विंव चरन युग तहां जान। भवि करत वंदना हर्ष ठान ॥
कौउ करते जय जय भक्ति लाइ। कोउ थुति पढ़ते तहं सुनाय ॥
तुम त्रिभुवनपति त्रैलोक्यपाल। मम दुख दूर कीजै दयाल॥१३
तुम राजऋद्धि भुगती न कोइ। यह अथिर रूप संसार जोइ॥
तज मात पिता घर कुटुम द्वार। तज राजमतीसी सती नार॥१४
द्वादश भावन भाई निदान। पशुमंदि छोड़ दे अभय दान ॥
शोसावन मैं दीक्षा सुद्धार। तप करके कर्म किये सुछार।१५
ताही वन केवल ॠिद्ध पाय। इंद्रादिक पूजे चरण आय।
तहं समवशरण रचियो विशाल। मणि पंच वर्ण कर अति रसाय
तहं वेदी कोट सभा अनूप। दरवाजे भूमि बनी सुरूप ॥
वसुप्रातिहार्य छत्रादि सार। वर द्वादश सभा बनी अपार ॥१७
करके विहार देशों मझार। भवि जीव करे भवसिंधु पार।
पुन टोंक पंचमी को सु जाय। शिव नाथ लह्यो आनंद पाय।१८
सो पूजनीक वह थान जान। वंदत जन तिनको पाप हान ॥
तहंतैं सु बहत्तर कोडि और। मुनि सातशतक सब कहे जोर।१९
उस पर्वतसो सब मोक्ष पाय। सब भूमि सु पूजन योग्य थाय॥
तहं देश देश के भव्य आय। बंदन कर बहु आनंद पाय ॥२०
पूजन कर कीने पाप नाश। बहु पुण्य बंध कीनो प्रकाश ॥
यह ऐसो क्षेत्र महान जान ॥ हम करी वंदना हर्ष ठान ॥२१
उनईस शतक उनतीस जान। संवत अष्टमि सित फाग मान।
सब संग सहित बंदन कराय। पूजा तीनो आनंद पाय ॥२२

अब दुःख दूर कीजै दयाल । कहै 'चंद्र' कृपा कीजे कृपाल ॥
मैं अल्प बुद्धि जयमाल गाय । भवि जीव शुद्ध लीज्यो बनाय॥२

घत्ता-तुम दयाविशाला सब क्षितिपाला,
तुम गुणमाला कंठ धरी ।
ते भव्य विशाला तज जग जाला,
नावत भाला मुक्तिवरी ॥२४॥

ओं ह्री श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्योअर्घम् पूर्ण निर्वपामीति स्वाहा ।समाप्त।

—०—

श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र पूजा

जिहिं पावापुर छित अघति, हत सन्नति जगदीश ।
भयो सिद्ध शुभथान सो, जजोंनाय निज शीश ॥

ओं ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र, अत्र अवतर २ । संवौषट् ॥
ओं ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ ।
ओं ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भय २ वषट् ।

अथ अष्टकगीता छन्द ।

शुचि सलिल शीतौ कलिल रीतौ श्रमन चीतो लैजिसो ।
भर कनक झारी त्रिगद हारी दै त्रिधारी जिततृषो ॥
वरपद्मवन भर पद्म सरवर वहिर पावाग्राम ही ।
शिवधाम सन्मत स्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ॥१॥

ओं ह्री श्रीपावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो वीरनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव भ्रमन भ्रमत अशर्म तपकी, तपन कर तप ताइयो ।
तसु बलयकंदन मलय-चंदन, उदक गंग घिस ल्याइयो ॥
वरपद्म०॥चन्दनं०॥

तंदुल नवीन अखंड लीने, ले महीने ऊजरे।
मणिकुन्द इन्दु तुषार द्युति-जित, कनर काबी में धरे ।।
वरपद्म०।।अक्षतान्०।।

मकरंदलोभन सुमन शोभन चोभन लेय जी ।
मद समर हरवर अमर तरु के, घ्रान-दृग हरखेय जी ।।
वरपद्म०।।पुष्पं०।।

नैवेद्य पावन छुधा मिटावन सेव्य भावन युत किया ।
रस मिष्ट पूरति इष्ट सूरति लेयकर प्रभु हित हिया ।।
वरपद्म।।नैवेद्य०।।

तम अज्ञ नाशक स्वपर भाशक ज्ञेत परकाशक सही ।
हिमपात्र में धर मौल्यविन वर द्योतधर मणि दीप ही ।।
।।वरपद्म०।।दीपं०।।

आमोदकारी वस्तुसारी विध दुचारी जारनी ।
तसु तूप कर कर धूप ले दश दिश-सुरभि-विस्तारनी ।
वरपद्म०।।धूपं।।

कल भक्व पक्व सुचक्य सोहन, सुक्क जनमन मोहनें ।
वर सुरस पूरित त्वरित मधुरत लेयकर अति सोहने ।।
वरपद्म०।।फलं।।

जल गंध आदि मिलाय वसुविध थारस्वर्ण भरायकें ।।
मन प्रमुद भाव उपाय कर ले आय अर्घ बनायकें ।।
।।वरपद्म०।।अर्घं० ।।६।।

अथ जयमाला

दोहा-चरम तीर्थंकरतार श्री वर्द्धमान जगपाल ।
कलमलदलविध विकल है गाऊंतिन जयमाला ।।

जय जय सुबीर जिन मुक्तिथान ।
पावापुरवनसर शोभावान ।।
जे सित अषाढ़ छठ स्वर्गधाम ।
तज पुष्पोत्तर सुविमान ठाम ।।१।।
कुंडलपुर सिद्धारथ नृपेश ।
आये त्रिशला जननी उरेश ।।
सित चैत्र त्रयोदशि युत त्रिज्ञान ।
जनमे तम अज्ञ-निवार भान ।।२।।
पूर्वान्हि धवल चउदिश दिनेश ।
किय नव्हन कनकगिरि शिर सुरेश ।।
वय वर्ष तीस पद पद कुमरकाल ।
सुख दिव्य भोग भुगते विशाल ।।३।।
मारगसिर अलि दशमी पवित्र ।
चढ़ चन्दप्रभा शिविका विचित्र ।।
चलि पुरसों सिद्धन शीशनाथ ।
धार्यो संजम वर शर्मदाय ।।४।।
गतवर्ष दुदशकर तप-विधान ।
दिन सित वैशाख दशै महान ।।
रिजुकूला सरिता तटस्व सोघ ।
उपजायो जिनबर बोध ।
चरम बोध तब ही हरि आज्ञा सिर चढ़ाय ।
रचि समवशरण वर धनदराय ।।
चउसंघ प्रभूति गौतम गनेश ।
युत तीस वरष विहरे जिनेश ।।

भवि जीव देशना विविध देन ।।
आये वर पावानगर खेत ।
कार्तिक अलि अन्तिम दिवसहृश ।
फर गोगनिरोध अघाति पीस ।।७।।
व्है अकल अमल इक समय माहि ।
पंचम गति पाई श्री जिनाह ।।
तब सुरपति जिनरवि अस्त जान ।
आये तुरन्त चढ़ि निज विमान ।।
करवपु अरचा थुति विविधभांत ।
लै विविधद्रव्य परिमल विख्यात ।।
तब ही अगनींद्र नवायशीश ।
संस्कार देह की त्रिजगदीश ।।
कर भस्म वंदना निजमहीय ।
निमसे प्रभुगुन चितदान स्वहीय ।।
धुनि नर मुनि गनपति आय आय ।
बंदौं सो रज शिरनाय नाय ।।
तव ही सो दिन पूज्य मान ।
पूजत जिनग्रह जनहर्ष मान ।।
मैं पुन-पुन तिस भुवि शीशधार ।
बंदौ तिन गुणधर उर मझार ।।
तिनही का अब भी तीर्थ एह ।
बरतत दायक अति शर्म गेह ।।
अरु दुख मकाल अवसान ताहि ।
वर्तेगो भवतिथिहर सदाहि ।।१२।।

कुसुमलता छन्द

श्री सन्मति जिन अंघ्रिपद्म युगजजै भव्य जो मन वचकाय ।
ताके जन्म जन्म संचित अघ जावहिं इक छिन मांहि पलाय ।।

धनधान्यादिक शर्म इंद्रपद लहै सो शर्म अतीन्द्री थाय ।
अजर अमर अविनाशी शिवथल वर्णो दौल रहे शिर नाय ॥
ओं ह्रीं श्रीपावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

—०—

श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र पूजा

उत्सव किय पनवार जहं, सुरगणयुत हरि आय ।
जजों सुथल वसुपूज्यसुत, चम्पापुर हर्षाय ॥१॥
ओं ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अव अवतर २ । संवौषट् ।
ओं ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक । चाल नदीश्वरपूजन की

सम अमिय विगतत्रस गारि, लै हिम कुम्भभरा ।
लख सुखद त्रिगदहरतार; दै त्रय धार धरा ॥
श्रीवासुपूज्य जिनराय, निर्वृतिथान प्रिया ॥१॥
चम्पापुर थल सुखदाय, पूजो हर्ष हिया ॥
ओ ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।
कश्मीरी केशर सार, अति ही पवित्र खरी ।
शीतल चन्दनसंग सार, लै भव तापहरी ॥ श्रीवासु०।चंदनं०।
मणिद्युतिसम खंडविहीन, तदुल लै नीके ।
सौरभयुत नव वर वीन, शालि महानीके ॥
॥श्रीवासुपूज्य०।अक्षतान्॥३॥

अलि लुभन सुभन दृग घ्राण, सुमन जु सुरद्रुम के ।
लैं वाहिम अर्जुनबान, सुमन . दमन झुमके ॥
॥श्रीवासुपूज्य०॥पुष्पं०॥४॥

रस पुरित तुरित पकवान, पक्व यथोक्त घृती ।
क्षुधगदमदप्रदमन जान; लै विध युक्तकृती ॥
॥श्रीवासुपूज्ध०॥नैवेद्य॥५॥

तमअज्ञप्रनाशक सूर, शिवमग परकाशी ।
लैं रत्नदीप द्युतिपूर अनुपम सुखराशी ॥
श्रीवासुपूज्य०॥दीपं॥

वर परिमल द्रव्य अनूप सोध पवित्र करी ।
तस चूरणकर कर धूप लै विधिकुजहरी ॥
॥श्रीवासुपूज्य०॥धूपं॥७॥

फल पक्वमधुरसवान प्रासुक बहुविधके ।
लखि सुखद रसन दृग घ्रान ले प्रद पद सिध के ॥
॥श्री वासुपूज्य॥फलं०॥८॥

जलफलवसु द्रव्य मिलाय लै भर हिमधारी ॥
बसु अंग धरापर ल्याय प्रमुदित चितधारी ॥
॥श्री वासुपूज्य०॥अर्घं॥

अथ जयमाला

दोहा-भये द्वादशम तीर्थपति चम्पापुर निर्वान ।
तिनगुण की जयमाल कछु कहों श्रवण सुखदान ॥

पद्धरी छन्द

जय जय श्रीचम्पापुर सुधाम ।
जहं राजतनृप वसुपूज नाम ॥
जव पौन पल्य से धर्महीन ।
भवभ्रमन दुःखमय लख प्रवीन ॥१॥
उर करुणाधर सो तम विडार ।
उपजे किरण वलिधर अपार ॥
श्रीवासुपूज्य तिनके जुवाल ।
द्वादशतीर्थकर्त्ता विशाल ॥२॥
भवभोग देहतैं विरत होय ।
वय बाल माहिं ही नाथ सोय ॥
सिद्धन नमि महाव्रत भार लीन ।
तप द्वादश विधि उग्रोग्र कीन ॥३॥
तहँ मोक्ष सप्तत्रय आयु येह ॥
दश प्रकृति पूर्व ही क्षय करेह ॥
श्रेणीजु क्षपक आरूढ़ होय ।
गुण नवम भाग नव माहिं सोय ॥४॥
सोलह वसु इक इक षट इकेय ॥
इक इक इक इम इन क्रम सहेय ॥
पुनि दशम थान इक लोभ टार ।
द्वादशमथान सोलह विडार ॥५॥
व्हैं अनन्त चतुष्टय युक्त स्वाम ।
पायो सब सुखद सयोग ठाम ॥

तहं काल त्रिगोचर सर्व ज्ञेय ।
युगपतहि समय इकमहिं लखेय ।।
कुछ काल दुविध वृष अभिय वृष्टि ।
कर पोपे भवि भुवि धान्यसृष्टि ।।
इक मास आयु अवशेष जान ।
जिन योगन की सुप्रवृत्ति हान ।।
ताही थल तृतिशित ध्यान ध्याय ।
चतुदश मथान निवसे जिनाय ।।
तहं दुचरम समयझार ईश ।
प्रकृती जु बहत्तर तिनहि पीस ।।
तेरह नठ चरमसमयमझार ।।
करके श्रीजगतेश्वर प्रहार ।।
अष्टमि अवनी इक समयवद्ध ।
निवसे पाकर निज अचल रिद्ध ।।
युतगुणवसुप्रमुख अमित गुणेश ।
व्है रहे सदा ही इमहि वेश ।।
तब ही तैं सो थानक पवित्र ।
त्रैलोक्यपूज्य गायो विचित्र ।।
मैं तसु रज निज मस्तक लगाय ।
बंदौ पुन पुन भुवि शीश नाय ।।
ताही पद वाछा उरमझार ।
धर अन्य चाहवुद्धी विडार ।।

दोहा-श्री चम्पापुर जो पुरुष, पूजे मन वच काय ।
वर्णि 'दौल' सो पाय ही, सुख सम्पति अधिकाय ।।
इत्याशीर्वादः ।

श्री कैलाशगिरि पूजा

श्री कैलाश पहाड़ जगत परधान कहा है।
आदिनाथ भगवान जहाँ शिववास लहा है।
नाग कुमार महाबल व्याल आदि मुनिराई।
गये तिहि गिरिसों मोक्ष थाप पूजों शिरनाई ॥
श्री कैलाश पहाड़ सों आदिनाथ जिनदेव।
मुनि आदि जे शिव गये, थापि करौं पद सेव।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ स्वामी और नागकुमारादि मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर अवतर संवौषट्। तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नदगङ्ग सु निर्मल नीरलाय, करि प्रासुक मरुकुम्भन भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाशथान, मुन्यादि पाद जजु जोरि पानि॥

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मोक्षफल प्राप्तये जल निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन को घसाय, कुकमयुत मरुकुंभन भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश नाम, मुन्यादि पाद० ॥ चन्दनं
जिनवर कमोद वर शालिलाय, खन्ड हीन धोय थारा भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि। अक्षतं।
सुबेल चमेली जूही लेय, पाटिल बारिज थारी भरेय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि०। पुष्पं
मोदक घेवर खाजे बनाय, गोजा सुहालि भरि थाल लाय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि ॥ नैवेद्यं
घृत कपूर मणि के दीप जोय, जिनसे प्रकाश तम क्षीण होय।

जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि पाद जजुं जोरि पानि ।

ॐ ह्री श्री कैलाश पर्वत से आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मोक्षफलप्राप्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप दशांगी अग्नि धार, जस धूम छटा छाये अपार ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ धूपं०
फल चोच मोच नारियार जेय, दाडिम नारंग भर थाल लेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ फलं
जल आदिक आठो द्रव्य लेय, भरि स्वर्णथार अर्घहि करेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अर्घ्यं

चौपाई

अयोध्यापुरी बहु शोभमान, है आदिनाथ जिन जन्म थान ।
भये भोग भूमि को अन्तजान, प्रभु कर्मभूमि रचना करान ॥
असि मसि कृषि वाणिजयुत जान, पशु पालन बतलायो जनान ।
करि राज जगत् सों ह्वै उदास, दे सुतहि कियो जा वन निवास ।
तप धारत मन पर्यय लहाय, रिपु घाति नाश केवल लहाय ॥
हरि आज्ञा सो धन देव आय, तिन समवसरण रचना कराय ॥
ता मधि गन्ध कुटी बनाय, मणि सिंहासन तापर दिपाय ।
ता ऊपर वारिज हेम मान, अन्तरीक्ष बिराजै देव जान ॥
प्रभु वाणि खिरै वृष वृष्टि होय, सुनि २ समझे सब जीव सोय !
निज वैभवयुत भरतेश आय, है पूजो जिनपद शीश नाय ॥
हरि आन जजत जिन चरण कीन, कर वे विहार हित विनय कीन ।
प्रभु विहरे आरज देश जान, कैलाश शैल दिय ध्यान आन ॥
प्रभु कर्म अघाती घात कीन, पञ्चम गति स्वामी प्राप्त कीन ।

हरि आन चिता रचि दाह कीन, धरि क्षार सीस सुर गमनकान।
ह्यां सों औरहु मुनि सुजान हनि, कर्म लयो है मोक्ष थान।
गिरि को बैढ़े खातिक सुजान, अरु मानसरोवर झोल मान ।।
तासो यात्रा है कठिन जान, नहिं सुलभ किसी दिससो बखान।
हैं आठ सहस्र पेडी प्रमान, तासों अष्टापद नाम जान ।।
सुत कन्हईलाल भगवानदास, कर जोरि नमैं थल शिव निवास।
मांगत जिनवर मुनिवर दयाल, भव भ्रमण काटदो शिव बिठाल।

आदीश्वर ध्यावे भाव लगावे, पूज रचावे चावन सों।
सो होय निरोगी, बहुसुख भोगी, पुण्य उपावे भावन सों ।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मुनि मोक्षपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपा० ।।

जे पूजें कैलाश आदि जिनराय को,
पढ़ै पाठ बहु भाति सुझाव लगायको।
ते धन धान्यहि पुत्र पौत्र सम्पति लहै,
नर सुर सुख को भोगि अन्त शिवपुर लहें।

इत्याशीर्वादः।

श्री तारंगागिरि पूजा

(श्रीयुत पं० दीपचन्दजी कृत)

वरदतादिक हूंठ कोटि मुनि जानिए,
मुक्ति गए तारंगा गिरि से मानिए,

तिन सबको सिर नाय सु पूजा ठानिए,
भवदधि तारन जान सु बिरद बखानिए,

ॐ ह्रीं तारंगागिरि से वरदत्तादि साढ़े तीन कोटि मुनी समूह मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

शीतल प्रासुक जल लाय, भाजन में भरके,
जिन चरनन देत चढाय, रोग त्रिविध हरके,
तारंगागिरि से जान वरदात्तादि मुनी,
सब हूठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्ष धनी ॥टेक

ॐ ह्रीं तारंगागिरि सिद्ध क्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर माँहि घसे।
जिन चरण जजू चितलाय, भव आताप नसे। तारंगा ॥ चन्दन

तन्दुल अखण्ड भर थार, उज्जवल अति लीजे।
अक्षयपद कारणसार, पुन्ज सुढिग कीजे। तारगा ॥अक्षतं

चम्पागुलाब जुहि आदि, फूल बहुत लीजे।
पूजो श्री जिनवर पाद, कामविथा छीजे। तारंगा ॥पुष्पं

नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे।
प्रभु को अरचो चितलाय, रोग क्षुधादि टरे। तारंगा ॥नैवेद्य

दीप कपूर जलाय जगमग जोति जले।
करूं आरति जिन चितलाय,मि थ्यातिमिर नसे। तारंगा ॥ दीपं॥

कृष्णागरु धूप सुवास खेऊं प्रभु आगे।
जलजाय कर्म की राशि, ज्ञानकला जागे। तारंगा ॥धूप

श्रीफल कदली बादाम पूंगीफल लीजै।

पूजों श्रीजिनवर धाम, शिवफल पालोजै। तारंगा ॥फलं
शुचि आठों द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करों।
मन वच तन देहु चढ़ाय, भवतर मोक्ष वरों। तारंगा० ॥अर्घ्यं

जयमाला

सोरठा—बर दत्तादि मुनीद्र, हूठ कोटि मुक्तहि गये।
वदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमन के कारणे ॥१॥

चौपाई—गुजरात देश के मध्य जान, इक सोहे ईडर सस्थान।
ताकी दिशि पच्छिम में बखान, गिरि तारंग सोहे महान।
तहंते मुनि ऊंठ करोड़ सोय, हनि कर्म गए सब मोक्ष सोय।
ता गिरि पर मन्दिर है विशाल, दर्शनते चित्र होवे खुशाल ॥२॥
नायक सुमूल सम्भव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप।
पुनि तीन टोकपर दर्श जान, भविजन बदत उर हर्ष ठान ॥३॥
तहा कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजी तीजो है मोक्ष सिद्धि।
तिन पर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिए सुजान ।४
जो बन्दे भविजन एक बार, मनवांछित फल पावे अपार।
वसुबिधि पूजे जो प्रीत लाय, दारिद तिनको क्षण में पलाय ॥५
सब रोग शाक नाशे तुरन्त, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवत।
अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भव के दुख डारे सुखोय ॥६॥
इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कवि को लहे पार।
अब बहुत कहा कहिए बखान, कहें 'दीप' लहें ते मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्री श्री तारगागिरि से वरदत्त सागरदत्तादि साढ़ तीन कोटि मुनि मोक्षपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि०।

तारगा बन्दों, मन आनन्दों, मन वच शुद्ध करा।
सब कर्म नशाऊं, शिव फल पाऊं, ऊंठ कोटि मुनि राजवर ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागढ़ पूजा

(श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत)

श्री पावागिरि मुक्ति शुभ, पाच कोडि मुनिराय।
लाड नरेन्द्र को आदि दे शिवपुर पहुचे जाय ॥१॥
तिनको आह्वानन करो, मन वच काय लगाय।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्री श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्र से लाड नरेन्द्र आदि पाच को मुनि सिद्धपदप्राप्त अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ-तिष्ट ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधि०।

जल उज्ज्वल लोनी प्रासुककीनो, धारसु दीनी हितकारी।
जिन चरन चढाऊँ कर्मनशाऊँ, शिवसुख पाऊँ बलिहारी ॥
पावागिरि बन्दो मन आनन्दो, भवदुखखदो चितधारी।
मुनिपाँचजुकोड भवदुखछोड, शिवमुखजाड सुखभारी ॥टक

ॐ ह्री श्रो पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विन शनाय जलं निर्वपा०।

चन्दन घसि लाऊँ गन्ध मिलाऊँ, सब सुख पाऊँ दर्ष बडो।
भवबाधा टारो पतन निवारो, शिवसुखवारो मोद बडो ।पा० च०
गजमुक्ता चोखे बहुत अनोखे, लख निरदोखे पुञ्ज करूँ।
अक्षयपद पाऊं और न चाऊ, कर्मनशाऊ चरणपरू ।पा०। अक्षतं
शुभ फूल मंगाऊ गन्ध लखाऊ, बहु उमगाऊ भेंट धरू।
ममकर्म नशावो, दाह मिटाओ, तुमगुणगाऊ ध्यान धरू ।पा०। पुष्पं
नेवज बहुताजे उज्ज्वल साजे, सब रुख काजे चरन धरू।
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धम बढ़ावे चैन करू ।पा०। नैवेद्यं

दीपक की ज्योतं तम छय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं
तुम आरति गाऊं भक्ति बढ़ाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ।पा०। दी०
बहु धूप मंगाऊं गन्ध लगाऊं, बहु महकाऊं दश दिशिको ।
धर अग्नि जलाई कर्मखिपाई, भविजन भाई सब हितको ।पा०।धू०
फल प्रासुक लाई भविजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं ।
शिवपदकी आशा मनहुल्लासा, करजु हुलासा, मोक्ष करूं ।पा०।फ०
वसुद्रव्य मिलाई भविजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं ।
पूजाको गाऊ हर्ष बढ़ाऊ, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ।पा०।अर्घ्यं।।

जयमाला

सोरठा—करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके ।
पूजो श्रीजिनराय. पावागिरि बन्दो सदा ।।

चाल जोगीरासा

श्री पावागिरि तीर्थ बड़ो है, बन्दत शिवसुख होई ।
रामचन्द्र के सुत दोय जनों, लाड नरेन्द्र जु सोई ।।
इनहि आदि दे पांच कोटि मुनि, शिवपुर पहुचे जाई ।
सेवक दुई कर जोर बीनवे, मन, वच कर चितलाई ।।१।।

कर्म काट जे मुक्ति पधारे, सब सिद्धन में जोई ।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई ।।
दर्श अनन्तो ज्ञान अनन्तो, देखे जाने सोई ।
समय एक में सबही झलके, लोकालोक जु दाई ।।२।।
ज्ञान अतेन्द्री पूरन तिनके, सुक्ख अनन्तो होई ।
लोक शिखर पर जाय विराजे, जामन मरन न होई ।
जा पद को तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई ।
भक्ति भावकर निशिदिन बन्दों, निशिदिन शीश नवाई ।।३।।

'धर्मचन्द्र' श्रावक की बिनती, धर्म बड़ो हितदाई।
जो कोई भविजन पूजन गावे, मनमन प्रीति लगाई।
सो तैसो फल जल्दी पावै, पुण्य बढ़े दुःख जाई।
सेवक को सुख जल्दी दीजो, सम्यक् ज्ञान जगाई।४॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढ़ से लाड नरेन्द्र और पांच करोड़ मुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घ्यं नि०।

श्री जिनवरराई कर मन भाई, धर्म सहाई, दुख छीजे।
पूजा नित चाहूं भक्ति बढ़ाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे॥
सुन भविजन आई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई, नृत्य करो।
सबही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो॥५॥

इत्याशीर्वादः।

श्री कुण्डलगिरि क्षेत्र पूजा

(श्री पं० मूलचन्द्र जी वत्सलकृत)

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र, सुभग अति सोहनो।
कुण्डल सम सुख सदन हृदय मन मोहनो।
पावन, पुण्य निदान, मनोहर धाम है।
सुन्दर आनन्दभरन, मनोज्ञ ललाम है॥१॥
धवल शिखर अतिशय उतंग, सुख पुंज है।
ललित सरोवर विमल वारि के कुंज है॥
उज्ज्वल जलमय स्वच्छ बापिका मनहरन।
बन उपवन युत लसत भूमि शोभासदन॥२॥
गिरि ऊपर जिन भवन पुरातन हैं सही।
निरखि मुदित मन भविक लहत आनन्द मही॥

अतिविशाल जिन बिंब ज्ञानकी ज्योती है।
दर्शन से चिर संचित, अघ क्षय होत है ।।३।।

दोहा—भक्ति सहित हर्षितहृदय, करि तिनको आह्वान।
हे जिनवर करुणा सदन, तिष्ठ तिष्ठ इत आन ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिरि वीरनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्नि०।

अथाष्टक (हरिगीतिका)

हेम झारी में मनोहर क्षीर जल भर लीजिए।
त्रय दोष नाशन हेतु श्रीजिन अग्र धारा दीजिए ।।
श्री क्षेत्र कुंडलगिरि मनोहर पुण्य को भंडार है।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुखदातार है ।।

ॐ ह्रीं श्री कुडलगिरि वीरनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं०।

अतिरम्य, शीतल, दाहनाशक मलय चदन गारिए।
संसार ताप विनाश हेतु, जिनेश पद तल धारिए ।।श्री०।। चंदनं

मणिचन्द्रकांति समान श्वेत अखंड अक्षत लाइए।
अक्षय अवाधित, मोक्ष पद को प्राप्ति हेतु चढ़ाइए ।।श्री०।। अक्षतं

शुभ अमल कमल सुचारु चंपा सुमन गधित ले धरो।
खल काम मद भंजन श्रीजिन देव पद अर्पण करो ।। पुष्पं

घृत पक्व सुन्दर सद्य मोदक कनक भाजन में भरो।
सन्मति पदाब्ज चढ़ाय चिर दुखमूल भूख व्यथा हरो ।।श्री०।। नैवेद्यं

जिन चन्द्र त्रिभुवन नाथ सन्मुख रत्न दीप प्रकाशिये ।
अति मोद युत करि आरती, अज्ञान तिमिर विनाशिये ॥
श्री क्षेत्र कुडलगिरि मनोहर पुण्य को भडार है ।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुख दातार है ॥

ॐ ह्री श्री कुंडलगिरि वीरनाथजिनेन्द्राय मोहाधकार विनाशनाय दीप

शुचि मलय अगुरु, सुवास पूरित चूरि अनल प्रजालिए ।
सुख धाम, शिव रमणी वनो, अरि अष्ट कर्म जलाइये ॥श्री०॥धूप

श्रीफल बादाम, मनोज्ञ, दाड़िम, मधुर फल सुख मूल ले ।
प्रभु पद सरोज चढ़ाय अनुपम, मोक्ष फल अनुकूल ले ॥श्री०॥ फल

अत्यन्त निर्मल पूर्व, आठो द्रव्य एकत्रित करो ।
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट सयुक्त शोघ्र मुक्ति रमा वरो ॥श्री॥अर्घ

अडिल्ल—उज्ज्वल नीर सुगध धवल अक्षत लिए ।
पुष्पं सुवासित, चरुयुत दीप प्रजालिए ॥
अगरु धूप, षट् रितु फल सुन्दर लाइये ।
पूर्ण अर्घ कहि जिनवर चरन चढ़ाइये ॥पूर्णार्घ्य ॥

जयमाला

दोहा—श्री कुण्डलगिरि क्षेत्र शुभ, जिनवर भवन विशाल ।
शक्ति हीन प्रभु भक्तिवश गूथत गुण मणिमाल ॥१॥

पद्धरी छन्द

जय कुडलगिरि तीरथ पवित्र, कुण्डल सम मन मोहक विचित्र ।
द्वाविंशति जिनवर भवन सार, पर्वत ऊपर मन हरन हार ॥
छैघरिया जिन मन्दिर प्रसिद्ध, अति तुंग लसत पावन विशुद्ध ।
सोपान बने सुन्दर स्वरूप, शोभा निकेत उन्नत अनप ॥

भवि प्रथम द्वारतैं चढ़त धाय, पुनि द्वितीय द्वार पहुचे सुजाय।
तहाँ बनो सुभग बैठक महान यात्रीगण शुभ विश्राम ठान॥
जिन भवन पुनः कीनो प्रवेश, मन हर्षित ह्वै पूजत जिनेश।
जिनबिंब मनोज्ञ विराजमान, दर्शन से चिर अघ होत हान॥
अवशेष जिनेश भवन सुभव्य, बदन करि भक्ति समेत सर्व।
श्री वीरजिनेश्वर गृह उदार, अवलोकि हर्ष छायो अपार॥
चारो दिशि गुमटी सुभग चार, जिनवर प्रतिमा मन हरन हार।
अति तुग शिखर नभम लसत, शुचि कनक कलश तिनपर धरत॥
फहरात ध्वजा ऊपर मनोग, सक्ेत करत मिस पवन योग।
आवहु पूजो जिनधर विवेक, काटो चिर सचित अघ अनेक॥
जिन चैत्य सुभग तामधि अभग, निरखत ह्वै पुलकित अग अग।
पद्मासन वीर विराजमान तनु तुग हस्त नवके प्रमान।
द्वय और तुङ्ग जिन बिंब दोय, खड्गासन लखि मन मुदित होय।
रमणीक मनोहर छवि अनूप, अवलोक शुद्ध आतम स्वरूप॥
उमडा उर मे आनन्द सिंधु, लखिकर चकोर जिमि शरद इन्दु।
पद कमल बंदि उर हर्ष लाय, स्तुति कीनी बहु विधि बनाय॥
जय जय जय श्री सन्मति जिनेश, तुव चरण कमल पूजत सुरेश।
जय अरिगिरि खंडन वज्रदण्ड, जय अजय अचर सुखमय अखड॥
जय मोह गजेन्द्र मृगेन्द्र वीर, जय काल नाग हित गरुड धीर।
जय करुणा सदन अजय अदोष, अक्षय अनन्तगुण विमल कोष॥
कुण्डलपुर जन्म लिया पवित्र, सुरपति कीनो उत्सव विचित्र।
ऐरावत सजि अति मोदधार, सुर ताडव नृत्य कियो अपार॥
पाडुकशिल पर थाप्यो जिनेश, मघवा कीनो कलशाभिषेक।
गृह लाये उत्सव सहित इन्द्र, माता कर सौपे श्रीजिनेन्द्र॥
बालक वय मे प्रभु धारि मोद, कीनी अनेक क्रीड़ा विनोद।
इक दिवस सखानि समेत वीर, क्रीड़ा करने वन मे सुधीर॥

प्रभु शक्ति परीक्षा हेतु देव, धरि नाग रूप आयो स्वमेव।
बालकगण अजगर लखि विचित्र, भागे भय संयुत्त यत्र तत्र ॥
नहिं भयो वीर चित चलित नेक, तिहिं पकड़ करी क्रीड़ा अनेक।
लखि शक्ति अनन्त सुबल अशेष, महावीर नाम धारो विशेष ॥
जल विलग कमलवत जगत ईश, गृह में निवास कीनों अधीश।
लखि जगत जाल विकरालरूप, चिंत्यो निज प्रभु आतम स्वरूप ॥
यह जगत मोहग्रह ग्रसित होय, निज अनुपम ज्ञान विवेक खोय।
गृह पुत्रादिक में भयो लिप्त, विस्मृति अनत जिन आत्मशक्ति ॥
प्रभु आत्मप्रबोध विज्ञानयुक्त, गृह जगत जाल से भये मुक्त।
लौकांतिक ऋषि कीनो प्रबुद्ध, सबोध्यो प्रभुवर स्वयबुद्ध ॥
गृह त्याग भये शुचि ध्यान लीन, ज्ञानामृत छकि ह्वै निजाधीन।
अध्यात्ममग्न प्रभु भाव भद्र, निश्चल निर्भर अवलोक रुद्र ॥
उपसर्ग किये दुस्सह अनेक, प्रभु अचल चित्त नहिं चल्यो नेक।
अरिघात चतुष्क किये विनाश, पायो अक्षय केवल प्रकाश ॥
तहिं समवसरन महिमा महेश, धर्मामृत बरसायो जिनेश।
भवि जीव श्रवण करि धर्मसार, संसार जलधि से भये पार ॥
अवशेष अघाति चतुष्क नाश, कीनो प्रभु अचल मुक्तिवास।
सुन विरद शरण आयो दयाल, हे दीनबन्धु गुणगण विशाल ॥
चिरदुरित अमित अरि कर विनष्ट, प्रभु मेटो मम ससार कष्ट।
महिमा अद्भुत हे जगत नाथ, भवदधि से तारो पकड़ हाथ ॥
सुरताल साजि अनुपम अभग, कीनी प्रभु विनय हृदय उमंग।
पुनि शेष जिनेश्वर भवन बदि, आये नीचे उर धरि आनन्द ॥
विशति अरु एक जिनेश थान, ह्वै पुलकित वंदे हष ठानि।
इम क्षेत्र बदना करि उदार, लूटो शुभ पुण्य तनो भण्डार ॥

धत्ता—कुडलगिरि वीरं गुणगंभीरं, नाशक पीर अतिवीरं।
केवल पदधारी, सुखभंडारी, आनन्दकारी मतिधीरं ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुडलगिरि वीरनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अघगिरि खण्डन, सम्मति वज्र समान हैं।
वंश इक्ष्वाक सरोज, विकाशन भानु हैं॥
भवभ्रम ताप विनाशन, निर्मल चन्द्र हैं।
आत्मज्ञान लवलीन, अमित गुण वृन्द हैं॥
काट कटक करि विचलित, मद मर्दन किया।
अजयमोह करि विजय, अखय शिवपद लिया॥
नमन करहुं करजोड़, विनय सुन लीजिए।
अष्ट कर्म करि नष्ट अक्षय पद दीजिये॥
इत्याशीर्वादः।

श्री मन्दारगिरिजी पूजन

(मुनीम श्री मुन्नालालजी परवार कृत)

दोहा—अङ्ग देश के मध्य है चम्पापुर सुख खानि।
राय तहाँ वसुपूज्य हैं, विजया देवी रानि॥१॥

अडिल्ल—वासुपूज्य तसु पूज्य तीर्थपद धार जो।
गर्भ जन्म तिन चम्पानगर मँझार जी॥
तप करते यह वन चम्पापुर के सही।
ज्ञान ऊपज्यो ताहि वन के मध्य हो॥२॥
मोक्ष गये मंदार शैल के शिखर ते।
पर्वत चम्पा पास सु दीसन दूर तें॥
सो पच कल्याणक भूमि पूजता चावसों।
वासुपूज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसो॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंचकल्याणक भूमि अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम अग्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पदम द्रहका नीर उज्ज्वल, कनक भाजन में भरों।
मम जन्ममृत्यु जरा निवारन, पूज प्रभु पदकी करों।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रने गर्भ, जन्म लिया चम्पापुरी।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल, मंदारतें शिव तिय वरी।।टेक

ॐ ह्री श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति।

केशर कपूर वो मलय बावन, घिस सुगन्ध बनाइया।
संसार ताप विनाश कारण भर कटोरि चढाइया। श्री०। चदनं
देव जीर सुवास तदुल, अमल भवि मन मोहिये।
सो हेम थारहि धरत पदढिग, अखय शिवपद चाहिये। श्री०। अक्षतं
बेला चमेलो चम्पा जूही, गुलाब कुन्द मगाय के।
चुन चुन धरू अति शुद्ध पहुपहि, काम मूल नशाय के। श्री०। पुष्पं
फैनी सु बावर लाडू घेवर, पूवा शुद्ध बनाइया।
वर हेम भाजन धरत पग ढिग, जजत भूख भगाइया। श्री०। नैवेद्यं
वातो कपूर को धार घृत में, दीप ले आरति करो।
अज्ञान मोहनि अध भाजत, ज्ञान भानु उदय करो। श्री०। दीप
ले गन्ध दशविधि चूर भूर, सु अग्नि मध्य जरावही।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उडावही। श्री०। धूपं
श्रीफल सु आम्र नारग केला, जायफल धो लाइये।
ते धरत प्रभु ढिग चरण भेट सु, मोय शिवफल चाहिये। श्री०। फलं
जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजन में धरों।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज प्रभु पदको करो। श्री०। अर्घं

अथ जयमाला

सत्तर धनु तन तुग है, वर्ण सु छवि है लाल।
दशवे दिव ते चय भये लक्ष बहत्तर साल।।१

जन्मे शतभिषा नक्षत्र में, बाल ब्रह्म व्रत लेय।
महिष चिह्न पद पद लसे, गाऊं गुण सुख देय ॥२
जय वासुपूज्य करुणानिधान, भवदधि से तारन हार जान।
बसुपूज्य नृपति चम्पापुरीश, विजया देवी रानी सुधीश ॥
ताके शुभ गरभ रहो महान, वदि छट अषाढ़ की तिथा जान।
तब छप्पन देवी रहत लार, माता को सेवत अधिक प्यार ॥
सुख में नव मास भये व्यतीत फागुन बदि चौदस दिन सुचीत।
प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तब इन्द्रनि मुकुट नये सुवार ॥
स्वर्गनवासी घर घण्ट नाद, ज्योतिष इन्द्रनि घर सिंहनाद।
पुनि भवनवासी घर बजे शङ्ख, व्यंतर घर पट पट बजे झङ्ख ॥
अनहद सुनि प्रभु का जन्म जान, चल सात पैंड कीनो प्रणाम।
पुनि परिजन युत सजि चले सोय, चतुरनिकायनि हरि हर्ष होय ॥
ऐरावत गज चढ़ि स्वर्गराय, पुरि परदक्षिण दी तीन जाय।
तब शची प्रसूतहि थान जाय, माता को सुख निद्रा कराय ॥
दूजो सुन धरि प्रभु गोद लेय, सौधर्म ईश कर प्रभुहि देय।
हरि नेत्र सहस करि रूप देख, नहिं तृप्त होत फिर-फिर सु देख ॥
ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चवर ढार।
जय जय नभ में करि शब्द जोय, गये पाडुक वन हरि प्रमुद होय ॥
तित शिला पाडुपर प्रभु बिठाय, क्षीरोदधि जल निजकर सु लाय।
सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण सचि पहिराये प्यार ॥
पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन।
बहु उत्सव करत जु नगर आय, पितु गोद धार हरि थान जाय ॥
प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहि राज किया नहिं भोग कीन।
सो कुंवरकाल वैराग्य धार, फागुन बदि चोदस सुक्खकार ॥
भावन भाया बारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिषि चलि हर्ष धार।
तिन आय विराग प्रशस कीन, देवनि हरि युत चलि हर्ष लीन ॥
प्रभु सुख पालहिं चढ गमन कीन, चम्पा वन में कललोच कीन।

तवहीं मनपर्यय ज्ञान धार, तप करत प्रभु बारह प्रकार ।।
बाईस परीषह वह सहंत, पुनि क्षेपकश्रेणि चढ़ि घात हंत ।
सुदि माघ द्वितीय कर्म जार, उपजो पद केवल सुक्खकार ।।
तब इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देवनि जानी मन हर्ष धार ।
समोसृत बहु विधि युत सो बनाय, वेदी सुकोट बारह सभाय ।।
प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, मुनि भविजन मन आनन्द लेय ।
केई मुनिवर केई गृहो व्रत, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्र ।।
सो कर विहार प्रभु देश देश, मेटे भवि जीवनि के कलेश ।
रहि आयु शेष जब मास एक, तब आगे गिरि मन्दार टेक ।।
तहं धार योग अघाति नाश, भये सिद्ध अनन्ते गुणनि-रास ।
भादो सुदि चौदह राह्न काल, मुनि चौरानव युत शिव विशाल ।।
रह गये केश अरु नख जु शेष, उडि गये सर्व पुद्गल प्रदेश ।
तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मन्दार शिखर आये सु जान ।।
चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभु को शरीर रचियो जु सार ।
वसुविधि से तिनकी पूज कीन, पुनि अग्निकुमार पद धोक दीन ।।
तिन मुकुट से अग्नि भई तैयार, ताकर कोना प्रभु सस्कार ।
जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुक्खदाय ।।
ता पर्वत पर मन्दिर वशाल, तामें युग चरण चतुर्थकाल ।
पुनि छोटा मन्दिर एक ओर, त्रय युगल चरण है भक्ति ठौर ।।
प्रभु पचकल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश ।
सो चरण शीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है 'मुन्नालाल' ।।
वंदित मनवांछित फल लहाय, पूजते वसुविधि अरि नशाय ।
हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पडित सुभाय ।।

घत्ता—मन वच तन वदित कर्म, निकन्दित जन्म २ दुख जाय पलाय ।
श्री गिरिमदारा, दुख हरतारा, सुख दातारा मोक्ष दिलाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिन पचकल्याणक भूमिभ्यो महार्घं नि० ।

सोरठा—वासुपूज्य जिनराज, तुम पद युग पर शीश धरू।
सरें हमारे काज, याते शिवपद सुख लहूं ।।
इत्याशीर्वादः ।

श्री नयनागिरि पूजा

दोहा—पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप।
जजहुं मोद उर धार अति, कर त्रिकरण शुचिरूप ।।

ॐ ह्रीं श्री नयनागिरी सिद्ध क्षेत्र से वरदत्तादि पञ्च ऋषिराज सिद्ध पदप्राप्त अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अति निर्मल क्षीरधि वारी, भर हाटक झारी।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग छारी।।
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र शिवथल सुखदाई।
पूजो श्री गिरिरेशिन्द प्रमुदित चित थाई।।

ॐ ह्रीं गिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल।

मलयागिर चन्दन सार, केशर संग घसी।
शीतल वासित सुखकार, जन्माताप कसी। पन वर०।। चदन

शुचि विमल नवल अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी।
सोले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त अनी। पन वर०।। अक्षतं

शुभ सुमन त्रिदश-तरुकेय, स्वच्छ करण्ड भरी।
मदब्रह्म तनुज हरनेय, भेट जिनाग्र धरी। पन वर०।। पुष्पं

क्षुध फणहि विहंगमनाथ, नेवज सद्यानी।
कर विविध मधुर रस साथ, विधयुत अमलानी। पन वर०।।नैवेद्यं

मिथ्यातम भावन भानु, स्वपर उजास कृति ।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धृती ।
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई ।
पूजो श्रीगिरिरेशिन्द, प्रमुदित चित थाई ।

ॐ ह्रीं गिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय दीपं ।

कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही ।
वर दश विधि धूपहि साज, खेय इच्छाह गही । पन वर० ॥ धूप
दृग घ्रान रसन मन प्रीय, प्रासुक रस भीने ।
लखदायक मोक्ष प्रदीप, लै फल अमलीने । पन वर० ॥ फल
शुचि अमृत आदि, समग्र, मजि वसु द्रव्य प्रिया ।
धारों त्रिजगपति अग्र, धर वर भक्त हिया । पन वर० ॥ अर्घं

जयमाला

दोहा—जग बाधक विधि बाधकर, है अबाध्र शिव धाम ।
निवमे तिन गुण धर सुहृद, गाऊं वर जयदाम ॥ १

जय जय जिन पार्श्व जगत्रि-स्वाम, भवदधि तारण तारी ललाम ।
हृति घाति चतुक है युक्त सन्त, दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त ॥
सा समवसरण कमला ममेत, विहरत विहरत पुर ग्राम खेत ।
सुर नर मुनिगण सेवत कृपाल, आये भवहितु तिहि अचल भाल ॥
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पंच, चतुविधि हनि केवल ज्ञान संच ।
लख सर्व चराचर त्रिजग केय, त्रैकालिक युगपत पद अमेय ॥
निज आनन द्वैविध वृषस्वरूप, उपदेश भरण भवि मर्म कूप ।
दृगज्ञान चरण सम्यक प्रकार शिवपथ साधक कह त्रिजग तार ॥
अरु सप्त तत्त्व षट् द्रव्य केव, पंचास्तिकाय नव पदन भेव ।
. भरण सो दरसाये ईश, तिहि भूधर शिर पुनि अघति पीश ॥
पचमगति निवसे तव सुरेश, आके ले सुरगण संग अशेष ।
रेशिन्दि शिखर रज शीश ल्याय, किये पंचम कल्यान कर उछाय ॥

मैं तिन पद पावन चाहु ठान, बन्दों पुनि पुनि सो सुखद थान।
मन वच तन तिन गुण स्व उच्चार, 'वर्णी दौलत' अनचाहु हार ॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—आनन्द कन्द मुनीन्द्र गुण, उर धर कोष मंझार।
पूजे ध्यावे सो सुधा, है लघु महि भव पार ॥८

इत्याशीर्वादः।

श्री गजपंथ पूजा

(श्रीयुत जी किशोरीलालकृत)

श्री गजपंथ त्रि जग मे सुखदाय जो,
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी।
और गये बलभद्र सात शिवधाम जी,
आह्वानन विधि करू त्रिविध धर ध्यानजो।

ॐ ह्रीं श्री गजपंथाचल से सात बलभद्र आदि आठ कोडि मुनि सिद्धपद प्राप्त अत्रावतार अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कञ्चन मणिमय झारो लेके, गङ्गाजल भरि ल्याई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई ।।
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहां पर करम खपाई।
केवल लहिं शिवधाम पधारे, जजू तिन्हें शिर नाई ॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०

मलयागिरि चन्दन घसि केसर सङ्ग, सुवरण भृङ्ग भराई।
भव आतापनिवारन कारन, श्री जिनचरण चढ़ाई। बल०। चंदनं

अक्षत उज्ज्वल चन्द्रकिरण सम, कनक थाल भर लाई।
अक्षय सुख भोगन के कारन, पूजूं देह हुलसाई।
बलभद्र सात बसु कोडि मुनीश्वर, यहाँ पर करम खपाई।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूं तिन्हें शिर नाई।
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय अक्षतं
पुष्प मनोहर रंग सुरगी, आवे बहु महकाई।
कामवाण के नाशन कारन, पूजू आवे हुलसाई। बल०। पुष्प
घेवर, बावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई।
क्षुधावेदनी रोग हरन को, पूजों श्री जिनराई। बल०। नैवेद्य
बाति कपूर दीप कञ्चनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाई।
मोहतिमिर के दूर करन को, करो आरती भाई। बल०। दीप
अगर तगर कृष्णागरु लेके, दश गन्ध धूप बनाई।
खेय अगनि मे श्री जिन आगे, करम जरे दुखदाई। बल०। धूपं
फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्री फल आदि सुहाई।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, भेट धरो गुणगाई। बल०। फलं
जलफल आदि दरव वसु उत्तम, मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके, श्रीजिन चरण चढ़ाई। बल०। अर्घं

जयमाला (गीता छन्द)

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे।
नर नारि जे तिन करत वदन, तिन सुजस जग विस्तरे।
इस थानतें मुनि आठ कोड़ी, परमपदकूँ पायके।
तिनकी अबै जयमाल गाऊँ, सुनो हित हुलसाय के॥१

(पद्धरि छन्द)

जय गजपथ गिरिशिखर सार, अति उन्नत है शोभा अपार।
ताकी दक्षिण दिश नगर जान, मसरूल नाम ताको प्रधान॥२
तहाँ बनी धर्मशाला महान, ता मध्य लसे जिनवर सुथान।
तहां बने शिखर शोभित उतङ्ग, यह चित्र विचित्र नाना सुरंग॥३

चारों दिशि गुमंठी लसत चार, विश्राम रचित नाना प्रकार ।
तिनके ऊपर जे ध्वज फहरात, मानुषही बुलावत करत हाथ ॥४
तह गुम्मज में श्रीपार्श्वनाथ, राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात ।
तिन दर्शन वंदन करत जात, पूजत हैं नितप्रति भव्य भ्रात ॥५
जिन मन्दिर में रचना विशेष, आराम रचित अद्भुत अनेक ।
वेदी उज्ज्वल राजत रंगीन, अति ऊँचे सोहे शिखर तीन ॥६
तिनके ऊपर कलशा लसत, चन्द्रोपम ध्वज दर्शन दिपत ।
त्रय कटनां खंभा चारमाय, इन्द्रन को छवि वरनी न जाय ॥७
ऊपरली कटनी मध्य जान, अन्तिम तीर्थेश विराजमान ।
भामंडल चवर सु छत्र तीन, पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल, तिष्ठत ता आगे रक्षपाल ।
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव, जहां पूजा करते भव्य जीव ॥९
आगे मंडल रचना विशाल, तहा सभा भरे है सदा काल ।
जहा बाचत पण्डित शास्त्र आय, कोई जिनवर गुण मधुरगाय ॥१०
कोई जाप जपे चरचा करत, कोई नृत्य करत बाजा बजंत ।
नौबत झालर घण्टा सु झाझ, पुनि होत आरती नित्य साझ ॥११
मन्दिर आगे सुन्दर अरण्य, तरु फल फूलत दीसे रमण्य ।
अति सघन वृक्ष शोतल सु छांय, जहा पथिक लेत विश्राम आय ॥१२
इस उपवन में बहुविधि रसाल, चाखत यात्री होवे खुशाल ।
नीबू नारगी अनार जाम, सीताफल श्रीफल केला आम ॥१३
अमली जामन ककडी अरड, कैथोडी ऊंचे लगे झुण्ड ।
शहतूत लेमवो अरु खजूर, खारक अजीर अरोठ पूर ॥१४
फफनेश बोर बड नाम जान, पुनि पुष्पवाटिका शोभमान ।
चपा जु चमेली गुलाब कुञ्ज, जाई जु मोगरो भ्रमर गुञ्ज ॥१५
गुलमेहदी और अनेक बेल, तिन ऊपर पक्षी करत केल ।
या बाग माहि गभीर कप, शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥१६

ता पीवत ही गद सकल नाश, वह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश ।
बंगला विशाल रमणीक जान, भट्टारक तिष्ठनको सुथान ।।१७
परकोट बनो चड तरफ सार, मध दरवाजो अति शोभकार ।
ताके ऊपर नोबत बजंत, सुनके यात्री आनन्द लहन्त ।।१८
यहा दण्डकवनकी भूमि मत, तसु निकट शहर नासिक बसंत ।
तहा गंगा नाम नदी पुनीत, वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ।।१९
पुनि त्र्यम्बक सीता गुफा कीन, बजपथ धाम सबमें प्राचीन ।
भट्टारकजी हिमकीर्ति आय, बन्दे गजपथा शिखर जाय ।।२०
मन्दिर की नीव दई लगाय, पुनि पैडी ऊपर को चढ़ाय ।
दा शतक पिचात्तर हैं सिवान, तस आमे मोटी भीत जान ।।२१
इक होद भरयो निर्मल सु नीर, शीतल सुमिष्ट राजत गंहीर ।
भवि प्रक्षालित वसु दरब आन, कोई तीर्थ जान करहैं सनान ।।२२
त्रय गुफामध्य दरशन करन्त, बलभद्र सात तिष्ठत महन्त ।
इक बिम्ब लसत उन्नत बिशाल, श्री पार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ।।२३
द्वय मनभद्र इन चरण पाद, मुनि आठ कोटि थल हैं अनाद ।
बंदन पूजन कर धरत ध्यान, जिन जन्म सुफल मानत सुजान ।।२४
यहा से उतरत गिरि तट सुथान, इक कुण्ड नीर निर्मल बखान ।
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीत, भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ।।२५
तिनके सुचरण पादुका रचाय, अवलोकनकर निजथल सुआय ।
कोई फेरी पर्वत की करन्त, इमि बन्दन कर अति सुख लहत ।।२६
श्रीमुनिकीर्ति महाराज आय, श्रावकजनको उपदेश थाय ।
पुनि नानचन्द अरु फतहचन्द, शोलापुरवासी धरमकन्द ।।२७
हूमड जैनी उपदेश धार, करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार ।
सबत उगणीसा अरु तियाल, सु तेरस माघतनी विशाल ।।२८
कल्यान पाच कीनो उछाव, करवाये अति उत्तम सुनाव ।
श्री महावीर अन्तिम तिर्थेश, पधराये वेदी मे जिनेश ।।२९

भट्टारकजी दियो सूरमन्त्र, कीने पुनि जन्त्र अनेक तन्त्र।
मानस सु थम्भ रचिये उतंग, कञ्चन कलशा शोभे उतङ्ग ॥३०
बहु संग जुरे तिनकूं बलाय, भक्ती कीनी उर हरष लाय।
बहुविधि पकवान बनाय सार, जौनार दई आनन्द धार ॥३१
सुदी पूनम माघतनी सुजान, पूरण हुयो उत्सव महान।
याहि तिथि कूं उत्तम सजोय, यात्रा उत्सव हर साल होय ॥३२
पुनि सदावरत नितप्रति बटंत, कोई विमुख जाय नहीं साधुसंत।
यहां देश देश के सब आय, उत्सव करते पूजन कराय ॥३३
दे दरब करत भंडार सोय, कोई करत रसोई मुदित होय।
बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ, आवे यात्री मुख करत पाठ ॥३४
संवत उणच्चास उपचास, बदि अष्टम रवि दिन पौष मास।
ये पूजन विधि कीना बनाय, सज्जन प्रति विनती यही भाय ॥३५
जो भूल चूक तुम भंग होय, तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय।
गजपथ शिखरमुनि आठ कोड, बलभद्र सात नमि हाथ जोड़ ॥३६

यह गजपथा शिखर की, पूज रची सुखदाय।
'लालकिशोरी' तुच्छबुध, हाथ जोड़ शिरनाय ॥३७

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र से सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय भगवंता श्री गजपंथा, बंदत सता भाव धर।
सुर नर खग ध्यावे भक्त बढ़ावै, पूज रचावे प्रीति कर॥
फल सुरपद पावे अमर कहावै, नरपद पावे शिव पावे।
यह जान सभाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावें ॥३८

इत्याशीर्वादः।

श्री मुक्तागिरि पूजा

स्व० कवि जवाहरलाल जी कृत)

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार।
तातें पावन होत निज, नमों शीश कर धार ॥१

ये ही जम्बूद्वीप मांहि, भरत क्षेत्र सो जानिए।
आरज सो खंड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये।
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहां।
कोडि साढ तोन मुनिवर, शिवपुरी पहुंचे जहां ॥२
पारस प्रभु को आदि दे, चौबीसो जिनराग।
पूजों पद जुग पद्म सम. सुर शिवपद सुखराय ।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र से साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिए।
हेम झारी माहि भरके धार सुन्दर दीजिए ॥
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन सुभ कहो।
कोडि साढ़े तीन मुनिवर, जहाँ ते शिवपुर लहो ॥

ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सु पावन दुख मिटावन अति सुगन्ध मिलाइये।
डार कर कर्पूर केसर, नोर सो घिस लाइये। तीर्थ०। चदनं
विमल तन्दुल ले अखण्डित, ज्योति निशपति सम धरे।
कनक थारी माहि करके, पूज कर पावन करे। तीर्थ०। अक्षतं

सुरवृक्ष के सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर करे।
मदनकामबाण विनाशवेको, प्रभु चरण पूजा करे। तीर्थं०। पुष्पं०
छहों रसकर युक्त नेवज, कनक थारी में भरो।
भाव से प्रभु चरण पूजों, क्षुधादिक मन की हरो। तीर्थं०। नैवेद्यं
रतनदीप कपूर बाती, ज्योति जगमग होत है।
मोहतिमिर विनाशबेको, भानु सम उद्योत हैं। तीर्थं०। दीपं
कूट मलयगिरि सो चन्दन, अगर आदि मिलाइये।
ले दशांगी धूप सुन्दर, अगन माहि जराइये। तीर्थं०। धूपं
ल्याय एला लोंग दाडिम, और फल बहुते घने।
नेत्र रसना लगे सुन्दर, फल अनूप चढ़ाइये। तीर्थं०। फलं
जल गन्ध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ करले आपने।
लाय चरन चढ़ाय भविजन, मोक्षफल को पावने। तीर्थं०। अर्घ

जयमाला

दोहा—मुक्तागिरि के शीश पर, बहुत जिनालय जान।
तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान ॥१
श्री मुक्तागिरि तीरथ विशाल, महिमा जाकी अद्‌भुत रसाल।
अग पर्वत बीच परे दो कोन, मुक्तागिरि जहाँ सुखको सु भौन ॥२
चढ़ि सिवान जह ऊपर सो भान, दहलाने पर सो सार जान।
यात्री जहा डेरा करे आय, अति मुदित ह्वै चित उमगाय ॥३
ऊपर शुचि जल सों भरे कुण्ड, जहँ सगरे यात्रिन के सु झुण्ड।
बहुविधि की द्रव्यधरी सो धोय, पूजन को भविजन चले सोय ॥४
जहाँ मन्दिर बीच बने रसाल, पारश प्रभु की मूरत विशाल।
पूजत जह भविजन हरष धार, भव भव को पुण्य भरे भंडार ॥५
बावन जगह दर्शन दिनेश, पूजत जिनवर को सुर महेश।
इक मन्दिर में भयो जु सोय, प्रतिमा श्री शांतिजिनेश होय ॥६

दर्शन कर नरभव सुफल सोय, जहा जन्म जन्म के पाप खोय।
मेढागिरि का है गुफा भाय, मन्दिर सुन्दर इक सामकाय ॥७
प्रतिमा श्री जिनवर देवराज, दर्शन कर पूरन होय काज।
मेढागिरि के ऊपर सुजान, द्वय टाक बनी अति सौम्यवान ॥८
इक पाडे बालक सुनि कपाय, इक भागबली की जान रमाय।
जहा श्री जिनवर के चरण सार, बदत मनबांछित सुखदातार ॥९
बावन मन्दिर जह शोभकार, महिमा तिनकी अद्भुत अपार।
जहँ सुर नाचत नाना प्रकार, जे जै जै जै धुनि उचार ॥१०
थै थै थै अब नाचत सुचाल, अति हर्ष सहित नित नमत भाल।
मुहचय छपय सु तूर सजे, मुरली स्वर बीन प्रवीन बजे ॥११
दृम दृम दृम दृम बाजत मृदग, झननननननन नूपुर सुरंग।
ननननननन परे तसु तान, घननननन घण्टा करत ध्वान ॥१२
इहिविधि वादित्र बाजे अपार, सुर गावत अब नाना प्रकार।
अतिशय बाके हैं अति विशाल, जहां केशर अब बरसे त्रिकाल ॥१३
अनहद नित बाजे बजे अपार, सुर गावत अब नाना प्रकार।
तहां मरुत मन्द सुगन्ध सोय, जिय जात जहाँ न विरोध होय ॥१४
अतिशय है बह नाना प्रकार, भविजन हिय में अति हरष धार।
जहा कोउ जु साढ़े तीन मान, मुनि मोक्ष गये सुनिए सुजान ॥१५
वन्दत जवाहर अब बार बार, भवसागर से प्रभु तार तार।
प्रभु अशरन शरन अधार धार, अब विघ्न तूल गिरि जार जार ॥१६
तू धन्य देव कृपा निधान, अज्ञान मिथ्यातम हरन भान।
प्रभु दयासिंधु जै जै महेश, भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥१७
मै बहुत भ्रम्यो चिरकाल काल, अब हो दयाल मुझ पाल पाल।
ताते मैं तुमरे शरण आय, यह अरज करूं हम शीश नाय ॥१८

मम कर्म देउ तुम चूर चूर, आनन्द अनूपम पूर पूर।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र से तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि होय हैं भवपुरी।
अतिकर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवी को सुखकारी।
अठरा सो इक्यानवे, बैसाख मास तम लीन।
तिथि दशमी शनिवार को, पूजा पूरण कीन ॥२०॥

इत्याशीर्वादः।

श्री तुँगीगिरि पूजन

(श्रीयुत स्व० पं० सवाई सिंघई गोपालसाहजी कृत)

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुङ्गीगिरि शुभ थान।
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन॥

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से राम, हनु, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गङ्गाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारो।
परिग्रह तिसना लगी आदीकी, ताको ह्वै निरवारो॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुङ्गीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजो मन वच काई॥

ॐ ह्री श्री तुङ्गीगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चन्दन केसर गार भली विधि, धार देत पग आगे।
भव भरमन आताप जासतें, पूजत तुरतहि भागे।
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुङ्गीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजों मन वच काई।
ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरि सिद्धिक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय चदन नि०
मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों।
अक्षयपदकी प्रापति कारन, या सम और न दूजो। राम०। अक्षतं
कमल केतकी बेल चमेली, तापर अलि गुञ्जावे।
पुष्पनसों अरचों तुम चरनन, कामविथा मिट जाव। राम०। पुष्प
गूंजा खाजे व्यञ्जन ताजे, तुरतहि घृत उपराज।
दृग सुखकारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे। राम०। नैवेद्य
दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खामे।
नाशे मिथ्यातम अनादिका, ज्ञान भानु परकाशे। राम०। दीप
अगर तगर कृष्णागरु चन्दन, जे सुवास मन भावे।
खेवत धूप धूमके मिसकर, दुष्ट करम उड जावें। राम०। धूप
श्रीफल पुङ्गी शुची नारङ्गी, केला आम्र सुवासी।
पूजत अष्ट करम दल धूजत, पाऊ पद अविनाशी। राम०। फलं
जल फलादि वसु दरब साजके, हेमपात्र भर लाऊ।
मनवचकाय नमू तुव चरना, बार बार शिरनाऊ। राम०। अर्घ

जयमाला–दोहा

राम हनू सुग्रोव आदि जे, तुङ्गीगिर थ-थाय।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजो मनवचकाय।।
तुम पद प्रापत कारने, सुमरो तुम गुणमाल।
मति माफक वरनन करो, सार सुभग जयमाल।। १
धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी।

दो पर्वत हैं अति तुङ्ग चूलिका भारी।
मानो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ।।२
पहलो है मांगी नाम तुङ्गी है दूजो।
जहाँ चढ़त जीव थक जात करम चिर चूरो।
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ।।३
जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी।
अरु गव गवाक्ष महानील नील अघहारी।
इन आदि निन्यानवे कोडि मुनि तप कीना।
लयो पञ्चमगति को बास बहुरि गति रहो ना।
मैं पूजो त्रिकरन शुद्ध नसे अघ भारी।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ।।४
तुम विरत अहिंसा लिया दया के कारन।
ता पोखन को बच झूठ किया निरवारन।
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरब के त्यागी।
नव बाढ़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी।
चउबीस परिग्रह त्याग भये अनुरागी।
भव भव मे सेवा चरन मिले मोहि थारी ।।५
षट्काय दया के हेतु निरख भू चाले।
वच शास्त्र उकत अनुसार असत को टाले।
भोजन के षट् चालिस दोष निरवारे।
लख जन्तु वस्तु को लेय देख भू धारे।
पन करन विषै चकचूर भये अविकारी।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ।।६
षट् आवश्यक नित करें नेन निरवाहे।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात ना चाहे।

निज करसों लुंचे केश राग तन भागी।
बालकवत निर्भय रहे वस्त्र के त्य.गो।
कभो दन्तधवन नही करे दया व्रतधारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥७

बिन जांचे भोजन लेय उदण्ड अहारी।
लघु भुक्ति करे इक बार तपी अधिकारी।
जामे आलस नहि बढ रोग ह्वै हीना।
निशि दिन रस आतम चखे करे विधि छीना।
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥८

दे भव्यन को उपदेश अघाती जारे।
भये मुकति रमा के कत अष्ट गुण धारे।
तिन सिद्धनि को मैं नमो सिद्ध के काजा।
सिधथल मे दे मुह वास त्रिजग के राज।
नावत नित साथ 'गुपाल' तुम्हें बहु भारा।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥९

ॐ ह्री श्री मागीतुङ्गी सिद्ध क्षेत्र से राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानोल और निन्यानवे करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घ नि०।

तुम गुनमाला परम विशाला, जो पहरे नित भव्य गले।
नाशें अघजाला ह्वै सुखहाला, नितप्रति मङ्गल होत भले।

इत्याशीर्वादः।

श्री शत्रुञ्जय पूजा

(श्रीयुत भगोतीलालजी कृत)

श्री शत्रुञ्जय शिखर अनूप, पांडव तीन बड़े शुभ भूप।
आठकोडि मुनि मुक्ति प्रधान, तिनके चरण नमूं धर ध्यान।
तहां जिनेश्वर बहुत सरूप, शान्ति शुभ मूल अनूप।
तिनके चरण नमू त्रिकाल, तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ।।२

ॐ ह्री श्रीशत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्त अत्र अववतर २ ंवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षोरोदधि नीरं उज्ज्वल सीरं, गन्ध गहीर ले आया।
मै सन्मुख आया धार दिवाया, शीश नवाया खोल हिया ।।
पाडव शुभ तीन सिद्ध लहीन, आठकोडि मुनि सिद्ध गये।
श्रीशत्रुञ्जय पूजा सन्मुख हूओ, शातिनाथ शुभ मूलनये ।।

ॐ ह्री श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।।१

मलयगिरि लाऊ गध मिलाऊ, केशरडारी रंगभरी।
जिनचरन चढ़ाऊ समुख जाऊ व्याधि नसाऊं तपत हरि। पांड०।चदनं
तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे, लखि निर्दोखे पुञ्ज धरू।
अक्षयपद दीजो सब सुख कोजो, निजरस पीजो चरण परू।पांड०।अक्षतं
शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकाशो, आनन्दरासी ले आयो।
मोकाम नसाया शोल बढ़ायो, अमृत छायो सुखपाया। पांडव०। पुष्पं
नेवज शुभ लाया थार भराया, मगल गाया भक्तिकरी।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया, ताल बजाया सेव करी। पाड०। नैवेद्यं

दीपक ले आया जोति जगाया, तुम गण गाया चरण परू।
मैं शरणे आया शीश नवाया, तिमिर नशाया नृत्य करू।
पांडव शुभतीनं सिद्ध लहीनं, आठकोडि मुनि मुक्ति गये।
श्री शत्रुञ्जय पूजों सन्मुख हूजो, शांतिनाथ शुभ मूलनये।
ॐ ह्रो श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय दीपं निर्व०
दशगन्ध कुटाई धूप बनाई, अग्नि डार जिन अग्र धरों।
तुम कर्म जराई शिव पहुंचाई, होय सहाई कष्ट हरो। पांडव०। धूपं
फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे, लख निर्दोखे भेट धरू।
सेवक की अरजी चितमें धरजी, कर अब मरजी मोक्ष वरूं। पांड०।फलं
वसु द्रव्य मिलाई थार भराई, सन्मुख आई नजर करी।
तुम शिव सुखदाई धर्म बढ़ाई, हर दुखदाई अर्घ करो। पांडव । अर्घं०

दोहा—पूरण अर्घ बनाय कर, चरणन में चित लाय।
भक्तिभाव जिनराज की, शिव रमणी दरशाय। पूर्णार्घं०

जयमाला

जय नमन करू शिर नाय, मोकू वर दीजे है जिनाय।
तुम भक्ति हिये में रही छाय, सो उमग उमग अरु प्रीत लाय ॥१
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पडित जन लहे पार।
जय तुच्छबुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हिये मे रही आन ।।२
जय श्री शत्रुञ्जय शिखर जोय, निर्वाण भूमि जानो जो सोय।
जहा पाडव तीन जू मुक्ति होय जय राय युधिष्ठिर भीम जोय ॥३
जय अरजुन जानो धनुष धोर, तासम नहि जाने कोई वीर।
जय आठकोडि मुनि और सोय, तिन वगी नारि रम्भा जु लाय ।।४
जय सही परीषह बीस-दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय।
जय कायर कपे सुनो जोय, वे ध्यानारूढ़ भये जु सोय ।।५
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय।
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय ।।६

जय सेवक जन की करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चरित्र होय।
जय रुलों नहीं ससार मांय, अरु थोड़े दिन में मुक्ति पाय ॥७
जब धर्मचन्द' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसो मेल होय।
वे धर्मीजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय ॥८
तुम शत्रुञ्जय पूजा बनाय, तो बांचे भविजन प्रीति लाय।
जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रचो पाठ पूजन जु सोय ॥९
जय घाट बाढ़ कछु अर्थ होय, शोधो संभार जैसे जु सोय।
जय भूल चूक जामें जु होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय ॥१०
जय सम्बतशत गुन ईश जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय।
जय पौष सुदी द्वादस जु होय, अरु बार शुक्र जानो जु सोय ॥११
जय सेवक बिनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ।
जय चाह रही नही और काय, भवसिंधु उतारो पार मोय ॥१२
सोरठा भक्ति भाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको।
मंगल आरती गाय, चरणन शीश नवाय के ॥

ॐ ह्रीं शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से तीन पांडव और आठ कोड़ि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं नि०।

गीता—हरषाय भाय जिनन्द्र पूजू, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्राप्ति अर्थ तिनकी, करी बहु विधि थापना ॥१३
जिनराज धर्म समान जग मे, और नाही हित घना।
तातें सुजानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ॥१४
इत्याशीर्वाद

श्री कुंथलगिरि पूजा

(श्री कन्हैयालालजी कृत)

तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान।
जहं ते मुनि शिवथल गये, पूजो थिर मन आन ॥

ॐ ह्रीं श्री कुथलगिरि सिद्धक्षेत्र से कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सब छानके।
कनक पात्र में धार देत त्रय आनके॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषाय के।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके॥

ॐ ह्रीं श्री कुथलगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

चंदन दाह निकंदन केशर गारके।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें। पूजों०। चन्दनं
ताम्बूल सोम समान अखण्डित आनके।
हाटक थार भराय जजों शिर नायकें। पूजो०। अक्षतं
सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगन्धित लायके।
दहन काम पन बाण धरी सुख पायकं। पूजों०। पुष्पं
व्यञ्जन विविध प्रकार पगे घृत खांडके।
अरपत श्री जिनराज छुधा ढिग छाडके। पूजों०। नैवेद्यं
कनक थार में धार कपूर जलाय के।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके। पूजों०। दीपं।
अगर आदि दश वस्तु गन्ध जुत मेलके।
करम दहन के काज दहौं ढिग शैलके। पूजों०। धूपं
फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके।
शिवफल प्रापति काज जजो उमगायके। पूजों०। फल
जल फलादि वसु दरब लेय युत ठानके।
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके। पूजों०। अर्घं

जयमाला

तुम गुन अगम अपार गुरु, मैं बुधि कर हों बाल।
पै सहाय तब भक्तिवश, वरनत तुव गुणमाल ॥१

कुल ऊंच रायसुत अति गम्भीर, कुलभूषण दिशभूषण है वीर।
लख राज-ऋद्धिको अति असार, वय बाल माहि तप कठिन धार ॥२
द्वादश विधि व्रतको सहत पीर, तेरह विधि चारित धरत वीर।
गुन मूल बीस अरु आठ धार, सहे परिसह दश अरु आठ चार ॥३
भू निरखि जंतु तित कर बिहार, धर्मोपदेश देते विचार।
मुनि भरमत पहुंचे कुंथ शैल, पाहन तरु कटक कठिन गैल ॥४
निर्जन वन लख भये ध्यान लीन, सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन।
बहु सिंह सरप अरु दैत्य आय, गरजत फुकारत मुख चलाय ॥५
तहां राम लखन सीता समेत, ता दिन थिति कीनी थी अचेत।
मुनिपर वेदन यह लखत घोर, दोउ वीर उचारे वच कठोर ॥६
रे देव ! दुष्ट तू जाति नीच, मुनि दुखित किए तुझ आई मीच।
हम आगे तू कित भाग जाय, तुह देहैं दुष्कृत की सजाय ॥७
यह कह दोऊ कर धनुष धार, हरि बल लख सुर डरपौ अपार।
तब भान सीख मुनिचरण धार, ता छिन घाते विधि घाति चार ॥८
उपजत केबल सुरकलप आय, रचि गंधकुटी पर शीश नाय।
सुन निज भवसुर आनन्द पाय, जुग विद्या दे निज थल सिधाय ॥९
प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार, सुन धारे जिनते भये पार।
मुनिराज अघाति घात कीन, गतिपंचम थित अचल लीन ॥१०
पूजा सुर निरवान कीन, गत ऊंच तनों फल सुफल लीन।
भव भरमत हम दुख पाय, पूजे तुम चरण चितलाय ॥११
अरजी सुन कीजे मेहर आप, तासो विनसे भव भ्रमन ताप।
बिनवे अधिकी क्या 'बनईलाल', दुख मेट सकल सुखदेव हाल ॥१२

ॐ ह्रीं श्री कुंथगिरि सिद्ध क्षेत्र से कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष-पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति ।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपति ।
मैं शरनै आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हृती मती ॥१३

इत्याशीर्वादः ।

श्री सोनागिरि पूजा

अडिल्ल—जम्बू द्वीप मझार भरत क्षत्र सु कहो ।
आर्य खण्ड शुभ जान, भद्रदेश लहो ॥
सुवर्णगिरि अभिराम सुपर्वत है तहा ।
पञ्चकोडि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव जहा ॥१

दोहा—सोनागिर के शीश पर, बहुत जिनालय जान ।
चन्द्रप्रभू जिनआदि दे, पूजो सब भगवान ॥२

ॐ ह्रीं श्री सोनगिर क्षेत्रात्मुक्त जिनसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

पद्मद्रह को नीर ल्याय गङ्गा से भरके ।
कनक कटोरी माँहि हेम थारन में धरके ॥
सोनागिर के शीश भूमि निर्वाण सुहाई ।
पञ्चकाडि अरु अर्द्ध मुक्ति पहुचे मुनिराई ॥
चन्द्रप्रभ जिन आदि सकल जिनवर पद पूजो ।
स्वर्ग मुक्ति फल पाय जाय अविचल पद पूजो ॥

दोहा—सोनागिर के शीश पर, जेते सब जिनराज ।
तिनपद धारा तीन दे तषा हरण के काज ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जल ।१

केशर आदि कपूर मिले मलयगिरि चन्दन।
परिमल अधिकी तास और सब दाह निकन्दन।
सोनागिरि के शोश पर, जेते सब जिनराज।
ते सुगन्धकर पूजिये, दाह निकन्दन काज। चन्दनं।२
तन्दुल धवल सुगन्ध ल्याय, जल धोय पखारो।
अक्षय पद के हेतु पुञ्ज द्वादस तहा धार।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
तिन पद पूजा कोजिये, अक्षय पद के काज। अक्षतं।३
बेला और गुलाब मालती कमल मगाये।
पारिजात के पुष्प ल्याय, जिन चरण चढाये।
सोनागिरि के शोश पर, जेते सब जिनराज।
ते सब पूजों पुष्पले, मद। विनाशन काज। पुष्पं।४
अन्नजग जो जगमाहि खाड घृत माहि पकाये।
मीठे तुरत बनाय, हम थारी भर ल्याये।
सोनागिर के शाश पर, जते सब जिनराज।
ते पूजों नैवेद्य ले, क्षुधा हरण के काज नेवेद्यं।५
मणिमय द्वीप प्रजाल, धरा पङ्कति भर थारी।
जिन मन्दिर तम हार करहु दर्शन नरनारी।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
करो दीप ले आरती, ज्ञान प्रकाशन काज। दीपं।६
दशविधि धूप अनूप लेय भाजन में डाबों।
जाकी धूप सुगन्ध रहे भर सर्व दिशालों।
सोनागिरि के शोश पर, जेते सब जिनराज।
धूप कुम्भ आगे धरो, कर्म दहन के काज। धूप।७
उत्तम फल जगमाहि बहुत, मीठे अरु पाके।
अमित अनार अचार आदि, अमृत रस छाके।

सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
उत्तम फल तिन ले मिलो, कर्म विनाशन काज।
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो। फलं।८
जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ करके धर नाचों।
बाजे बहुत बजाय, पाठ पढ़ के मुख सांचों।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
ते हम पूजें अर्घ ले, मुक्ति रमण के काज। अर्घ।९

जयमाला

दोहा—सोनागिरि के शीश पर, जिन मन्दिर अभिराम।
तिन गुणको जयमालिका, वर्णत 'आशाराम'॥१
गिरि नीचे जिनमन्दिर सुचार, ते यतिन रचे शोभा अपार।
तिनके अति दीरघ चौक जान, जिनमें यात्रा मेले सु आन।२
गुम्बज छज्जे शोभित अनूप, ध्वज पकति सोहै विविध रूप।
वसुप्रातिहार्य तहां धरे आन, सब मंगलद्रव्यनि की सुखान।।३
दरवाजों पर कलशा निहार, करजोर सुजय जय ध्वनि उचार।
इक मन्दिर मे यति राजमान, आचार्य विजयकीर्ति सुजान।४
तिन शिष्य भगीरथ विवुध नाम, जिनराज भक्ति नहि और काम।
अब पर्वतको चढ़ चलो जान, दरवाजा तहां इक शोभमान।५
तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार, तिन बंदि पूज आगे सिधार।
तहां दुखित भुखित को देत दान, याचकजन तहा अप्रमाण।।६
आगे जिन मन्दिर दुहूं ओर, जिन गान होत वादित्र शोर।
माली बहु ठाढ़े चौक पौर, ले हार कलङ्गी देत दौर।७
जिन-यात्री तिनके हाथ माँहि, बखशीश रीझ तहाँ देत जाहि।
दरवाजो तहाँ दूजो विशाल, तहाँ क्षेत्रपाल दोउ ओर लाल।।८
दरवाजो भीतर चौक माहि, जिन भवन रचे प्राचीन आहि।
तिनकी महिमा बरणी न जाय, दो कुण्ड सुजलकर अति सुहाय।।९

जिन मन्दिर की वेदी विशाल, दरवाजो तीजो बहु सुढाल ।
ता दरवाजे पर द्वारपाल, ले लकुट खड़े अरु हाथ माल ॥१०
जे दुर्जन को नहीं जान देय, ते निंदक को ना दरश देय ।
चल चन्द्रप्रभ के चौक मांय, दालान तहाँ चौतर्फ आय ॥११
तहाँ मध्य सभामंडप निहार, तिसकी रचना नाना प्रकार ।
तहाँ चन्द्र प्रभ के दरश पाय, फलजात लही नर जन्म आय ॥१२
प्रतिमा विशाल तहाँ हाथ सात, कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात ।
बन्दे पूजे तहाँ देय दान, जन नृत्य भजनकर मधुर गान ॥१३
ताथेई थेई थेई बाजत सितार, मिरदंग बीन मुंहचंग सार ।
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम, जयकार करत नाचत सु एम । १४
ते स्तुति कर फिर नाय शीश, भवि चले मनो कर कर्म सीख ।
यह सोनागिरि रचना अपार, वरणन कर को कवि लहैं पार ॥१५
अति तनक बुद्धि 'आशा' सुपाय, वश भक्ति कही इतनी सुगाय ।
मैं मन्दबुद्धि किमि लही पार, बुधिवान चूक लीजो सुधार ॥१६
सोनागिरि जयमालिका, लघुमति कही बनाय ।
पढ़े सुने जो प्रीत से, सो नर शिवपुर जाय ॥१७
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रे पूर्णार्घं नि० ।

अडिल्ल—*श्री जिनवर की भक्ति सो जे जन करत हैं ।*
फल वांछा कुछ नाहिं प्रेम उर धरत हैं ॥
ज्यो जगमांहि किसान सु खेती को करै ।
नाज काज जिय जान सुशुभ आपही झरें ॥
ऐसे पूजादान भक्तिवश कीजिये ।
सुख सम्पति गति मुक्ति सहज कर लीजिये ॥
इत्याशीर्वादः ।

श्री खंडगिरि क्षेत्र पूजा

(मुनीम श्री मुन्नालालजी कृत)

अङ्गबंग के पास है देश कलिंग विख्यात।
तामे खण्डगिरि बसत है दर्शन भये सुखात ॥१

जसरथ राजा के सुत अतिगुणवान जी।
और मुनीश्वर पञ्च सैकड़ा जान जी॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये।
तिनके पूजहुं चरण सकल मम मल चये ॥२

ॐ ह्रीं श्री कलिङ्गदेश मध्ये खण्डगिरी जी सिद्ध क्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त दशरथ राजा के सुत पञ्चशनक मुनि अत्र अवतर २। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक—अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कञ्चन कलश भरा।
करू धार सु मन वच काय, नाशत जन्म जरा॥
श्री खण्डगिरि के शीशजसरथ तनय कहे।
मुनि पञ्चशतक शिवलीन देश कलिङ्ग दहे॥

ॐ ह्रीं श्री खण्डगिरि क्षेत्र से दशरथ राजा के सुत तथा पांचशतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वं०।

केशर मलयागिरि सार, घिसके सुगन्ध किया।
ससार ताप निरवार, तुम पद वसत हिया।२। श्री०। चदनं०

मुक्ताफल की उनमान, अक्षत शुद्ध लिया।
मम सर्व दोष निरवार, जिनगुण मोय दिया।३। श्री०। अक्षतं०

ले सुमन कल्पतरु थार, चुन चुन ल्याय धरू।
तुम पद ढिग धरतहिं वाण काम समूल हरूं।४। श्री०। पुष्पं०

लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजन को।
धारू चरनन ढिग आय, ममक्षुध नाशन को।३। श्री० नैवेद्यं
ले मणिमय दीपक धार, दोउ कर जोड धरो।
मन मोह अंधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो।४। श्री०। दीपं०
ले दशविधि गन्ध कुटाय, अग्नि मझार धरूं।
मम अष्ट करम जल जाय, याते पांय परू।श्री०। धूपं०
श्रीफल पिस्ता सु बादाम, आम नारंगि धरूं।
ले प्रासुक हेम के थार, भवतर मोक्ष वरूं। श्री०। फलं०
जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घ करूं।
नाचूं गाऊ इहभाँति, भवतर मोक्षवरू। श्री०। अर्घ्यं०

जयमाला

देश कलिंग के मध्य है, खण्डगिरि सुखधाम।
उदयगिरि तसु पास है, गाऊं जय जय धाम॥

श्री सिद्ध खण्डगिरि क्षेत्रपात, अति सरल चढाइ ताको सुजात।
अति सघन वृक्ष फल रहे आय, ताकी सुगन्ध दसदिश जु छाय॥
ताके सुमध्य में गुफा आय, तब मुनि सुनाम ताको कहाय।
तामें प्रतिमा दश योग धार, पद्मासन है हरि चवर ढार॥
ता दक्षिण हैं सु गुफा महान, तामें चौबीसो भगवान जान।
प्रतिप्रतिमा इन्द्र खड दुओर, कर चंवर धरें प्रभुभक्ति जोर॥
आजू बाजू खडि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेश्वरी सार।
करि द्वादश भुजि हथियार धार मानहूं निदक नहिं आवें द्वार॥
ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सतबखरा है ताको कहाय।
तामे चौबीसो बना सार, अरु त्रय प्रतिमा सब योग धार॥
बमें हरि चमर सु धरहि हाथ, नित आय भव्य नावहिं सुमाथ।
ताके ऊपर मन्दिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल॥

ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय ।
पुनि पर्वत के ऊपर सु जाय, मन्दिर दीरघ बन रहा भाय ।।
तामें प्रतिमा मुनिराज मान, खड्गासन योग धरें महान ।
ले अष्टद्रव्य तसु पूज कीन, मन वच मन करि भव धोक दीन ।।
मानो जन्म सफल अपना सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय ।
अब अष्टकरम होगे चूर चूर, जातें सुख पावें पूर पूर ।।
पूरब उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खड्गासन अति तमाम ।
पुनि चवनरा में प्रतिमा बनीय, वे चार भुजी हैं दर्शनीय ।।
पुनि एक गुफा में बिम्बसार, ताकी पूजनकर फिर उतार ।
पुनि और गुफा खाली अनेक, ते हैं मुनिजन के ध्यान हेत ।।
पुनि चलकर उदयागिरि सुजाय, भारी भारी हैं गुफा लखाय ।
एक गुफा में बिम्ब विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ।।
ताको पूजत मन वचन काय, सो भवभव के दुख जायें पलाय ।
जिनमें एक हाथी गुफा महान, तामें इक लेख विशाल धाम ।।
पुनि और गुफा में लेख जान, पढते जिनमत मानत प्रधान ।
तहं जसरत नृपके पुत्र आय, सगमुनि पञ्चशतक जु ध्याय ।।
तप वारह विधि का यह करंत, बाईस परीषह वह सहंत ।
पुनि समिति पञ्चयुत चलें सार, दोषा छयालिस टल कर अहार ।।
इस विधि तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय ।
सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी ानन्द धार ।।
पुनि धर्मोपदेश दे भव्य सार, नाना देशन कर विहार ।
पुनि आय याहि शिखर थान, सो ध्यान योग्य अघाति हान ।।
भये सिद्ध अनन्ते गुननि इस, तिनके युगपदपर धरत शीष ।
तिन सिद्धन को पुनि २ प्रणाम, सो सुक्खलेय अविचल सुधाम ।
बन्दन भवदुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय ।
ता क्षेत्रको पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड नमत है मुन्नालाल ।।

घत्ता-श्री खण्डगिरि क्षेत्रं, अति सुख देतं तुरतहि भवदधि पार करें।
जो पूजे ध्यावे करम नसावे, वांछित पावे मुक्ति वरे ॥
ॐ ह्रीं श्री खण्डगिरि सिद्धक्षेत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्व० ।
श्रीखण्डगिरि उदयगिरि, जो पूजै त्रिकाल ।
पुत्र पौत्र संपति लहे, पावे शिवसुख हाल ॥
इत्याशीर्वादः ।

श्री सिद्धवरकूट पूजा

(स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी कृत)

सिद्धकूट तीरथ महा है उत्कृष्ट सुजान ।
मन वच काया कर नमों, होय पाप की हान ।१।
दो चक्रि मन्मथ जु दस, गये तहं ते निर्वान ।
पद पङ्कज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान ।२।
रेवाजी के तटनते, हूंठ कोडि मुनि जान ।
कर्म काट तहं ते गये, मोक्षपुरी शुभथान ।३।
जगमें तीर्थ प्रधान हैं, सिद्धवर कूट महान ।
अल्पमति में किम कहो, अद्भुत महिमा जान ।४।
इन्द्रादिक सुर जाय, तहा वन्दन करे ।
नगपति तहं आय, बहुत थुति उच्चरे ।
नरपति नितप्रति जाय, तहां बहु भावसों ।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों ।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट से दो चक्री दश काम कुमारादि साढ़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

उत्तम रेवा जल ल्याय, मणिमय भर झारी ।
प्रभु चरनन देउं चढ़ाय, जन्म जरा हारी ।।
द्वय चक्री दश कामकुमार, भवतर मोक्ष गये ।
तातें पूजों पद सार, मनमें हरष ठये ।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०
मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारो ।
प्रभु चरनन देत चढाय, भव भव दुखहारी ।द्वयचक्री०। चदनं
तन्दुल उज्ज्वल अविकार, मुक्तासम सोहे ।
भरकर कञ्चनमय थाल सुर नर मन मोहे ।द्वयचक्री। अक्षतं
ले पहुपसुगन्धित सार, नापर अलि गाजे ।
जिन चरनन देत चढ़ाय, कामव्यथा भाजे ।द्वयचक्री। पुष्पं
नेवज नाना प्रकार, षट्रस स्वाद मई ।
पद पङ्कज देउ चढ़ाय, सुवरन थार लई ।
मणिमय दोपक को ल्याय, कदली सुत बाना ।
ज्योति जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती ।द्वयचक्री०। दीपं
कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खई ।
वसु दुष्ट करम जर जाय, भव भव सुख लेई ।द्वयचक्री। धूप
श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई ।
लेकर बहुफल सुखधाम, जिनवर पूज ठई ।द्वयचक्री०। फलं
जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी ।
चरु दोप धूप फल सोय, अरघ करो भारी ।द्वयचक्री० अर्घ्यं

जयमाला

दोहा—सिद्धवर कूट सुथानको, रचना कहूं बनाय ।
अति विचित्र रमनीक अति, कहत अल्प कर भाय ।१

जय पर्वत अति उन्नत विशाल, तापर त्रय मन्दिर शोभकार।
तामें जिनबिम्ब विराजमान, जय रतनमई प्रतिमा बखान।२
ताकी शोभा किम कहे सोय, सुरपति मन देखत थकित होय।
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान, तिनकूं वरनूं अब प्रीति ठान।३
ताकी पूरब दिशि ताल जान, तामें सुकमल फूले महान।
कमलन पर मधुकर भ्रमे जोय, ता धुनिकरि पूरित दिशा होय।४
ता सरवर पर नाना प्रकार, द्रुम फूल रहे अति शोभकार।
छह ऋतु के फल फूले फलाय, ऋतुराज सदा क्रीडा कराय।५
मन्दिरकी दक्षिण दिशा सार, सुन नदी बहे रेवा जु सार।
ताके तट दोनो अति पवित्र विद्याधर बहु विधि करे नृत्य।६
फिर तहंते उत्तर दिशा जान, इक कुण्ड बना है शोभमान।
ता कुण्ड बीच यात्री नहाय, तिन बहुत जन्म के पाप जाय।७
ता कुण्ड जु ऊपर अति विचित्र, इक पाडुशिला है पवित्र।
तिस थान बीच देवेन्द्र सोय, जिनबिम्ब धरे है शीश जोय।८
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल, कावेरी सोभे अति रसाल।
इन आदि मध्य जे भूमि जान, जय स्वयसिद्ध परवत महान।९
तापर तप धारचो दो चक्रीश, दशकामकुमार भये जगीश।
इन आदि मुनि आहूठ कोड, तिनकों बन्दू मैं हाथ जोड।१०
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान, देवेन्द्र जु आसन कम्प्यो जान।
तब अमरपुरीत इन्द्र आय, तहं अष्टद्रव्य साजे बनाय।११
तब पूजा ठाने देव इन्द्र आय, सब मिलके गावें शतक इन्द्र।
तहं यात्रा आव झुण्ड झण्ड, सब पूज धरें तन्दुल अखण्ड।१२
केइ श्रीफल ल्यावें भरु बदाम, केई लावें पूगीफल सुनाम।
कोई अमृतफल केला सुल्याय, कोई अष्टद्रव्य ले पूज ठाय।१३
कोई सूत्र पढ़े अति हर्ष ठान, कोई शास्त्र सुने बहु प्रीति मान।
कोई जिन गुण गावै सुर सङ्गीत, कोई नाचे गावे धरे प्रीति।१४

इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय, बरनन किम मुखते कहो जाय।
सुरपति खगपति आदिक जु सोय, रचना देखत मनथकित होय।१५
सुरनर विद्याधर हर्ष मान, जिन गुन गावे हिय प्रीति ठान।
ॐह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रभ्यो महार्घ्यं निवपा०।
जो सिद्धवर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह सपति नाहिं टरे।
ताको जस सुर नर मिल गावे, 'महेन्द्रकीर्त्ति' जिन भक्ति करे।१६
सिद्धवरकूट सुथान की महिमा अगम अपार।
अल्पमति मैं किमि कहो, सुरगुरु लहे न पार।१७
इत्याशीर्वादः।

श्री राजगृही क्षेत्र पूजा

(मुनीम श्री मुन्नालाल जी परवार कृत)

जम्बूदीप मंझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र हैं।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी।१
अडिल्ल—मगध देश की राजधानि सोहे सही।
राजगृहो विख्यात पुरातन हैं महो।
तिस नगरी के पास महा गिरी पाच।
अति उतग तिन शिखर सु शोभ लहात हैं।२
विपुलाचल रतना, उदयागिरि जानिये।
सोनागिरि व्यवहार सुगिर शुभ नाम ये।
तिनके ऊपर मन्दिर परम विशाल जो।
एकोनविंशति बने सु पूजहु लालजी।३
तीर्थंकर तेईस के, समोसरण सुखदाय।
कर विहार तहं आय है, वासुपूज्य नहो आय।४

चौबीसों जिनराज के, बिम्ब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करों, तिष्ठ तिष्ठ इत आग।५

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र के पञ्च पर्वतों पर उनईस मन्दिरस्थजिनबिम्ब व चरण समूह अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि पानी दूध समानी, तसु उनमानी जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे गुण गायो॥
श्री पञ्च महागिरि तिन पर, मन्दिर, शोभित सुन्दर सुखकारी।
जिनबिम्ब सुदर्शत, आनन्द बरसत जन्ममृत्यु—भय दुखहारी॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

मलयागिरि पावन, केशर बावन, गन्ध घिसाकर ले आयो।
मनदाह निकन्दों, भवदुख दन्दो, तुम पद बंदों, सिरनायो। श्री०। चं०
अक्षत अनियारे, जलसु पखारे, पुञ्ज तिहारे, ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज सम कीजे दोष हरीजे, गुण गाये। श्री०। अ०
बेला सुचमेली, कुन्दबकोली, चंप जुही ले गुलाब धरों।
अति प्रासुक फूला, है गुण मूला काम समूला, नाश करो। श्री०। पुष्पं
फैनी अरु बावर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये।
मम क्षुधा हरीजे, समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये। श्री०। नैवेद्य
दीपक उजियारा, कर्पूर प्रजारा, निजकर धारा, अर्ज करूं।
मम तिमिर हरीजे, ज्ञान सु कीजे, कृपा करीजे, पांव परूं। श्री०। दीपं
दशगन्ध कुटाया धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै।
मम दुख कर दूरा, करमहिं चूरा, आनंदपूरा, सुख विलसे। श्री०। धूपं
बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्री फल धारे भेंट करूं।
मनवांछित दीजे, शिवसुख दीजे, ढील न कीजे, मोद धरूं। श्री०। फलं

वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये, नृत्यकरो।
भवभव दुखनाशा, शिवमगभासा, चित्तहुलासा, सुक्ख करो।श्री०।
ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ्य

अन्तिम तीर्थङ्कर वीर स्वामी, समोसरण युत आय है।
तहं राय श्रेणिक पूजकर, उन धर्म मुनि सुख पाय है॥
गौतम सु गणधर ज्ञान, चहु धर भव्य संबोधे तहां।
सो वाणि रचना ग्रंथ मांही, आज प्रचलित है यहां।

दोहा—सो विपुलाचल सीस पर, छह मन्दिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरे, चरणपादुका सात॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलाचल पर्वत पर सात मन्दिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपा०।

अडिल्ल—रतनगिरि पर दो मन्दिर सोहे सही।
प्रतिमा दो रमणीय परम शोभा लही।
चरण पादुका चार भीतरै सोहना।
एक पादुका दूजे मन्दिर में बना।

दोहा—वसु विधि द्रव्य मिलायकर, दोउ जोड़ कर सार।
प्रभु से हमारी बीनती, आवागमन निवार॥

ॐ ह्रीं श्री रतनागिरि पर्वत पर दो मन्दिरस्थ दो प्रतिमा व सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घ निर्व०।

उदयागिरि पर दो मन्दिर हैं विशालजी।
श्री पारस प्रभु आदि बिंब छह हाल जी।
चरण पादुका तीन विराजत हैं सही।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही।

सोरठा—अष्ट द्रव्य ले थार, मन वच तन से पूज हों।
जन्म मरण दुख टार, पाऊं शिवसुख परमगति।३।

ॐ ह्रीं श्री उदयगिरि पर्वत पर दो मन्दिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपा० ।

श्रमणगिरि के शीश पर, दो मन्दिर सुविशाल ।
आदिनाथ जी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल ।।
द्वय प्रतिमा इक चरण तहं राजत है सुखकार ।
अष्ट द्रव्य युत पूज है, ते उतरे भव पार ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रमणागिरि पवत पर दो मन्दिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरण कमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद्धरी—श्री गिरि व्यवहार अनूप जान, तहं मन्दिर सात बने महान ।
तिनके अति उन्नत शिखर सोय, देखत भविमन आनंद होय ।
अरु टूटे मन्दिर पड़े सार, पुनि गुफा एक अद्‌भुत प्रकार ।
सबमें प्रतिमा सु विराजमान, पुनि चरण तहां सु अनेक जान ।।
ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, मन वच कर त्रय धोक दीन ।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर, जासे सुख पाया पूर पूर ।

ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिरि पर्वत पर सात मन्दिर व टूटे मंदिर व एक गुफा में अनेक प्रतिमा व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

जयमाला

उन्नत पर्वत पांच पर उनईस जिनालय जान ।
मुनि सुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहुं जान ।।
बनो राजगृह नग्र अनूप, बनी तहं खाई कोट सु कूप ।
बने तहं बाग महा रमनीक, फले फल फूल सुवृक्ष जु ठीक ।।
तहां नरनार सु पंडित जान, करें नित पात्रन को बहुदान ।
करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म, सु पूजन वंदन आदिक धर्म ।।
रहैं बन मुनिवर अर्जिका जान, करें नित भक्ति सु श्रावक आन ।
सु नारि पद्मावति नाम सु जान, सबै गुण पूरित रूप महान ।
जु श्रावण दोज वदी दिन सार, स्वप्ने सोलह देखे निश सार ।

सु होत प्रभात पति ढिग जाय, सुपन फल सुनि मन हर्ष लहाय।
प्रभु तीर्थंकर गर्भ मंझार, अपराजित से आये गुणधार।
सु सेव करें नित देविन आय, नगर नरनार जु हर्ष लहाय।
यो सुख में भये नव माह व्यतीत, वदी बैशाख दशमी शुभमीत ।।
सुजन्म प्रभु को भयो सुखदाय, सु आसन कंपो तबै हरिराय।
अवधिकर इन्द्रजन्म प्रभु जान, किया परिवार सहित सुपयान ।।
प्रदक्षिण तीन नगर दी आय, शचीधर हर्ष प्रभू गृह जाय।
सु सुखनिद्रा माता को धार, प्रभु कर लेय किया नमस्कार।
सु लेय हरी निज गोदहिं धार, सुनेत्र सहस धर रूप निहार।
ऐरावत गज चढ़ि मेरुपे जाय, सु पांडुक बन प्रभु को पधराय ।।
सहस अरु आठ कलश शुभ लेय, क्षीरोदधि नीरसे धार ढरैय।
सुभूषण बहु प्रभु को पहराय, सु नृत्य किया वादित्र बजाय ।।
सुपूजरु भक्ति तहाँ बहु कीन, सु जन्म सफल अपने करलीन।
सु लाय पिता कर सोंप विराट, सु नृत्य किया अति आनन्द ठाठ ।।
मुनिसुव्रत नाम तबै हरि धार, जु श्यामवरण छबि है सुखकार।
प्रभु क्रमसो योवन पद धार, सु राजरु भोग अनेक प्रकार ।।
जु एक दिना सु महल मझार, बैठे शत खड पे थे सुखकार।
आकाश मझार बादल इक देख, तत क्षण चित्र लिखित शुभपेख ।।
जु लिखितहि ताहि बिलाय सुजान, लहो वैराग्य परम सुख खानि।
सुभावत भावन बारह सार, बदी बैशाख दशमी सुखकार ।।
सु आय लोकांत नियोग सुकीन, सु इन्द्रहि काँध चले सु प्रवीन।
तहाँ वन जायके लुंच विशाल, धरो तप दुद्धर बारह प्रकार ।।
सुघाति करम हनि ज्ञान सु पाय, वदी बैशाख की नौमि सुहाय।
समवसृति इन्द्र तहां रुचि सार, प्रभु उपदेश दे भव्यहि तार ।।
यही कल्याण चहूं सुखकार, सु राजगृही नगरी वो पहार।
प्रभ मुनिसुव्रत मेरे हो स्वाम, देवहु निज वास हमें अभिराम ।।

सु नाश अघाति सम्मेद से जाय, सु निरजर कूट ते मोक्ष सिधाय।
सु अन्तिम प्रभु महावीर जिनाय, आये विपुलाचलपै सुखदाय।
जु रायसु श्रेणिक भक्ति समेत, सु प्रश्न हजारों किये धर्म हेत।
सु गौतम गणधरजी सुखकार, सु उत्तर देयरु भव्यहि तार।।
जु श्रेणिक श्रावक सम्यक्धार, प्रकृति तीर्थंकर बध जु सार।
वही जिनवानिका अबलों प्रकाश, सुग्रन्थन मांहि जु देखो हुलास।।
जिनेश्वर और तहा इकवीस, विहार करंत रहे गिरि सीस।
सु वानि खिरी भवि जीवनकाज, सुनो तब भव्य तजा गृहराज।।
सु पर्वत पास है कुण्ड अनेक, भरे जल पूरित गर्म सु टेक।
करै तह यात्री सु आय स्नान, सु द्रव्य मनोरम धोवत जान।।
सु चालत बंदन हरषहि धार, सु बंदन ते कर्म होवत छार।
करें पुनि लौट सु आय स्नान, थकावट जाय सु सुक्ख महान।।
बनो धर्मशाला महा रमणीय, सु यात्री तहां विश्राम सुलीय।
प्रभु पद बदित मैं हरषाय, मुझे नित दर्शन दो सुखदाय।
जु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय, सुधारहु भूल जु पण्डित भाय।।
दुहूं कर जोड़ नमैं 'मुन्नालाल', प्रभु मुझे वेग करो जु निहाल।।

मुनि सुव्रत बंदित, मन आनंदित, भव २ दंदहि जाय पलाय।
श्रीपंच पहाड़ो, अति सुखकारी, पूजन भविजन शिवसुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपा०।

पञ्च महागिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय।।

इत्याशीर्वादः।

श्री गुणावा जी सिद्धक्षेत्र की पूजा

(श्री बाबू पन्नालाल जी कृत)

धन्य गुणावा थान, गौतम स्वामी शिव गये।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥१

ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र से श्री गौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अति शुद्धसुधा सम तोय, हेमाचल सोहे।
जर जनम मरन नहि होय, सबही मनमोहे ॥
जगकी भवताप निवार, पूजों सुखदाई।
धन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०
केशर करपूर मिलाय, चन्दन घिसवाई।
अरचों श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई। जग०। चन्दनं
अति शुद्ध अखण्ड विशाल, तन्दुल पुञ्ज धरे।
भरि भरि कञ्चनमय थाल, पूजो रोग टरे। जग०। अक्षत
गेंदा गुलाब कचनेर, पुष्पादिक प्यारे।
सो करिकरि ढेर सुढेर, कामानल जारे। जग०। पुष्प
अति घेवर फेनी ताप, नेवज स्वाद भरी।
सब भूख निवारन काज, प्रभु ढिग जाय धरी। जग । नैवेद्य
घृत से भरि सुवरण दीप, जगमग ज्योति लसे।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे। जग०। दीपं
कर्पूर सुगन्धित पूर, अगर तगर डारो।
श्री चरनन खेवो धूप, करम कलङ्क जारों। जग०। धूपं

पिस्ता बादाम सुपारी, श्री फल सुखदाई ।
मनवांछित फल दातार, ऐसे जिनराई । जग० । फलं
सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों ।
'पन्ना' प्रति मङ्गलकार, शिवपद जाय वरों । जग० । अर्घं

जयमाला

गौतम स्वामीजी भये, गणधर वीर प्रधान ।
तिनकी कछु जयमाल अब, सुनो भव्य धरि ध्यान ॥ १
वन्दों श्री महावीर जिनन्दा, पाप निकन्दन आनन्दकन्दा ।
जिन परताप भये बहुनामी, जै जै जै श्री गौतम स्वामो ॥ २
भयो जहां पर केवल ज्ञाना, समोशरण इन्द्रादिक ठाना ।
खिरी दिव्यध्वनि नहिं भगवान, गणधर नहिं कोई गुणवान ॥ ३
तब विद्यारथि भेष बनाई, बासव गौतम के ढिग जाई ।
पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित, षट्द्रव्य पञ्चास्तिकाय भाषित । ४
यह सुनि गौतम वचन उचारे, तोसों करूं वाद क्या प्यारे ।
चलि अपने गुरु वीर नजीका, करिहैं शास्त्रार्थ तहं नीका । ५
ऐसी कह ततकाल सिधारे, समोशरण में आप पधारे ।
देखत मानथम्भ को ज्योंही, खण्डित भयो मान सब योंही । ६
भूल गये सब वाद विवादा, कीनो थुति सब छांडि विषादा ।
सोई गणधर भये प्रधाना, धन्य धन्य जैवंत सुजाना । ७
धन्य गुणावा नगर सुहाई, जहंते उन शिवलक्षमी पाई ।
सुन्दर ताल नगर अति सोहै, ताबिच मन्दिर जन मन मोहै । ८
चरणपादुका बने अनूपा, पूर्व धर्मशाला अरु कूपा ।
सन्मुख वेदी अति सुखदाई, वोर चरण प्रतिमादि सुहाई । ९
चारों ओर चरण चौबीसी, तिन लखि हर्ष होत अतिहोसो ।
पूजनीक अति ठाम अपारा, दुखदारिद्र नशावन हारा । १०

जो पढ़ें पढ़ावे पूज रचावें, सो मनवांछित फल पावै।
सुत लाभ बिहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' जगत न भरमावै ॥११
श्री ह्रीं श्रीगुणवासिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपा०।
शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना।
तामधि श्रावक लोग, बसे सबहि बुद्धिवाना॥
संवत् शत उनईश, तासुपै धारि बहत्तर।
विक्रम साल प्रमान, जेठ मासा बीतन पर॥१२

इत्याशीर्वादः।

श्री द्रोणागिरि पूजा

(पं० वरयावजी चौधरी कृत)

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोणागिरि तसु नाम।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम॥
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, बने अपूरब धाम।
तिन प्रति पुष्प चढ़ाइये, ओर सकल तज काम॥२

ॐ ह्री श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त गुरुदत्तादि मुनि समूह अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक—सुन्दरी

सरस छीर सु नीर गहीर ले, जिन सुचरनन धारा दीजिए।
नशत जन्म जरा मृति रोग है, मिटत भवदुख शिवसुख होत है॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०

अगर कुमकुम चन्दन गारिये, जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये।
तपत जन जे भव आताप ते, चर्चे जिनपद अघ इमि नाशते॥ चंदनं

देवजीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदि के।
सरस अनियारे अनबीध ले, पुञ्ज निजपद आनन तीनदे ।। अक्षतं
सरस बेजा और गुलाब ले, केवरो इत आदि सुवास ले।
जिन चढ़ाय सुहर्ष सुपावते, मदनकाम व्यथा सब नाशते ।। पुष्पं
पूरियां पेड़ादि सु आनिये, खोपरा खुरमादिक जानिये।
सरस सुन्दर थार सु धारिये, जन चढ़ाय छुधादि निवारिये ।। नैवेद्यं
रतन मणिमय जोति उद्योत हैं, मोहतम नशि ज्ञान हु होत हैं।
करत जिन तट भविजन आरती, सकल जन्मन ज्ञानसु भासती ।। दीपं
कूट वसु विधि धूप अनूप हैं, महक रही अति सुन्दर अग्नि है।
खेइये जिन अग्र सु आयके, ज्वलन मध्य सु कर्म नशायकें ।। धूपं
नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बादाम मिलाइये।
इलायची पुङ्गी फल ले सही, जजत शिवपुर की पावै मही ।। फल
जल सु चन्दन अक्षत लीजिए, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये।
दीप धूप सुफल वहु साजही, जिन चढ़ाय सु पातक भाजहीं ।। अर्घं
करत पूजा जे मन लायकें, हेत निज कल्याण सु पायकें।
सरस मङ्गल नित नये होत हैं, जजत जिनपद ज्ञान उद्यात हैं ।। अर्घं

जयमाला

दोहा—ये ही भावना भायकें, करो आरती गाय।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करों, छंद पद्धड़ी गाय ।।१

श्री सिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान, श्री द्रोणागिरि ताको सु नाम।
तहं नदी चन्द्रभागा प्रमान, मगरादि मीन तामें सु जान ।।१
ताको अति सुन्दर बहे नीर, सरिता जु जान भारी गम्भीर।
यात्रीजन सब देशन के आय, अस्नान करत आनन्द पाय ।।२
फलहोडी ग्राम कह्यो बखान, जिन मन्दिर तामें एक जान।
पूजा सु पाठ तहाँ होत नित्त, स्वाध्याय वाचना में सुचित्त ।।३

अब गिरि उत्तंग जानो मुहान, ता ऊपर को लागे शिवान।
तरुवर उन्नत अति सघन पांत, फल फूल लगे नाना सु भांत ।।४
तहं गुफा रही सुन्दर गहीर, मुनिराज ध्यान धारे तपीस।
गिरि शीश बीस जिन बन धाम, अब और होय तिनको प्रणाम ।।५
तहं झालर घण्टा बजे सोय, वादित्र बजे आनन्द होय।
तहं प्रातिहार्यं मङ्गल सुदर्व, भामण्डल चन्द्रोपम सु सर्वं ।।६
जिनराज विराजत ठाम ठाम, बंदत भविजन तज सकल काम।
पूजा सु पाठ तहं करे आय, ताथेई थेई थेई आनन्द पाय ।।७
अब जन्म सुफल अपनो सु जान, श्री जिनवर पद पूजे सु आन।
मैं भ्रमो सदा या जग मझार, नहिं मिली शरन तुमरी अपार ।।८
सोरठा—सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मङ्गल करन।
बन्दत शिवसुख थान, पावत जे निश्चय भजे ।।१

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय महार्घ्यं निर्वपा० स्वाहा।

गीतिका छन्द

आके सुपुत्र पौत्रादि सम्पत्ति, होय मङ्गल नित नये।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशिगए ।।
मैं करों थुति निज हेत मङ्गल, देत फल वांछित सही।
'दरयाव' है जिनदास तुमरो, आस हम पूरन भई ।।

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र पूजा

—निर्वाण काण्ड गाथा—

पावागिरि-वर-सिहरे, सुवण्णभद्दाई मुणिवरा चउरो।
चेलणाणई तडग्गो, णिव्वाणगया णमों तेसिं ।।

॥ स्थापना ॥

पावागिरि वर क्षेत्र सुन्दर, चेलना के तीर हैं।
जिसके सुदर्शन मात्र से, मिट जाय भव की पीर हैं॥
मोक्ष चारो सुवर्ण भद्रादी, मुनि जहं पाय हैं।
तिनकी हम थापना करी, पूजें सभो मन लाय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरि क्षेत्रतः सिद्धपद प्राप्त सुवर्णभद्रादि मुनी-श्वराः अत्र अवतरत अवतरत। अत्र तिष्ठत तिष्ठत। अत्र मम सन्नि-हिताः भवत भवत वषट्।

शुद्ध निर्मल नीर को, झारी प्रभु मम हाथ है।
चरणों में जल अर्पण करूं, करुणानिधि धर आथ हैं॥
जीवन, मरण, वृद्धापना, मेरा प्रभु हर लीजिए।
कर जोड़ के सन्मुख खड़ा, स्वामी दरशन अब दीजिए॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरि क्षेत्रतः सिद्धपदप्राप्त श्री सुवर्णभद्रादि मुनीश्वरेभ्यः जलम्।

सुगन्ध से सना हुआ, चन्दन घसू मैं नेम से।
भव ताप हारी चरण में, स्वामी चढ़ाऊं प्रेम से॥
विनय को धर ध्यान में, भव ताप मम हर लीजिये।
कर जोड विनतों करूं, स्वामी कृपा अब कीजिये॥ चंदन
स्वच्छ अक्षत शुद्ध निर्मल, नीर से प्रभु धोयकर।
तुव चरण में अर्पण करूं, अभिमान सारा खोय कर॥
स्वामी शरण तेरी खड़ा, संसार दुख दूर कीजिये।
अखय पद करुणा निधी, इस दास को अब दीजिये॥ अक्षतं
सुमन सुगन्धित प्रेम से, सेवा लिये लाया प्रभू।
चरण में अर्पण-करन बहु, दूर से धाया प्रभू॥
अर्पण करूं वह प्रेम से, प्रभू काम शर हर लीजिये।
अपराध कोटी कर क्षमा, हे नाथ दर्शन दीजिये॥ पुष्पं

बहुभांति के पकवान स्वामी, प्रेम से मैं लाया हूं ।
हे दीन बन्धु भक्ति से, अर्पण यहां कर पाया हूं ।।
वह असाता जनित व्याधि, क्षुधा मम हर लीजिये ।
करके दया करुणा-निधि, सेवक सुदर्शन दीजिये ।।

ॐ ह्रीं श्री पावागिरिक्षेत्रतः सिद्धपदप्राप्त श्री सुवर्णभद्रादि मुनीश्वरेभ्यः नैवेद्यं ।

अज्ञान अन्धकार मे, सन मार्ग मैं भूला प्रभू ।
निज मार्ग को तज के प्रभो, अभिमान में फूला प्रभू ।।
अब भक्ति यह दीप लाया, नाथ सेवा लीजिये ।
अज्ञान अन्धकार मेरा, दूर स्वामी कीजिये ।। दीप
दया मय अष्ट कर्मो, ने मुझे वश में किया ।
इन अष्ट कर्मों ने मुझे, तुव भक्ति से वंचित किया ।।
इनको जलाने के लिये, मैं धूप सेवा मैं करूं ।
तुव तेज पूरित भद्र प्रतिमा, प्रेम से हिरदे धरू ।। धूपं
फल मनोहर लाय कर, करुणानिधि सेवा करूं ।
मोक्ष फल मुझको मिले, यह भावना मन में धरू ।।
अन्त में हे दीनबन्धु, मुक्ति मौको कीजिये ।
तेरी शरण मे ही पड़ा, तू-ही दरश अब दीजिये ।। फलं
हे दयामय अष्ट द्रव्य, मिलाय कर सेवा करूं ।
अर्घ चरण चढ़ाय कर, मन में यही आशाधरूं ।।
दास को अनर्घ पद कर के दया अब दीजिये ।
चरण मे आया प्रभो इस, भक्त की सुध लीजिये ।। अर्घं

जयमाला

पावागिरि वर क्षेत्र की बरणतहूं जयमाल ।
प्रेम सहित नर जो पढ़े, दूर होय भवजाल ।।

है ऊन ग्राम सुहावना चहुं, और सुन्दर धाम है।
पास पर्वत सुखद, पावागिरि वर नाम है ।।१
सरिता बहे तहं चेलना यह, क्षेत्र उसके तीर है।
दरश कर जिसके सकल मिट, जाय भव की पीर है ।।२
मोक्ष चारों सुवर्ण भद्रा-दी मुनी पाये यहां।
भाग्यशाली है वही जो दरश को आये यहां ।।३
बल्लाल नामक भूपती को, उदर में कुछ रोग था।
उस रोग के ही कारणे विरथा, दिखे सब भोग था ।।४
इस शोक में ही चल पड़ा वह राज्य से मुंह मोड़कर।
कुछ दिन में आ पहुंचा यही निज राजधानी छोड़कर ।।५
प्रभु कृपा से उसको यहां, आराम कुछ होने लगा।
तब प्रेम से मंत्री बुला, निज हृदय भर रोने लगा ।।६
स्वामिन कहो किस कारणें, मुझको बुलाया आपने।
धर्म के अवतार को, बुरा सताया पाप ने ।।७
भो मन्त्रिवर ! मुझको यहां आराम कुछ होने लगा।
गद्‌गद् हृदय मेरा हुआ, इससे ही मैं रोने लगा ।।८
एक सौ मन्दिर यहां बनवाऊं, ईच्छा यह लगी।
प्रारम्भ कीजे कार्य झट, मेरी सकल पीड़ा भगी ।।९
कुछ काल में मन्दिर बने, सौ में रहा एक न्यून है।
इस न्यूनता से नाम भी, इस ग्राम का यह 'ऊन है' ।।१०
ग्राम से दक्षिण दिशा जिन गेह इक ललाम है।
देखकर मन हो चकित कारीगरी का काम है ।।११
मूर्तियां यहां तीन सुविशाल शोभित हो रही।
दर्शकों के पाप को सब प्रेम से वह खो रही ।।१२
आषाढ़ कृष्ण अष्टमी बुधवार को इस ठोर में।
'चेतन' ने चेतन कर दिये महावीर स्वामी भोर में ।।१३

महावीर स्वामी की सुप्रतिमा, तेज पूर्ण लालम है।
साथ में हो चार प्रतिमा, भी मिली सुखधाम है ॥१४
पास में पद पादुका है, सकल अघ-संहारिणी।
मोक्षफल को दायिनी भव-सिन्धु से सत्तारिणी ॥१५
'चैतन्य' का जो स्वप्न था वह आज सच्चा हो गया।
अज्ञात यह बहुकाल से वर, क्षेत्र परगट हो गया ॥१६
हम मांगते हैं वर यही प्रभु, चरण सेवा दीजिये।
उर में दया, सद्भाव का संचार स्वामी कीजिये ॥१७
पावागिरि वर क्षेत्र की, सब आयके पूजा करो।
महावीर प्रभु की मूर्ति को प्रेम से हिरदे धरो ॥१८
इस जगत में तो धर्म से हो सद्गति नर पाय है।
मान 'सुमनाकर' विनय, आवागमन मिट जाय है ॥१८ पूर्णार्घम्
सुखदायी पावागिरि, सुन्दर सुखद ललाम :
दर्शन से पावे मनुज प्रेम-सहित सुखधाम ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री कमल दह जी (पटना) सिद्धक्षेत्र (सुदर्शन पूजा)

(श्री बाबू पन्नालालजी कृत)

उत्तम देश विहार में, पटना नगर सुहाय।
सेठ सुदर्शन शिव गये, पूजो मन वच काय ॥१

ॐ ह्रीं श्री कमल दह सिद्धक्षेत्र से श्री सुदर्शन सेठ सिद्ध पदप्राप्त अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

नित पूजोरे भाई या श्रावक कुलमें आयकें।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनों॥
गंगाजल अति शुद्ध मनोहर झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारों नेह लगाई॥नि०
जम्बूद्वीप भरत आरज में, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवन मे, शिव सेठ सुदर्शन पाई॥ नि०
ॐ ह्रीं श्री कमलदहजी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।
चन्दन चन्द्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर संग घिसाई।
महक उड़े सब दिशन मनोहर, पूजों जिनपद राई। नि०। चंदनं
शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुञ्ज सुहाई।
अक्षय पद के कारण भविजन, पूजो मन हरषाई। नि०। अक्षतं
पांचों विधि के पुष्प सुगन्धित, नभलों महक उड़ाई।
पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई। नि०।,पुष्पं
उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त बनाई।
भूख निवारन कञ्चन थारन, भर भर देहु चढ़ाई। नि०। नैवेद्यं
मणिमय भाजन घृत से पूरित, जगमग जोति जगाई।
सब मिलि भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई। नि०। दीप
अगर तगर कर्पूर सुहावन, द्रव्य सुगन्ध मंगाई।
खेवो धूप धूमसे वसु विधि, करम कलङ्क जराई। नि०। धूपं
एला केला लौंग सुपारी नारियल सुखदाई।
भर भर पूजों थाल भविकजन, वांछित सुभ फल पाई। नि०। फलं
अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढ़ाई।
झालर घण्टा नाद बजाओ, 'पन्ना' मंगल गाई। नि०। अर्घं

जयमाला

सेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान॥१

जै सेठ सुदर्शन शीलवन्त, जग छाय रही महिमा अनन्त
तिनकी कछु मैं जयमाल गाय, उर पूज रचाऊं हर्ष ठाय ॥२
तहं मुख्य सेठ इक वृषभदास, तिन सेठानी जिनमतिय खास।
तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम, मुनि देखे बन में एक जाय ॥४
सो महामंत्र णवकार, पाय, अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय।
पुनि एक दिवस गङ्गा मझार, यह डूबत जापत मन्त्र सार ॥५
तुरतहि मर सेठ घरे विशाल, सुत एक भयो सुदर्शन भाग्यशाल।
सबको सुखदाई मिष्ट बैन, निज कपिल यार सग दिवस रैन ॥६
पढ़ि खेल कूद भयो अति सयान, तब सेठ मनोरमा सग सुजान।
शुभ साइत ब्याह दियो कराय, सों भोगत सुख अति हर्ष ठाय ॥७
पुनि कछुक काल भीतर सुकत, सुत एक भयो अति रूपवन्त।
तब सेठ सुदर्शन धीरवान, निज काम करे अति हर्ष ठान ॥८
तब कपिल नारि आसक्त होय, घर सेठ बुलाये तुरत सोय।
तहं सेठ नपुसक मिस बनाय, निज शील लिया ऐसे बचाय ॥६
जब खबर सुनी रानी तुरन्त, मन करी प्रतिज्ञा दीतवन्त।
मैं भोग करूं वासू सिहाय, तब ही मम जीवन सुफल थाय ॥१०
इन सेठ अष्टमी कर उपास, मरघट मैं ध्यानारूढ़ खास।
तह चेली उनके पास जाय, उन अचल देखि तुरतै रिसाय ॥११
तहं सेठ निरुत्तर देखि हाय, निज कंधे पै धरिके उठाय।
फिर पहुची रानी पास जाय, रानीको हाल दियो सुनाय ॥१२
यो खबर करी नृप पास जाय, यों शील विगारयो सेठ आय।
यों सुनत बैन नृप क्रोध छाय, मारन को हुक्म दियो सुनाय ॥१३
तह करी प्रतिज्ञा शीलवन्त, मुनि पदवी धारूं यदि बचन्त।
सो देव करी रक्षा सु आय, पुनि दीक्षित ह्वै वनको सिधाय ॥१४
सो करत करत कछु दिन विहार, तब आये पटना नगर सार।
तहं देवदत्त वेश्या रहाय, मिस भोजन मुनि लीने बुलाय ॥१५

उन कामचेष्टा कर सिहाय, झट सेठ लिए शैय्या गिराय ।
लख ऐसो मन में कर विचार, उपसर्ग मेरो यदि हो निवार ॥१६
सं न्यास धरूं नगरी न जाऊं, वन ही वन करते तप फिराऊं ।
यह लख वेश्या भई निरउपाय, निशि प्रेतभूमि दीने पठाय ॥१७
तहं रानी व्यंतर जोनि पाय, नाना उपसर्ग कियो बनाय ।
मुनि पुण्य भाव से देव आय, तब लिए सेठ तुरत ही बचाय ॥१८
सो कठिन तपस्या कर निदान, भयो सेठ जहां केवल जु ज्ञान ।
सो कछुक काल करके विहार, उन मुक्ति बरी अति श्रेष्ठ नार ॥१९

ॐ ह्रीं श्री कपलदहजो सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता—इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, सेठ सु दर्शन तन पाई ।
सुत लालबिहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना यह पूजा गाई ॥२०

इत्याशीर्वादः ।

श्री जम्बूस्वामी पूजा

(चौरासी—मथुरा)

चोबीसों जिन पाय, पञ्च परम गुरु बन्दि के ।
पूज रचों सुखदाय, विघ्न हरो मङ्गल करो ॥

अडिल्ल छन्द—विद्युत मालिदेव चये जम्बू भये ।
कामदेव अवतार अन्त केवलि भये ।
कलयुग कारे पांख बरांगनि शिववरी ।
आवो आवो स्वामि भक्ति उर भारी ॥१

ॐ ह्रीं श्री जम्बस्वामिन् अत्रावतरावतर संवौषट् ।
सिंह पीठ मम देहकमल उर सोहनो ।
तिष्ठो तिष्ठो तीर्थ भविक मन मोहनो ।

अब मोहि चिन्ता कौन सिद्ध कारज भये।
आतम उपभव पाप सकल सु थिर भये ॥२
ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

स्वामि अपनो स्वरूप मोहि इक दीजिए।
मैं हूं पूजक भक्त आज चित दीजिए ॥
या संसार असार असाता के विषै।
तो सूं तन मन होय सकल आनन्द जगै ॥३

ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गंगादिक जल लेय रत्न झारी भरूं।
जै जै कर उच्चारि धारिदे प्रति करूं ॥
सिद्ध चिक्र कू वंद्य जम्बू पूजा करूं।
ज्ञानावरणी कर्म तनी थिति को हनू ॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामिभ्यः जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं।

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरि।
केशर द्रव्य मिलाय घिसाय इकमिक करी ॥
सिद्धचक्र कू वद्य जम्बू पूजा करूं।
दर्शनावरणी कर्म तनी थिति को हनू ॥ चदनं

तन्दुल मुक्ता जिम इन्दु करणा जिसे।
दीर्घ अखण्ड करो पूज करिये तिसे ॥
ज्योति सरूपी ध्याय जम्बू पूजा रचू।
अन्तराय क्षय कीन अक्षय पद मैं चहूं ॥ अक्षतं

पारिजात चन्दन अरु मरु सुहावनै।
संतानक सुन्दर के पुहुप मंगावने ॥

अलख रूप अवधार जम्बू पद को जजूं।
मोहनी कर्म निवार कामते ना लजूं ॥
ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामिभ्यः जन्म जरा मृत्युविनाशनाय पुष्पं।
सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवा जितै।
मेवा सहित मिलाय पिंड करिये तितै ॥
समयसार मम बन्दि थाल आगे धरूं।
जम्बू स्वामि मनाय वेदनी को हरूं। नैवेद्यं।
चन्द्रकांत और सूर्यकांत शुभ मणि भली।
और सनेही बात जोय आनन्द रली ॥
अष्टम गुण जुत ध्याय जम्बू पूजूं सदा।
चार आयु थिति मेटो मरूं नहीं मैं कदा। दीपं।
धूप दशांग मंगाय अग्नि सग खेय ही।
धूपायन जु कनक मय सार जु लेय ही ॥
नीच गोत्र अरु ऊंच गोत्र नहिं पाय के।
आतम रूपी ध्यान निरञ्जन ध्याय के। धूप ॥
श्रीफल लोंग बादाम छुआरे लाय के।
एला पूंगी आदि मनोज्ञ मनाय के।
अष्टगुणोंयुक्त ध्याय सकल भव को हरूं।
नाम करन झड जाय प्रभु पायन परूं। फलं ॥
ज्ञायक सम्यक् शुद्ध ज्ञान केवल मय सोहे।
केवल दर्शन प्राप्ति अगरुलघु सुख में जो है।
इक में नेक समाहि हर्ष भारी गुन तेरौ।
अव्याबाध निवारि अर्घ दे चरनन चेरो। अर्घं॥

जयमाला दोहा

वर्द्धमान जिन बन्दि के, गुरु गौतम के पाय।
औरसुधर्म गणी प्रणमि, जम्बू स्वामी मनाय ॥

जय विद्युत माली देव सार, पंचम दिव में महिमा अपार।
जय राजगृहि पर सेठ थान, उपजे मनमथ अन्तिम सुजान ।।
लघु वय में उर वैराग्य धार, जग सब अस्थिर जान्यो कुमार।
तब सब परिवार उछाह ठान, ब्याही बनिता निज वय समान ।।
रतनन के दीपक दिपे महल, बनिता बैठी जुत काम सैल।
तिन सो ज्ञानादिक वच उचार, रागादि रहित कीनी सुनार।
तब विद्युत प्रभ तह चोर आय, रसभीनी अष्ट कथा सुनाय।
ताको वैराग्य कथा प्रकास, निज तत्त्व दिखाओ चिद विलास।
जग अथिर रूप थिर नही कोय नहि शरण जीवकू आन होय।
संसार भ्रमण विधि पाच ठान, इक जीव भ्रमति नहि साथ आन ।।
षट्द्रव्य भिन्न सत्ता लखाय, जिय अशुचि देय माही रमाय।
आश्रव परसों त्रय प्रीति होय, सवर चिद् निज अनुभूति जोय।।
तप कर वसुविधि सत्ता नसाग, निज स्वयं सिद्ध त्रैलोक गाय।
निज धर्म लसै कोई पुमान, दुर्लभ नहिं आतमज्ञान भान ।।
द्वादश भावन इहि भांति भाय, बहुजन युत भेटे वीर पाय।
दीक्षा धर केवल ज्ञानधार, रिधि सप्त लई महिमा अपार ।।
सन्मति गौतम धर्म मुनीश, शिवपाय तबै केवल जगीश।
वानी जु खिरी अक्षरन रूप, तत्त्वन को भाष्यो इम सरूप ।।
आपापर परसों प्रीति होय, चेतन बधै चवभांति सोय।
तब निज अनुभूति प्रकाश पाय, सत्ता सुकर्म झडें अघाय ।।
चव बन्ध रहित तब होत जीव, सिद्धालय थिरता ह्वै तदीव।
षट्द्रव्य बखानों भेद रूप, चैतन्य और पुद्गल सरूप ।।
चालन सहचारि थिति सहाय, बतरावन द्रव्यन कूं सुभाय।
पुनि सर्व द्रव्य जामें समाय, अवकाश दुतिय अवलोक गाय ।।
मुनि श्रावक को आचार भाष, आचरज ग्रन्थन में प्रकाश।
पुनि आरज खण्ड विहार कीन, जम्बू वन में थिति जोगलीन ।।

सब करमन को क्षय करि मुनीश, शिव वधू लही बिसबासु बीस।
मथुरा तैं पश्चिम कोस आध, छत्री पद मे महिमा अगाध ॥
वृज मण्डल में जे भव्य जीव, कार्तिक-वदि रथ काढत सदीव।
केउ पूजत केऊ नृत्य ठान, केऊ गावत विधि सहित तान ॥
निधि घोस होत उत्सव महान, पूरत भव्यन के पुन्य थान।
पद कमल प्राग तुम दास होय, निज भक्त विभव दे अरज सोय ॥

घत्ता—जल चन्दन लाये, अखत मिलाये, पुहुप सुहाये मन भाये।
नैवेद्य सु दीप दश विधि धूप फलरु अनूपं श्रुत गाये ॥
सुवरन क थाल भरिजु रसालं फेरि त्रिकालं सिर नाये।
गुणमाल तिहारो मम उरधारो जगत उजारी सुख दाये ॥
ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामी सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं।

दोहा—महिमा जम्बू स्वामि की, मोपे कही न जाय।
कै जानै केवलि मुनि, कै उन माहि समाय ॥
इत्याशीर्वादः।

श्री सप्तऋषि पूजा

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषोश्वर,
तीसरि मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथी वर।
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्टम भनि,
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि।
ये सातौं चारणऋद्धिधर, करूं तासु पद थापना,
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना।

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिश्रीसप्तर्षीश्वराः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता-छंद

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायके
भव तृषाकंद निकंद कारण शुद्ध घट भरवाय के,
मन्वादि चारण ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं,
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वस्वरमन्त्रनिचयसर्वसुन्दरजयवानविनयलालसजयमित्रर्षिभ्यो जलं० ॥

श्रीखण्ड कदलीनन्द केशर, मन्द मन्द घिसाय के,

तसुगंध प्रसरति दिगदिगन्तर, भर कटोरी लाय के ॥म० ॥ चंदन
अति धवल अक्षत खण्ड वर्जित, मिष्ट राजन भोग के।
कल धौत थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के ॥म० ॥ अक्षतं
बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलाब के,
केतकी चम्पा चारु मरुआ, चुने निजकर चाव के ॥ म० ॥ पुष्पं
पकवान नाना भांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भरि बहु, पुरट के थारा लये ॥ म० ॥ नैवेद्यं
कलधौत दीपक जडित नाना, भरित गोघृतसारसों।
अति ज्वलित जगमगजोति जाकी, तिमिरनाशनहारसों। म०। दीपं
दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दशअंगी कही।
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगायकर खेऊं सही ॥ म० ॥ धूपं
वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनाय के,
द्रावडी दाडिम चारु पुगी थाल भरभर लायके ॥ म० ॥ फलं
जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ॥ म० ॥ अर्घं

जयमाला (छन्द त्रिभंगी)

बंदूं ऋषि राजा, धर्म जहाजा, निज पर काजा करत भले।
करुणा के धारी, गगन बिहारी, दुख अपहारी भरम दले॥
काटत जमफंदा, भविजनवृन्दा, करत अनंदा चरणन में।
जो पूजें ध्यावें, मंगल गावें, फेर न आवें भवबन में।१।

छंद पद्धरी

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत। त्रसथावर की रक्षा करंत॥
जय मिथ्यातम नाशक पतंग। करुणारस-पूरित अंग अंग॥१॥
जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप। पद सेव करत नित अमर भूप॥
जय पंच अक्ष जीते महान। तप तपत देह कंचन समान॥२॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थभास। तप रमातनो तन में प्रकाश॥
जय विषयरोध संबोधभान। परिणति के नाशन अचल ध्यान॥३॥
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल। लखि इन्द्रजालवत जगतजाल॥
जय तृष्णाहारी रमण राम। निज परिणति में पायो विराम॥४॥
जय आनंदघन कल्याणरूप। कल्याण करत सबको अनूप॥
जय मदनाशन जयवान देव। निरमद विचरत सब करतसेव॥५॥
जय जयहि विनयलालस अमान। सब शत्रु मित्र जानत समान॥
जय कृशितकाय तप के प्रभाव। छवि छटा उड़ति आनंददाय॥६॥
जय मित्र सकल जग के सुमित्र। अनगिनत अधम कीने पवित्र॥
जय चंद्रबदन राजीव नैन। कबहूं विकथा बोलत न बैन॥७॥
जय सातों मुनिवर एकसग। नित गगन-गमन करते अभंग॥
जय आये मथुरापुर मंझार। तहं मरी रोग को अति प्रचार॥८॥
जय जय तिन चरणनि के प्रसाद। सब मरी देवकृत भई बाद॥
जय लोक करे निर्भय समस्त। हम नमत सदा नित जोरि हस्त॥९॥

जय ग्रीषमऋतु पर्वतमंझार। नित करत अतापन योग सार॥
जय तृषा परीषह करत जेर। कहुं रंच चलत नहिं मन-सुमेर॥१०॥
जय मूल अठाइस गुणन धार। तप उग्र तपत आनंदकार॥
जय वर्षाऋतु में वृक्षतीर। तह अति शीतल झेलत समीर॥११॥
जय शीतकाल चौपट मंझार। कै नदी सरोवर तट विचार॥
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय। रंचक नहिं मटकत रोम कोय॥१२॥
जय मृतकासन वज्रासनीय। गोदूहन इत्यादिक गनीय॥
जय आसन नानाभांति धार। उपसर्ग सहत ममता निवार॥१३॥
जय जपत तिहारो नाम कोय। लख पुत्रपौत्र कुलवृद्धि होय॥
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार। दारिद्रतनो दुख होय छार॥१४॥
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच। अरुईति भीति सब नसत सांच॥
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक। सुर असुर नवन पद देत घोक॥

ये सातों मुनिराज महातप लक्ष्मीधारी।
परम पूज्य पद धरैं सकल जग के हितकारी॥
जो मनवचतन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन मनरंगलाल अष्ट ऋद्धिन कौ पावै॥

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज।
पच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

—:•:—

निर्वाण-कांड (प्राकृत)

अट्टावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो । उज्जन्ते णेमिजिणा पावाए णिब्बुदो महावीरो ।।१।। वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुर वंदिदा धुदकिलेसा । सम्मेदेगिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं ।२। बरदत्तो य वरगोसायरदत्तो य तारवरणयरे । आहुट्ठयकोडिओ णिव्वाण० ।३। णेमिसामि पज्जुण्णो संबुकुमारा तहेव अणिरुद्धो । बाहत्तरिकोडीओ उज्जंते सत्तसया वंदे ।४। रामसुआ वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ । पावागिरवरसिहरे णिव्वाण० ।५। पडुसुआतिणिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोड़ोओ । सत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाण० ।६। सते जे बलभद्दा जदुबणरिंदाण अट्ठकोड़ोओ । गजपथे गिरसिहरे णिव्वाण० ।७। रामहणू सुग्गीवो गवयगवाक्खो य णीलमहणीलो । णवणवदीकोडीओ तुगीगिरिणिव्वुदे वंदे ।८। णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया । सुवणागिरिवरसिहरे णिव्वाण० ।९। दहमुहरायस्स सुआ कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया । रेवाउहयम्मितीरे णिव्वाण० ।१०। रेवाणइए तीरे पच्छिम भायम्मि सिद्धवरकूडे । दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठ य कोडिणिव्वुदे वदे । ११ वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे । इन्दजीदकुंभयण्णो णिव्वाण० ।१२। पावागिरिवर सिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो । चलणाणईतडग्गे णिव्वाण० ।१३। फलहोडी-वरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे । गुरूदत्ताइ-मुणिंदा णिव्वाण० ।।१४।। णायकुमारमुणिंदो बालि महाबालि चेव अज्झेया । अट्टावयगिरिसिहरे णिव्वाण० ।१५। अच्चलपुरवरणयरे ईसाभाये मेढगिरसिहरे । आहुठ्ठय-कोडीओणिव्वाण० ।१६। वसत्थलवणणियरे पच्छिम भायम्मि कुंथुगिरिसिहरे । कुलदेसभूषणमुणी णिव्वाण० ।१७। जसरहरायस्स सुआ पचसया कलिंगदेसम्मि । कोडिसिला कोडिमुणि णिव्वाण० ।१८। पासस्स

समवसरणे गुरुदत्त वरदत्तमुणिवरा पंच। रिसिंसदे गिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं ।१९।

जे जिण जित्थुत्तत्था जेदु गया णिव्वुदिं परमं ।
ते वंदामि य णिच्चं, तिरयणसुद्धो णमंसामि ॥२०
सेसाणं तु रिसीणं णिव्वाणं जंमि-जंमि ठाणाणि ।
ते हं वंदे सव्वे दुक्खक्खय कारणट्ठाए ॥२१

अथ अइसयखेत्तकांड-अतिशयक्षेत्रकांड

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे । अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥१॥ बाहूबलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणापुरे वंदे । सौंति कुंथव अरिहो वाणारसिए सुपासपासं च ।२। महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वदामि । जंबुमुणिदो वंदे णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ।३। पंचकल्लाणठाणईं जाणवि संजादमज्झलोयम्मि । मणवयण-कायसुद्धी सव्वं सिरसा णमस्सामि ।४। अग्गलदेवं वदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे । पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसंखदेव म्मि ।५। गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चतं । देवा कुणंति बुट्ठि केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ।६। णिव्वाणठाण जाणिविण अइसए सहिया । संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि- ॥७॥ जो जण पढइ तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए । भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

—: ० :—

पंचकल्याणक, जैन व हिन्दू पर्व तिथियां

चैत्र शुक्ल पक्ष :

तिथि	व्रत उत्सव पर्व आदि
प्रतिपदा	नववर्ष प्रारम्भ, भगवान मल्लिनाथ गर्भ, गौतम स्वामी जन्म, नवरात्रारम्भ।
तृतीया	भगवान कुन्थनाथ ज्ञान कल्याण।
पंचमी	भगवान अजितनाथ निर्वाण। श्री राम राज्य महोत्सव, श्री पंचमी।
षष्ठी	भ० सम्भवनाथ निर्वाण दिवस, सूर्य षष्ठी व्रत
नवमी	श्री राम जन्म महोत्सव।
एकादशी	भगवान सुमतिनाथ जन्म, केवलज्ञान व निर्वाण
त्रयोदशी	भगवान महावीर जयन्ती।
पूर्णिमा	भगवान पद्म प्रभु ज्ञान कल्याणक

वैशाख कृष्ण पक्ष :—

द्वितीया	भगवान पार्श्वनाथ गर्भ,
नवमी	भगवान मुनिसुव्रत नाथ ज्ञान।
दशमी	भगवान मुनिसुव्रत नाथ जन्म-तप।
चतुर्दशी	भगवान नमिनाथ निर्वाण, श्राद्ध की अमावस्या

वैशाख शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा*	भगवान कुन्थनाथ जन्म-तप-निर्वाण, चन्द्र दर्शन
तृतीया	अक्षय तृतीया भ० ऋषभदेव प्रथम अहार दिवस

* श्रीमती कृष्णादेवी पुण्य तिथि।

षष्ठी — भगवान अभिनन्दन गर्भ निर्वाण, [redacted]
रामानुजाचार्य जयन्ती ।

अष्टमी — भगवान धर्मनाथ गर्भ

नवमी — भगवान सुमति नाथ तप—सीता नवमी

दशमी — भगवान महावीर केवलज्ञान ।

पूर्णिमा — बुद्ध पूर्णिमा-बुद्ध जयन्ती ।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष :

षष्ठी — भगवान श्रेयांसनाथ गर्भ

दशमी — भगवान विमलनाथ गर्भ

द्वादशी — भगवान अनन्तनाथ जन्म-तप

चतुर्दशी — भगवान शान्तिनाथ जन्म-तप व निर्वाण

अमावश्या — भगवान अजितनाथ गर्भ, वट-सावित्री व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष :

चतुर्थी — भगवान धर्मनाथ निर्वाण,
वैनायकी—श्री गणेश चतुर्थी व्रत, उमावतार ।

पंचमी — श्रुत पंचमी

दशमी — श्री गंगा दशहरा

एकादशी — निर्जला (भीमसेनी) एकादशी व्रत,

द्वादशी — भगवान सुपार्श्वनाथ जन्म-तप ।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष :

द्वितीया — भगवान ऋषभदेव गर्भ ।

षष्ठी — भगवान वासपूज्य गर्भ

अष्टमी	भगवान विमलनाथ निर्वाण, शीतलाष्टमी व्रत
दशमी	भगवान नमिनाथ जन्म-तप

अषाढ़ शुक्ल पक्ष :

षष्ठी	स्कन्द षष्ठी व्रत—भगवान महावीर गर्भ
सप्तमी	भगवान नेमिनाथ निर्वाण
अष्टमी	अष्टान्हिका
चतुर्दशी	रात्रि में चातुर्मास-स्थापना
पूर्णिमा	श्री गौतम गणधर दीक्षा-दिवस-गुरु पूर्णिमा

श्रावण कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान महावीर प्रथम देसना, (वीर शासन जयन्ती) अशून्य शयन व्रत।
द्वितीया	भगवान मुनि सुव्रतनाथ गर्भ
दशमी	भगवान कुन्थनाथ गर्भ
चतुर्दशी*	

श्रावण शुक्ल पक्ष :

द्वितीया	भगवान सुमतिनाथ गर्भ
पंचमी	नागपंचमी कल्कि अवतार
षष्ठी	भगवान नेमिनाथ जन्म-तप
सप्तमी	भ० पार्श्वनाथ निर्वाण, मोक्ष सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
पूर्णिमा	भगवान श्रेयाँसनाथ निर्वाण—गुरु अकम्पनाचार्य व विष्णुकुमार पूजन, रक्षाबंधन-पर्व

---

* श्रीमती पद्मावती जैन जन्म-दिन।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	सोलहकारण व्रत प्रारम्भ
सप्तमी	भगवान शान्तिनाथ गर्भ
अष्टमी	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णवों का)
नवमी	रोहिणी व्रत

भाद्रपद शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा	लब्धि विधान व्रत
द्वितीया	आचार्य शान्तीसागर संवत्सरी, चन्द्रदर्शन
पंचमी	ऋषिपंचमी व्रत, दशलक्षण प्रारम्भ मेरुस्थापना
षष्ठी	भगवान सुपार्श्वनाथ गर्भ, श्री सूर्य षष्ठी व्रत
सप्तमी	मुक्तावली व्रत, निर्दोष शील सप्तमी
अष्टमी	भगवान पुष्पदंत निर्वाण, राधा [redacted]
दशमी	सुगन्ध दशमी व्रत
त्रयोदशी	रत्नत्रय स्थापना
चतुर्दशी	वासुपूज्य निर्वाण, अनन्त चतुर्दशी [redacted]
पूर्णिमा*	स्नान दान आदि की पूर्णिमा, उमा-महेश्वर व्रत

आश्विन कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	क्षमावणी पर्व
द्वितीया	भगवान नमिनाथ गर्भ
चतुर्थी	श्री क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी जयन्ती

* श्रीमती कृष्णादेवी जैन जन्म व श्रीमती पद्मावती जैन पुण्य-दिवस ।

आश्विन शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान नेमिनाथ ज्ञान, शारद नवरात्रारम्भ
अष्टमी	भगवान शीतलनाथ निर्वाण, दुर्गाष्टमी व्रत, सरस्वती पूजन
दशमी	विजया दशमी (दशहरा)
पूर्णिमा	शरद पूर्णिमा

कार्तिक कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान अनन्तनाथ गर्भ
चतुर्थी*	भगवान सम्भव नाथ ज्ञान, रोहिणी व्रत करवा चौथ
द्वादशी	मुक्तावली व्रत
त्रयोदशी	भगवान पद्मप्रभ जन्म तप
चतुर्दशी	हनुमान जयन्ती
अमावस्या	दीपावली भ० महावीर निर्वाण–गौतम गणधर केवलज्ञान, स्नान-दान-श्राद्ध आदिकी अमावस्या

कार्तिक शुक्ल पक्ष :

द्वितीया	भगवान पुष्पदंत ज्ञान–भइया दूज
षष्ठी	भगवान नेमिनाथ गर्भ, सूर्य षष्ठी व्रत
अष्टमी	अष्टाह्निका प्रारम्भ गोपाष्टमी (गो-पूजन)
एकादशी	मुक्तावली व्रत
द्वादशी	भगवान अरहनाथ ज्ञान, तुलसी विवाह

* श्री राजकृष्ण जैन जन्म-तिथि ।

पूर्णिमा — भ० सम्भवनाथ जन्म (हस्तिनापुर, कलकत्ता मुक्तागिरि मेला स्नान-दान व्रत आदि की कार्तिकी पूर्णिमा), गुरु नानक जन्म।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष :

तृतीया — मुक्तावली व्रत
दशमी — भगवान महावीर तप कल्याणक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा — भगवान पुष्पदंत जन्म-तप, रुद्र व्रत
एकादशी — भ० मल्लिनाथ जन्म-तप व भ० नमिनाथ ज्ञान
~~चतुर्दशी~~ — भगवान अरहनाथ जन्म-तप
दत्तात्रेयावतार, व्रत की पूर्णिमा; रोहिणी व्रत
पूर्णिमा — भगवान सम्भव नाथ तप, स्नान-दान आदि की पूर्णिमा

पौष कृष्ण पक्ष :

द्वितीया — भगवान मल्लिनाथ केवलज्ञान, देहली रथयात्रा
एकादशी — भगवान चंद्रप्रभु व भ० पार्श्वनाथ जन्म तप, सफला एकादशी व्रत (सभी का)
चतुर्दशी — भगवान शीतलनाथ ज्ञान

पौष शुक्ल पक्ष :

दशमी — भगवान शान्तिनाथ ज्ञान कल्याणक
एकादशी — भगवान अजितनाथ केवलज्ञान
चतुर्दशी — भगवान अभिनन्दनाथ ज्ञान कल्याणक,
पूर्णिमा — भगवान धर्मनाथ ज्ञान कल्याणक

माघ कृष्ण पक्ष :

षष्ठी भगवान पद्मप्रभु गर्भ

द्वादशी भगवान शीतलनाथ जन्म-तप, प्रदोष-व्रत

चतुर्दशी भग० ऋषभदेव निर्वाण

अमावस्या* भगवान श्रेयांसनाथ ज्ञान,

माघ शुक्ल पक्ष :

द्वितीया भगवान वासु पूज्य ज्ञान

चतुर्थी भगवान विमलनाथ जन्म-तप

पंचमी वसन्त पञ्चमी, वागीश्वरी जयंती, तक्षक पूजा

षष्ठी भगवान विमलनाथ ज्ञान

दशमी भगवान अजितनाथ जन्म-तप

द्वादशी भगवान अभिनन्दन नाथ जन्म-तप, रोहिणी व्रत

त्रयोदशी भगवान धर्मनाथ, जन्म-तप

~~भगवान अभिनन्दन नाथ जन्म-तप~~

फाल्गुन कृष्ण पक्ष :

तृतीया भगवान अरहनाथ गर्भ

चतुर्थी भगवान पद्मप्रभु निर्वाण

षष्ठी भगवान सुपार्श्वनाथ ज्ञान

सप्तमी भगवान चन्द्रप्रभु ज्ञान व सुपार्श्वनाथ निर्वाण

---

* राजकृष्ण जैन पुण्यतिथि।

नवमी	भगवान पुष्पदंत गर्भ
एकादशी	भगवान आदिनाथ ज्ञान व श्रेयांसनाथ जन्म-त
द्वादशी	भगवान मुनि सुव्रतनाथ निर्वाण
चतुर्दशी	भ. वासपूज्य जन्म-तप, शिवरात्रिव्रतकी पारण

फाल्गुन शुक्ल पक्ष :

पंचमी	भगवान मल्लिनाथ निर्वाण
षष्ठी	सम्भवनाथ जिनेन्द्र गर्भ
सप्तमी	भगवान चन्द्रप्रभु निर्वाण
अष्टमी	अष्टाह्निका
त्रयोदशी*	
पूर्णिमा	स्नान-दान-पूर्णिमा, होली वसन्तोत्सव

चैत्र कृष्ण पक्ष :

चतुर्थी	भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान
पञ्चमी	भगवान चन्द्रप्रभ गर्भ, रंग-पञ्चमी
अष्टमी	भगवान शीतलनाथ गर्भ, श्रीशीतलाष्टमी व्रत
नवमी	भगवान ऋषभदेव जन्म-तप
अमावस्या	अनंतनाथ ज्ञाननिर्वाण व भगवान अरहनाथ निर्वाण

* श्री प्रेमचन्द्र जैन जन्मतिथि ।

हमारे अन्य प्रकाशन

१. भक्ति गुच्छक-(स्तोत्र, पाठ और पूजा आदि का अपूर्व संग्रह)
६३१ पृष्ठ का गुटका। मूल्य ५ रुपये

२. अध्यात्म तरंगिणी—रचयिता, आचार्य सोमदेव, संस्कृत टीकाकार आ० गणधरकीर्ति, हिन्दी टीकाकार—पं० पन्नालाल साहित्याचार्य
मूल्य ५ रुपये

३. युगवीर भारती—
प० जुगलकिशोरजी मुख्तार की कविताओं का संग्रह मूल्य ३ रुपये

४. भगवान महावीर—(लेखिका रमादेवी जैन) मूल्य ३ रुपये

५. हरिवंश कथा—मूल लेखक : आचार्य जिनसेन, रुपान्तरकार:
श्री माई दयाल जैन पृष्ठ सख्या ३४० सजिल्द मूल्य १५ रुपये

६. प्रद्युम्न चरित्र—(बाल सस्करण) श्रीमती पद्मा जैन ३ रुपये

७. हरिवंश कथा— ,, ,, ,, ३ रुपये

८. तन से लिपटी बेल (उपन्यास)—
लेखक—श्री आनन्द प्रकाश जैन (सजिल्द) मूल्य १० रुपये

९ पुराने घाट नई सीढ़ियां—डा० नेमिचन्द जैन, ज्योतिषाचार्य
पी-एच० डी०, डी० लिट् सजिल्द मूल्य १० रुपये

१०. नित्य नियम पूजन, चतुर्विंशति पाठ, तीर्थक्षेत्र पूजन व
स्तोत्र संग्रह—श्री वृन्दावन जी कृत ३० रुपये

११. समयसार—आचार्य कुन्दकुन्दाचार्य कृत "श्री राजकृष्णजी जैन"
द्वारा गाथाओ के अंग्रेजी रूपान्तर सहित। (प्रेस मे)

१२. नियमसार---आचार्य कुन्दकुन्दाचार्य कृत "श्री राजकृष्णजी जैन"
द्वारा गाथाओ के अंग्रेजी रूपान्तर सहित। (प्रेस मे)

१३. सिद्ध चक्र विधान—श्री सन्तलाल जी कृत (प्रेस में)

SHRI RAJ KRISHEN JAIN MEMORIAL LECTURE SERIES

12. Jain Ethical Traditions and Its Relevance and the Jain Conception of Knowledge and Reality and its Relevance to Scientific Thought by. Dr. G C. Pandey. Ex. Vice-Chancellor, Rajathan University, Jaipur. 25-00

13. Some Thoughts on Science & Religion by Professor Dr D. S. Kothari, Ex-Chairman, University Grants Commission. 25-00

14. Yoga, English Medititition is Mysticism in Jainism b Justice T. K. Tukol (Retd, Vice-Chancellor, Bangalore University) 25-00

15. Anekant & Nayavada—By prof. Dr T. G. Kalghatgi former Head of the Department of Jainology & Prakrit, Mysore University 25-00

१६ भारतीय धर्म और अहिंसा—सिद्धान्ताचार्य प० कैलाशचन्द्र शास्त्री वाराणसी २५ रुपये

अहिंसा मन्दिर

फोन २६७२०० १ दरियागंज, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२

अन्य केन्द्र : हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, व पिलानी

(श्री राजकृष्ण जैन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित)